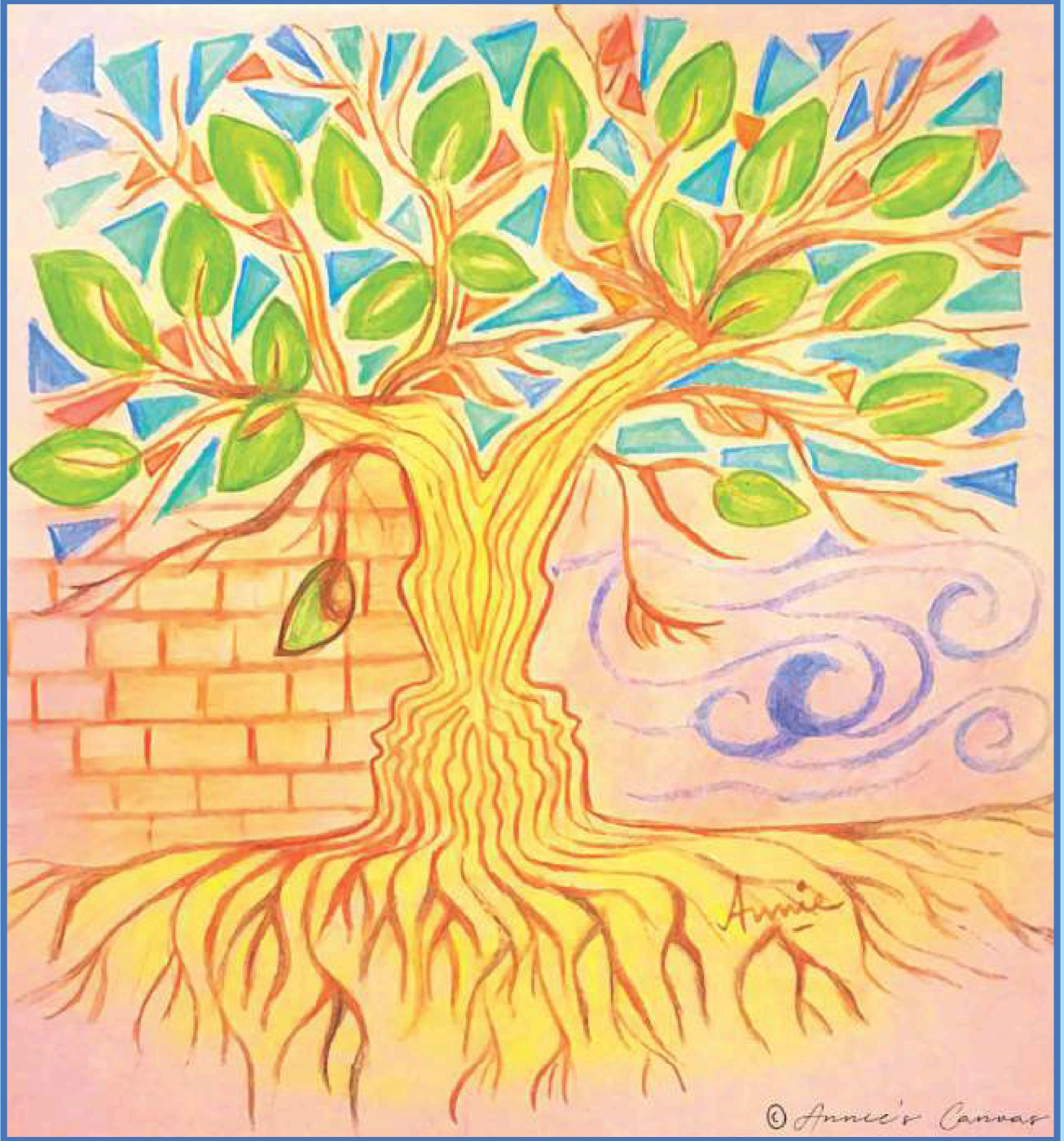




इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPCC-131 मनोविज्ञान का आधार



“शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।”

– इन्दिरा गांधी

“Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances.”

– Indira Gandhi



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPCC-131

eukfoKku dk vkèkkj

I kekft d foKku fo | ki hB
bfnjk xkalkh jk"Vh; eDr fo' ofo | ky;

विशेषज्ञ समिति

प्रो. (सेवानिवृत्त) विमला वीराराघवन
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. एस. करुणानिधि
मनोविज्ञान विभाग
मद्रास विश्वविद्यालय

प्रो. एस.पी. के. जेना
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. आशिमा नेहरा
एडीशनल प्रोफेसर, क्लिनिकल
न्यूरो साइंसेज सेंटर, मनोरोग विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
दिल्ली

डा. अनीता कांत
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
विवेकानन्द महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय

डा. कनिका खंडेलवाल
मनोविज्ञान संकाय
लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर बुमेन
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. स्वाति पात्रा
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

प्रो. सुहास शेटगोवेकर
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

डा. मोनिका मिश्रा
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

डा. स्मिता गुप्ता
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक : डा. मोनिका मिश्रा, सह आचार्य, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

संपादक : डा. मोनिका मिश्रा, सह आचार्य, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

		इकाई लेखक एवं हिंदी अनुवादक
खंड 1 इकाई 1	मनोविज्ञान क्या है? मनोविज्ञान : परिचय	डॉ. मीतू खोसला एवं डॉ. मोनिका मिश्रा हिंदी अनुवादक : डॉ. पी.के. खत्री, एसोसिएट प्रोफेसर, (सेवानिवृत्त) नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 2 इकाई 2 इकाई 3 इकाई 4	प्रत्यक्षीकरण, अधिगम एवं स्मृति संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण अधिगम स्मृति	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली (इकाई-2) हिंदी अनुवादक : डॉ. पी.के. खत्री, एसोसिएट प्रोफेसर, (सेवानिवृत्त) नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ (इकाई-3 और 4) पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 3 इकाई 5 इकाई 6	अभिप्रेरण एवं संवेग अभिप्रेरण संवेग	डॉ. मीतू खोसला एवं प्रो. सुहास शेटगोवेकर प्रो. सुहास शेटगोवेकर एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 4 इकाई 7 इकाई 8	व्यक्तित्व एवं बुद्धि व्यक्तित्व बुद्धि	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : एम. पी. कमल दिल्ली (इकाई - 7); ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली (इकाई - 8) पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 5	प्रयोग संबंधी दिशानिर्देश	डॉ. मोनिका मिश्रा हिंदी अनुवादक : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली; पुनर्वीक्षण : डॉ. मोनिका मिश्रा

मुद्रण प्रस्तुति

श्री मनजीत सिंह
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन), इग्नू, नई दिल्ली

आवरण

आनन्दिता द्विवेदी
इग्नू एलूमनस

चित्रण

तमल बसु, दिल्ली

सितम्बर, 2019

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN : 978-93-89668-00-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली-110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइप सेट- ग्राफिक प्रिंटर्स, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली - 110091

मुद्रण: हाईटेक ग्राफिक्स, डी-4/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

fo"K; oLrq

i st l a

[k.M 1	eukfoKku D; k gS	
इकाई 1	मनोविज्ञान : परिचय	15
[k.M 2	i R; {khdj.k] vf/kxe , oa Lefr	
इकाई 2	संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण	41
इकाई 3	अधिगम	77
इकाई 4	स्मृति	98
[k.M 3	vfHki g.k , oa l Øx	
इकाई 5	अभिप्रेरण	121
इकाई 6	संवेग	143
[k.M 4	0; fDrRo , oa cf)	
इकाई 7	व्यक्तित्व	165
इकाई 8	बुद्धि	190
[k.M 5	i z; ksx l æ/kh fn'kkfunz k	213

eukfoKku dk vkèkkj % i kB; Øe I ærkh funŕk

मनोविज्ञान का आधार, पहला प्रारंभिक व अनिवार्य पाठ्यक्रम है, जो स्नातक की डिग्री के लिए प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जायेगा। यह पाठ्यक्रम कुल छह क्रेडिट का है जिसमें चार क्रेडिट सिद्धांत घटक के लिए तथा दो क्रेडिट प्रयोगात्मक घटक के लिए निश्चित किया गया है। पूरा पाठ्यक्रम पाँच खंडों में विभाजित है। हर खंड में एक खास विषय पर, एक से तीन इकाई में विचार किया गया है। सभी इकाई तार्किक आधार पर क्रमबद्ध की गई हैं, जिससे हर विषय को समझने में आसानी हो। हर इकाई के आरंभ में विषय की भूमि का है जिसमें वर्ण-विषय के बारे में बताया गया है। विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के बाद अंत में संदर्भ-स्रोतों की सूची दी गई है, तथा अन्य संदर्भों का भी उल्लेख किया गया है। सबसे अंत में विशेष रूप से ऑनलाइन संसाधनों की सूची दी गई है, जो शिक्षार्थी इंटरनेट सेवाओं का उपयोग करना चाहते हैं, यह सूची उनके लिए अत्यधिक सहयोगी है। विभिन्न विषयों से सम्बंधित विशेष सूचनाएं भी जोड़ी गई है। शिक्षार्थियों से निवेदन है कि वे पाठ्यक्रम की प्रस्तावना को ध्यानपूर्वक पढ़ें, जिससे उन्हें पूरे विषय को क्रमबद्ध तरीके से समझने में सुविधा हो।

इस पाठ्यक्रम के पाँच खंड तथा आठ इकाइयां आपके समक्ष हैं। इकाइयों को विस्तार से पढ़ने से पहले, प्रस्तावना पर एक नज़र डाल लें, इससे पाठ्यक्रम में शामिल पूरी अध्ययन सामग्री का अध्ययन करने में सहयोग मिलेगा। नीचे इकाई-क्रम तथा विषय-सामग्री का व्याख्या की गई है। हर इकाई के विभिन्न अनुभागों में क्या सम्मिलित है, यह आपको विदित होता रहेगा और उसके आधार पर आप वह सब करते चलिए जो आपसे करने को कहा जाए।

bdkbz dk Øe , oa i ærk

1.0 सीखने का उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अनुभाग

1.2.1 सह-अनुभाग-1

बोध प्रश्न

1.3 अनुभाग (अनुभाग का विषय)

1.3.1 सह-अनुभाग-2

बोध प्रश्न

प्रत्येक अनुभाग तथा सह-अनुभाग का संख्या क्रम तथा उसकी लम्बाई, हर इकाई में अलग-अलग हो सकती है। हर इकाई में चार अंतिम अनुभाग निम्न संख्याक्रम में रखे गये हैं-

- संदर्भ स्रोत एवं अन्य संदर्भ
- आकृतियों के संदर्भ-स्रोत

- ऑनलाइन स्रोत
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

अध्ययन में सुविधा तथा समझने में आसानी के लिए हर इकाई को विभिन्न अनुभागों में बांटा गया है। हर अनुभाग मोटे अक्षरों में लिखित है तथा हर सह-अनुभाग उसकी तुलना में छोटे परन्तु मोटे अक्षरों में लिखित है। सह-अनुभागों के अन्य विभागों का मोटे परन्तु छोटे अक्षरों में उल्लेख है जिससे समझने में आसानी रहे। आइये, अब हर इकाई के हर अनुभाग पर चर्चा करें।

I h[kus dk mÍ\$;

हर इकाई के आरंभ में उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई है। इसका उद्देश्य आपको यह बताना है कि आप पूरी इकाई में विस्तार से क्या पढ़ने वाले हैं।

i Lrkouk

प्रस्तावना-अनुभाग में हम बताते हैं -

- क) वर्तमान इकाई का पहले वाली इकाई से संबंध
- ख) वर्तमान इकाई का वर्ण्य-विषय
- ग) सभी अनुभागों के प्रस्तुतिकरण का क्रम, प्रस्तावना से सारांश तक।

I kjkd k

इस अनुभाग में पूरी इकाई में वर्णित विषय का सार प्रस्तुत किया गया है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थी को विषय में संक्षेप में अवगत करवाना है।

ckDI

कुछ विषय वैचारिक तथा सम्बंधित अवधारणाओं से जुड़े होते हैं। कुछ किसी खास विषय के अध्ययन से सम्बंधित होते हैं। ऐसे विषयों को अलग से रेखांकित करते हुये समझना जरूरी होता है, इसी लिए इन्हें बॉक्स के अंदर रखा जाता है ताकि वे शिक्षार्थी का ध्यान आकर्षित कर सकें। बॉक्स में दी गई सामग्री विषयांतर होते हुये भी विषय को समझने में सहयोगी होती है, (i) इनमें कुछ विषय को समझने में सहयोगी टिप्पणियां हो सकती हैं, (ii) वैज्ञानिक या विचारक के मुख्य कार्य के संदर्भ में जानकारी हो सकती है, जिसकी विषय के साथ-साथ जानकारी महत्व रखती हो, या फिर (iii) किसी केस स्टडी का अध्ययन हो सकती है, जो मुख्य अध्ययन सामग्री में निहित विचार से सम्बंधित है।

fp=

हर इकाई में अध्ययन के विषय को स्पष्ट करने के यथा सम्भव चित्र, आकृतियां, आंकड़े या फोटो दी गई हैं।

ck/k i t u

बोध प्रश्न शीर्षक के अंतर्गत अध्ययन सामग्री के अंत में कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। हर प्रश्न के नीचे उत्तर के लिए खाली जगह छोड़ी गई है।

अ) इसी जगह पर इनके उत्तर लिखे जाने चाहिए।

ब) खाली जगह में आवश्यकता हो तो, आरेख बनाया जा सकता है।

इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए केवल अध्ययन सामग्री को आधार बनायें। हर इकाई को ध्यान से पढ़ें, और अपने नोट्स तैयार करें। इनसे आपको पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देने में आसानी होगी तथा प्राप्त जानकारी की सहायता से आपके सत्र के अंत में होने वाली परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखने में सहायक होंगे।

ed; 'kcn

हर इकाई के अंत में चुनिंदा शब्दों तथा तकनीकी शब्दों के विस्तृत अर्थ दिये गए हैं।

l nHkZ , oa i <us ds l q>kko

हर इकाई के अंत में उन लेखों तथा पुस्तकों आदि की सूची दी गई है जिनका उपयोग लेखक ने इकाई की संरचना तैयार करने में किया है। इससे यह पता चलता है कि अध्ययन सामग्री विश्वस्त सूत्रों से जानकारी लेकर बनाई गई है। इसकी सहायता से आप विषय के विस्तृत अध्ययन के लिए, इन स्रोतों का अध्ययन कर सकते हैं। हर संदर्भ स्रोत में रचना का नाम, इसके लेखक का नाम, प्रकाशन का नाम तथा प्रकाशन वर्ष की जानकारी दी गई है।

अन्य संदर्भों का सूची छात्रों की विषय सम्बंधी जानकारी को ओर बढ़ाने की दृष्टि से दी गई है।

fp=ka dk l nHkZ

विषय का वर्णन करते समय चित्र आकृतियों, चित्रों अथवा आरेखों का सहारा लिया गया है। उनके संदर्भ-स्रोतों की जानकारी हर इकाई में स्पष्ट दी गई है। जो आकृतियां या चित्र ऑनलाइन स्रोतों से लिए गए हैं, उनकी यूनीफॉर्म रिसोर्स लोकेटर (URL), आपकी सहायता हेतु दिया गया है।

vkWykbu l kr

विभिन्न विषयों से सम्बंधित ऑनलाइन स्रोत, हर इकाई के अंत में दिये गए हैं। यदि अध्ययन सामग्री के अलावा आप अन्य सम्बंधित सामग्री के अध्ययन करना चाहते हैं तो, हर विषय के बारे में दी गई वेबसाइट पर जाकर आप उसका अध्ययन कर सकते हैं।

i qjkoykdu i z'u

बोध प्रश्नावली के साथ-साथ हर इकाई में सारांश के बाद दोहराने के लिए प्रश्न दिये गए हैं। इन प्रश्नों के उत्तर तैयार कर आप अध्ययन सामग्री के बारे में अपनी जानकारी का निरीक्षण कर सकते हैं और सत्रांत में होने वाली परीक्षाओं के लिए प्रश्नपत्र या प्रश्नोत्तरी तैयार कर सकते हैं।

J0; , oa n' ; l kexh

कुछ इकाइयों में श्रव्य एवं दृश्य सामग्री, प्रकाशित सामग्री के अतिरिक्त दी जाती है। यह सामग्री विषय के अध्ययन में, अतिरिक्त रूप से सहयोगी होती है।

इसके अलावा, आप इग्नू का एफएम रेडियो चैनल 'ज्ञानवाणी' (105.6 एफएम) सुन सकते हैं, जो नियमित रूप से पूरे देश में प्रसारित किया जाता है। मनोविज्ञान संकाय के विशेषज्ञ किसी विशेष विषय पर जब तब व्याख्यान देते हैं। उनसे फोन या इमेल के द्वारा सम्पर्क करके, इस का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त ज्ञान-दर्शन टी.वी. चैनल पर मनोविज्ञान पर कार्यक्रम आते रहते हैं, उनका लाभ उठा सकते हैं। 'ज्ञानवाणी' एवं 'ज्ञान-दर्शन' की जानकारी www.ignou.ac.in पर प्राप्त

की जा सकती है। ज्ञानधारा, वेबकास्ट के माध्यम से, रेडियो तथा टेलिविजन चैनल से जुड़ सकते हैं। यह सुविधा इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा ज्ञानवाणी तथा ज्ञान दर्शन कार्यक्रमों को प्रसारण के लिए दी जाती है।

i z; ksxkRed ?kVd

मनोविज्ञान का आधार पाठ्यक्रम के लिए प्रयोगात्मक परीक्षा भी ली जाती है। प्रयोगात्मक ज्ञान के लिए सत्र का आयोजन किया जाता है, जिनमें हिस्सा लेना अनिवार्य है। इस सत्र के दौरान सैद्धांतिक घटक के आधार पर प्रयोगों का आयोजन किया गया है। इन प्रयोगों का मूल्यांकन, अध्ययन केंद्र के शैक्षणिक परामर्शदाता करेंगे। अपने अध्ययन केंद्र पर सत्रांत में, मनोविज्ञान पर प्रयोगात्मक परीक्षा देने का प्रावधान है।

l =h; dk; l

पूरी अध्ययन सामग्री के आधार पर सत्रीय कार्य दिये गए हैं। इनमें दिये गये प्रश्नों के उत्तर तैयार करके अध्ययन केंद्र पर जमा करना होता है। सत्रीय कार्य में जो अंक दिये जाते हैं उसका 30% अंतिम लिखित परीक्षा के अंकों में जोड़ दिये जाते हैं। सत्रीय कार्य में दिये गये प्रश्नों के उत्तर देने से पहले सभी इकाइयों तथा अतिरिक्त सामग्री को ध्यान से पढ़िये। सत्रीय कार्य में निहित प्रश्नों के उत्तर देते समय इन निर्देशों को ध्यान में रखें।

- 1) अपना अनुक्रमांक साफ-साफ लिखिए।
- 2) अपने शब्दों में तथा अपने हाथ से उत्तर लिखें।
- 3) साफ-साफ लिखें ताकि आपके द्वारा लिखित उत्तर पूरी तरह समझ में आ सके।
- 4) अपनी उत्तर पुस्तिका के एक ओर पर्याप्त जगह छोड़े, जहां पर परीक्षक आप के उत्तर के बारे में अपनी प्रतिक्रिया लिखित रूप में व्यक्त कर सके।
- 5) हर सत्रीय कार्य को अपने अध्ययन केंद्र पर जमा करने की अंतिम तिथि से पहले जमा कर दें। तिथि आप अपने क्षेत्रीय केन्द्र की वेबसाइट www.ignou.ac.in पर पता कर सकते हैं।

l =kr i jh{kk

अध्ययन सामग्री को पढ़ने व समझने के बाद, एवं श्रव्य व दृश्य कार्यक्रम से जानकारी लेने के बाद, आपको सत्रांत परीक्षा देनी होगी। सत्रांत परीक्षा के लिए उत्तर तैयार करते समय इन निर्देशों का ध्यान रखें।

- 1) प्रश्नों के उत्तर सटीक हो तथा अपने शब्दों में अपने हाथों से लिखे गये हों।
- 2) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

i kB; Øe dh r\$ kjh

अध्ययन सामग्री का पाठ्यक्रम (बीपीसीसी-131) विशेषज्ञों की समिति द्वारा तय किया गया है तथा पाठ्यक्रम तैयार करने वाले दल द्वारा तैयार किया गया है, जिसमें इकाई लेखक, सम्पादक, भाषा सम्पादक तथा पाठ्यक्रम सहयोगी शामिल हैं। विशेषज्ञों की समिति हर इकाई एवं खंडों के पाठ्यक्रम के विषयों तथा सहयोगी विषयों का चयन यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन-च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) का पालन करते हुये किया गया है। इकाइयों के लेखकों को हर इकाई की मुख्य अध्ययन सामग्री तैयार करने में अपनी दक्षता

का प्रमाण दिया है। सामग्री-सम्पादक ने पाठ्यक्रम में शामिल की जाने वाली अध्ययन सामग्री का बारीकी से अध्ययन किया है। उनका पूरा प्रयास रहा है कि पाठ्यक्रम में शामिल की गई अध्ययन सामग्री अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में सक्षम हो तथा सरलता से समझी जा सके।

सम्बंधित अन्य किसी जानकारी के लिए, पाठ्यक्रम संयोजक से सम्पर्क करें:

डा. मोनिका मिश्रा,

कमरा न. 31, ब्लॉक-एफ

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज़,

इग्नू, नई दिल्ली।

E : monikamisra@ignou.ac.in.

P : 011-29572781



ikB; Øe ifjp;

मनोविज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में विद्यार्थियों की अत्यन्त रुचि पाई गयी है। मनोविज्ञान जो कि 100 वर्ष से अधिक पुराना है, सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है। मानव व्यवहार के सूक्ष्मताओं को समझने व वर्णन करने के लिए, आत्मा के अध्ययन से लेकर इसका आधुनिक मनोवैज्ञानिक पद्धति, गहरायी से ज्ञान पैदा करने में सक्षम रहा है। इस विषय ने भारत में जबरदस्त उन्नति की है। 1915 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की पहली स्थापना से, आज मनोविज्ञान भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में एक अलग विभाग के रूप में अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है।

मनोविज्ञान मानसिक कार्यप्रणाली और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। वैज्ञानिक अध्ययन, विश्वसनीय तरीके से व्यावहारिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये किया जाता है। यह मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं से संबंधित प्रश्नों को खोजने व समझने का प्रयास करता है। जैसे कि उदाहरण के लिए प्रत्यक्षण, अधिगम, स्मृति, अभिप्रेरणा, संवेग, व्यक्तित्व, बुद्धि आदि। वैज्ञानिक नियमों ने इस विषय की वृद्धि में योगदान किया है, वर्तमान में मनोविज्ञान विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है, जैसे कि खेलकूद, फोरेंसिक, पर्यावरण, स्वास्थ्य इनमें से कुछ क्षेत्र हैं। मनोविज्ञान स्वयं व दूसरों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन चुका है।

बी.ए. कार्यक्रम का पहला मूल पाठ्यक्रम, मनोविज्ञान का आधार है। यह आपको मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान के क्षेत्र, उत्पत्ति, तरीकों और दृष्टिकोण से परिचय करायेगा। यह आपको मानव व्यवहार के लिए उत्तरदायी प्रकट अथवा अप्रकट प्रक्रियाओं के बारे में भी बतायेगा।

[kM ifjp;

इस पाठ्यक्रम में 5 खंड हैं। **igys** [kM में आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र, आवश्यकता, पद्धति और व्यवहार के अध्ययन करने के तरीकों के बारे में बताता है। **nl jk** [kM मूल मानसिक प्रक्रियाएँ जैसे, प्रत्यक्षण, अधिगम और स्मृति के बारे में बताता है। **rhl jk** [kM संवेग और अभिप्रेरणा के बारे में है। **[kM pkj** व्यक्तित्व और बुद्धि के बारे में चर्चा करता है एवं **[kM ikp** प्रयोगशाला कार्य की विवेचना करता है और इसके क्रियान्वित करने के बारे में बताता है। यह सिद्धांत घटक पर आधारित है।

[kM 1 यह आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र का परिचय देता है। यह खंड आपको यह भी बताता है कि आगे के खंड में क्या विषय-वस्तु होंगी। इसके अन्तर्गत इकाई-1 आता है जो मनोविज्ञान के उद्भव को एक अलग विषय के रूप में बताता है। आगे यह प्रकृति, क्षेत्र और मनोविज्ञान के उपभागों की चर्चा करता है। इस क्षेत्र में किये जाने वाले शोध व अध्ययन वैज्ञानिक होते हैं इसलिए, व्यवहार के अध्ययन में प्रयोग किये जाने वाले मुख्य पद्धतियों की भी चर्चा की जायेगी।

[kM 2 यह भाग प्रत्यक्षण, अधिगम एवं स्मृति जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का परिचय देता है। यह खंड 3 इकाइयों (2, 3, 4) से मिलकर बना है। इकाई-2 संवेदना और प्रत्यक्षीकरण को समाहित करता है और यह इसके स्वभाव, क्षेत्र और सैधान्तिक पद्धति पर ध्यान केन्द्रित करता है। प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम, प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक की चर्चा की जाएगी। यह गहराई व दूरी के प्रत्यक्षण, गति प्रत्यक्षण एवं आकार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की भी विवेचना करेगा। इकाई-3 अधिगम की प्रक्रिया का वर्णन करेगा। अधिगम के प्रकार और अधिगम से संबंधित सिद्धांत की सहायता से सीखने की विवेचना की जाएगी। अंत में

अधिगम की नीतियां जैसे कि कल्पना, पूर्वाभ्यास और संगठन की चर्चा की जाएगी। इकाई-4 स्मृति की प्रक्रिया के बारे में वर्णन करता है। यह स्मृति के स्वभाव, कार्य क्षेत्र, प्रकार और सिद्धांत के बारे में बताता है। यह आपको भूलने के संप्रत्यय का परिचय देता है और स्मृति को बेहतर करने की विधियों पर एक प्रकाश डालता है।

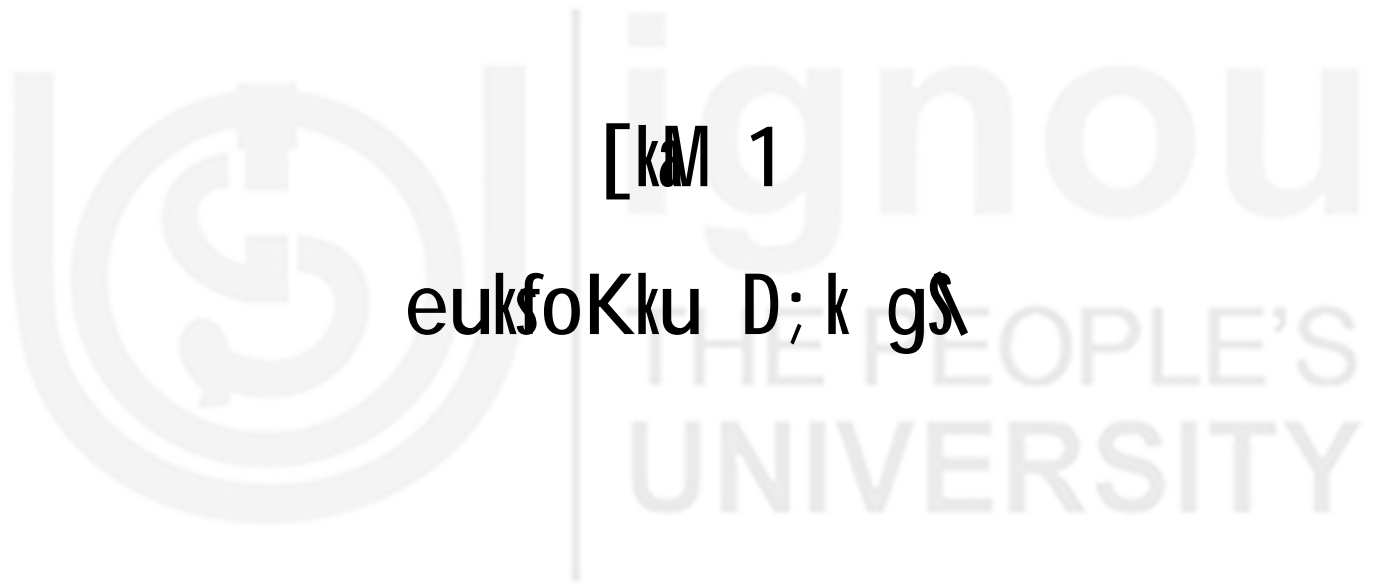
[kM 3] इसके अन्तर्गत 2 इकाई आती हैं, (इकाई 5 और इकाई 6)। इकाई 5 आपको व्यवहार के एक महत्वपूर्ण पहलू का परिचय देता है जो कि अभिप्रेरणा है। यह अभिप्रेरणा के स्वभाव, प्रकार एवं सिद्धान्तों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह इकाई अभिप्रेरणा में संघर्ष एवं कुण्ठा की भूमिका का भी वर्णन करता है। इकाई 6 संवेग के सिद्धान्त, प्रकार एवं स्वभाव के बारे में विवरण प्रस्तुत करता है। संवेग, भाव एवं मनोदशा में अन्तर को भी प्रस्तुत किया जाएगा। अन्त में संवेग को मापने के प्रमुख विधियों की चर्चा की जाएगी।

[kM 4] इसके अन्तर्गत 2 इकाई आती हैं (इकाई 7 और 8)। इकाई 7 व्यक्तित्व के स्वभाव एवं सिद्धान्तों को प्रस्तुत करता है। व्यक्तित्व की माप भी इसी इकाई में प्रस्तुत किए जाएंगी। अन्तिम इकाई बुद्धि के परिचय को प्रस्तुत करेगा। यह बुद्धि से संबंधित प्रमुख सिद्धान्त एवं संप्रत्यय की विवेचना करेगा। यह बुद्धि को मापने के प्रमुख परीक्षण का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।

जैसा कि आपको पता है, इस पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक घटक समाहित हैं। इकाई 8 के अंत में प्रयोगात्मक घटक के दिशा-निर्देश प्रस्तुत किए गए हैं। खंड 5 में (परीक्षण एवं प्रयोग) इसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

[kM 1

eukfoKku D; k gS



bdkbz 1 eukfoKku % ifjp; *

: ij\$kk

- 1.0 सीखने का उद्देश्य
- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 मनोविज्ञान की परिभाषा
- 1.3 मनोविज्ञान: एक विज्ञान
- 1.4 मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास
- 1.5 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र
- 1.6 मनोविज्ञान में शोध
- 1.7 मनोविज्ञान में शोध की विधियाँ
 - 1.7.1 वर्णनात्मक विधि
 - 1.7.2 प्रयोगात्मक विधि
 - 1.7.3 सह-सम्बन्धात्मक विधि
- 1.8 भारत में मनोविज्ञान
- 1.9 सारांश
- 1.10 पुनरावलोकन प्रश्न
- 1.11 मुख्य शब्द
- 1.12 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 1.13 चित्रों की संदर्भ
- 1.14 ऑनलाइन स्रोत

1-0 I h[kus dk mÍ\$;

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे कि :

- मनोविज्ञान को परिभाषित कर सकें;
- मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप समझ सकें अथवा ग्रहण कर सकें;
- मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास को जान सकें;
- मनोविज्ञान के उपक्षेत्रों की व्याख्या कर सकें;
- मनोविज्ञान के अध्ययन की विधियों की विवेचना कर सकें; तथा
- भारत में मनोविज्ञान के विकास को जान सकें।

* डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और डा. मोनिका मिश्रा, असिसटेंट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली।

1-1 iLrkouk

क्या आप जानते हैं कि मनोविज्ञान शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों "साइके" एवं "लोगोस" से लिया गया है? मनोविज्ञान का अर्थ साइके-लोगोस है। साइके का अर्थ आत्मा (जिन्दगी) एवं लोगोस का अर्थ ज्ञान (व्याख्या) अथवा आत्मा का अध्ययन से है। मनोविज्ञान के संस्थापक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों थे और दोनों ने इन दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर को खोजने का प्रयास वैज्ञानिक ढंग से किया, जैसे प्रकृति एवं पालन-पोषण के मध्य भेद, स्वतंत्र इच्छा का अस्तित्व, आदि। मनोविज्ञान शब्द (लेटिन में साइकोलोजिया) सोलहवीं शताब्दी के पश्चात् लेकिन जर्मनी में अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दार्शनिक क्रिश्चियन वुरफ द्वारा प्रचलित हुआ। इस शब्द का अंग्रेजी में सबसे प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करने वाले हरबर्ट स्पेन्सर थे जिन्होंने 1870 में अपने ग्रन्थ 'मनोविज्ञान के सिद्धान्त', में प्रकाशित किया।

मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा की जगह मन शब्द के प्रयोग को प्राथमिकता दी। मनोविज्ञान वह अन्तिम विशेष विज्ञान था जो उन्नीसवीं शताब्दी में दर्शनशास्त्र से अलग हुआ। आज मनोविज्ञान विद्यार्थियों में बहुत अधिक लोकप्रिय है तथा प्रतिदिन के जीवन का एक अंग बन चुका है। अतः इस इकाई में हम मनोविज्ञान की उत्पत्ति के बारे प्रचलित लोकप्रिय तथ्यों तथा सूचनाओं के बारे में बातचीत करेंगे। इस इकाई में मनोविज्ञान क्या है तथा मानव व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिए गए व्यवहारिक उपागमों की व्याख्या की जाएगी। इस इकाई में पुनः मनोविज्ञान के विभिन्न उप क्षेत्रों तथा मनोविज्ञान में शोध करने की विधियों पर चर्चा की जाएगी। जिन अलग क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक काम कर रहे हैं उनकी विवेचना भी की जाएगी। अन्त में भारत में मनोविज्ञान के विकास की भी चर्चा की जाएगी।

1-2 eukfoKku dh i fjHkk"kk

मनोविज्ञान को परिभाषित करना कठिन है क्योंकि इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है अतः इस पर बहुत बड़ी परिचर्चा है कि मनोविज्ञान का क्या और कैसे अध्ययन किया जाना चाहिए। सबसे अधिक प्रचलित परिभाषा यह है कि मनोविज्ञान मानव एवं पशु के व्यवहार का विज्ञान है तथा यह विज्ञान मानव समस्याओं की प्रासंगिकता को सम्मिलित करता है। आज की सबसे अधिक स्वीकृत परिभाषा यह है कि 'eukfoKku 0; ogkj , oa ekufi d i f0; kvka dk foKku g'। अतः इस परिभाषा के तीन भाग हैं। प्रथम, मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि यह क्रमिक रूप से सावधानीपूर्वक नियंत्रित अवस्था में मानव एवं पशु के व्यवहार का निरीक्षण करके आंकड़ों को एकत्रित करता है। अतः मनोविज्ञान में व्यवहार का मापन जितना संभव हो सकता है वह वस्तुनिष्ठ होता है। वह ज्ञान जो प्रयोगात्मक तथा अन्य विधियों के निरीक्षण द्वारा आंकड़ों को एकत्रित करने से प्राप्त किया जाता है, उसका पुनः उपयोग वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में किया जाता है।

द्वितीय, परिभाषा का व्यवहार शब्द क्रिया एवं प्रतिक्रिया का प्रत्यक्ष रूप से समाहित करता है। मानव या पशु जो भी करते हैं वे उनकी सोच होती है और उसे रिकार्ड किया जा सकता है जैसे, क्रिया, चिन्तन, संवेग, अभिवृत्ति, आदि। अन्त में, मानसिक प्रक्रिया शब्द उन आन्तरिक प्रक्रियाओं का उल्लेख करता है जैसे चिन्तन, मनोभाव/भाव, स्मरण, आदि। संक्षेप में, मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो मानव एवं पशु व्यवहार को समझने एवं उसकी भविष्यवाणी करने की खोज करता है (मार्गन, किंग, एवं रॉबिन्सन, 1984)।

ck01 1-1

मनोविज्ञान मन एवं व्यवहार का अध्ययन है। यह एक ऐसी विद्या है जो मानव अनुभवों के सभी पक्षों को अपने में समाविष्ट करता है—मस्तिष्क की क्रियाओं से लेकर शब्द की कार्यवाही, बालक के विकास से लेकर वृद्धों की देखभाल तक। प्रत्येक काल्पनिक वातावरण में वैज्ञानिक शोध केन्द्रों से मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सेवा, व्यवहार को समझना' मनोवैज्ञानिकों का कार्य है।

अमेरिकन साइकॉलोजिरल एशोसिएशन

1-3 eukfoKku% , d foKku

प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों ने यह जानकारी जाननी चाही कि कितने लोग संसार को जानते हैं। इसे 'एपिसटेमॉलोजी' (ज्ञान मीमांसा) के रूप में जाना गया (ग्रीक शब्द 'एपिसटेम' शब्द का अर्थ ज्ञान और 'लोग्स' का अर्थ होता भाषण)। यदि मनोविज्ञान के इतिहास को देखा जाए तो यह पता चलेगा कि मनोविज्ञान प्रारम्भ में शरीर क्रिया विज्ञान, जो जीव विज्ञान (प्राकृतिक विज्ञान) एवं दर्शन शाखा है, जो ज्ञान मीमांसा अथवा ज्ञान के सिद्धान्त के रूप में जानी जाती है, के मिलने से हुआ है। अतः मनोविज्ञान का प्रत्ययात्मक आधार दर्शनशास्त्र में पाया जाता, परन्तु मनोविज्ञान की एक उत्पत्ति एवं स्वतंत्र विज्ञान के रूप में उत्पत्ति जीवविज्ञान द्वारा हुई। प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिकों का यह विश्वास था कि मनोविज्ञान का विकास एक क्रमिक ढाँचे में प्रयोगात्मक प्रयोगशाला में अनुसंधान करके किया जा सकता है। डार्विन (उद्विकासीय सिद्धान्त), न्यूटन (शारीरिक नियमों की प्रत्यात्मकता) एवं मेन्डेलीव (तत्वों की नियतिकालिक सारणी) के योगदान ने मनोवैज्ञानिक शोध के प्रति क्रमिक उपागम को मजबूत किया। अतः प्रारम्भ में मनोविज्ञान भौतिक शाखा, शरीर शाखा एवं मानसिक दर्शनशाखा का मिश्रण था एवं मनोवैज्ञानिक शोध मन शरीर शारीरिक सम्बन्धों तक सीमित था। आगे चलकर इस विद्या के विकास के आधार पर सामाजिक-सांस्कृतिक एवं मानव की के व्यवहार की अंतर्वैयक्तिक समस्याओं को इससे सन्निहित किया गया। यहाँ यह भी जोड़ा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिकों के सैद्धान्तिक सीखने की विद्या उदाहरण के लिए शरीरशास्त्रीय मनोवैज्ञानिक (तंत्रिका एवं ग्रन्थियों में अध्ययन पर विशेष ध्यान) एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक (मानव व्यवहार के सामाजिक पक्षों पर विशेष ध्यान) विशेष महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण हैं कि क्या मनोविज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान अथवा सामाजिक विज्ञान का अंग होना चाहिए। मनोविज्ञान को यदि प्राकृतिक विज्ञान माना जाए तो मुख्य पूर्वानुमान **ikdfrod v}frok** (ह्यस के रूप में जाना जाता है, जहाँ एक सिद्धान्त या तथ्यों का ह्यस होता है या उसका सरलीकृत भाग और सरल हो जाता है), **ipkyu** (वैधता को प्राप्त करना निर्भर करता है एवं वैधता में उन प्रक्रियाओं को जो उन्हें प्राप्त करने के लिए लगाई जाती हैं), **fu; frokn** (सभी क्रियाएं प्राकृतिक नियमों पर आधारित है और उनकी व्याख्या प्राणियों के आनुवंशिक एवं वातावरण के कारणात्मक आधार पर व्यक्त करना चाहिए)। मनोविज्ञान को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में माने जाने के संदर्भ में, शोध कर्ता प्रयोगों का उपयोग करते हैं, वैज्ञानिक निरीक्षण एवं नियंत्रण की सभी सावधानियों को मानते हैं, परिणामों का व्याख्या मात्रात्मक अथवा सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से करते हैं। यह विधि प्रयोगों के डिजाइन अथवा अध्ययन एवं आंकड़ों की व्याख्या के लिए किसी संभावनाओं का प्रयोग नहीं करते हैं।

अतः मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का अध्ययन बहुत सावधानीपूर्वक तथा क्रमिक ढंग से करता है। विज्ञान के अन्य क्षेत्रों की भांति इसका मूल्यांकन भी वस्तुगत होता है। यह एक आनुभविक उपागम है, यह सूचनाओं एवं आंकड़ों को निरीक्षण या प्रयोगों द्वारा एकत्र करता है, आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उस ढाँचे के द्वारा की जाती है जिसको दुबारा देखा जा सके तथा सत्यापित किया जा सके, न कि दूसरों की विवेचना, विश्वास पर आधारित माना जाए।

ckDI 1-2% vkuqkfod mi kxe

सभी विज्ञान आनुभविकता पर आधारित है। जॉन लॉक द्वारा विकसित, यह उपागम बतलाता है कि केवल हमारे सांवेदिक अंग (सुनना, स्वाद, स्पर्श आदि) ही संसार से सूचनाओं को ग्रहण करने का न्यायिक स्रोत है।

जो प्रयोग किए जाते हैं उसके कुछ परिवर्तनों को इस प्रकार नियंत्रित और डिजाइन किया जाता है कि यदि कोई प्रयोग का दुबारा अध्ययन करना चाहे तो आसानी से कर सके। आंकड़ों को बहुत ही क्रमबद्ध एवं मात्रात्मक क्रम से एकत्रित किया जाता है जिससे कि उस क्रम को समझा जा सके जिस क्रम में घटना घटित हुई है। आज के समय में गुणात्मक विश्लेषण ने भी विशेष महत्व प्राप्त किया है। परिणामों का योगदान कुछ सिद्धान्तों को विकसित करने में होता है, जो व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करने में सहायक होते हैं। कभी-कभी सिद्धान्त शोध का मार्गदर्शन करने में भी सहायक होते हैं।

fu; ekUoŝkh , oa Hkkoenyd mi kxe

यह एक ऐसा उपागम है जो मनोवैज्ञानिकों के लक्ष्य, प्रक्रियाओं एवं तथ्यात्मक अभिविन्यास को प्रदर्शित करता है। नियमान्वेषी मनोवैज्ञानिक व्यक्ति पर ध्यान न देकर वे सामान्य नियमों और सिद्धांतों एवं मानसिक तथा व्यवहारिक प्रक्रियाओं को खोजते एवं स्थापित करते हैं। इस उपागम में सम्पूर्ण जनसंख्या में से कुछ संख्या में प्रतिभागियों को एक प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श के रूप चुना जाता है। प्रयोग के द्वारा आंकड़ा एकत्रित करने, उसको विश्लेषित करने के पश्चात् सावधानीपूर्वक अनुमान निकाला जाता है एवं उसे सामान्यीकृत किया जाता है। भावभूलक उपागम का सम्बन्ध एक विशेष घटना या व्यक्ति के समझने से है। यह जानकारी व्यक्ति पर ध्यान देती है क्योंकि यह उपागम इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति में एक विशिष्टता और उसे उसकी उसी स्थिति (विशिष्टता) के आधार पर समझा जाना चाहिए।

1-4 eukfoKku dh mRi fUk , oa fodkl

अब तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मनोविज्ञान को कैसे परिभाषित किया जाए और क्यों मनोविज्ञान को विज्ञान माना जाता है। प्रारम्भ में मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र का एक भाग था। लगभग 138 वर्ष पूर्व यह दर्शनशास्त्र से अलग होकर स्वतंत्र विज्ञान बना। 'मनोविज्ञान का इतिहास छोटा है लेकिन भूतकाल लम्बा है', यह टिप्पणी हरमन एबिंगहास द्वारा सदियों पूर्व दी गई, जो ग्रीक दार्शनिकों पर एक प्रकार का प्रतिबिम्ब है जिन्होंने मानव स्वभाव पर लिखा। अतः ग्रीक दार्शनिकों—सुकरात (428-348 बीसीई), प्लेटो (428-347 बीसीई) एवं अरस्तु (384-322 बीसीई) ने मानव मस्तिष्क की व्याख्या करने एवं 4 बीसीई से पूर्व इसको शारीरिक सम्बन्ध से जोड़ने का प्रयास किया। प्रसिद्ध विचारक सुकरात 'अपने को जानो' ने आत्म एवं व्यक्तिगत प्रतिबिम्ब के महत्व पर बल दिया। आगे चलकर फ्रेंच दार्शनिक रेने डिकार्ट (1596-1650) नेपिनेल ग्रन्थि (शरीर क्रियाविज्ञान) 'आत्मा की जगह' माना, वह जगह जहां सारी सोच (चिन्तन) बनती है।

भौतिक विज्ञान में प्रयोगात्मक विधि की सफलता ने कुछ वैज्ञानिकों मन एवं व्यवहार के अध्ययन प्रयोग के उपयोग के लिए प्रेरित किया। पहला वैज्ञानिक जिसने मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया वह जर्मन शरीर क्रिया विज्ञानी गुस्टव थेमोडो फैंक्नर (1801-1887) थे, जिन्होंने मनोविज्ञान की एक शाखा मनोभौतिकी का अध्ययन किया। पहली प्रयोगशाला 1879 में लिपज़िंग, जर्मनी में विलियम वुण्ट (1832-1920) द्वारा स्थापित की गयी। उस समय काफी उन्नति हुई परन्तु दर्शनशास्त्र से अलग होना बहुत कठिन था। अमेरिकन साइकोलोजिकल एशोशियन 1892 में प्रारम्भ हुआ और हॉल इसके प्रथम अध्यक्ष बने। विलियम जेम्स (1842-1910) ने मनोविज्ञान की पहली पुस्तक लिखी जो 'प्रिन्सपल ऑफ

साइकॉलाजी' के नाम से जानी जाती है। प्रारम्भ में मनोवैज्ञानिकों ने आनुभविक उपागम के आधार पर चिंतन, अवधान प्रतिमा आदि को समझने का प्रयास किया अथवा समझा। मन एवं मानसिक अनुभवों के अध्ययन के लिए प्रयोग किए गए। धीरे-धीरे विभिन्न विचारों के स्कूलों का प्रारम्भ मनोविज्ञान के स्वरूप के अध्ययन के लिए हुआ। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मस्तिष्क न होकर व्यवहार होना चाहिए।

अब, मनोविज्ञान के मुख्य विचार के स्कूलों अथवा मनोविज्ञान के मुख्य संदेश का अवलोकन करेंगे, जिसने इस विद्या के विकास में विशेष योगदान किया है। इन उपागमों का प्रारम्भ परम्परा से आधुनिक एवं व्यवहार को परिभाषित करने के लिए हुआ तथा इन्होंने मनोवैज्ञानिकों के सीखने के आधार पर शोध किया।

- 1) **I j̄pukokn%** इसका मुख्य केंद्र मानव मस्तिष्क की प्रारम्भिक संरचना को विश्लेषित करना है। यह दृष्टिकोण संरचनावाद के नाम से जाना जाता है। यह **fofy; e oqV , oa , MoMz fVpuj** (वुण्ट के विद्यार्थी) से संबंधित हैं। वुण्ट यह मानते थे कि चेतना के विचारों, अनुभव, संवेगों तथा अन्य मुख्य तत्वों में बांटा जा सकता है। किसी के आत्मगत अनुभवी का वस्तुगत आधार पर मापने एवं परीक्षण करने को **oLrqr vlrnz ku** के नाम से जाना जाता है। वस्तुगतता यहाँ बिना पक्षपात के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है और यह मनोविज्ञान में वस्तुगतता एवं मापन लाने का पहला प्रयास है। **, MoMz ch fVpuj 1867-1927%** की रुचि मस्तिष्क की संरचना जानने को हुई। संरचनावाद के आने से चेतना के तत्वों को जानने की रुचि पैदा हुई। प्रारम्भ में संरचनावाद की बहुत मजबूत शुरुआत हुई थी परन्तु 1900 से यह धूमिल हो गई।

ckDI 1-3

fofy; e oqV 1832-1920% % iz; ksxkRed eukfoKku ds fi rk

विलियम मैक्सिमिलियन वुण्ट का जन्म 16 अगस्त, 1832 में नेकराउ, बाडेन, जर्मनी में हुआ था। ये मैक्सिमिलियन वुण्ट एवं उनकी पत्नी मैरी फ्रैंजरक के चौथी सन्तान थे। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कैथोलिक जिमनेजियम में प्रारम्भ की जिसको इन्होंने पसन्द नहीं किया और फेल हो गए। ये हाइडेलबर्ग के दूसरे जिमनेजियम में स्थानांतरित किए गए जहाँ से 1851 में ये स्नातक हुए। वुण्ट ने मेडिसिन में दाखिला लिया और एक खराब शुरुआत के बाद ये अपने अध्ययन में आगे बढ़े। वुण्ट, हरमन वान हेल्सहोन्टज के सहायक बने। इनका मूल कार्य 'प्रिसिपल ऑफ फिजिआलोजिकल साइकॉलोजी,' 1873 एवं 1874 में प्रकाशित हुआ। उनके इस कार्य के सिद्धान्त को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में प्रस्तावित किया एवं पूरे संसार को वैज्ञानिक मनोविज्ञान की ओर प्रेरित किया।



fp= 1-1% fofy; e , e- oqV

स्रोत : <http://www.famouspsychologists.org/>

- 2) **izk; bkn%** यह दृष्टिकोण डार्विन के प्राकृतिक चयन सिद्धान्त से पूरी तरह प्रभावित था (प्रकार्यवादियों का विश्वास था कि यह सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर पूर्णतः प्रतिपादित किया जा सकता है) तथा अध्ययन का केन्द्रबिन्दु व्यवहार एवं मस्तिष्क की क्रियात्मकता है (जैसे अधिगम, स्मरण, समस्या-समाधान एवं अभिप्रेरणा)। **tkW Mhoh 1859-1952%** ने प्रकार्यवाद को विकसित किया, मस्तिष्क एवं व्यवहार क्या करते हैं तथा कैसे एक व्यक्ति, को जटिल एवं नई परिस्थितियों को स्वीकार करने योग्य, बनाते हैं। **fofy; e tfl 1842-1910%** इसके मुख्य सहयोगी इस बात के लिए चिंतित थे कि किस प्रकार मस्तिष्क वास्तविक संसार में लोगों को कार्य करने की आज्ञा देता है। यह उपागम प्रकार्यवाद के नाम से जाना गया। जेम्स ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की।



fp= 1-2% fofy; e tfl

स्रोत : <https://www.britannica.com/>

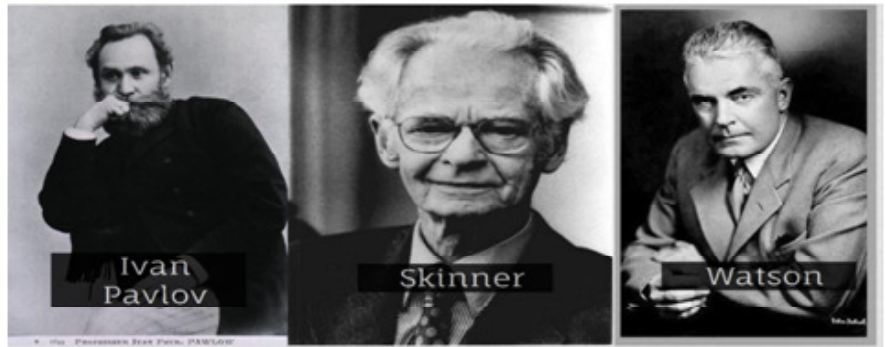
- 3) **xlVkyV** **eukfoKku** % बाद में मनोवैज्ञानिकों ने संवेदना के अध्ययन के लिए प्रयोग किया, यह जानने के लिए की मस्तिष्क किस प्रकार कार्य करता है। 1912 में, **eDI onkbej** (1880-1943), **dVZ dk|dk** (1886-1941) एवं **ok\Qx& dkgjy** (1887-1967) ने जर्मनी में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना की। उन्होंने संवेदनिक अनुभवों के संपूर्ण सिद्धान्तों पर विशेष बल दिया, संवेदना को सम्बन्धों एवं संगठनों से संपूर्ण ढंग से जोड़ा। उन्होंने मानव व्यवहार के मस्तिष्क का अध्ययन संगठनात्मक सिद्धान्तों को लगाकर किया।



fp= 1-3% eDI onkbej] dVZ dk|dk] ok\Qx& dkgjy

स्रोत : <http://slideplayer.it/slide/576962/2/images/>

- 4) **0; ogkjokn** % यह स्कूल **tk\ ch- okVI u** (1879-1958) एवं **cjgl Ymfjd fLduj** (1904-1990) द्वारा प्रारम्भ किया गया, जिन्होंने मस्तिष्क को अध्ययन के लिए स्वीकार नहीं किया और इस बात पर बल दिया कि मनोविज्ञान को केवल व्यवहार के निरीक्षणात्मक स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए। बनावटी प्रक्रियाओं को उपेक्षित करते हुए, उन्होंने व्यवहार के अध्ययन को विशेष महत्व दिया। वाटसन ने अनुबन्धित अनुक्रियाओं, सीखे हुए व्यवहार तथा पशु व्यवहार पर बल दिया। **boku i\kfod ioyk** (1849-1936) एक शरीर क्रिया विज्ञानी, जिनको पाचन के अध्ययन के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। इन्होंने यह निष्कर्ष दिया कि भोजन के अतिरिक्त, दूसरे उद्दीपक लार स्राव करा सकते हैं और इसके आधार पर उन्होंने अनुबन्धित रिफ्लेक्स का विस्तृत अध्ययन किया।



fp= 1-4% boku i\kfod ioyk\] ch-, Q- fLduj] tsch- okVI u

स्रोत : <http://www.emaze.org/>

- 5) **eukfo'y&k.k** % मनोविश्लेषण की स्थापना आस्ट्रीयन मनोचिकित्सक **fl xeM Yk; M** द्वारा (1856-1938) की गई। फ्रायड का मानना था कि तंत्रिका विकृति में अचेतन अभिप्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उन्होंने बच्चों के प्रारम्भिक व्यक्तित्व विकास के अनुभवों पर भी बल दिया। फ्रायड का मानना कि अर्ज एवं प्रेरक

उसके व्यवहार एवं सोच में प्रदर्शित होती है। अचेतन की भूमिका विचार, स्मृतियां एवं अनुभव केन्द्र बिन्दु होते हैं। ये अचेतन विचार एवं स्मृतियां मुख्य बातचीत एवं स्वप्न व्याख्या द्वारा प्रदर्शित किए जाते हैं, यह प्रक्रिया मनोविश्लेषण कहलाती है। फ्रायड, ने **dkyl ; x** (1875-1961), **, yfIMZ , Myj** (1870-1937), **dkju gkllz** (1855-1952) एवं **, fjd , fjdI u** (1902-1994) जैसे मनोवैज्ञानिकों को प्रभावित किया। उनका उपागम मनोगत्यात्मक उपागम के नाम से जाना जाता है जो आगे चलकर नवा फ्रायडियन के नाम से प्रचलित हुआ।



fp= 1-5% fl xeM Yk; M
स्रोत : <https://www.alamy.com/stock-photo>

- 6) **ekuorkoknh I n'kz %** मनोविज्ञान में यह 'तीसरी शक्ति' के रूप में भी जाना जाता है, जिसके अनुसार मानव की योग्यताओं स्वयं अपनी जीवन द्वारा निर्देशित होती है। इसका विशिष्ट लक्षण स्वतंत्र-इच्छा, किसी के भाग्य/नियति को चुनने की स्वतंत्रता, आत्म-संतुष्टि के लिए प्रयास एवं किसी की अपनी क्षमता की उपलब्धि है। इसके मुख्य संस्थापक **vckge eLyks** 1908-1970 एवं **dkyl jkllz** 1902-1987 हैं।



fp= 1-6% dkyL jkllz vlj vckge eLyks

स्रोत : <http://slideplayer.cz/slide>

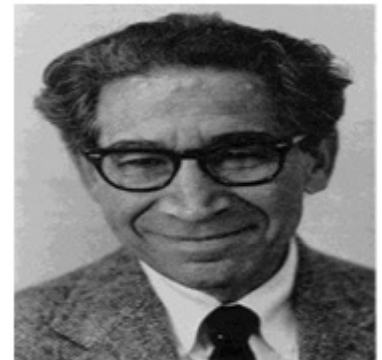
- 7) **I KkukRed I n'kz %** गैस्टाल्ट उपागम एवं कम्प्यूटर के विकास ने उच्च-स्तरीय मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के प्रति रुझान को उद्दीप्त किया। 1960 के दशक में इस संदर्भ में विशिष्टता प्राप्त की। यह संदर्भ मुख्य रूप से स्मरण, बुद्धि, भाषा, समस्या-समाधान एवं निर्णय क्षमता पर केन्द्रित है। इस संदर्भ के मुख्य सहयोगी **gjeu , flcu?kkl** 1850-1909 हैं, जिन्होंने निरर्थक पदों की क्रमिक सूची के सीखने में स्मृति साहचर्य के प्रभाव का अध्ययन किया तथा **I j Ymfjd ckVlyV** 1886-1969 जिन्होंने स्मृति की सामाजिक एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया।



fp= 1-7% gjeu , flcu?kkl

स्रोत : <https://quotesgram.com/hermann-ebbinghaus-quotes>

- 8) **I kekftd I kllfrd I n'kz %** इसका मुख्य केन्द्र व्यवहार को प्रमाणित करने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर है। इस परिप्रेक्ष्य से किया गया शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वातावरण के विभिन्न प्रभावों को, सामाजिक मानकों को, वर्ग विभिन्नता को, मानव जातीय पहचान आदि को दर्शा सकता है। सामाजिक सांस्कृतिक मनोविज्ञान ने यह निष्कर्ष दिया कि पाश्चात्य संस्कृति का मानक मुख्यतः **o\$ fDrdrk*** की तरफ होती है। पूर्व एशियन संस्कृति के मानक की उन्मुखता मुख्यतः सामूहिक अथवा अन्तः आश्रितता पर होती है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक **yhokll QfLVxj** (1957) संज्ञानात्मक असंगति के सिद्धान्त को दिया, जो यह बतलाता है, कि यदि व्यक्ति अस्थिरतापूर्वक अपने विश्वास, अभिवृत्ति एवं मत के अनुसार कार्य करता है तो वह उसके लिए जागरूक होता है।



fp= 1-8% yhokll QfLVxj

स्रोत : <https://hubpages.com/education/>

9) **tfoch; | n'kz %** इसका सम्बन्ध व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के जैविकीय आधार से होता है। तंत्रिका प्रणाली, हार्मोन्स, मस्तिष्क रसायन आदि व्यवहार के जैविकीय कारक और ये शोध के केन्द्र बिन्दु है।

10) **mnfodkl h; | n'kz %** यह संदर्श **pkYI Z MkfoL** के प्राकृतिक चुनाव सिद्धान्त से प्रभावित है। उद्विकास संदर्श सर्वप्रथम डार्विन द्वारा दिया गया जिसमें तीन मुख्य तत्व निहित है – परिवर्तन, वंशागति एवं चयन। आन्तरिक यांत्रिकी अनुकूलन जो प्राकृतिक चयन का उत्पाद है एवं जो पूरे विश्व में मानवों के जीवित रहने एवं पुनरुत्पादित करने में सहायता करता है। उद्विकासीय मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि व्यवहारात्मक पूर्ववृत्ति अथवा प्रवृत्ति जैसे 'आक्रामकता' का निर्धारण जीन्स द्वारा होता है और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होता है। उद्विकासीय संदर्श द्वारा किए गए शोध विभिन्न जातियों के व्यवहारों (आक्रामकता, सीजन, आदि) का परीक्षण करते हैं जो उद्विकास द्वारा प्रभावित हो सकता है। वे सामाजिक सांस्कृतिक कारकों को भी महत्व देते हैं जो वास्तविक व्यवहार को आगे बढ़ा सकते हैं। **MfoM cl** उद्विकासीय मनोविज्ञान के मुख्य संस्थापक हैं।



fp= 1-9% MfoM ,e- cdk
| kr %https://
thebestschools.org/

I kfj .kh 1-1% eukfoKku ds egROI wKz Ldwy

eukfoKku ds Ldwy	ed; fopkj	ed; lFkki d
संरचनावाद	'अन्तर्दर्शन' की सहायता से मनोवैज्ञानिक अनुभव के भौतिक तत्वों अथवा संरचनाओं को पहचानते हैं।	विलियम वुण्ट, एवर्ड बी. टिचनर
प्रकार्यवाद	इसका केन्द्र बिन्दु यह है कि वास्तविक संसार में मस्तिष्क कैसे लोगों को काम करने की अनुमति देता है।	विलियम जेम्स
मनोविश्लेषण	व्यवहार को निर्धारित करने के लिए अचेतन, चिन्तन, अनुभव, स्मृति एवं प्रारम्भिक शैशवावस्था के अनुभवों की भूमिका केन्द्र बिन्दु है।	सिग्मण्ड फ्रॉयड
गेस्टाल्ट	इसका केन्द्र बिन्दु प्रत्यक्षण एवं संवेदना है, संपूर्णता उसके भागों के जोड़ से बड़ा है।	मैक्स वर्दाइमर, कर्ट कोपका, वोल्फगैंग कोहलर
व्यवहारवाद	इसका केन्द्र बिन्दु केवल निरीक्षणात्मक व्यवहार है	इवॉन पेवलॉन, जॉन बी वाटसन, बी.एफ. स्कीनर
मानवतावाद	आत्म-संतुष्टि एवं स्वतंत्र इच्छा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।	अब्राहम मैस्लो एवं कार्ल रॉजर्स
संज्ञानात्मक	इसका सम्बन्ध मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से है जैसे – प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, स्मृति, एवं निर्णय-क्षमता।	हरमन एबिंगहॉस, सर फ्रेडरिक बार्टलेट, जीन पियाजे

सामाजिक सांस्कृतिक	यह इस पर आधारित है कि किस प्रकार व्यक्ति जिस सामाजिक परिस्थितियों एवं संस्कृति में अपने को पाता है, वह उसके व्यवहार एवं सोच को प्रभावित करता है।	फ्रिट्ज हाईडर, लियोन फेस्टिंगर, स्टानली स्कैकटर
जैविकीय	व्यवहार उत्पत्तिमूलक प्रभाव, हार्मोन्स एवं तंत्रिका यांत्रिकी का परिणाम है।	चार्ल्स डार्विन, ई. विल्सन, जे. एम. हारलो
उद्विकासीय	व्यवहार के उद्विकासीय उदगम से सम्बन्धित है।	डेविड एम. बस, डी. सिंह

कृष्ण ८'ु 1

1) मनोविज्ञान की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मनोविज्ञान को विज्ञान क्यों माना जाता है।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्न सारिणी को पूरा करें :

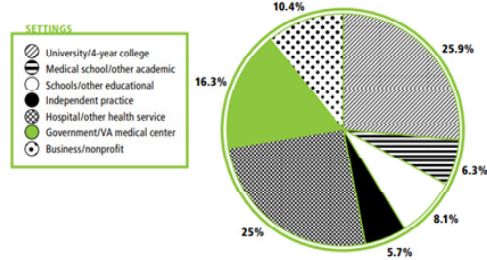
eukfoKku ds Ldwy	ef[; fopkj	ef[; fopkj d
संरचनावाद		
प्रकार्यवाद		
मनोविश्लेषण		
गेस्टाल्ट		
व्यवहारवाद		
मानवतावाद		
संज्ञानात्मक		
सामाजिक-सांस्कृतिक		
जैविकीय		
उद्विकासीय		

1-5 eukfoKku ds mi {ks-

मनोविज्ञान के विभिन्न उपक्षेत्र हैं। मनोविज्ञान मस्तिष्क, व्यवहार, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम तथा कुछ अन्य अध्ययन के वृहद क्षेत्र को सम्मिलित करती है। मनोविज्ञान के उपक्षेत्रों का वर्णन करने से पूर्व मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक तथा मनोचिकित्सीय सामाजिक कार्यकर्ता के मध्य अन्तर जानना आवश्यक है। एक मनोवैज्ञानिक मेडिकल डिग्री न लेकर, मनोविज्ञान में डाक्टरेट डिग्री लेता है। एक विशिष्ट क्षेत्र में शैक्षणिक प्रशिक्षण एवं विशिष्टता लेने के पश्चात् मनोवैज्ञानिक एक व्यवसायिक अथवा कैरियर के परिवेश में कार्य करता है। दूसरी ओर एक मनोचिकित्सक के पास मनोचिकित्सा में मेडिकल डिग्री होती है और जो मनोवैज्ञानिक रूप से विकृत रोगियों का निदान करके दवा देकर उपचार करते हैं। मनोचिकित्सीय सामाजिक कार्यकर्ता का क्षेत्र इससे बहुत सम्बन्धित है जिसके पास इस क्षेत्र में स्नातकोत्तर डिग्री होती है और इनका मुख्य उद्देश्य उन पर्यावरणीय परिस्थितियों में कार्य करना होता है जिनका प्रभाव मनोवैज्ञानिक विकृतियों पर पड़ती है। चित्र 1.10 उन सेटिंग के प्रकारों को दर्शाता है जहाँ मनोवैज्ञानिक कार्य करते हैं।

मनोवैज्ञानिक ने व्यवहार के विभिन्न प्रतिरूपों की जाँच एवं अध्ययन किया की किस प्रकार वाहय एवं आन्तरिक कारक मस्तिष्क एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिक की अलग-अलग रुचियां होती हैं। कुछ सामाजिक मनोविज्ञान में रुचि रखते हैं, जबकि कुछ की रुचि संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में हो सकती है जबकि कुछ की रुचि सामुदायिक एवं विरासात्मक मनोविज्ञान दोनों में होती है।

Where Psychologists Work



Note. The chart represents employment settings for those with recent doctorates in psychology. Totals amount to 97% due to rounding and exclusion of 17 "not specified" responses. Adapted from D. Michalski, J. Kohout, M. Wicherski, & B. Hart (2011), 2009 Doctorate Employment Survey (Table 3).

fp= 1-10 % eukfoKkfud dgk; dk; l djrs g&

स्रोत: <http://www.apa.org/>

उपरोक्त ग्राफ उन लोगों के व्यवसाय सेटिंग को दर्शा रहा है जिन्होंने अभी मनोविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। कुल 97 प्रतिशत प्रक्रियाएं, 17 प्रतिशत प्रतिक्रियाएं स्पष्ट नहीं हैं। डी. मीनाक्षी, जे. मोहूर, एम. विचेरस्की एवं बी. हार्ट (2011), 2009 डाक्टरेट रोजगार सर्वेक्षण (तालिका 3) द्वारा लिया गया। कुछ सेटिंग इस प्रकार से है: विश्वविद्यालय/4 वर्ष कॉलेज; मेडिकल स्कूल/अन्य शैक्षणिक; स्कूल/अन्य शिक्षण; स्वतंत्र प्रैक्टिस/व्यवसाय; अस्पताल/अन्य स्वास्थ्य सेवाएं; सरकारी/वीए मेडिकल केन्द्र; व्यवसाय/लाभ निरपेक्ष।

मनोविज्ञान के विभिन्न अनुप्रयोग एवं कार्य के विभिन्न क्षेत्र हैं। मनोविज्ञान के व्यवसाय-क्षेत्र एवं मुख्य उपक्षेत्र निम्नवत् हैं :

I KkukRed eukfoKku % यह वह क्षेत्र है जहाँ मनोवैज्ञानिक मानव मस्तिष्क चिन्तन, स्मृति एवं सीखने का अध्ययन करता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को उपयोग निर्णय-क्षमता प्रक्रिया तथा हम संसार को कैसे देखते हैं उसके लिए किया जाता है।

u&kfud eukfoKku % यह क्षेत्र मानसिक विकृतियों के मापन, निदान, कारणों एवं इलाज

से सम्बन्धित होता है। अधिकांश नैदानिक मनोवैज्ञानिक राज्य मानसिक अस्पताल अथवा सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल, स्वतंत्र व्यवसाय, शोध कार्य एवं अध्ययन में लगे हुए हैं।

i jke'kz eukfoKku % परामर्श मनोवैज्ञानिक हल्के संवेगात्मक अथवा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रसित व्यक्तियों की सहायता करता है। प्रायः जो लोग व्यवसाय पसन्द अथवा शैक्षणिक प्रोग्राम में क्या विषय चयन करना आवश्यकता महसूस करते हैं वे परामर्श मनोवैज्ञानिकों की सहायता लेते हैं। वे विभिन्न प्रकार के मापनीयों जैसे परीक्षणों एवं साक्षात्कार का प्रयोग उनकी रुचियों, अभिक्षमता, बुद्धि अथवा व्यक्तित्व के गुणों को जानने के लिए करते हैं। कुछ परामर्शदाता परिगठित एवं वैवाहिक समस्याओं के समाधान में भी सहायता करते हैं।

i ; kbj.k eukfoKku % इसका केन्द्र बिन्दु मानव-पर्यावरण अतः सम्बन्धों पर होता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग लोगों एवं उनके संपोषित रहन-सहन के मध्य अन्तःक्रिया को सुधारने में किया जाता है।

Ldiy eukfoKku % मनोविज्ञान के इस मुख्य क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु अधिगम और स्कूल प्रोग्रामों की प्रभावकता है। स्कूल मनोवैज्ञानिक प्रारम्भिक, माध्यमिक स्कूल के बच्चों, अध्यापकों, माता-पिता एवं स्कूल प्रशासन के लिए अथवा साथ कार्य करता है। वे स्कूल में परामर्श एवं निर्देशन देते हैं एवं क्षेत्रों की रुचियों, अभिक्षमता, समायोजन, सीखने की योग्यता, बुद्धि एवं अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों का मापन करते हैं। परीक्षण उन छात्रों के निदान में सहायक होता है जिनमें व्यवहारिक कड़िनाइयां होती हैं। जिन छात्रों को विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है उनको परामर्श भी दिया जाता है।

f'k{kk eukfoKku % अध्यापन का मनोविज्ञान इस क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक उन बहुत सी सामान्य समस्याओं से जुड़े होते हैं जिनका सम्बन्ध तत्काल से नहीं होता है। वे छात्रों की प्रभाविकता को बढ़ाने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम को सिखाने एवं अभिप्रेरणात्मक कौशल के लिए निर्देशित करते हैं।

i z; ksxkRed eukfoKku % इस क्षेत्र के अध्ययन का सम्बन्ध जीवन के विभिन्न तथ्यों जैसे व्यवहार, अधिगम, स्मृति, प्रत्यक्षण इत्यादि का नियंत्रित अवस्था में प्रयोगशाला अथवा क्षेत्र में प्रयोग करने से होता है। वे व्यवहार एवं चिन्तन के आधार को जानने तथा शोध परिणाम के आधार पर कुछ परिमार्जित तकनीकियों को विकसित करते हैं। वे यह खोजने का प्रयास करते हैं कैसे मानसिक प्रक्रियाओं अथवा व्यवहारों का अनुभव होता है एवं कैसे व्यवहारों को निर्देशित किया जा सकता है।

'kjhfØ; k eukfoKku % यह क्षेत्र मानव एवं पशु के मस्तिष्क एवं व्यवहार के मध्य के सम्बन्धों का परीक्षण करता है। शरीरक्रिया मनोवैज्ञानिकों का केन्द्र बिन्दु व्यवहार पर तंत्रिका एवं ग्रन्थियों प्रणालियों के प्रभाव को देखना होता है। वे व्यवहार के जैविकीय आधार के अध्ययन हेतु आक्रामक एवं अनाक्रामक प्रविधियों का उपयोग करते हैं।

I xBukRed eukfoKku % कर्मचारियों के कार्य निष्पादन एवं खुशी को बढ़ाने के लिए कार्य-क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों सिद्धान्तों का अनुप्रयोग किया जाता है। संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक, विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग करके कर्मचारियों को चयनित करके उनको उनके अनुकूल नौकरी के अवसर प्रदान करते हैं। बहुत से संगठन संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक को चयनित करते हैं जिससे वे कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर सकें, उनमें कार्य-संतुष्टि एवं अन्तःवैयक्तिक कौशलों का प्रबन्ध कर सकें, कर्मचारी-नियोक्ता के मध्य अच्छा सम्प्रेषण स्थापित कर सकें। इस क्षेत्र में शोध का सम्बन्ध उन संगठनात्मक सेक्टरों की समस्याओं से है जो कर्मचारियों के कार्य के परिणाम अथवा उनकी अन्य संवेगात्मक समस्याओं से संबंधित है।

I kekftd eukfoKku % सामाजिक मनोविज्ञान लोगों के समूहों, उनका एक दूसरे से सम्बन्ध, उनकी विशेषताओं, अभिवृत्तियों, विश्वास, उनकी निर्णय क्षमता की प्रक्रिया एवं समूह के अन्य सदस्यों के सम्प्रेषण आदि से है। समूह में व्यक्ति के व्यवहार को समझने पर बल दिया जाता है।

fodkl kRed eukfoKku % विकासात्मक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार के आगे जीवन के विस्तार से है, अर्थात् बचपन अवस्था से प्रारम्भ हो, किशोरवस्था के द्वारा वयस्क अवस्था और कैसे विभिन्न विकासात्मक स्तरों पर व्यवहार के परिवर्तित नमूनों के अध्ययन से है। विकासात्मक मनोविज्ञान विशेष रूप से शैशवअवस्था में होने वाले व्यवहारात्मक विकृतियों के परीक्षण का प्रयास करते हैं। वे बच्चों में होने वाले संज्ञानात्मक, प्रत्यक्षात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं भाषा विकास को समझने का प्रयास करते हैं।

I kepkf; d eukfoKku % यह मनोविज्ञान का नया क्षेत्र है जो सामुदायिक समस्याओं, सिद्धान्तों, सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों से सम्बन्धित होते हैं। मनोवैज्ञानिक द्वारा उन लोगों की समस्याओं के समाधान करने में सहायता मिलती है जो एक समुदाय में रहते हैं, एवं अपने पारम्परिक मनोचिकित्सा के स्वरूप, तनाव, बच्चों के पालन-पोषण की प्रैक्टिस, तथा सामाजिक प्रणाली को खोजते हैं।

[ky eukfoKku % यह भी एक नया क्षेत्र है जिसका केन्द्र बिन्दु खेल व्यवहार का मनोवैज्ञानिक पक्ष है। खेल मनोवैज्ञानिक व्यवसायिक टीमों के साथ स्कूल/कालेज स्तर अथवा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर टीम कार्य एवं व्यायाम पर कार्य करके खेल में निष्पादन के स्तर को बढ़ाता है।

LokLF; eukfoKku % यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसका सम्बन्ध शारीरिक प्रक्रियाओं, व्यवहार एवं सामाजिक कारकों के प्रभाव को स्वास्थ्य एवं बीमारी पर देखना है। स्वास्थ्य मनोवैज्ञानिक नैदानिक सेटिंग में कार्य करते हैं, एवं उनका सम्बन्ध उच्च शिक्षण संस्थाओं में शोध एवं अध्यापन से भी होता है।

Okjfl d eukfoKku % यह मनोविज्ञान का नया क्षेत्र है, जो आपराधिक, न्यायिक प्रणाली एवं न्यायिक खोज में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग करता है। न्यायिक मनोवैज्ञानिक पीड़ितों के अधिकारों, अपराधियों के अधिकारों, अपराधियों के लेखाचित्र, नीति निर्धारण तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

ck&k ç' u 2

1) मनोचिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक के मध्य अन्तर बतलाइये।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

2) खेल एवं न्यायिक मनोवैज्ञानिक के कार्यों को परिभाषित कीजिए।

.....
.....

.....
.....
.....

1-6 eukfoKku ea 'kks/k

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि मनोविज्ञान को विज्ञान के रूप में माना जाता है क्योंकि यह वैज्ञानिक उपागम के मुख्य पूर्वानुमानों को पूरा करता है। वैज्ञानिकता का अर्थ यह है कि आंकड़ों के एकत्रित करने एवं व्याख्या करने में वस्तुगत पक्षपात होने की संभावना कम हो जाती है। अतः वैज्ञानिक खोज में मुख्य मान्यताएं निम्न हैं :

- **o.ku %** एक मनोवैज्ञानिक का सम्बन्ध व्यवहार के निरीक्षण से होता है जिसके वर्णन का केन्द्र बिन्दु क्या घटित हो रहा है, कहां घटित हो रहा है, किस के लिए घटित हो रहा है और कैसे घटना घटित हो रही है उसका सम्बन्ध क्या है जिससे वह घटित हो रही है।
- **Li "Vhdj.k vFkok 0; k[; k %** मनोवैज्ञानिक, निरीक्षण के आधार पर घटना के स्पष्टीकरण का प्रयास करता है। अतः उस सिद्धान्त का उद्भव होता है जो तथ्यों को स्पष्ट करता है।
- **Hkfo"; ok.kh %** इसका सम्बन्ध व्यवहार के परिवर्तन अथवा परिमार्जन से होता है।
- **fu; a.k %** यह चरण अवांछित व्यवहार को वांछित व्यवहार की ओर परिमार्जित करने पर ध्यान दिलाता है।

यह आवश्यक नहीं है कि मनोवैज्ञानिक खोज उपरोक्त सभी उपागमों का अनुसरण करे। एक मनोवैज्ञानिक घटनाओं की व्याख्या एवं वर्णन केवल उसी प्रकार कर सकता है जैसे कि एक चिकित्सक (शोधकर्ता) परिमार्जित व्यवहार को नियंत्रित करने में सम्मिलित होता है। अतः अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर शोध का लक्ष्य परिवर्तित हो सकता है। अतः मनोविज्ञान में शोध करने के लिए निम्नलिखित मुख्य चरणों का अनुसरण करना चाहिए।

- 1) **l eL; k %** शोध प्रारम्भ करने का यह पहला चरण है। यदि आप किसी रुचिकर घटना के प्रति जिज्ञासु हैं और जिसकी आप व्याख्या खोजना चाहते हैं, उसके लिए एक प्रश्न बनाइयें। उदाहरणार्थ, एक शोधकर्ता के लिए यह अध्ययन करना रुचिकर होगा कि बच्चों को अधिक समय तक स्क्रीन के सामने (मोबाइल, कम्प्यूटर, टेलीविजन, टैबलेट) रहने से उनकी एकाग्रता एवं स्कूल निष्पादन कम हो जाता है।
- 2) **mi dYi uk@i fj dYi uk, a %** प्रश्न की एक संभावित व्याख्या उपकल्पना के रूप में जानी जाती है। किसी भी वैज्ञानिक खोज का मूल सिद्धान्त उपकल्पना परीक्षण है जो सिद्धान्त उत्पत्ति को आगे बढ़ाता है।
- 3) **mi dYi uk dk i jh(k.k %** उपकल्पना परीक्षण शोध डिजाइन पर निर्भर करता है, उस विधि के आधार पर जिससे शोधकर्ता आंकड़ों को एकत्रित एवं विश्लेषित करके समस्या की या प्रश्न की व्याख्या करता है।
- 4) **0; k[; k , oa fu"d"KZ %** परिणामों को प्राप्त करने के पश्चात्, यह स्पष्ट हो जाता है कि उपकल्पना स्वीकार हुई अथवा अस्वीकार हुई। यदि यह एक मात्रात्मक शोध डिजाइन है, तब आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक विधियों का प्रयोग करना चाहिए। परिवर्त्यों के मध्य सम्बन्ध या समूहों के बीच अन्तर को ज्ञात करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

- 5) lkfj.kke dk iLrfrdj.k % परिणाम के प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे उसकी पुनरावृत्ति हो रही है, यद्यपि पुनरावृत्ति आसान नहीं है। शोध कैसे किया गया, यह क्यों किया गया और उसके क्या परिणाम थे उसके दूसरे शोधकर्ताओं से साझा करना चाहिए जिससे खोज जारी रहे और नई जानकारी शोध प्रश्नों में जुड़ती रहे।

ckDI 1-4 i pjkofUk

अध्ययन की पुनरावृत्ति की जा सकती है, इसकी पुनरावृत्ति यह देखने के लिए की जाती है कि विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए क्या वही परिणाम प्राप्त होते हैं।

1-7 eukfoKku ea 'kks/k dh fof/k; ka

मनोविज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन के विभिन्न उपागम मौजूद हैं। शोध डिजाइन एक ऐसी विधि है जिसका उपयोग शोधकर्ता आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या करने में होता है। यह गुणात्मक, मात्रात्मक अथवा मिश्रित उपागम हो सकता है (इसमें दोनों गुणात्मक एवं मात्रात्मक सम्मिलित होते हैं)। मुख्य रूप से, मनोवैज्ञानिक शोध में तीन प्रकार की विधियों का उपयोग होता है। ये वर्णनात्मक, प्रयोगात्मक एवं सह-सम्बन्धात्मक विधि है।

1-7-1 o.kUkRed fof/k

वर्णनात्मक शोध डिजाइन के तीन मुख्य प्रकार हैं। ये केस अध्ययन, सर्वेक्षण, व्यवस्थित निरीक्षण है।

1-7-1-1 dl v/; ; u

केस अध्ययन प्रतिभागियों के छोटे समूह पर आधारित है। यह एक प्रतिभागी को अथवा छोटे समूह को सन्निहित करता है। इसका मुख्य आधार यह होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व है। यह एक व्यक्ति के व्यवहार एवं संवेगों का विस्तृत लेखा-जोखा देता है। फ्रायड द्वारा केस अध्ययन का उपयोग एक रुचिकर उदाहरण है, जिन्होंने केस अध्ययन विधि का उपयोग अपने मरीजों से सूचना ग्रहण करने में किया जिसने उन्हें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के निष्कर्ष प्राप्त में सहायता पहुँचाई। जीन पियाजे ने भी केस अध्ययन विधि का उपयोग अपने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के महत्व प्राप्त करने में किया। रॉकीच (1964) का 'द थ्री क्रिस्टस ऑफ एपसिलान्टी : ए साइकालोजिकल स्टडी' मनोविदलन के तीन मरीजों का महत्वपूर्ण केस अध्ययन है। केस अध्ययन विधि की सबसे मुख्य कमी यह है कि इसके परिणामों को व्यवहारिक रूप से प्रयुक्त नहीं किया जा सकता, अर्थात् इसको सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। यह विधि बहुत आत्मगत है, अतः आत्मगत पक्षपात पूर्ण है।

1-7-1-2 I oUk.k

सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता अध्ययन किए जाने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में प्रश्न पूछता है। इसे आमने-सामने साक्षात्कार, टेलीफोन साक्षात्कार, इन्टरनेट अथवा प्रश्नावली की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। बहुत सारे प्रतिभागियों को सर्वेक्षण विधि में सम्मिलित किया जा सकता है तथा बहुत सारे प्रश्नों को पूछा जा सकता है। यद्यपि शोधकर्ता को यह निश्चित करना होता है कि प्रतिभागी प्रतिनिधात्मक प्रतिदर्श समूह से लिए गए हैं। (प्रतिदर्श प्रतिभागियों की जनसंख्या के बड़े समूह में से यादृच्छिक क्रम में चयनित किए गए हैं)। सर्वेक्षण विधि की एक कमी यह है कि इसमें प्रतिभागियों द्वारा सही उत्तर नहीं दिया जा सकता है, कि यह उनका सही मत है। ऐसा उन परिस्थितियों में भी घटित हो सकता है जब प्रतिभागी यह सोचता है कि उत्तर सामाजिक रूप वांछित अथवा सही नहीं है।

1-7-1-3 0; ofLFkr fujh{k.k

व्यवहार के अध्ययन की एक महत्वपूर्ण विधि निरीक्षण है। यह आंकड़ों का संकलन अथवा

सूचनाओं को एकत्रण क्रमबद्ध ढंग से करता है। इस विधि में प्रयोगकर्ता स्वतंत्र चर प्रक्षालन नहीं करता है। शोधकर्ता वातावरण में प्राकृतिक रूप प्राप्त होने वाली घटनाओं/व्यवहारों का क्रमबद्ध ढंग से निरीक्षण करता है। कई बार निरीक्षण करने के पश्चात् शोधकर्ता निरीक्षण व्यवहार में संभावित कारणों को समझने का प्रयत्न करता है। शोधकर्ता यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे लोग अपने व्यवहार को परिवर्तित करते हैं और फिर तार्किक कारणों के आधार पर निरीक्षण परिवर्तन की व्याख्या करते हैं। जब व्यवहार के तार्किक कारणों को कम किए जाने के लिए कई निरीक्षणात्मक निगमन किए जाते हैं तब इसे आगमनात्मक तर्क के रूप में जाना जाता है। इसके आधार पर व्यवहार के विभिन्न सिद्धान्त विकसित किए गए। हालाँकि ऐसे बहुत से कारण हैं जो निरीक्षित व्यवहार में बाधा उत्पन्न करते हैं और सापेक्षिक रूप से निगमनात्मक निरीक्षण करना कठिन है। उसी प्रकार जैसे एक प्रयोग जिसमें अत्यधिक नियंत्रित अवस्था में सूचनाएं एकत्रित की जाएँ। क्रमबद्ध निरीक्षण में आंकड़ों को संकलन करने के दूसरे प्रारूप में अनुपूरक सूचनाओं को एकत्रित करने में भी प्रयुक्त किया जाता है। जब मानव व्यवहार का निरीक्षण प्राकृतिक अवस्था में अथवा जहाँ व्यवहार सम्पादित होता है उसे प्राकृतिक निरीक्षण के रूप में जाना जाता है। प्राकृतिक निरीक्षण प्रायः पशु व्यवहार के अध्ययन में प्रयुक्त किया जाता है। इसको मानव व्यवहार में भी प्रयुक्त किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, यदि शोधकर्ता व्यवसायिक केंद्र का अध्ययन करना चाहता है।

1-7-2 i z ksxkRed fof/k

प्रयोगात्मक विधि में उस शोध समस्या निहित है जिसकी खोज किए जाने की आवश्यकता है। यह साहित्य की समीक्षा एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर आधारित होता है, कुछ पूर्वानुमान निरीक्षित घटनाओं के आधार पर बनाए जाते हैं। यह पूर्वानुमान उपकल्पना/परिकल्पना के रूप में जाना जाते हैं, जो घटना का संभावित कथन होता है। वह व्यक्ति जो प्रयोग करता है उसे प्रयोगकर्ता के रूप में जाना जाता है और जिस व्यक्ति या पशु पर प्रयोग किया जाता है, उसे प्रतिभागी के रूप में जाना जाता है। प्रयोगकर्ता कुछ व्यवहारों अथवा घटनाओं को स्थिर रखता है जिसके व्यवहार को प्रभावित होने की संभावना होती है। कुछ स्थितियां होती हैं जो चर के रूप में जानी जाती हैं जो कि एक वस्तु अथवा घटना अथवा स्थिति हो सकती है, जिनके विभिन्न मूल्य होते हैं। ये मात्रात्मक रूप परिवर्तित हो सकते हैं तथा इनका आसानी से मापन किया जा सकता है। परिवर्त्य विभिन्न प्रकार के होते हैं। एक स्वतंत्र परिवर्त्य है जिसको प्रयोगकर्ता द्वारा प्रच्छालित किया जा सकता है तथा स्वतंत्र परिवर्तन के प्रभाव को आरित परिवर्तन पर देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ, यदि समस्या मूड पर तापक्रम के प्रभाव का अध्ययन है, तब तापक्रम स्वतंत्र परिवर्त्य एवं मूड आश्रित परिवर्त्य होगा। किसी विशेष उद्दीपक के लिए व्यक्ति की अनुक्रिया एक आश्रित चर हो सकता है। उद्दीपक एक घटना अथवा वस्तु है जो अनुक्रिया/प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्वतंत्र परिवर्त्य आश्रित परिवर्तनों को प्रभावित करने का कारण है, कुछ चीजों को नियंत्रित करना होता है। केवल कुछ विशिष्ट स्वतंत्र परिवर्त्य परिवर्तित होते हैं बाकी सभी दूसरे कारक जो अनुक्रिया अथवा आश्रित परिवर्त्य को प्रभावित करते हैं। उन्हें नियंत्रित रखा जाता है। कुछ बाह्य कारक होते हैं जो निष्पादन अथवा आश्रित परिवर्त्य (Variable) को प्रभावित कर सकते हैं, अतः उन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसी स्थितियां होती हैं जो परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं और उन्हें नियंत्रित होना चाहिए। परिवर्तन के इन बाह्य स्रोतों को नियंत्रित करने हेतु प्रयोगात्मक डिजाइन का उपयोग किया जाता है। एक डिजाइन नियंत्रित समूह डिजाइन कहलाती है। इसमें नियंत्रित समूह की स्वतंत्र परिवर्त्य नहीं दिया जाता है जब कि प्रयोगात्मक समूह को स्वतंत्र परिवर्त्य मिलता है। इसके पश्चात् नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक

समूहों का जहाँ तक संभव हो, आपस में यह जानने के लिए मिलान कराया जाता है कि क्या दोनों समूहों की अनुक्रियाओं में कोई अन्तर है? यदि अनुक्रिया में अन्तर मिलता है तो यह स्वतंत्र परिवर्त्य को दिये जाने के कारण होता है। नियंत्रित समूह एक आधारभूत लाइन की भांति कार्य करता है जिसके विपरीत प्रयोगात्मक समूह को चेक किया जाता है। विदिन समूह (समूह के साथ) डिजाइन में आधारभूत व्यवहार को स्वतंत्र परिवर्त्य दिये जाने से पूर्व नोट (रिकार्ड) कर लिया जाता है, पुनः स्वतंत्र परिवर्त्य दिये जाने के पश्चात् व्यवहार, नोट (रिकार्ड) किया जाता है। अनुक्रियाओं में यदि कोई परिवर्तन है तो इसे देखने के लिए पूर्व-पश्चात् तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। इस डिजाइन की विशेषता यह है कि प्रत्येक प्रयोज्य स्वयं अपने नियंत्रण को प्रस्तुत करता है, आधारभूत लाइन का व्यवहार जो स्वतंत्रता परिवर्त्य के दिए जाने से पूर्व स्थापित होता है, उसकी तुलना स्वतंत्र परिवर्त्य के दिए जाने के बाद व्यवहार में हुए परिवर्तन से की जा सकती है। स्वतंत्र परिवर्त्य का प्रभाव लम्बे समय तक नहीं होता है, कुछ समय बाद यह गायब हो जाता है। कभी-कभी शोधकर्ता ए-बी-ए डिजाइन में रुचि ले सकता है, जहाँ ए बिना स्वतंत्र परिवर्त्य की स्थिति है और बी स्वतंत्र परिवर्त्य के साथ की स्थिति है। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि निरीक्षित प्रभाव वास्तव में स्वतंत्र परिवर्त्य को दिये जाने के कारण उत्पन्न हुआ है।

एक अच्छे प्रयोग का यह गुण होता है कि इसकी पुनरावृत्ति की जा सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्हीं स्थितियों में उन्हीं परिवर्त्यों के साथ दूसरा प्रयोगकर्ता प्राप्त परिणामों को सुनिश्चित तथा पुनः सुनिश्चित करने के लिए उसकी पुनरावृत्ति अथवा कई बार दोहरा सकता है। इसकी कुछ सीमाएं भी हैं, कभी-कभी प्रयोग प्रतिभागियों के लिए खतरनाक भी हो सकते हैं अतः प्रयोग करते समय कुछ नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखना चाहिए यहाँ तक कि उन पशुओं के लिए जिनका प्रयोग में उपयोग किया जा रहा है। प्रयोगों द्वारा प्राप्त परिणाम की सामान्यीकृत करने में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि प्रयोगों को करने के लिए एक बनावटी स्थिति उत्पन्न की जाती है अतः इनके द्वारा प्राप्त परिणामों को वास्तविक जीवन अथवा प्राकृतिक परिस्थितियों में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। कभी-कभी जिस घटना को मापन का प्रयास किया जा रहा है, प्रयोग उसमें बाधा उत्पन्न कर सकता है, अतः प्रयोग की डिजाइन बनाते समय प्रयोगकर्ता को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

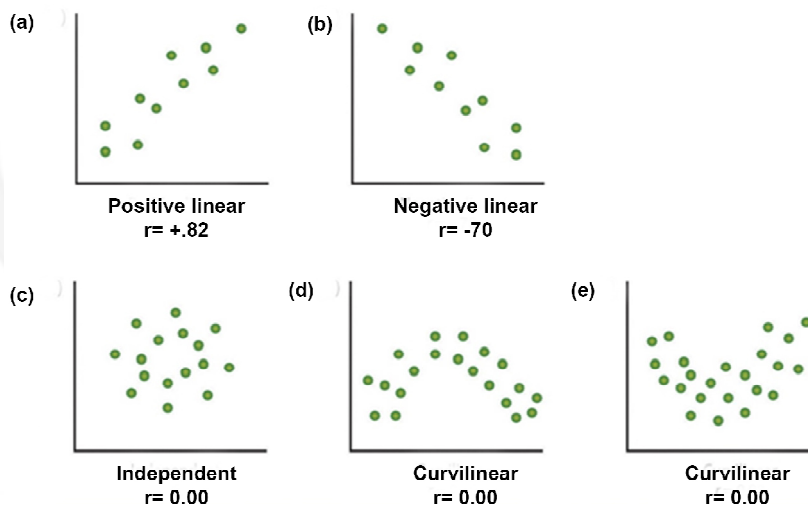
1-7-3 I g-I Ecu/kkRed fof/k

जब दो परिवर्त्यों से एक प्रतिदर्श पर अथवा दो प्रतिदर्शों पर एक परिवर्त्य से रुचि की सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है, उस अवस्था में सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। यह विधि दो स्कोरों के सेटों के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों अथवा सहसम्बन्ध को समझने का प्रयास करता है। उदाहरणार्थ, यदि यह अध्ययन करना चाहते हैं कि क्या लम्बे व्यक्ति छोटे व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं? अथवा हम यह अध्ययन करना चाहते हैं कि क्या बुद्धिमान व्यक्ति खुश भी रहते हैं? यदि हम यह जानने में रुचि रखते हैं कि कैसे एक स्कोर की बढ़ोतरी दूसरे सम्बन्धित स्कोर को बढ़ाएगा अथवा घटाएगा। अथवा दो स्कोरों के सेटों में कोई सह-सम्बन्ध नहीं है। सांख्यिकीय विधि यह तुलना करने में हमारी सहायता करता है कि कैसे एक स्कोर विशेष दिए गए स्कोरों के सेट द्वारा इसके अनुकूलित स्कोर से इसे सम्बन्धित करता है। सह-सम्बन्ध का मूल्य सह-सम्बन्ध गुणांक r द्वारा मापा जाता है। सह-सम्बन्ध गुणांक का मूल्य +1 से -1 के मध्य परिवर्तित होता है। +1 का मूल्य पूर्ण सह-सम्बन्ध को दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि एक का स्थायी स्कोर सही अर्थ में वही है जो इसके साथ-साथ युग्म स्कोर में स्कोरों सेट में दिया गया है। यह एक पूर्ण अथवा उच्च सह-सम्बन्ध है, जो घटित हो सकता है। यद्यपि -1 सह-सम्बन्ध भी ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है लेकिन पुनः यह पूर्णता सही है, लेकिन यह प्रदर्शित करता है कि एक स्कोर के

मूल्य में बढ़ोतरी, उससे सम्बन्धित स्कोर के मूल्य को कम करेगी। अर्थात् एक सेट के स्कोर का उच्च स्कोर दूसरे सेट के कम स्कोर से सम्बन्धित होगा।

जब स्कोरों के सेट के मध्य कोई सह-सम्बन्ध नहीं होता, यह शून्य सह-सम्बन्ध के नाम से जाना जाता है, $r = 0.00$ । इसका अर्थ यह हुआ कि स्कोर के सेट में एक स्कोर का मूल्य दूसरे सेट में स्कोर के मूल्य से सबन्धित नहीं है। अतः यह यहाँ पर किसी प्रकार की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। उदाहरणार्थ, यदि दो सेट के स्कोर के मध्य का सह-सम्बन्ध शून्य है, तो दूसरे सेट के स्कोर के आधार पर उस व्यवहार के घटित होने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। यदि बुद्धि एवं खुशी के मध्य सह-सम्बन्ध शून्य है, तब यह दिखलाता है कि बुद्धिमान लोग खुश रह भी सकते हैं और खुश नहीं भी रह सकते हैं। यदि उनके बीच का सह-सम्बन्ध +1 है, तब इसका अर्थ यह है कि बुद्धि के स्कोर में बढ़ोतरी के साथ उससे संबंधित खुशी के स्कोर में भी बढ़ोतरी होगी। यदि उनके मध्य सह-सम्बन्ध -1 है, तब यह प्रदर्शित करता है कि बुद्धि की बढ़ोतरी के साथ उससे सम्बन्धित खुशी कम होगी।

सह-सम्बन्ध स्कैटरग्राम द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है। एक सेट को स्कोर के मूल्य x- अक्ष पर तथा दूसरे स्कोर के मूल्य को y- अक्ष पर दर्शाते हैं। स्कैटरग्राम में विभिन्न स्कोर फैले होते हैं, और बिन्दु उनकी स्थिति अथवा स्कोर के मूल्य को दोनों मापों से इंगित करते हैं। अतः स्कैटरग्राम द्वारा दो परिवर्त्यों के बीच पाए जाने वाली दिशा अथवा सह-सम्बन्ध की डिग्री को जानना आसान होता है। चित्र दो परिवर्त्यों के मध्य की दिशा एवं डिग्री को प्रदर्शित करता है (चित्र 1.11 देखें)।



fp= 1-11 % nks i fjpOR; kī ds e/; fMxh , oa fn'kk dk | Ecll/k %i ; | L | gl cark xqkkad%

ckDI 1-4% eukoSkfud 'kkk ea ekuo ifrHkfx; ka ds ifr ufrdrk

शोध मनोविज्ञान का एक अनिवार्य अंग है। शोध प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए जाते हैं जो सरकारी एजेंसियों द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का कड़ाई से पालन करते हैं अथवा उन दिशा निर्देशों का पालन करते हैं जो अमेरिकन साइकालोजिकल एसोसिएशन (एपीए) द्वारा प्रस्तावित किए गए हैं। शोधकर्ता को मानकों का कड़ाई से पालन करना चाहिए क्योंकि शोध मानव प्रतिभागियों अथवा प्राणियों पर किए जा रहे हैं। जब मानव प्रतिभागियों पर शोध किए जा रहे हैं तब ध्यान रखना चाहिए :

प्रतिभागियों को कोई नुकसान न हो।

किसी भी समय प्रयोग को छोड़ने की स्वतंत्रता हो।

प्रतिभागी की गोपनीयता को बनाए रखना चाहिए

किसी प्रकार के छल, कपट, धोखे का प्रयोग नहीं होना चाहिए (प्रतिभागी को शोध के स्वरूप के प्रति पूर्णतः जागरूक होना चाहिए)।

सहमति की सूचना (प्रतिभागी को शोध के दौरान अपने अधिकार की जानकारी होनी चाहिए)।

पुनः बतलाना (शोध के पश्चात् प्रतिभागी को शोध में प्रयुक्त विधि, उद्देश्य की व्याख्या करके बतलाना चाहिए)।

प्रत्येक शोध प्रस्ताव को संस्थागत समीक्षा बोर्ड ने समक्ष रखना चाहिए जो शोध प्रस्ताव के लागतव्यय के विश्लेषण की समीक्षा करते हैं।

ck&k ç'u 3

1) वैज्ञानिक शोध के मुख्य पूर्वानुमानों को सूचीबद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'क्रमबद्ध निरीक्षण' को एक मनोवैज्ञानिक विधि के रूप में परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सह-सम्बन्ध का विस्तार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

1-8 Hkkj r ea eukfoKku

भारतीय मनोविज्ञान पश्चिमी सिद्धांतों और अवधारणाओं से काफी प्रभावित था। दलाल (2010) के अनुसार भारतीय शास्त्रों तथा ग्रंथों में निहित ज्ञान की ऐसी अवधारणा नहीं थी जोकि मनोविज्ञान के विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का विकास कर सकें। भारत में मनोविज्ञान का अध्ययन 1916 में सर्वप्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुआ, जिसका पाठ्यक्रम 1905 में सर ब्रोजेन्द्र नाथ सील (कुलपति, कलकत्ता विश्वविद्यालय) द्वारा तैयार किया गया। हारवर्ड के प्रशिक्षित विद्वान छात्र डा. एन.एन. सेनगुप्ता प्रथम प्राध्यापक नियुक्त किए गए। शोध एवं अध्ययन में पूर्वी मॉडल को अपनाया गया। स्वतंत्रता के पश्चात्

मनोवैज्ञानिकों की प्रथम पीढ़ी दर्शनशास्त्र की पृष्ठभूमि के लोगों की थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गिरीन्द्र शेखर बोस जो एक मनोविश्लेषक थे, भारतीय मनोविश्लेषक सोसाइटी के प्रथम अध्यक्ष बने (1922)। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दु चिन्तन को फ्रायडियन प्रत्ययों के साथ मिलाया जिसकी प्रामाणिकता 1921 में उनकी डाक्टरेट की थीसिस 'कान्सेप्ट ऑफ रिप्रेशन' में परिलक्षित होती है। 1924 में मैसूर विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ। उसी वर्ष भारतीय मनोविज्ञान परिषद (इण्डियन सायकालोजिकल एसोसिएशन) की स्थापना हुई। दो वर्षों बाद प्रथम मनोवैज्ञानिक जर्नल (शोध का) 'इण्डियन जर्नल ऑफ सायकालोजी' प्रारम्भ हुआ है जो उस समय के उसके समकक्ष के जर्नल से बहुत आगे था। 1932 में मनोविज्ञान के कार्यक्रम की पढ़ाई अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुई। 1943 में मनोविज्ञान कार्यक्रम मद्रास विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुआ। 1957 में दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर मनोविज्ञान का प्रारम्भ दर्शनशास्त्र एवं मनोविज्ञान के साथ हुआ। 1964 में स्वतंत्र रूप से मनोविज्ञान विभाग की स्थापना स्वर्गीय प्रोफेसर गांगुली के निर्देशन में दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई। 1924 में श्री एम.वी. गोपालस्वामी मैसूर में मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे और वे मनोवैज्ञानिक मापनों में प्रशिक्षित थे। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल हैल्थ एण्ड न्यूरोसाइंस (NIMHANS) का प्रारम्भ 1974 में बैंगलोर में हुआ। 1961 में प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग का प्रारम्भ किया। भारत में मानव व्यवहार के अध्ययन का केन्द्रबिन्दु देशी तकनीकों का उपयोग पाश्चात्य विधियों के प्रभाव के साथ रहा। बहुत से महत्वपूर्ण जर्नल जैसे सायकॉलोजी एण्ड डेवलपिंग सोसायटीस, जर्नल ऑफ इण्डियन एकेडेमी ऑफ एप्लाइड सायकालजी, सायकालोजिकल स्टडीज, इण्डियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल सायकालोजी तथा बहुत से अन्य जर्नल प्रकाशित हुए एवं हो रहे हैं। बहुत से ऐसे परिषदों (एसोशियेशन) का जन्म हुआ जिनके द्वारा मनोवैज्ञानिक के साथ सम्प्रेषण एवं सीखने का न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में मजबूत हुआ, जैसे कि वेब पर इण्डियन सायकालोजिस्ट ग्रुप। भारतीय मनोवैज्ञानिक के प्रमुख मनोवैज्ञानिक समूह है जैसे, इण्डियन एसोसिएशन ऑफ सायकालोजी, इण्डियन एसोशियेशन ऑफ क्लिनिकल सायकालजी, नेशनल एकेडेमी ऑफ सायकॉलोजी, इण्डियन एकेडेमी ऑफ एप्लाइड सायकालोजी आदि हैं। भारतीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में कुछ प्रमुख एवं प्रभावशाली शोधार्थी एवं लेखक हैं जैसे एच.एस अस्थाना, आनन्द परान्जपे, जे.बी. पी सिन्हा, डी. सिन्हा, अमित रंजन बासु, आशीष नन्दी, सुधीर कक्कड़, मानसी कुमार, अजित दलाल, के. रामकृष्ण राव, गिरीवर मिश्रा, उदय पारिक, जनक पांडे, टी.एस. सरस्वती।

1.9 सारांश

हम इस इकाई के अन्त में पहुँच गये हैं, अतः इस इकाई में वर्णित मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में दोहरा ले।

- मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है और इस विज्ञान का उपयोग मानव की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में किया जाता है।
- प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिक दार्शनिक थे परन्तु आगे चलकर इसके अध्ययन में अधिकांश आनुमानिक, वस्तुगत एवं वैज्ञानिक उपागमों को समाहित किया गया।
- मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि यह क्रमबद्ध एवं सावधानीपूर्वक आंकड़ों को एकत्रित करने का प्रयास करता है तथा नियंत्रित प्रयोगात्मक परिस्थितियों में मानव एवं पशुओं के व्यवहार अथवा घटनाओं को भी रिकार्ड करने का प्रयास करता है।
- मनोविज्ञान विभिन्न संदर्शों (पारम्परिक से आधुनिक) से मानव व्यवहार को देखता है (पारम्परिक से आधुनिक) जैसे चेतन का स्वरूप (संरचनावाद), मस्तिष्क कार्यात्मक

(प्रकार्यावाद), मानसिक अनुभव में संगठन का महत्व (गेस्टाल्ट), निरीक्षित अथवा क्षमतानुसार निरीक्षित व्यवहार (व्यवहारवाद), अचेतन प्रेरणा (मनोविश्लेषण)/तंत्रिका एवं ग्रन्थियों के कारणों से व्यवहार में परिवर्तन (जैविकीय) अर्धगम, स्मृति एवं सामाजिक पर्यावरण की समझ (संज्ञान), व्यक्तिगत योग्यता, आत्म-सम्मान एवं उपलब्धि (मानवतावाद) व्यवहार का उद्विकासीय प्रारम्भ (उद्विकासीय) तथा संस्कृति एवं सामाजिक मानकों से प्रभावित व्यवहार (सामाजिक सांस्कृतिक)।

- मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला 1879 में लिपज़िग, जर्मनी में विलियम वुण्ट द्वारा स्थापित की गई। 1883 में यूएसए में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में जी स्टैनले हाल द्वारा स्थापित की गई।
- मनोविज्ञान का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे परामर्श, नैदानिक, संगठनात्मक, न्यायिक, खेल, स्वास्थ्य, स्कूल, आदि में होता है।
- मनोविज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन करने हेतु तीन मुख्य विधियों को प्रयुक्त किया जाता है। ये हैं – प्रयोगात्मक विधि, व्यवस्थित निरीक्षण एवं सह-सम्बन्धात्मक विधि।
- प्रयोगात्मक विधि में एक शोध समस्या निहित होती है जिसके अन्वेषण करने की आवश्यकता होती है। साहित्यिक समीक्षा एवं कुछ सैद्धान्तिक पूर्वानुभावों की पृष्ठभूमि के आधार पर निरीक्षित घटनाओं को तैयार किया जाता है। यह पूर्वानुमान परिकल्पना/उपकल्पना के रूप में जाना जाता है जो कि घटना के संभावित कथन के रूप में होता है।
- व्यवस्थित निरीक्षण विधि में शोधकर्ता स्वतंत्र परिवर्त्य का कोई प्रहस्तन नहीं करता है। वह वातावरण में प्राकृतिक ढंग से घटित होने वाले व्यवहारों/घटनाओं का क्रमबद्ध निरीक्षण करता है। विभिन्न/कई निरीक्षणों को करने के पश्चात् शोधकर्ता निरीक्षित व्यवहार के विश्वसनीय कारणों को समझने का प्रयास करता है।
- जब दो परिवर्त्यों द्वारा एक प्रतिदर्श पर अथवा दो प्रतिदर्शों द्वारा एक परिवर्त्य पर अपनी रुचि की सूचनाओं को एकत्र किया जाता है, तब सह-सम्बन्धात्मक विधि का उपयोग होता है। यह विधि दो सेटों के स्कोर के मध्य स्थापित उन सम्बन्धों अथवा सह-सम्बन्धों को समझने का प्रयास करती है।
- भारत में मनोविज्ञान के शिक्षण का उद्भव पाश्चात्य में मनोविज्ञान के विकास से बहुत अधिक प्रभावित था। सन् 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम मनोविज्ञान के अध्ययन का प्रारम्भ किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में मनोवैज्ञानिकों की प्रथम पीढ़ी में दर्शनशास्त्र की पृष्ठभूमि के लोग थे। बहुत से भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने अपने कठिन शोध एवं प्रभावशाली लेखन द्वारा मनोविज्ञान के विकास में सराहनीय योगदान दिया।

1-10 i qj k o y k d u i t u

- 1) एक वैज्ञानिक व्याख्या जिसका जब तक पूर्ण रूप से परीक्षण नहीं हो जाता वह सुझाव रूप में रहते हैं, और यह कहलाती है एक
 - क) सिद्धान्त
 - ख) नियम
 - ग) परिकल्पना
 - घ) प्रयोग

- 2) जन्म, क्रम एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सम्बन्ध की मात्रा को अनुमानित करने के लिए शोधकर्ता एक अध्ययन करेगा/करेगी है।
- क) प्राकृतिक
ख) सूची
ग) सह-सम्बन्धात्मक
घ) प्रायोगिक/प्रयोगात्मक
- 3) मनोविज्ञान के अध्ययन करने का निम्नलिखित में से एक कारण है -
- क) मानव मस्तिष्क को समझना और यह कैसे कार्य करता है
ख) कैसे दूसरे को प्रहस्तित किया जाए
ग) मानव व्यवहार को पूर्णतः समझना एवं उसकी भविष्यवाणी करना।
घ) जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के उत्तर जानना।
- 4) मनोविज्ञान की प्रथम मूल पुस्तक थी
- क) द प्रिंसिपलस ऑफ सॉयकालोजी
ख) द लॉज ऑफ सॉयकालोजी
ग) द थ्यरिज ऑफ सॉयकालोजी
घ) द नेचर ऑफ सॉयकालोजी
- 5) भारत में सर्वप्रथम मनोविज्ञान का अध्ययन में प्रारम्भ हुआ।
- क) इलाहाबाद विश्वविद्यालय
ख) कलकत्ता विश्वविद्यालय
ग) दिल्ली विश्वविद्यालय
घ) मैसूर विश्वविद्यालय
- 6) मनोविज्ञान को परिभाषित कीजिए एवं इसके मुख्य क्षेत्रों की विवेचना कीजिए।
- 7) मनोविज्ञान वैज्ञानिक विषय है? व्याख्या कीजिए।
- 8) मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास के मुख्य नामधारी व्यक्ति कौन थे?
- 9) अध्ययन की प्रयोगात्मक विधि का वर्णन कीजिए।
- 10) भारत में मनोविज्ञान के विकास को एक शिक्षा के रूप में चिह्नित कीजिए।

1-11 e[; 'kCn

eukfoKku

% यह मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है तथा इस विज्ञान का अनुप्रयोग मानव की विभिन्न समस्याओं को हल करने में होता है।

eukfoKku D; k g&	vkuHkfod fujh{k.k	% यह निरीक्षण तर्क-वितर्क, मतों एवं विश्वासों की जगह निरीक्षण पर आधारित होता है।
	foKku	% यह ज्ञान का एक क्रमबद्ध स्वरूप है जो घटनाओं को सावधानीपूर्वक निरीक्षित एवं मापन द्वारा एकत्रित किया जाता है।
	uHkfud eukfoKku	% यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो असामान्य व्यवहार एवं मानसिक बीमारियों का मापन एवं इलाज करती है।
	ijke'kz eukfoKku	% इसका सम्बन्ध लोगों की कम तीव्रता वाले व्यक्तिगत एवं संवेगात्मक समस्याओं से होता है। जिन लोगों को मनपंसद कैरियर बनाने में अथवा शैक्षणिक प्रोग्राम में विषय चयन में सहायता की आवश्यकता होती है, वे परामर्श मनोवैज्ञानिक की सहायता लेते हैं।
	iz; kxkRed fof/k	% इससे एक परिवर्त्य का प्रहस्तन (Manipulation) निहित होता है यह निर्धारित करने के लिए की एक परिवर्त्य के कारण दूसरे परिवर्त्य में परिवर्तन होता है। अथवा यह निर्धारित करने के लिए की एक परिवर्त्य द्वारा दूसरे परिवर्त्य में परिवर्तन होता है, एक परिवर्त्य को प्रहस्तनित किया जाता है
	fujh{k.k fof/k	% निरीक्षण विधि में एक प्रतिभागी का प्राकृतिक सेटिंग में ध्यान रखना तथा उसके व्यवहार को रिकार्ड करना सम्मिलित होता है जिसे आगे चलकर विश्लेषित किया जा सके।
	I gl Ecl/k fof/k	: यह विधि, दो परिवर्त्यो के मध्य में पाए जाने वाले सम्बन्ध अथवा साहचर्य को समझने का प्रयत्न करती है।

1-12 I nHkz , oa i <us ds I qko

Atkinson, R. L., Atkinson, R. C., Smith, E. E., Bem, D. J., & Nolen Hoeksema, S. (2009). *Atkinson & Hilgard's Introduction to Psychology*. Wadsworth Publishing Company.

Benjamin Jr, L. T. (2007). *A Brief History of Modern Psychology*. Blackwell Publishing.

Ciccarelli, Sandra K., & White, J. Noland. (2018). *Psychology*. Pearson Education Limited.

Chaplin, James P., & Krawiec (1919). *Systems and Theories of Psychology*. Holt, Reinhart and Winston, Inc., USA.

Dalal, A. K. (2014). *A journey back to the roots: Psychology in India. Foundations and applications of Indian Psychology*, 18-39.

Hothersall, D., & Derksen, M. (1984). *History of Psychology*. Philadelphia, PA: Temple University Press.

Kalat, J. W. (2016). *Introduction to Psychology*. Nelson Education.

Leahy, Thomas Hardy. (2017). *A History of Psychology. From Antiquity To Modernity*. Routledge.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (2004). *Introduction to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill.

Mishra, G. & Baron, R. A. (2006). *Psychology: Indian Subcontinent* (5th Edition). New Delhi, Pearson Publication.

Sinha, D. (1994). Origins and development of psychology in India: Outgrowing the alien framework. *International Journal of Psychology*, 29(6), 695-705.

1-13 fp=ka dk I anhkZ

William Wundt: Father of Psychology. Retrieved November 03, 2018 from <http://www.famouspsychologists.org/wilhelm-wundt/>

William James: Retrieved January 4, 2019 from <https://www.britannica.com/biography/William-James>

Max Wertheimer, Kurt Koffka, Wolfgang Kohler. Retrieved January 4, 2019, from [http://slideplayer.it/slide/576962/2/images/40/Max+Wertheimer+\(1880-1943\)+Kurt+Koffka+\(1886-1941\)+Wolfgang+Kohler+\(1887-1967\).jpg](http://slideplayer.it/slide/576962/2/images/40/Max+Wertheimer+(1880-1943)+Kurt+Koffka+(1886-1941)+Wolfgang+Kohler+(1887-1967).jpg)

Ivan Pavlov, B.F. Skinner, J.B Watson. Retrieved on January 4, 2019, from <https://www.emaze.com/@ATZZQQIO/teoras>

Sigmund Freud. Retrieved on January 4, 2019, from <https://www.alamy.com/stock-photo-sigmund-freud-1909-106547773.html>

Abraham Maslow and Carl Rogers. Retrieved January 4, 2019, from <http://slideplayer.cz/slide/2624258/>

Hermann Ebbinghaus. Retrieved January 4, 2019, from <https://quotesgram.com/hermann-ebbinghaus-quotes>

Leon Festinger. Retrieved January 5, 2019, from <https://hubpages.com/education/Applying-Leon-Festingers-Theory-of-Cognitive-Dissonance>

David M. Buss. Retrieved January 5, 2019, from <https://thebestschools.org/features/most-influential-psychologists-world>

Where Psychologists Work? Retrieved November 03, 2018 from <http://www.apa.org/careers/resources/guides/careers.pdf>

1-14 vkWlykbu I kr

- For more on Psychology as a Science, visit
 - <https://cpa.ca/cpaside/UserFiles/Documents/publications/Short.pdf>
 - <https://www.simplypsychology.org/science-psychology.html>
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/6ace/76be6864ce2024c154d5db2dfe190215bbaf.pdf>

eukfoKku D; k g&

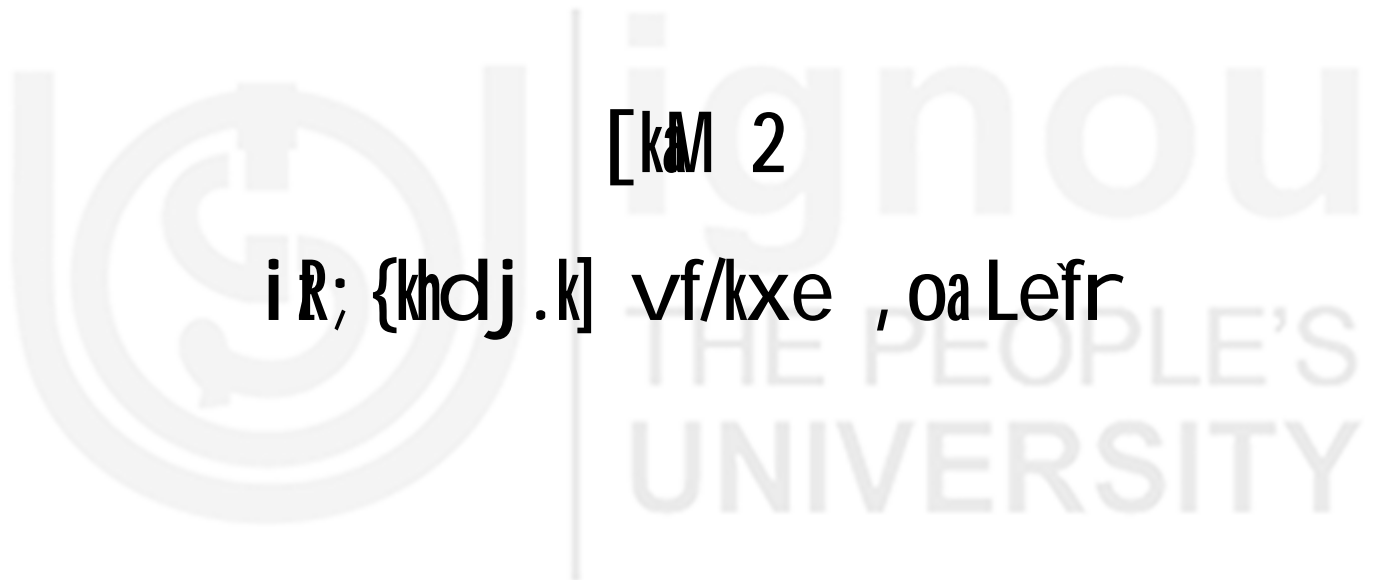
- <https://cfl.in/wp-content/uploads/2015/02/Is-Psychology-a-Science.pdf>
- For more information on Subfields of Psychology, visit
 - <https://www.apa.org/careers/resources/guides/careers.pdf>
 - <https://rabbiablog.com/fields-branches-psychology-definition.pdf>
 - <http://www.eolss.net/sample-chapters/c04/e6-27-01-00.pdf>
 - <https://bsosundergrad.umd.edu/sites/bsosundergrad.umd.edu/files/psychology%20career%20subfields%20chart.pdf>
- For an overview of Research Methods of Psychology, visit
 - <http://lib.oup.com.au/secondary/science/Psychology/3and4/Oxford-Psychology-3-and-4-2e-Ch1-Research-methods-in-psychology.pdf>
 - http://psycho.unideb.hu/munkatarsak/balazs_katalin/modszertan1/Modszertan_Goodwin_kivonat.pdf
 - <http://cogprints.org/2643/1/EOLSSrm.pdf>
- For more on Evolutionary perspective, visit
 - <https://plato.stanford.edu/entries/evolutionary-psychology>
- For an interesting article on Development of Psychology in India, refer to
 - Origins and Development of Psychology in India: Outgrowing the Alien Framework Durganand Sinha. *International Journal of Psychology*. First published: December 1994. <https://doi.org/10.1080/00207599408246559>
 - A journey back to the roots: Psychology in India. <https://www.ipi.org.in/homepages/homepage-ajit.php>

oLr(u"B ç'uka ds mÙkj

1) (c), 2) (c), 3) (a), 4) (a), 5) (b)

[kM 2

i R; {khdj .k] vf/kxe , oa Lefr



: ij\$kk

- 2.0 सीखने का उद्देश्य
- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 संवेदन
 - 2.2.1 मानव ज्ञानेन्द्रिय और शारीरिक ऊर्जा
 - 2.2.2 संवेदन की प्रक्रिया
- 2.3 हमारी ज्ञानेन्द्रियां
 - 2.3.1 दृष्टि
 - 2.3.1.1 दृश्य तीक्ष्णता
 - 2.3.1.2 अंध बिन्दु
 - 2.3.2 श्रवण
 - 2.3.3 सूंघना
 - 2.3.4 स्वाद
 - 2.3.5 त्वचा संवेदना
 - 2.3.6 गति संवेदना
- 2.4 प्रत्यक्षण : स्वरूप और क्षेत्र
- 2.5 प्रत्यक्षण की अवस्था
- 2.6 प्रत्यक्षण का सैद्धांतिक उपागम
- 2.7 प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम: गेस्टाल्ट सिद्धान्त
- 2.8 प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक
 - 2.8.1 प्रक्षणात्मक निर्धारक के रूप में प्रेरणा या आवश्यकता एवं समुच्च का प्रभाव
 - 2.8.2 प्रत्याशा का प्रभाव
 - 2.8.3 संवेग का प्रभाव
 - 2.8.4 उद्दीपन से सम्बन्धित विशेषताओं का प्रभाव
 - 2.8.5 अनुभव का प्रभाव
 - 2.8.6 संस्कृति का प्रभाव
- 2.9 गहराई का प्रत्यक्षण
 - 2.9.1 एकनेत्री संकेत
 - 2.9.1.1 सापेक्ष आकार
 - 2.9.1.2 गठन प्रवणता
 - 2.9.1.3 वायवीय परिदृश्य या धुंध
 - 2.9.1.4 रेखीय परिदृश्य
 - 2.9.1.5 हस्तक्षेप
 - 2.9.1.6 समायोजन
 - 2.9.1.7 गति लम्बन
 - 2.9.2 द्विनेत्रीय संकेत

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू, नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

- 2.10 गति प्रत्यक्षण
- 2.11 आकार प्रत्यक्षण
- 2.12 प्रत्यक्षण में त्रुटियां : भ्रम
- 2.13 सारांश
- 2.14 मुख्य शब्द
- 2.15 पुनरावलोकन प्रश्न
- 2.16 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 2.17 चित्रों का संदर्भ
- 2.18 ऑनलाइन स्रोत

2-0 I h[kus dk mnas ;

इस खंड को पढ़ने के पश्चात्, आप निम्न बातों को जानने में समर्थ होंगे:

- संवेदन और प्रत्यक्षण में अन्तर;
- प्रत्यक्षण का स्वरूप व इसका क्षेत्र;
- प्रत्यक्षण की प्रक्रिया;
- प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक;
- प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम;
- प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता के कुछ सामान्य प्रकार का संक्षेपीकरण; तथा
- प्रत्यक्षणात्मक भ्रम का आधार।

2-1 i Lrkouk

खंड एक में, आपने पढ़ा कि मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन है। अब इस खंड में आप संवेदना और प्रत्यक्षण जो एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया हैं, के बारे में गहराई से अध्ययन करेंगे। संवेदना और प्रत्यक्ष की प्रक्रिया को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कई मनोवैज्ञानिक विभिन्न जानकारी के साथ मिलकर इसके सिद्धान्त का विभिन्न क्षेत्रों जैसे सुरक्षा, रोबोटिक्स, स्वास्थ्य और खेल में प्रयोग करने के लिए कार्य कर रहे हैं। सर्वप्रथम निम्नलिखित उदाहरण को देखिये।

आप एक फूलों के बगीचे में टहल रहे हैं और एक खूबसूरत गुलाब देखते हैं और बोल पड़ते हैं “कितना खूबसूरत है” या आप एक नदी के किनारे टहल रहे हैं और एक मगरमच्छ देखते हैं। इसको पहचानते हैं और इससे बचते हैं। अपने दैनिक जीवन में हम दो तरह के उद्दीपनों के बीच अन्तर करते हैं। हालांकि दुनिया में मनुष्यों, जानवरों, घरों, पौधों आदि को आश्चर्यचकित कर देने वाली चीजों की पूरी सारणी है लेकिन वास्तव में हम इसे कैसे देखते हैं? हम अपने आस-पास की दुनिया को कैसे जानते हैं क्या आपने कभी इसके बारे में सोचा है। यही नहीं तो कोई बात नहीं। इस अध्ययन के अन्त तक आप इन बातों को समझने लगेंगे।

सबसे पहले स्कॉटिश दार्शनिक थामस रीड (1710-1796) ने संवेदना और प्रत्यक्षण के बीच अन्तर स्पष्ट किया। इनके अनुसार संवेदना एक ज्ञानेन्द्रिय क्रिया है जो कि चेतन स्तर पर अनुभव किए जाते हैं। प्रत्यक्षण संवेदना पर निर्भर करता है परन्तु संवेदना से अलग होता है। जिसमें कि प्रत्यक्षणकर्ता अपने वातावरण में उपस्थित वस्तु या घटना के प्रति अवगत रहता है। इस प्रकार संवेदना एक जानकारी होती है जो ज्ञानेन्द्रियों के उत्तेजना के फलस्वरूप उत्पन्न होती है एवं प्रत्यक्ष इन संवेदना का संगठन व इसकी व्याख्या होती है। संवेदनाएं छह प्रकार की होती हैं। देखना (आँख), सुनना (कान), सूँघना (नाक), स्पर्श (त्वचा), स्वाद (जीभ), शारीरिक मुद्रा के अनूकूलन का इन्द्रिय बोध (स्वातंत्र्यग्रहणा एवं गतिबोध)। इस प्रकार हमारे संवेदी अभिग्राहक कई प्रकार की दृष्टि संबंधी, स्पर्श संबंधी, श्रवण-संबंधी और घ्राण संबंधी सूचनायें प्रदान करते हैं। प्रत्येक संवेदना पारगमन की प्रक्रिया को पूरा करता है जिसमें कि उद्दीपन किसी अभिग्राहक कोशिका के द्वारा पहचाना जाता है फिर वह विद्युत तरंगों में परिवर्तित होता है और तत्पश्चात मस्तिष्क में पहुंचता है।

इस प्रकार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम वातावरण में उपस्थित उद्दीपन का अनुभव करते हैं, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के रूप में जाना जाता है। मानव संवेदना शारीरिक ऊर्जा को विशेषीकृत अभिग्राहक के द्वारा वैद्युत संकेत में परिवर्तित करता है। और फिर हमारे मस्तिष्क में विशेष संवेदी तंत्रिकाओं के माध्यम से संचारित होती हैं। जिसके माध्यम से हमें पर्यावरण की सूचना प्राप्त होती है। संवेदना से सम्बन्धित अध्ययन भौतिक वातावरण एवं जीव के बीच प्रारम्भिक सम्पर्क से सम्बन्धित है जो संवेदी उत्तेजना के विभिन्न रूपों और ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा) द्वारा ग्रहण सूचनाओं पर केन्द्रित है। प्रत्यक्षीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें हम सूचनाओं का संगठन व व्याख्या करते हैं। जिससे कि वस्तुओं और उनके संबंध के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सके। इस प्रक्रिया में भौतिक ऊर्जा जैसे कि रोशनी, आवाज की तरंगें, वस्तुओं से निकलने वाली ऊष्मा, सम्बन्धित ज्ञानेन्द्रिय द्वारा एक संकेत में परिवर्तित हो जाती है और मस्तिष्क द्वारा स्थानांतरित और व्याख्या की जाती है। संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के बीच में जो रेखा है वो कुछ हद तक मनमाना या अनियन्त्रित है। संवेदना सीधे अभिग्राहक एवं सूचनाओं के संचारण से सम्बन्धित है वही प्रत्यक्षीकरण इन संवेदनाओं के संगठन एवं एकीकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित है।

संवेदी उद्दीपनों के विभिन्न रूपों (वैद्युत-चुम्बकीय, दबाव, ध्वनि तरंगों) के बीच सम्बन्ध एवं ज्ञानेन्द्रियों (आँख, जीभ, त्वचा, कान) द्वारा उनको एहसास की प्रक्रिया संवेदना है। संवेदना की इस परिभाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित घटक आते हैं।

- i) व्यक्ति के ज्ञानेन्द्रियों का शामिल होना
- ii) भौतिक जगत के उद्दीपनों के प्रति उत्तेजनों की उपस्थिति।
- iii) असंपूर्ण तथ्यों को जोड़ने का ज्ञान होना है।
- iv) प्रारंभिक सम्बन्ध अर्थात् बिना अर्थ के सम्बन्ध।

एक उदाहरण लेते हैं : आपके सामने कोई महकता गुलाब आता है। ज्ञानेन्द्रिय "नाक" द्वारा आप गुलाब की महक को महसूस करते हैं। गुलाब एक उद्दीपन है जो वातावरण में उपस्थित है। आप कुछ महसूस करते हैं जो कि अनिर्मित सामग्री (उद्दीपन) से सम्बन्धित एकत्रित किया हुआ ज्ञान है। गुलाब होने के स्पष्ट ज्ञान के बिना आपका एक शुरुआती सम्बन्ध (महक महसूस करना) बन जाता है। इस स्तर की भावना ही संवेदना है। इसी तरह के कुछ और उदाहरणों की कल्पना कीजिए। संवेदना हमारे आस-पास उपस्थित वस्तुओं का शुरुवाती ज्ञान है।

2-2-1 ekuo Kkuflnz; vkj 'kkjhfd Åtkz

उगते सूरज का खूबसूरत दृश्य, पुरानी मोटर साइकिल शुरू करने पर जोर की आवाज आना, शरीर की त्वचा का प्यारा सा स्पर्श, गर्मी के मौसम की गरमाहट, तेज ठंड, गंदी सी दुर्गंध, मीठा स्वाद, ये सभी हमारे द्वारा महसूस किये जाते हैं। लेकिन कैसे? ये सभी अलग-अलग ज्ञानेन्द्रियों द्वारा महसूस होते हैं। हमारे ज्ञानेन्द्रिय – आँख, कान, त्वचा, नाक और जीभ हमारे अन्दर देखने, सुनने, त्वचा द्वारा महसूस करने, सूँघने और स्वाद लेने की संवेदना उत्पन्न करते हैं। भौतिक ऊर्जा वस्तु से रोशनी, आवाज तरंगे, गरमाहट व स्पर्श के रूप में निकलती है। ये भौतिक ऊर्जा उस वक्त विभिन्न संवेदनाएं उत्पन्न करती हैं जब ये उद्दीपन के रूप में उपस्थित होती हैं। आपने यहाँ दो चीज जानी (i) हमारी इंद्रियाँ जिन में दृष्टि, सुनना, त्वचा बोध, सूँघना एवं स्वाद शामिल है। (ii) वस्तुओं से भौतिक ऊर्जा उत्पन्न होना जैसे प्रकाश, ध्वनि तरंगे, गरमाहट एवं स्पर्श। उद्दीपन के रूप में भौतिक ऊर्जा के अनुपस्थित होने पर सामान्यतः संवेदना उत्पन्न नहीं होती है।

2-2-2 I onuk dh i fØ; k

संवेदना की प्रक्रिया को समझना बड़ा ही आसान है। भौतिक ऊर्जा जैसे कि प्रकाश, ध्वनि तरंगे, गरमाहट जो कि वस्तु से उत्पन्न होती हैं उद्दीपन की तरह कार्य करती हैं जो कि सम्बन्धित ज्ञानेन्द्रिय जैसे आँख, कान और विशिष्ट अभिग्राहक कोशिकाओं द्वारा प्राप्त किया जाता है। ऊर्जा फिर वैद्युत तरंगों में परिवर्तित की जाती है और इस प्रक्रिया को पारगमन (ट्रांसडक्शन) कहा जाता है। Hkkfrd Åtkz dk osj r rjxka ea fof'k"V vflkxkgd dks'kdk }jkk cnyuk Vtd MD'ku ¼kxue½ dgykrk gA

वैद्युत तरंगें; तब तंत्रिका तंतु के साथ ज्ञानेन्द्रियों द्वारा केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में जाती हैं और अन्त में प्रमस्तिष्क वल्कुट के उपयुक्त क्षेत्र में पहुंचती हैं। संवेदना की प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रत्यक्ष अभिग्रहण और सूचनाओं का प्रमस्तिष्क वल्कुट में संचारित होना शामिल है।

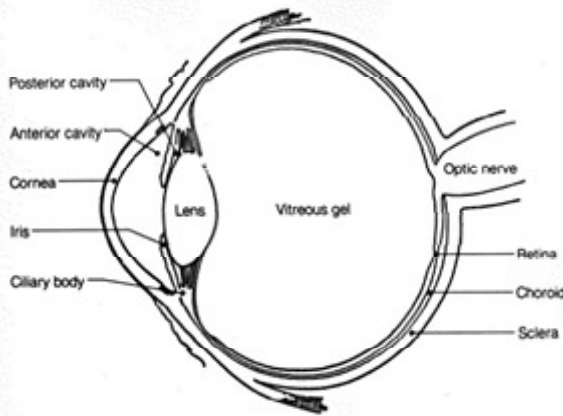
2-3 gekjh Kkuflnz; ka

2-3-1 n"V

हम अपनी आँखों के द्वारा देखते हैं और यह रंगीन टेलीविजन या एक कैमरे की तरह कार्य करता है। भौतिक उद्दीपन अर्थात् प्रकाश छोटे छेद से इसमें प्रवेश करता है और लेंस से होकर गुजरता है जो कि प्रकाश संग्राही तल पर पहुंचता है। दृष्टि का प्रबंधन आँख के खेत पटल, पुतली, आइरिस एवं दृष्टिपटल के माध्यम से किया जाता है और अंत में अभिग्रहण कोशिकाओं द्वारा मस्तिष्क को सूचना भेजी जाती है (चित्र 2.1 देखिये)

तंत्रिका कोशिका जिसे कोन्स कहते हैं के द्वारा रंग की संवेदना प्राप्त होती है। काले एवं सफेद की संवेदना प्रकाश संबंधी तंत्रिका जिसे शलाका कहते हैं के द्वारा होती है। शलाका और शंकु रेटिना पर विपरीत होते हैं जिनकी संख्या क्रमशः 100 मिलियन और 6 मिलियन से अधिक है। ये शलाका एवं शंकु प्रकाश या अन्धकार (अंधेरा) के अनुकूलन में मदद करते हैं। आपको चलचित्र शुरू हो जाने के बाद थियटर जाने का अनुभव होगा। जब थियेटर में अंधेरा होता है और आप सीट या लोगों का स्थान नहीं पाने पर लड़खड़ाते हैं लेकिन कुछ समय बाद आप आस-पास के लोगों या सीट का पता लगाने में सक्षम हो जाते हैं। तेज प्रकाश से मंद प्रकाश में अनुकूलन आँखों में मौजूद शलाका एवं शंकु द्वारा प्रबंधित होता है। शलाका एवं शंकु के रसायन मंद प्रकाश में तेज प्रकाश उत्तेजना की तुलना में अधिक एकाग्रता के साथ तेजी से निर्मित होते हैं। इस प्रकार अंधेरे में अनुकूलन सरल बन जाता है। शलाका की तुलना में शंकु अंधेरे में अधिक अनुकूलित होते हैं लेकिन पूरी तरह से

अनुकूलित होने पर शलाका प्रकाश के प्रति शंकु की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील हो जाता है। शंकु आँख के बीचों बीच होता है और शलाका रेटिना के किनारे पर होते हैं। बहुत अंधेरे में यदि आप एक मंद प्रकाश को वस्तु से दूर देखना चाहते हैं उस पर नहीं तो आप मंद प्रकाश को अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे। जब आप अंधेरे में वस्तु से दूर देखते हैं तो रेटिना के किनारे स्थिर शलाका अधिक सक्रिय हो जाते हैं व बेहतर दृश्यता प्रदान करती है। इस प्रक्रिया को सिनेमाहाल में अपनाएँ। जब चलचित्र चल रही हो और आप मार्ग पर मंद प्रकाश के साथ दरवाजे पर जाना चाहते हों। आपके पास उस वक्त रास्ते की बेहतर दृश्यता होगी जब आप मंद प्रकाश बिंदु को नहीं बल्कि उससे दूर देखते हैं। ऐसा कहा जाता है कि स्पष्ट अन्धेरी रात में 30 मील की दूरी पर मोमबती की लौ देखी जा सकती है क्योंकि रेटिना की छड़े (शलाका) दूर की छवि के कारण अधिक सक्रिय हो जाती हैं।



fp= 2-1% vk[k dk fp=

2-3-1-1 n' ; rh{k.rk

आपने कुछ लोगों को पढ़ते समय या दूर की चीजों को देखते समय या दोनों की स्थितियों में चश्मा लगाते हुए देखा होगा। वे लोग दृष्टि के क्षेत्र में विस्तार से भेदभाव करने के लायक नहीं होते हैं। अर्थात् वे स्पष्ट व बारीक रूप में या वस्तुओं को देख पाने में समर्थ नहीं होते हैं।

यह स्थिति व्यक्ति की आँख के गोले की आकृति से काफी प्रभावित होती है। जब व्यक्ति के आँख के गोले काफी बड़े होते हैं तो आँख की ताल, आकृति को रेटिना के सामने बनाती है, सीधे उस पर नहीं बनाती। इस मामले में, निकट की वस्तु के लिए दृष्टि साफ होती है लेकिन दूर की वस्तु धुंधली दिखाई देती है। इस घटना को निकट दृष्टिदोष कहा जाता है। जब आँख के गोले बहुत छोटे होते हैं तो ताल, आकृति को रेटिना के पीछे बनाती है परिणामस्वरूप दूर की वस्तु स्पष्ट नजर आती है लेकिन पास की वस्तु अस्पष्ट हो जाती है इस स्थिति को दूरदृष्टि दोष कहते हैं। निकट दृष्टि दोष या दूर दृष्टिदोष, दृष्टि के क्षेत्र में वस्तु को पृथक न कर पाने इसके उदाहरण हैं। दृष्टि के क्षेत्र में सही तरीके से भेदभाव अंतर करने की क्षमता को दृश्य तीक्ष्णता के रूप में जाना जाता है। उम्र बढ़ने और दृश्य तीक्ष्णता के बीच एक सम्बन्ध देखा जा सकता है। ज्यादातर मामलों में जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है दृश्य तीक्ष्णता कम होती जाती है।

2-3-1-2 vk LFky

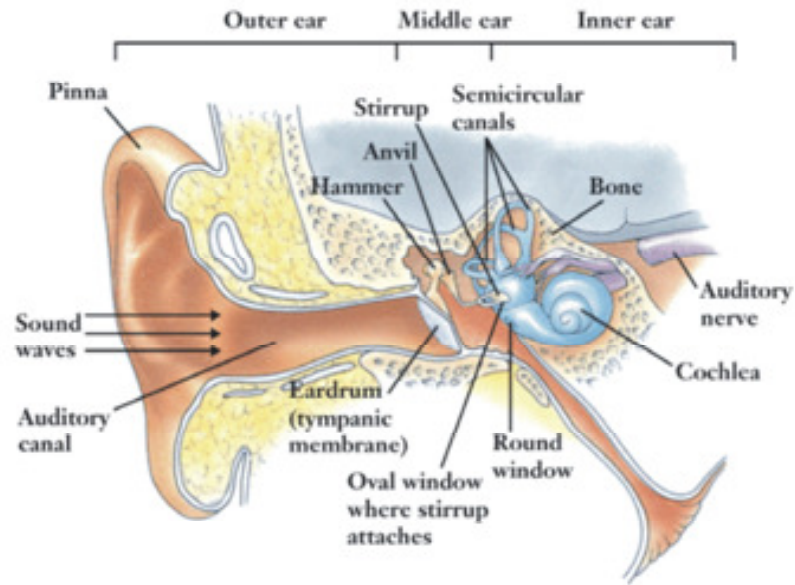
रेटिना की वह जगह जहां आँख की नसों को आंशिक तंत्रिका (दक् तंत्रिका) के रूप में परिवर्तित किया जाता है उसे अन्ध बिन्दु कहा जाता है। अन्ध बिन्दु में कोई दृश्य तीक्ष्णता नहीं होती है। ये दक् तंत्रिका आँख के गोले की पिछली दीवार से आँखों को मस्तिष्क से

जोड़ते हैं। लोग अपने सिर को हिलाकर या अनजाने में दूसरी आँख का प्रयोग करके अंध स्थल के प्रभावों की भरपाई करते हैं। अब आप समझ गए होंगे कि किस तरह से हमारे रोजमर्रा के जीवन में दृश्य की संवेदना दृश्य तीक्ष्णता के साथ होती है।

2-3-2 Jo.k

कान के द्वारा श्रवण की संवेदना होती है। आपके पास दो तरफ दो कान हैं जो बाहरी दुनिया से ध्वनि का पता लगाते हैं। ध्वनि स्रोत कंपन या आंदोलनों (हिलने डुलने) के द्वारा हवा के दबाव में परिवर्तन पैदा करते हैं। यह कानों के द्वारा सुना व धारण किया जाता है। किसी भी आवाज की तीन मुख्य विशेषताएं होती हैं – चढ़ाव या उतराव, आवाज की ऊँचाई और लय/ध्वनि-स्वरूप। आवाज की निम्न या उच्च गुणवत्ता तरंगों के कंपन की आवृत्ति से निर्धारित होती है जितनी तेज कंपन होगी उतनी तेज पिच होगी। आवाज की ऊँचाई ध्वनि तरंगों का विस्तार – विस्तार और संकुचन है। जब आप टी.वी. की आवाज बढ़ाते हैं इसलिए कम्पन के आयाम को बढ़ाते हैं इसलिए ध्वनि तेज हो जाती है।

लय ध्वनि की वह गुणवत्ता है जो एक विशेष ध्वनि स्रोत से आती है। उदाहरण के लिए शहनाई पर बजाया जाने वाला एक स्वर, पियानों पर बजाए जाने के समान नहीं होगा। इस विभिन्नता को लय के रूप में जाना जाता है। इस तरह आवाज का चढ़ाव उतार व ऊँचाई श्रवण और आवृत्ति की विशेषता है। आवाज का विस्तार ध्वनि तरंगों की विशेषताएँ हैं। एक कान में तीन भाग होते हैं – बाहरी, मध्य और भीतरी, जो सुनने की क्रिया में मदद करते हैं (चित्र 2.2 देखें)।



fp= 2-2% dku dh I jpk

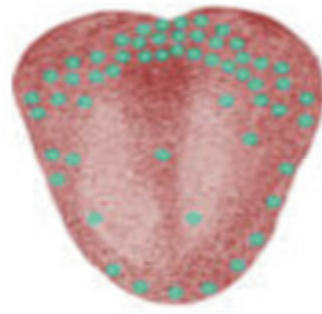
2-3-3 I kkk

पाँच इंद्रियों-दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद और त्वचा हमें हमारे शरीर के करीब की वस्तुओं और घटनाओं के बारे में बताती हैं। दृष्टि, श्रवण और गंध संग्राहक प्रणालियाँ हैं जो एक दूरी पर उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रिया करके हमारी दुनिया को बढ़ाती हैं इनमें से कई मायने में सूँघना सबसे प्राथमिक है। सूँघने की संवेदना, आप नाम में मौजूद अभिग्राहक कोशिकाओं की उत्तेजना से प्राप्त करते हैं। गंध हवा में मौजूद रसायनों के बारे में जानकारी प्रदान करती है जो हमारे नासा छिद्र के शीर्ष पर स्थित अभिग्राहक को उत्तेजित करती है। मानव में केवल

50 मिलियन घ्राण संबंधी अभिग्राहक होते हैं जबकि कुत्तों में 200 मिलियन से अधिक ऐसे अभिग्राहक होते हैं, इसीलिए कुत्ते सूंघने में अधिक संवेदनशील होते हैं। और इसी कारण इन्हें पुलिस विभाग में अपराध और अपराधियों का पता लगाने के लिए सैन्य दल में डाल दिया जाता है। हमारे घ्राण अभिग्राहक की संवेदनशीलता उत्तेजना के एक स्तर तक सीमित होती है। कार्लसन (1998) के अनुसार मानव घ्राण अभिग्राहक केवल आणविक भार के साथ पदार्थ को ही पहचान सकते हैं – आणविक भार – एक गंधयुक्त अणु में सभी परमाणुओं के परमाणु भार का योग 15 से 300 के बीच होता है। यही कारण है कि आप मिश्रित पेय में मौजूद शराब को 46 के आणविक भार के साथ सूंघ सकते हैं लेकिन एक चम्मच चीनी को 342 के आणविक भार के साथ नहीं सूंघ सकते हैं। मनुष्य में गंध की अनुभूति, कई मायनों में, अन्य इंद्रियों की तुलना में सबसे साधारण प्राथमिक है लेकिन अन्य प्रजातियों में, घ्राण अधिक प्रभावकारी है। कुछ जानवर फेरोमोन्स नामक विशेष रसायनिक पदार्थ का स्राव करते हैं। जो अपने जैसे अन्य सदस्यों में विशेष प्रतिक्रिया को सक्रिय करते हैं। कुछ मामलों में घ्राण, संचार के मुख्य रूप में कार्य करता है। घ्राण संवेदना से सम्बन्धित वैयक्तिक भिन्नता मनुष्यों में पाई जाती है क्योंकि उनमें उद्दीपनों के प्रति घ्राण अभिग्राहक की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

2-3-4 Loin

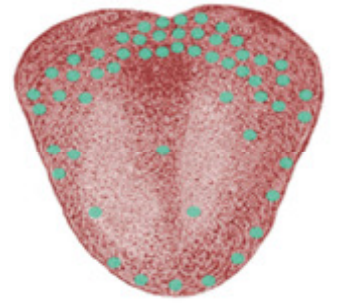
स्वाद की संवेदना सूंघने के साथ जुड़ी हुई है। स्वाद मुख्य रूप से जीभ की ऊपरी सतह व किनारे पर बिखरे हुए स्वाद कलिका (Bud) पर निर्भर करता है। प्रत्येक स्वाद कलिका में कई अभिग्राहक कोशिकाएँ होती हैं। मनुष्य के पास लगभग 10000 स्वाद कलिकाएँ होती हैं। इसके विपरीत मुर्गी में केवल 24 और सबसे ज्यादा स्वाद कलिका कैटफिश में होती है जिसकी संख्या 175,000 है जो कि पूरे शरीर में फैली होती है। आप अपने अनुभव के आधार पर सोच रहे होंगे कि आप बहुत सारे स्वादों को भोजन में से अलग कर सकते हैं। लेकिन यह सच नहीं है। आपके पास केवल चार मूल स्वाद होते हैं – मीठा, नमकीन, खट्टा और कड़वा। लेकिन आपको ऐसा क्यों लगता है कि आप इन चार की तुलना में कहीं अधिक स्वादों को अलग कर सकते हैं? इसका कारण यह है कि भोजन करते समय आप केवल भोजन के स्वाद के बारे में नहीं जानते बल्कि इसकी गंध, इसकी बनावट, इनका तापमान, यह आपके जीभ और मुँह पर दबाव डालता है और हमें कई और संवेदनाओं का एहसास कराते हैं। लेकिन स्वाद की मूल संवेदना स्वाद कलिका पर ही निर्भर करती है। सामान्यतः नमक की संवेदना जीभ की नोक और किनारे पर सबसे अधिक होती है। जीभ के किनारे से खट्टे स्वाद का पता चलता है जीभ के पीछे कड़वे का। यह दृष्टिकोण व्यापक रूप से इस परिकल्पना पर आधारित होता है कि इन प्राथमिक स्वाद गुणों में से प्रत्येक विभिन्न प्रकार के स्वाद अभिग्राहक के साथ जुड़ा होता है। इसके अलावा, इन चार मूल स्वाद गुणों का उत्पादन करने वाली उत्तेजनाओं के बारे में सवाल का जवाब निश्चित नहीं है। मिठाई का उत्पादन विभिन्न शर्कराओं द्वारा किया जाता है लेकिन सैकेरिन जो कि ऐसा रासायनिक यौगिक है जो चीनी से संरचनात्मक रूप से बहुत अलग होता है लेकिन इन पदार्थों में ऐसी क्या समानता है जो समान स्वाद को उत्पन्न करता है, अभी भी ज्ञात नहीं है। जीभ पर स्वाद कलिका की संख्या आयु के साथ कम हो जाती है। परिणामस्वरूप, बूढ़े लोग, बच्चों की तुलना में स्वाद के प्रति कम संवेदनशील होते हैं।



fp= 2-3% tHk dk fp=



fp= 2-4% dMok Lokn
dfydk



fp= 2-5% uedhu Lokn
dfydk



fp= 2-6% [kVvk Lokn
dfydk

2-3-5 Ropk I onuk

निम्न उदाहरण को देखें – तीन बाल्टी पानी रखें – एक ठंडा, दूसरा गर्म और तीसरा गुनगुना। अब एक हाथ को ठंडे पानी की बाल्टी में और दूसरे हाथ को गर्म पानी की बाल्टी में डालें। आप महसूस करेंगे कि गर्म या ठंड केवल उस हिस्से में महसूस होता है जहाँ हाथ पानी व हवा दोनों से मिलता है। अपने दोनों हाथों को बराबर निकालें और गुनगुने पानी से भरी तीसरी बाल्टी में डालें। आप उस हाथ को ठंडा महसूस करेंगे जो गर्म पानी में था और उस हाथ को गर्म महसूस करेंगे जो ठंडे पानी में था। हाथ की संवेदना उस तापमान पर निर्भर करता है जिसमें त्वचा पहले अनुकूलित थी। त्वचा की उत्तेजना अपने स्वयं के शरीर से सीधे जुड़े हुए जीव के बारे में बताती है। त्वचा की इंद्रिया वास्तव में, कम से कम चार अलग-अलग संवेदनाओं का संयोजन है – दबाव, गर्मी, ठंड और दर्द। ये संवेदी गुण एक दूसरे से इतने भिन्न हैं कि इस विश्वास को जन्म देते हैं कि ये विभिन्न अंतर्निहित अभिग्राहक व्यवस्था द्वारा निर्मित होते हैं। शरीर के उन हिस्सों में त्वचा की संवेदनशीलता तीव्र होती है जो हमारे आसपास के जगत को महसूस करने के लिए ज्यादा प्रासंगिक होते हैं। हाथ, उंगलियाँ, होठ, जीभ, त्वचा के विभिन्न हिस्से सभी उत्तेजनाओं के लिए समान रूप से संवेदनशील नहीं होते हैं जो विभिन्न संवेदनाओं का उत्पादन करते हैं। अब आप अपने आप पर त्वचा संवेदना का एक और अनुभव कीजिए। अपनी आँखों में, पट्टी बांधकर अब बॉल पेन की नोक से, अपने त्वचा के एक क्षेत्र की हल्के से जांच करें जहाँ पेन आपकी त्वचा से सम्पर्क करता है वहाँ कुछ बिन्दुओं पर आप दबाव महसूस करेंगे लेकिन हर बिन्दु पर नहीं। आप एक जैसी प्रक्रिया एक-एक करके ठंडे तार, गर्म तार और एक पिन से करते हैं। ठंडे तार के साथ आप कई विशिष्ट बिन्दु पर ठण्डा महसूस करेंगे। गर्म तार के साथ आप कई बिन्दु पर गर्मी महसूस करेंगे और पिन की नोक दर्द उत्पन्न करेगी। इस तरह की संवेदना त्वचा के विभिन्न बिन्दुओं पर अभिग्राहक के द्वारा होती है जो कि अलग-अलग प्रकार के उद्दीपनों के प्रति संवेदनशील होते हैं। किसी नुकीली चीज से हल्के से छूने पर आप जो अनुभव करते हैं उसे दबाव या स्पर्श कहते हैं। शरीर के कुछ हिस्से दबाव या स्पर्श के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

होंठ, उंगलियां, हाथ और जीभ के सिरे सबसे संवेदनशील क्षेत्र हैं। हाथ, पैर और शरीर का धड़ कम संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार, इस तरह के अनुभव जो विभिन्न शरीर के हिस्से के लिए अलग-अलग होते हैं को उत्पन्न करने के लिए दबाव या स्पर्श की विभिन्न मात्रा की जरूरत होती है। तापमान और दर्द के लिए अंतर्निहित अभिग्राहक प्रक्रिया के बारे में कम जाना जाता है। त्वचा में भी गर्मी और ठण्ड के लिए अभिग्राहक होते हैं। ये तापमान अभिग्राहक अधिक से अधिक तापमान चरम सीमा के साथ हाथों और पैरों के साथ शरीर के धड़ पर अधिक केन्द्रित होते हैं। ठंड के अभिग्राहक, गर्मी के अभिग्राहक से छः गुना ज्यादा होते हैं। दर्द की संवेदना विवाद का विषय रहा है। कुछ अनुसंधानकर्ता मानते हैं कि ये विशिष्ट दर्द अभिग्राहक हैं जो ऊतक की चोट से सक्रिय होते हैं और एक तरह की अप्रिय सनसनी पैदा करते हैं। दूसरे मानते हैं कि दर्द किसी त्वचा अभिग्राहक के प्रति अधिक अनुमान लगाने का परिणाम है। दर्द न केवल त्वचा के तंत्रिका से बल्कि अन्य ज्ञानेन्द्रियों से भी प्राप्त होता है। किसी ज्ञानेन्द्रिय के लिए तीव्र उत्तेजना दर्द का कारण बन सकती है जैसे कि बहुत तेज प्रकाश, जोर की आवाज, बहुत कम या ज्यादा तापमान।

2-3-6 xfr l ɒnuk

गति संवेदना आपकी मांसपेशियों और जोड़ों की स्थिति एवं गति के बारे में जानकारी प्रदान करती है। अपनी आँखें बन्द कीजिए और अपनी उंगली से अपने औठों को स्पर्श कीजिए। आपको मालूम है कि शरीर के दोनों हिस्से कहाँ हैं वह ज्ञान जो हमें एक दूसरे के संबंध में हमारे शरीर के अंगों के स्थान के बारे में जानकारी देता है और हमें गति करने की अनुमति प्रदान करता है, उसको गतिबोध के रूप में जानते हैं। मांसपेशियों में गति अभिग्राहक मौजूद होते हैं जो मस्तिष्क को मांसपेशियों के भार एवं संकुचन की मात्रा के बारे में सूचनाएँ भेजता है। दूसरे अभिग्राहक जोड़ों में होते हैं जो शारीरिक गति से सम्बन्धित सूचनाएँ प्रदान करती हैं। गति संवेदना अधिकतर शरीर में संतुलन या साम्य की भावना उत्पन्न करती है। जब किसी में यह संवेदना नष्ट हो जाती है तो व्यक्ति शरीर के भागों में विभिन्न भार के उद्दीपनों के बीच उनके भेद के अनुभव नहीं कर सकता। संतुलन बनाये रखने की हालात में नहीं होता है। यह समझ गुरुत्वाकर्षण के सम्बन्ध में शरीर की गति व शारीरिक अवस्था को बनाए रखती है।

ckək ç'u 1

1) दृश्य तीक्ष्णता क्या है? तीक्ष्णता से संबंधित कौन-कौन से कारक हैं और इसे कैसे मापा जा सकता है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उदाहरण देकर अंध बिंदु को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) स्वाद की संवेदना की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए? स्वाद कलिका के महत्व को बताइएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

2-4 i R; {k.k % i Nfr vkj {ks=

पिछले खंड में, आपने संवेदना के बारे में सीखा। यह भाग आपको प्रत्यक्षण की प्रक्रिया के बारे में बताएगा। प्रत्यक्षण की प्रक्रिया को दक्षिण अफ्रीकी अंग्रेजी फिल्म "Gods must be Crazy (1980)" के एक रोचक उदाहरण के साथ समझा जा सकता है। चलचित्र एक पेय पदार्थ के खाली बोतल के साथ शुरू होता है जिसे आकाश/स्वर्ग से गिराया जाता है (यह वास्तव में हवाई जहाज होता है जिससे गिराया जाता है) और एक बुशमैन (कालाहारी बुशमैन जनजाति) के पास आकर गिरती है, जो कि शिकार पर निकला होता है।

समाज के इस हिस्से में लोग एक साधारण जीवन जीते हैं जिन्हें तकनीकी के बारे में जागरूक नहीं है। इस प्रकार बोतल उनके लिए नई वस्तु है जो कि उनके शांतिपूर्ण समुदाय में संघर्ष उत्पन्न कराती है। जब बुशमैन इस नई वस्तु को देख रहे हैं तो निम्नलिखित पंक्तियाँ दृश्य का वर्णन करने के लिए कही जाती हैं। कथावाचक "एक दिन आसमान से कुछ गिरा। जो (Xi) ने अपने जीवन में कभी भी ऐसा कुछ नहीं देखा था। यह देखने में पानी जैसा था लेकिन यह दुनिया की किसी भी चीज से ज्यादा हैरानी की बात थी। वह आश्चर्यचकित था कि ईश्वर ने यह चीज पृथ्वी पर क्यों भेजी। यह सबसे अजीब सी खूबसूरत चीज थी जो उन्होंने कभी देखा था, वे सोचते हैं कि ईश्वर ने उसे क्यों भेजा"।

आपको क्या लगता है कि बुशमैन क्यों इस बोतल को पहचानने में असमर्थ थे जैसे कि हम लोग पहचान लेते हैं। यदि यह उनके सीमित अनुभव की वजह से है तो इसका मतलब क्या हुआ कि दुनिया के बारे में हमारी समझ हमारे अनुभव पर निर्भर करती है। इसका उत्तर हाँ है और हमारा अनुभव प्रत्यक्षण की प्रक्रिया को निर्देशित करता है। लेकिन प्रत्यक्षण क्या है? कौन से कारक इसे प्रभावित करते हैं। हम लोग इन सवालों के जवाब तलाश करेंगे। इसके अलावा, हम प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न सिद्धान्तों, प्रत्यक्षण के प्रकार और प्रत्यक्षण में त्रुटियों को भी देखेंगे।

प्रत्यक्षण हमें दुनिया को देखने, महसूस करने और अनुभव करने में सक्षम बनाती है जैसा कि यह हमारे अनुभव की व्याख्या करने का तरीका है। चूँकि, हम मिलने वाली सभी तरह की सूचनाओं पर ध्यान नहीं दे सकते हैं, इसलिए हम केवल कुछ पर ही ध्यान देते हैं और चुनिंदा रूप से इसे देखते हैं। ध्यान सभी आवश्यक संवेदी सूचनाओं को छांटने या इसे बाहर निकालने में सहायता करता है (ब्राडबेंट, 1958)। ध्यान का केन्द्र आंतरिक कारक रुचि, अभिप्रेरण, आवश्यकता आदि हैं, वे बाहरी कारक तीव्रता, आकार, पुनरावृत्ति, विषमता, नवीनता, गति, आदि हैं। उदाहरण के लिए कोई उद्दीपन जो नवीन होगा वह पृष्ठभूमि में विलीन होने वाली वस्तु की तुलना में किसी का ध्यान अधिक आसानी से पकड़ लेगा। ध्वनि की तीव्रता

के प्रति व्यक्ति का ध्यान ज्यादा जाएगा। यदि वातावरण में दो तरह की रोशनी है तो चमकदार रोशनी ज्यादा ध्यान आकर्षित करेगी। कोई उद्दीपन जितनी बार दोहराया जाएगा उतना आसानी से वह देखा जा सकेगा।

ckDI 2-1

प्रत्यक्षण में वह सभी प्रक्रियाएँ मौजूद होती हैं जो ज्ञानेन्द्रिय जानकारियों की व्याख्या करने और बाहरी दुनिया को अर्थपूर्ण ढंग से समझने में हमारी मदद करती हैं।

मोटे तौर पर जब कोई उद्दीपन सामने आता है तो प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं। (i) चयन (ii) संगठन (iii) व्याख्या। आगे आने वाले भाग में प्रत्यक्षण की प्रक्रिया के इन चरणों के बारे में चर्चा की जाएगी।

2-5 i R; {k.k ds pj .k

इस इकाई में प्रत्यक्षण के चरण व इन चरणों को प्रभावित करने वाले कारकों की विस्तार से चर्चा की जाएगी।

pj .k I% p; u

प्रत्यक्षण का पहला चरण 'चयन' है क्योंकि हमारे मस्तिष्क की क्षमता सीमित होती है इसलिए इसका ध्यान सभी उद्दीपनों पर नहीं जा सकता। हम अनजाने में या जानबूझकर कुछ उद्दीपनों पर ध्यान देते हैं व अन्य को नजरअंदाज कर देते हैं। चयनित उद्दीपन "उपस्थित उद्दीपन" बन जाता है। अब इन दो चित्रों को देखे (चित्र 2.7 और 2.8)।



fp= 2-7% [kjxk'sk ; k cr[k

fp= 2-8 % Qwynku ; k ekuo pgjk

आपको क्या दिखता है। इन दो चित्रों का वर्णन आपकी सूचनाओं के संगठन पर निर्भर करता है और सूचनाओं का संगठन आपके ध्यान पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए दूसरी आकृति को लें। कुछ लोग सफेद भाग पर ज्यादा ध्यान देते हैं और इसलिए दो मानव चेहरा देखते हैं जबकि कुछ लोग अपना ध्यान काले हिस्से में देते हैं और इसको एक फूलदान की तरह देखते हैं। इन विभिन्नताओं से यह पता चलता है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है।

pj .k II% I xBu

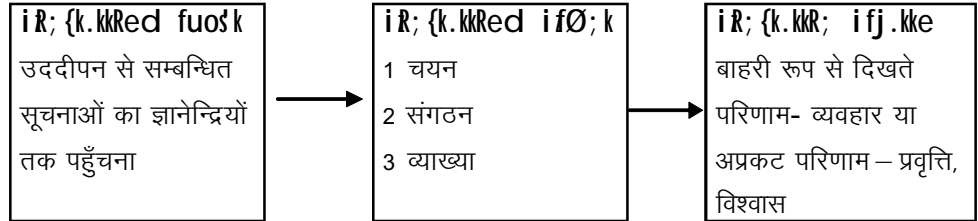
इस अवस्था में उद्दीपन मानसिक रूप से अर्थपूर्ण ढंग से व्यवस्थित किए जाते हैं। संगठन की प्रक्रिया को व्याख्या करने के लिए कई नियम बताए गए हैं। भाग 2.7 में संगठन के गैस्टाल्ट के सिद्धान्त की चर्चा की गई है। यह आपको यह समझाने में मदद करेगा कि किस

i R; {khdj .k} vf/kxe
, oa Lefr

तरह से व्यक्ति स्वभाविक रूप से उद्दीपनों को अर्थपूर्ण आकार प्रदान करने के लिए संगठित करता है व इस प्रकार उद्दीपन की व्याख्या करता है।

pj .k III% 0; k[; k

इस अन्तिम चरण में संगठित उद्दीपनों को एक अर्थ प्रदान किया जाता है। उत्तेजनाओं की व्याख्या व्यक्ति के अनुभवों, अपेक्षाओं, आवश्यकताओं, विश्वासों और अन्य कारकों पर आधारित होता है। इस प्रकार इस अवस्था का स्वभाव व्यक्तिगत होता है। एक जैसे उद्दीपनों का विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा अलग-अलग तरीके से व्याख्या की जा सकती है।



fp= 2-3 % i R; {k.k dh ifØ; k

2-6 i R; {k.k dk I 9} kflurd mikxe

मनोवैज्ञानिकों द्वारा दो भिन्न सैधात्तिक उपागमों को प्रस्तुत किया गया जो प्रतिरूप पहचान में प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की व्याख्या करता है। एक "ऊपरी निचली प्रक्रिया उपागम" के रूप में जाना जाता है और दूसरा "आधारित ऊपरी प्रक्रिया उपागम" के रूप में है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि दोनों ही दृश्य संबंधी उद्दीपनों के प्रतिरूप पहचान के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोणों में एक दूसरे से अलग हैं।

I kj .kh 2-1 % i R; {k.kkRed ifØ; k ds ckjs ea I 9kflurd mikxe % ifr: lk igpku

vk/kkfjr Åijh ifØ; k	Åijh fupyh ifØ; k
प्रत्यक्षण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष होती है	प्रत्यक्षण की प्रक्रिया अप्रत्यक्ष होती है।
प्रत्यक्षण आँकड़ों पर आधारित प्रक्रिया है अर्थात् उद्दीपन में पर्याप्त जानकारी होती है जिससे कि अर्थपूर्ण ढंग से उसकी व्याख्या की जा सके।	प्रत्यक्षण एक अनुभव आधारित प्रक्रिया है अर्थात् उद्दीपन के अन्दर पर्याप्त जानकारी नहीं होती है जिससे कि उसकी अर्थपूर्ण ढंग से व्याख्या की जा सके और इसलिए हमें अपने अनुभव का सहारा लेने की जरूरत पड़ती है।
जेम्स जे गिब्सन, 1960 ने इस विचार के सशक्त समर्थकों में से एक हैं।	रिचार्ड ग्रोगरी, 1970 ने इस विचारधारा के एक सशक्त समर्थक हैं।

इस प्रकार ऊपरी निचली प्रक्रिया उत्तेजनाओं की विशेषताओं को व्यवस्थित करने के लिए मौजूदा ज्ञान का उपयोग करती है। जबकि आधारित ऊपरी प्रक्रिया छोटी विशेषताओं का विश्लेषण करती है और पूरी तस्वीर का निर्माण करती है। दृश्य संबंधी उद्दीपनों को धारण करते समय दोनों प्रकार के (प्रक्रिया) दृष्टिकोणों का प्रयोग अक्सर एक साथ किया जाता है।

ckDI 2-2 % i R; {k.k ea /; ku dh HkWedk

जिस डिश एंटीना का प्रयोग हम अपने घर में करते हैं वह सेटलाइट से सभी उपलब्ध संकेत प्राप्त करता है लेकिन टेलिविजन का समस्वरक हमारी मरजी के अनुसार ही संकेत को चुनता है। इसी प्रकार से, हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ कई उद्दीपनों को एक ही समय में धारण करती हैं लेकिन चयनात्मक प्रक्रिया उपयुक्त उद्दीपनों को ही चुनती है जो कि हमारे प्रत्यक्षण को बनाते हैं। प्रत्यक्षण के सम्बन्ध में ध्यान के कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं।

- 1) **p; ukRed /; ku %** ध्यान का सबसे महत्वपूर्ण कार्य चयनात्मक है। यह एक ऐसी प्रक्रिया से सम्बन्धित है जिसके द्वारा अन्य अप्रसांगिक उद्दीपनों को अनदेखा करते हुए रुचिकर उद्दीपनों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। चयनात्मक ध्यान एक छलनी की तरह कार्य करता है।
- 2) **nh?kdkyhu /; ku %** यह विचलित हुए बिना लम्बे समय तक किसी उद्दीपन पर ध्यान देने की क्षमता है। या यह एक ऐसी क्षमता है जिसके द्वारा बिना विचलित हुए हम लम्बे समय तक किसी उद्दीपन पर ध्यान देते हैं। उदाहरण के लिए, राडार स्क्रीन पर देखते रहने के काम में निरंतर ध्यान की आवश्यकता होगी। हमारी ध्यानात्मक प्रक्रिया इस तरह के नीरस कार्य करने में हमारी मदद करती है।

2-7 i R; {k.kkRed l ɔBu ds fu; e% xVvkYV fl) kUr

20वीं सदी की शुरुआत में, तीन जर्मन मनोवैज्ञानिकों मैक्स वर्दाइमर और उनके सहयोगियों वोल्फगैंग कोहलर और कर्ट कौपका ने प्रत्यक्षण को समझने के लिए गैस्टाल्ट सिद्धान्त नामक सिद्धान्त प्रस्तावित किया। गैस्टालिस्ट के अनुसार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में किसी वस्तु के रूप में उद्दीपनों की एक सारणी को शामिल नहीं करना है लेकिन इसमें एक रूप या पैटर्न की तलाश करने की हमारी प्रवृत्ति शामिल है। गैस्टाल्ट शब्द का शाब्दिक अर्थ 'रूप या विन्यास' है। गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का मूल आधार यह है कि "सम्पूर्ण इसके भाग के योग से भिन्न होता है"। इसका तात्पर्य यह है कि संगठन (या संरचित संपूर्ण जिसे गैस्टाल्टेन के रूप में जाना जाता है) प्रत्यक्षण को एक अलग अर्थ देता है। यह संगठन के कारण होता है जिसमें हम जटिल संरचना को एकात्मक रूप या वस्तुओं के रूप में अनुभव करने में सक्षम होते हैं। संगठन उस तरह से हो सकता है जैसे चीजों को एक साथ रखा जाता है। इस मूल धारणा के आधार पर गैस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने कई तरह के सिद्धान्त एवं कानून प्रस्तुत किए जो यह बताते हैं कि किस तरह से हम उद्दीपन की छोटी इकाइयों को एक सम्पूर्ण, जिसमें विशिष्ट आकृति/स्वरूप होता है, के रूप में देखते हैं। ये सिद्धान्त प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम के रूप में जाने जाते हैं। आने वाले खंड में प्रत्यक्षणात्मक संगठन के कुछ महत्वपूर्ण गैस्टाल्ट नियम की चर्चा शामिल है लेकिन यह करने के पहले, क्या आप निम्न चित्र में 13 चेहरे देख सकते हैं (चित्र 2.10 देखें)?



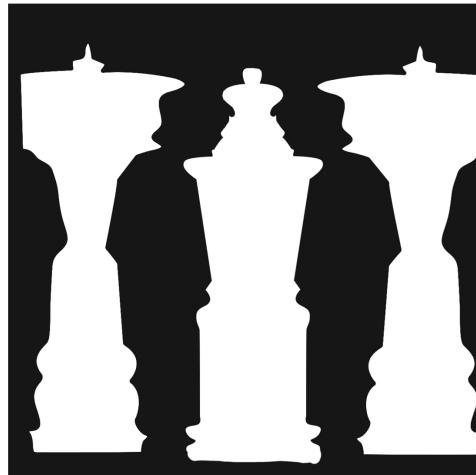
fp= 2-10% taxy dh vk[kka %cd MkfyfVy 1984] nekjk%

स्रोत : <http://www.greenwichworkshop.com>

i R; {khdj .k} vf/kxe
, oa Lefr

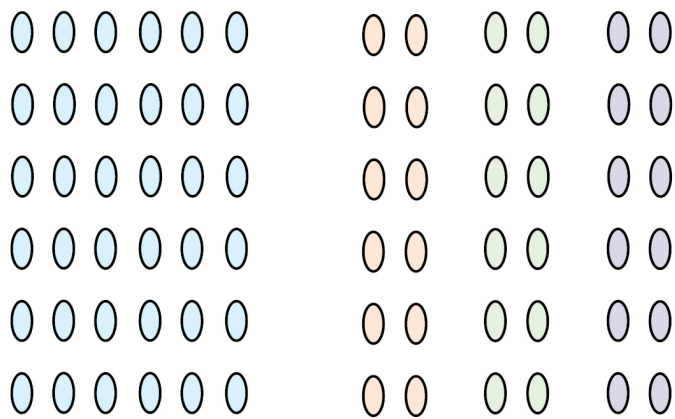
क) vkÑfr-i "Bhkfie I Ecll/k dk fu; e

इस सिद्धान्त के अनुसार हमारे अन्दर हमारे आसपास की दुनिया को आकृति और पृष्ठभूमि के रूप में अलग करने की प्रवृत्ति होती है। हम हमेशा पृष्ठभूमि से अलग एक आकृति (प्रतिमा) देखते हैं। आकृति उद्दीपन का वह भाग होता है जो कि दृश्य चित्र में हमारा ध्यान आकर्षित करती है जबकि बाकी हिस्सा पृष्ठभूमि की तरह कार्य करता है। किसी भी प्रतिमा की एक निश्चित आकृति होती है जो कि बेहतर ढंग से याद रहती है जबकि पृष्ठभूमि आकारहीन होती है और इसकी कोई सीमा नहीं होती हैं। अब चित्र 2.11 देखिये। आप क्या देखते हैं? दो व्यक्ति या शतरंज के दो मोहरे (दो रानियां और एक बिशप)? जब आप लोगों पर ध्यान देते हैं तो शतरंज के मोहरें पृष्ठभूमि बन जाते हैं और यदि शतरंज के मोहरें पर ध्यान देते हैं तो लोग पृष्ठभूमि बन जाते हैं। किसी भी स्थिति में आप पृष्ठभूमि से अलग आकृति बनाते हैं।



fp= 2-11% fp= vk/kkfjr I ca/ka dk mnkgj .k

ख) I fludVrk dk fu; e



fp= 2-12% I fludVrk dk xlVkyV fl n/ka

यह उन तत्वों या वस्तुओं के समूह से सम्बन्धित है जो एक साथ करीब होते हैं। उद्दीपनों को अर्थपूर्ण ढंग से अनुभव करने के लिए, उद्दीपन जो एक दूसरे के करीब होते हैं वे हमारे द्वारा एक ही समूह से सम्बन्धित देखे जाते हैं। इसी वजह से, लोग अलग-अलग गोलों के बजाए इन गोलों को एक समूह के रूप में देखते हैं। चित्र 2.12 को देखिए। हमारा मस्तिष्क विस्तृत तत्वों को एक समूह के रूप में बनाने के लिए प्रवृत्त होता है ताकि ज्यादा आसानी से व्याख्या की जा सके।

ग) मर्रे वक्रों के लिए; एंटेफेर के लिए; एंटेसुट+ के लिए; ए

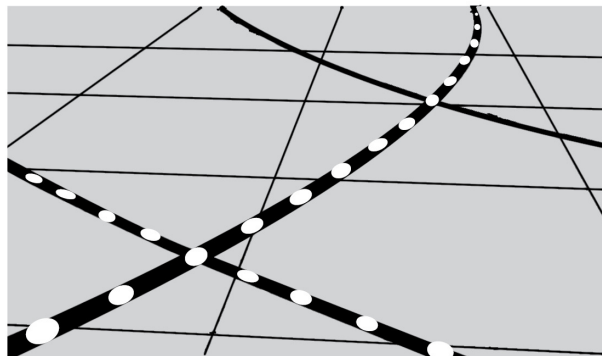
लोक, ओ
ई; {khdj}.k



fp= 2-13% सुट के xLVkYV fl n/kkr

प्रेग्नैन्ज़ शब्द एक जर्मन शब्द है जिसका अर्थ "अच्छी आकृति" होता है। इसलिए इस सिद्धान्त को "अच्छी आकृति का नियम" भी कहते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार हमारे अन्दर आंकड़ों को संतुलित या सममित बनाने के लिए उद्दीपनों को संगठित करने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार उद्दीपनों को समूह के रूप में बनाने के सभी सम्भावित तरीकों में से, हमारे अन्दर सबसे सरल व स्थिर आकार में उद्दीपनों को समूह में करने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सरल रूप हमारे द्वारा अधिक देखे जाते हैं। उदाहरण के लिए चित्र 2.13 को पाँच अलग-अलग गोलों के बजाय हम इसे ओलंपिक के प्रतीक के रूप में देखते हैं।

घ) फुर्रक के लिए; ए



fp= 2-14% फुर्रक ds fu; e dk mnkgj.k

यह आकृति को भागों के बजाय निरंतरता के रूप में देखने की हमारी प्रवृत्ति से सम्बन्धित है। यह सिद्धान्त रेखा के प्रत्यक्षण में अधिक प्रदर्शित होता है। चित्र 2.14 में आमतौर पर हमारे द्वारा अलग-अलग गोलों या काले धब्बों के बजाय एक पंक्ति के रूप में देखा जाता है।

ङ) लकल; खर के लिए; ए



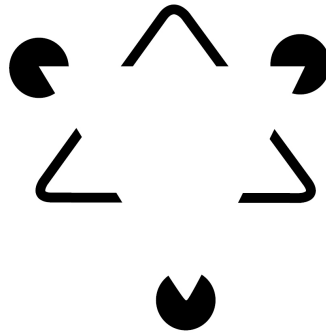
fp= 2-15% लकल; खर के xLVkYV fu; e

लकल%<http://cdn.zmescience.com>

i R; {khdj .k} vf/kxe
, oa Lefr

इस नियम के अनुसार वस्तु एक समूह में एक साथ अपनी गति के अनुसार आयोजित की जाती है। समान दिशाओं में गति करते हुए उद्दीपनों को एक ही समूह से संबंधित माना जाता है जैसा कि चित्र 2.15 में दिखाया गया है।

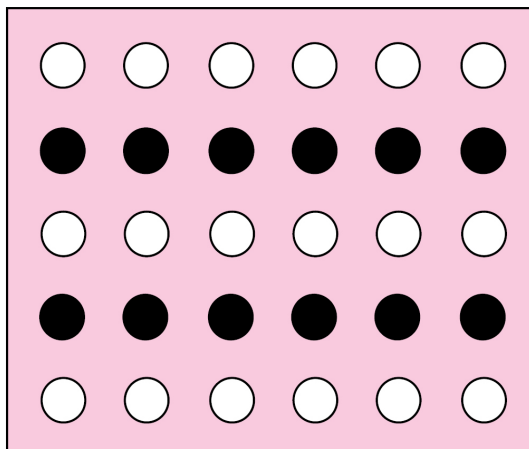
च) c\l\h dk fu; e



fp= 2-16% c\l\h dk fu; e dk mnkgj .k

हम बहुत सारी चीजों को देखते हैं लेकिन यह बन्द करने के नियम हैं जो हमारे प्रत्यक्षण को पूरा करता है। प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रियाएं हमारी संवेदनाओं में अंतराल को भरकर उद्दीपनों के प्रति हमारे प्रत्यक्षण को व्यवस्थित करती है। चित्र 2.16 को बन्द करने के उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। इस नियम और निकटता के नियम के साथ भ्रमित होने की स्थिति पैदा नहीं होना चाहिए।

छ) ,d: i rk dk fu; e



fp= 2-17 % ,d: i rk ds fu; e dk mnkgj .k

यह सिद्धान्त यह बताता है कि चीजें अपनी समानता के अनुसार एक साथ समूहबद्ध होती हैं। उदाहरण के लिए चित्र 2.17 में हम इसके रंगों के आधार पर गोलों को समूह में रखते हैं। वास्तविक जीवन में भी हम इस सिद्धान्त को बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, एक क्रिकेट मैच के दौरान, हम समूह के खिलाड़ियों को उनकी जर्सी के रंग के आधार पर देखते हैं।

ckèk ç'u 2

1) संवेदना और प्रत्यक्षण में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....

2) प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न नियमों के बारे में बताइए।

2-8 प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न नियमों के बारे में बताइए।

प्रत्यक्षण के कुछ केंद्रीय निर्धारक होते हैं जैसे कि स्वाभाविक स्थिति, दृष्टिकोण, मूल्य, आवश्यकताएं और अन्य समान मध्यवर्ती चर। हेल्महोल्डज़ और अन्य गेस्टालिस्ट्स ने ऐसे निर्धारकों के महत्व पर जोर दिया है।

2-8-1 प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न नियमों के बारे में बताइए।

अभिप्रेरणा, प्रत्यक्षण सहित कई तरह की अन्य मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आपको जब भूख महसूस होती है तो आपका ध्यान भोजन की गंध पर अधिक आसानी से चला जाता है और जब आपका पेट भरा होता है तब आसानी से उस ओर नहीं जाता। कई प्रायोगिक अध्ययनों ने भी समान तरह के प्रभाव की बात की है। सैनफोर्ड (1936) द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रयोग में यह दिखाया गया था कि भूखे प्रतियोगियों ने अस्पष्ट उद्दीपनों को ज्यादातर भोजन से सम्बन्धित उद्दीपनों के रूप में देखा बजाय गैर भूखे प्रतियोगियों के। इसी प्रकार अभी हाल ही के एक अध्ययन में चांगीजी और हॉल (2001) ने दिखाया कि प्यास की आवश्यकता भी प्रत्यक्षण को प्रभावित करती है। भागीदारियों के अन्दर अस्पष्ट उद्दीपनों में पारदर्शिता (पानी का सामान्य गुण) देखने की जबरदस्त प्रवृत्ति देखी गई।

2-8-2 प्रत्यक्षणात्मक प्रत्याशा

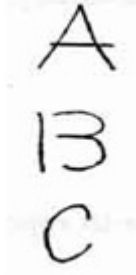
प्रत्यक्षणात्मक प्रत्याशा एक व्यक्ति की तत्परता या किसी विशेष तरीके से चीजों को देखने की एक प्रवृत्ति है। एक महत्वपूर्ण अध्ययन में ब्रूनर एवं मिंटर्न (1955) ने प्रत्यक्षण में प्रत्याशा की भूमिका को दर्शाया। एक परिस्थिति में उन्होंने प्रतिभागियों की संख्याओं के साथ '13' का अस्पष्ट आंकड़ा दिखाया, जैसेकि

12 13 14

fp= 2-18 % cunj rFkk feuVuz }kjk vi us iz, ksx dh iFke fLFkfr ea ij .kk mi ; ksx

स्रोत : <http://www.simplypsychology.org>

दूसरी स्थिति में इन्होंने 13 का वही अस्पष्ट चित्र वर्णमाला के साथ दिखाया, जैसे कि



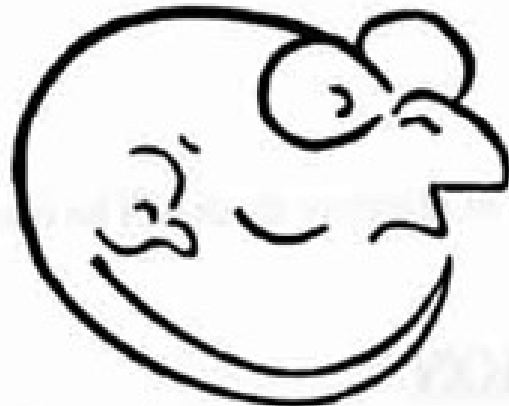
fp= 2-19 % cūj rFkk feuVuZ }kjk vius iz kx dh f}rh; fLFkfr ea ij .kk mi ; kx

स्रोत : <http://www.simplypsychology.org>

पहली स्थिति में, भागीदारों ने अस्पष्ट उद्दीपन को 13 के रूप में देखा जबकि दूसरी परिस्थिति में इसको B के रूप में देखा। अस्पष्ट उद्दीपन दोनों ही परिस्थिति में एक जैसे ही थे लेकिन भागीदारों की अपेक्षा की वजह से इनकी व्याख्या अलग-अलग हुई।

ckDI 2-3 pūjk-0; fDr iz kx

एक उत्कृष्ट अध्ययन में बुगोल्स्की और अलमपे (1961) ने चूहे-आदमी के अस्पष्ट चित्र का उपयोग किया। जैसा कि चित्र 2.20 में दिखाया गया है। यह चित्र दो स्थितियों में प्रस्तुत किया गया था। एक स्थिति में प्रतिभागी ने पहले जानवर का चित्र दर्शाया और तब चूहा-आदमी का अस्पष्ट चित्र। जबकि अन्य परिस्थिति में प्रतिभागी ने चूहा-आदमी के चित्र द्वारा अपनाए गए निष्पक्ष चित्रों को सबसे पहले देखा। प्रयोगात्मक परिस्थिति जिसमें प्रतिभागियों को जानवर के चित्र से अवगत कराया गया था, इस अस्पष्ट चित्र को बाद की स्थिति की तुलना में चूहे के रूप में अधिक माना गया।



fp= 2-20 % cūjLdh , oa vyeis 1961½ ea pūjk & 0; fDr mīhi d dk ç; kx

स्रोत : <https://www.simplypsychology.org>

2-8-3 I osx dk iHkko

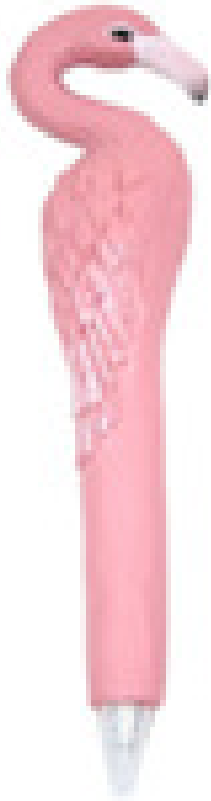
क्या आपको लगता है कि क्या संवेग आपके प्रत्यक्षणात्मक कौशल को प्रभावित कर सकता है? मैकिगनीज (1949) ने शब्दों की एक सूची बनाई जिसमें से 11 तटस्थ (सेब, बच्चा, नदी, संगीत, सोना) और 7 भावात्मक शब्द (बलात्कार, वेश्या, लिंग, कुत्ती) थे। मैकिगनीज ने तटस्थ व भावात्मक शब्दों के बीच में अर्थपूर्ण अन्तर पाया। भावात्मक शब्दों की सीमा रेखा ज्यादा थी, वैद्युत त्वचा प्रतिक्रिया ज्यादा थी और उन भावात्मक शब्दों के लिए काफी विकृति थी जिसको कि चिन्ता प्रतिहार प्रतिक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया गया। जो कि प्रत्यक्षणात्मक सुरक्षा प्रक्रिया के रूप में कार्य कर रहा था। यह भागीदारों को उन शब्दों के अप्रिय अर्थ से बचाता है। संवेग हमेशा प्रत्यक्षण में रुकावट पैदा नहीं करते। अध्ययनों के

द्वारा यह विचार रखा गया है कि जब प्रत्यक्षणात्मक क्रिया संवेग से अप्रासंगिक होती है तो यह आपके कार्य निष्पादन में बाधा पहुंचाती है और वहीं जब यह भावनाओं के प्रासंगिक होती है तो कार्य निष्पादन को बढ़ाती है।

2-8-4 mn̄hi u | s | EcfU/kr fo' kʃkrkvkɑdk i Hkko

आपने देखा होगा कि जो ध्वनि बड़ी ट्रकों द्वारा प्रयोग किया जाता है वो उच्च आवृत्ति, उच्च आवाज और उच्च मात्रा वाले होते हैं। क्यों? सिर्फ आपका ध्यान खींचने के लिए। अध्ययन यह दिखलाते हैं कि जिन उद्दीपनों की आवाज, स्वाद, आकृति या संवेदना ज्ञान अलग होता है, वे हमारे ध्यान को अन्य दूसरे उद्दीपनों की तुलना में ज्यादा खींचते हैं और इस प्रकार हमारे प्रत्यक्षण को प्रभावित करते हैं। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस गुण का उद्देश्य उत्तरजीविका से सम्बन्धित है। यह व्यक्ति को खतरा पहचानने में मदद करता है (डोड, बोट, टर्कगलेरी, नोटवर्ट 2016, काम्पटन इत्यादि, 2003)।

2-8-5 vuHko dk i Hkko



fp= 2-21% 1lyfexks ds vldkj dk dye

स्रोत: <https://www.amazon.in>

पहले के अनुभव, उद्दीपनों की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह हमारे प्रत्यक्षण को एक आकार प्रदान करता है। उदाहरण के लिए यदि आप गलती से अंधेरे में एक रस्सी को सांप समझ लेते हैं तो आपका पहले का अनुभव आपकी प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रिया को संचालित करेगा। उपर्युक्त चित्र में आपको क्या दिखता है (चित्र 2.21 देखिये)। एक फ्लेमिंगो की आकृति का पेन। यद्यपि यह आदर्श रूप पेन नहीं है फिर भी आप इसे एक पेन की तरह देखते हैं जो कि आपके पहले के अनुभव की वजह से है।

2-8-6 I lÑfr dk i Hkko

आप इस हाथ की मुद्रा को देखिये और इसकी व्याख्या कीजिए। इसका क्या मतलब है?



fp= 2-22% gLr l dr

भारत में, यह सुन्दरता या संपूर्णता से सम्बन्धित है लेकिन ब्राजील में यह एक अभद्र मुद्रा है। यह उदाहरण बताता है कि उद्दीपनों की व्याख्या संस्कृति के बदलने पर बदल जाती है।

2-9 xgjkbl dk i R; {k.k

गहराई का प्रत्यक्षण दुनिया को तीन विमाओं में देखने की एक व्यक्ति की दृश्य क्षमता से सम्बन्धित है जो हमें वस्तु की दूरी के बारे में निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यदि गहराई का प्रत्यक्षण नहीं होता तो सड़क पर चल पाना, गाड़ी चलाना, आदि काफी मुश्किल हो जाता। यह क्षमता जन्म से मौजूद नहीं होती लेकिन बहुत कम उम्र में विकसित हो जाती है इसीलिए आंशिक रूप से इसे जन्मजात मानते हैं और आंशिक रूप से अनुभव के द्वारा सीखते हैं। गिब्सन और वॉक (1960) द्वारा एक अत्यन्त प्रसिद्ध प्रयोग किया गया जिसमें 6-14 महीने के बच्चे का गहराई के प्रत्यक्षण की क्षमता का परीक्षण उन्हें एक दृश्य क्लिफ (गहराई प्रत्यक्षण का अध्ययन करने के लिए एक उपकरण) पर रखकर किया गया। अध्ययन में देखा गया कि शिशु क्लिफ से दूर हट गया या रोया और अपनी माँ के पास जाना चाहा। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम किसी वस्तु की दूरी निर्धारित करते हैं दूरी के प्रत्यक्षण के रूप में जाना जाता है। हमारा मस्तिष्क गहराई और दूरी का आकलन करने के लिए एक नेत्रीय संकेतों (जिसमें एक ही आँख के प्रयोग करने की जरूरत होती है) और दूरबीन के संकेतों (जिसमें दोनों आँखों का उपयोग किया जाता है) का प्रयोग करता है।

2-9-1 , d ush l dr

ये ऐसे सूचना या संकेत हैं जो हमारा मस्तिष्क केवल एक आँख से प्राप्त करता है। ये संकेत द्विनेत्रीय संकेत से कमजोर होते हैं। इस तरह के संकेतों का उपयोग चित्रकारों द्वारा समतल चित्र से तीन आयामी परिप्रेक्ष्य देने के लिए किया जाता है (चित्र 2.23 देखिए)।



fp= 2-23% l ery fp= ea xgjkbl çR; {k.k ds fy, , d us-h l ðr dk ç; kx

स्रोत: <https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/>

निम्नलिखित कुछ एकनेत्री संकेत हैं।

2-9-1-1 l ki {k vkdkj



fp= 2-24% gok ea mMrs xje gok ds x{ckjs

स्रोत: <http://www.freestockphotos.biz>

यह संकेत हमें वस्तु की गहराई के बारे में सूचना देता है जो कि उसके समान वस्तु के साथ सापेक्ष आकार पर निर्भर करता है। यह संकेत दो आयामी और तीन आयामी छवियों दोनों पर कार्य करता है। इसका मूल आधार यह है कि यदि दो वस्तुयें लगभग समान आकार की होती हैं तो जो वस्तु जितनी पास होती है उतनी बड़ी नज़र आती है (चित्र 2.24 देखिये)

2-9-1-2 xBu i ð.krk



fp= 2-25% Qny ?kkl dk eñku

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org>

i R; {khdj .k} vf/kxe
, oa Lefr

यह संकेत गठन की मात्रा व प्रवणता के बदलाव के प्रत्यक्षण पर निर्भर करता है। वस्तु का गठन जो हमारी आँखों के करीब होता है वह बिना चमक के खुरदरा, स्पष्ट होता है लेकिन आप जैसे ही इससे दूर हो जाते हैं तो वस्तु का गठन कम स्पष्ट या चमकीला हो जाता है और इस प्रकार से अधिक दूरी का प्रत्यक्षण होता है। उदाहरण के लिए यदि आप चित्र 2.25 देखते हैं तो जो फूल दूर हैं वह चिकने लगते हैं लेकिन यदि आप निकटवर्ती फूलों को देखते हैं तो आप घास के मैदान का वर्णन भी देख सकते हैं। गठन में यह बदलाव दूरी से सम्बन्धित होता है।

2-9-1-3 ok; ph; ifjn'; ; k /kqk

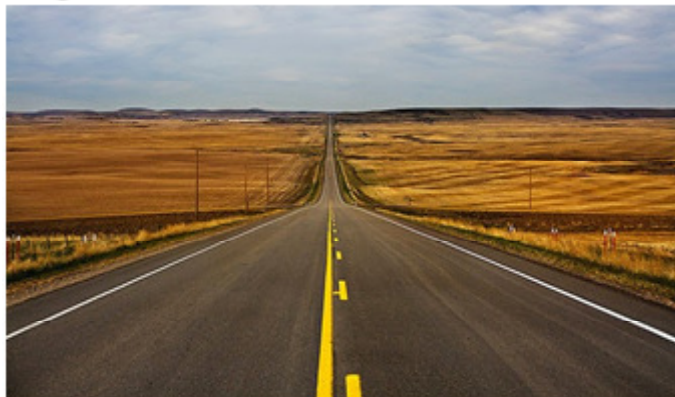


fp= 2-26% ykW -fi ukW pkS/h-nf{k.k dSfYQkfuZ; k] ; w, l -, -

स्रोत: <https://www.gohikeit.com>

यदि वातावरण में धुंध मौजूद होता है तो वस्तु दूर नज़र आती है। धुंध वातावरण के धूल के कण, कोहरा या जलवाष्प का परिणाम होता है। कभी-कभी धुंध के आधार पर दूरी का प्रत्यक्षण भ्रामक हो सकता है। धुंध की उपस्थिति के आधार पर उसी पर्वत को निकट या दूर देखा जा सकता है (चित्र 2.26)।

2-9-1-4 j[kh; ifjn';



fp= 2-27% j[kh; ifjn'; dk mnkgj.k

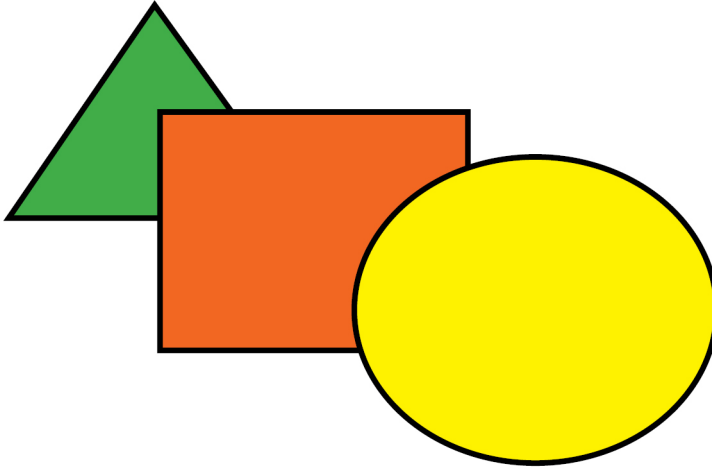
स्रोत: <http://acddpsych.blogspot.in>

यह संकेत क्षितिज के एक बिन्दु पर सीधी रेखा के अभिसुख सम्मिलन होने पर आधारित है। इस संकेत का एक अच्छा उदाहरण रेल की दोनों पटरियों का प्रत्यक्षण या दूरी पर सड़क को देखना हो सकता है। इस संकेत का अर्थ है कि लकीरें जितनी पास होंगी, दूरी उतनी ज्यादा होगी (चित्र 2.27 को देखें)।

2-9-1-5 gLr{k

l ɔnuk ,oa
i R; {khdj .k

जब दो वस्तुएँ एक दूसरे को ढकती हैं तो जो वस्तु दूसरे वस्तु को ढक रही होती है या बाधा पहुँचा रही होती है, वह पास और दूसरी वस्तु जिसे ढका जा रहा होता है वह दूर नज़र आती है (चित्र 2.28 देखिए)।



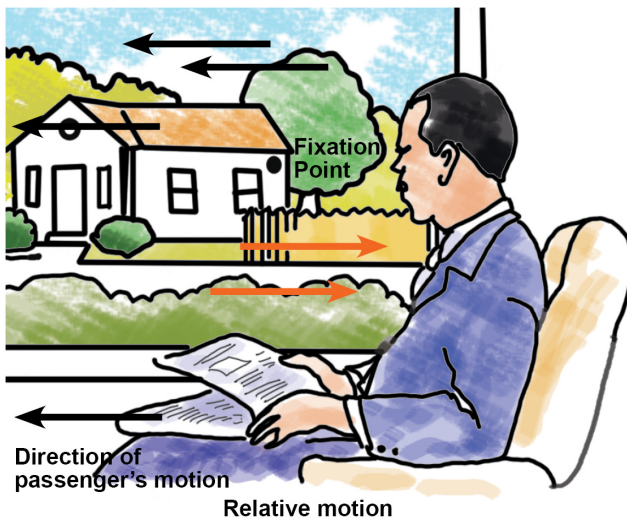
fp= 2-28 %ck/kk dk ,d mnkj .k

2-9-1-6 l ek; kst u

भले ही यह संकेत दोनों आँखों से होता है फिर भी इसे एक नेत्री संकेत की श्रेणी में रखा जाता है। यह समायोजन के रूप में जाना जाता है क्योंकि हमारी आँखों के लेन्स दूरी के हिसाब से खुद को समायोजित कर लेती हैं। जब वस्तु आँख के करीब आता है तो लेन्स की मोटाई बढ़ जाती है दूसरी तरफ जब वस्तु दूर होती है तो लेन्स पतला हो जाता है।

2-9-1-7 xfr yĒcu

जे. जे. गिब्सन द्वारा एक गतिशील दृष्टिकर्ता के आसपास दृश्य सम्बन्धी सूचनाओं के लिए गति दृष्टिकोण शब्द का प्रयोग किया गया। इस शब्द का प्रयोग उस महत्वपूर्ण बिंदु पर ध्यान देने के लिए किया जाता है, जैसे कोई कारक पर्यावरण में गतिशील होते हैं, तो विभिन्न दूरी पर स्थित वस्तु, दृश्यकर्ता के सम्बन्ध में अपनी जगह व दूरी के अनुसार अलग-अलग रफ्तार से गति में दिखाई देते हैं। इसके फलस्वरूप जो जटिल गति उत्पन्न होती है, उसे गति लम्बन के रूप में जाना जाता है।

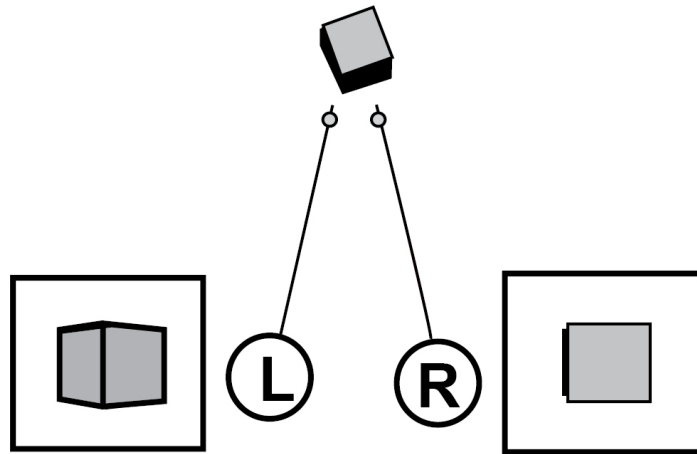


fp= 2-29%jy ;k=k ea xfr yĒcu

2-9-2 f}u=h; l dr

ऐसे संकेत जिन्हें हम अपनी दोनों आँखों से देखते हैं द्विनेत्रीय संकेत कहलाते हैं। एकनेत्रीय संकेत की अपेक्षा ये ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। गहराई के आकलन के लिए द्विनेत्रीय संकेत को प्रयोग करने की प्रक्रिया को लिविम दृष्टिता कहते हैं। निम्नलिखित दो प्रकार के द्विनेत्रीय संकेत हैं:

2-9-2-1 vfhki Vyh; fofhklurk ¼}u=h yaú½



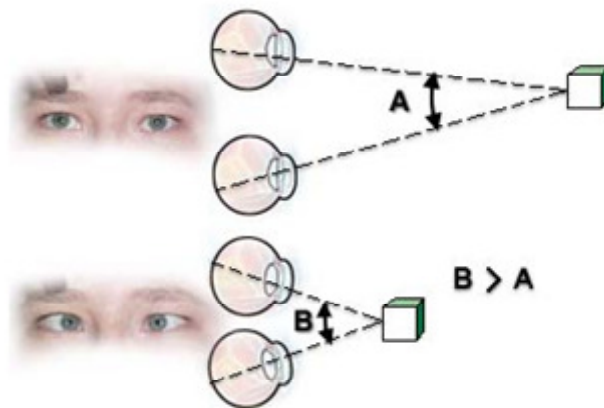
L= Left eye

R=Right eye

fp= 2-30% nkbz vkj ckbz us=ka ea jfVuk ij fhklu Nfo cuuk

मनुष्य की दो आँखें होती हैं जो औसतन 6.3 सेमी की दूरी से अलग होती हैं। इसलिए एक ही वस्तु की रेटिना छवि एक दूसरे से थोड़ी अलग होती है या असमान रूप से दिखाई देती है। एक वस्तु आँखों के जितने करीब होगी, उसकी रेटिना छवि में उतना ही अधिक अंतर होगा। हमारा मस्तिष्क इन दो अलग-अलग रेटिना छवियों के बीच असमानता की मात्रा का विश्लेषण करता है और गहराई, ऊँचाई एवं चौड़ाई की जानकारी का आंकलन करने के लिए एक एकल छवि का उत्पादन करता है।

2-9-2-2 vfhkl j.k



fp= 2-31% us=ka }kjk nks vfhkl j.k dks k

हमारी आँखें एक वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक कोण बनाती हैं जिसे अभिसरण कोण कहते हैं। दूर और पास की वस्तुओं के लिए अभिसरण कोण अलग-अलग होते हैं। जब कोई वस्तु दूर होती है तो हमारी आँखें छोटे अभिसरण कोण बनाती हैं। लेकिन जब कोई वस्तु हमारी आँखों के करीब होती है तो हमारी आँखें अंदर की ओर घूमती हैं और बड़े अभिसरण कोण का निर्माण करती हैं। अभिसरण में यह परिवर्तन, दृष्टिकर्ता को दूरी और गहराई के बारे में संकेत देता है।

2-10 xfr iR; {k.k

हम यह कैसे जानते हैं कि कोई कार हमारी तरफ आ रही है या हमसे दूर जा रही है? गति प्रत्यक्षण गतिशील वस्तु की दिशा व रफ्तार को निर्धारित करने की हमारी क्षमता होती है। मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित कारकों का प्रयोग करते हुए गति प्रत्यक्षण से सम्बन्धित प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास किया है।

- 1) **nf"Vi Vy xfr** %जब कोई वस्तु गति करती है तो दृष्टिपटल पर बनने वाला उसका प्रतिबिम्ब भी गति करता है। दृष्टिपटल छवि की इस गति को विशेष दृश्य-न्यूरोन्स द्वारा पता लगाया जाता है जो कि गति और दिशा में परिवर्तन के लिए संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार हम गति को देखते हैं।
- 2) **i kko dsckn dh xfr** %एक गतिशील वस्तु को थोड़े समय के लिए लगातार देखते हैं और फिर किसी स्थिर वस्तु को लगातार देखते हैं तो स्थिर वस्तु मूल चलती वस्तु के विपरीत दिशा में चलती नज़र आयेगी। इस घटना को प्रभाव के बाद की गति के रूप में जानते हैं जो कि गति अनुकूलन के कारण होता है।
- 3) **mRi Uu xfr** %जब छोटा स्थिर भाग बड़े गतिशील भाग से घिरा होता है तब छोटा स्थिर भाग बड़े घूमते भाग के उल्टी दिशा में घूमता नज़र आता है। इस घटना के कारण ही हम चाँद को उस वक्त गति करते महसूस करते हैं जब वह धीरे-धीरे गति करते बादलों से घिरा होता है।



fp= 2-32 % cknyka dh i hNs pln

स्रोत : <http://courses.washington.edu>

- 4) **vkHkl h xfr** %इसे दृश्य गति के रूप में भी जाना जाता है जो कि सबसे पहले गेस्टाल्ट सिद्धांतकार वर्दाइमर, 1912 द्वारा प्रस्तावित किया गया था। इस घटना में जब स्थिर उद्दीपन को सिलसिलेवार प्रस्तुत किया जाता है तो यह गति करते दिखता है। कथित गति बिना किसी अभिग्राहक सतह में उत्पन्न ऊर्जा के घटित होता है अर्थात् आँखें, सिर व शरीर स्थिर होता है और वस्तु में भी कोई गति नहीं होती है तो भी हमें गति का एहसास होता है।

फाई-घटना : यह घटना सजावटी रोशनी की एक शृंखला में देखा जा सकता है जब रोशनी एक क्रम में जलाई जाती है तो यह गति करते दिखती है जो कि दूरी पर नजर आती है। रोशनी की शृंखला एक क्रम में जलती और बुझती है और गति का एहसास कराती है।

त्रिविम गति का प्रभाव: यह प्रभाव फिल्मों (चलचित्र) में देखा जाता है। इसका उदाहरण फिल्म प्रोजेक्टर है जो एक स्क्रीन पर एक चलते दृश्य के लगातार चित्रों को रखता है। जब फ्रेम की अलग से जांच की जाती है तब भी एक तस्वीर होती है जो पूर्ववर्ती से अलग होती है। जब चलचित्र को सही गति से प्रस्तुत किया जाता है तो लगातार व निर्विघ्न गति (continuous and smooth) दिखाई देती है।

स्वगतिक प्रभाव : यदि पूरी तरह से अंधेरे कमरे में एक छोटे से प्रकाश की स्थिर बिन्दु पर ध्यानपूर्वक देखें तो आभास होता है कि रोशनी की बिन्दु इधर से उधर घूम रही है। यह गति दृश्य तंत्र के ज्यादा से ज्यादा 20 डिग्री को आच्छादित करती है और यह स्पष्ट रूप से आँखों की गति के कारण नहीं होती है। इसे स्वगतिक भ्रम या घटना भी कहा जाता है।

2-11 vkdkj i R; {k.k

इस इकाई में हम लोग उस क्रियावली की चर्चा करेंगे जो उद्दीपनों के आकार को तय करने में प्रयोग किया जाता है। दूरी में परिवर्तन होने के बावजूद भी सही ढंग से उद्दीपनों के आकार को समझने की हमारी क्षमता को 3 तरह की परिकल्पनाओं का प्रयोग करके वर्णित किया गया है।

1) vkdkj-njh fu'pjr k ifjdYi uk

इस सिद्धान्त की मुख्य अवधारणा यह है कि उद्दीपनों के आकार का दिखना, दूरी दिखने के अनुपात में होता है (किलपाट्रिक और इटेलसन, 1953)। यह आगे कहते हैं कि यदि दूरी के बारे में जानकारी उपलब्ध है तो अधिपटल प्रतिमा के आधार पर उद्दीपन के आकार के बारे में व्याख्या की जाती है। हालांकि यदि दूरी के बारे में जानकारी नहीं होती है तो उद्दीपन के आकार के बारे में केवल दृश्य कोण के आधार पर आंकलन किया जाता है। इस सम्बन्ध का गणितीय प्रदर्शन निम्न है :

$$S'/D' = f(\theta)$$

जहाँ, S' = देखा गया आकार

D' = देखी गई दूरी

θ = दृश्य कोण

यहाँ आगे बढ़ने से पहले "दृश्यकोण" शब्द को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा कोण है जो हमारी आँखों द्वारा उस वक्त बनाया जाता है जब वह वस्तु को देखती है।

2) ifjpr vkdkj dk fl) klr

इस संकेत का प्रयोग न केवल उद्दीपन का आकार बल्कि दूरी और गहराई नापने के लिए भी किया जाता है। हम जानते हैं कि उद्दीपन के लिए दृश्य कोण दूरी घटने के साथ कम हो जाता है। हमारा मस्तिष्क इस सूचना का प्रयोग उद्दीपन के आकार से सम्बन्धित पहले की सूचनाओं के साथ करता है और इसके सही आकार, दूरी और गहराई को निर्धारित करता है। इस प्रकार, इस सिद्धान्त के अनुसार परिचित आकार हमारे आकार प्रत्यक्षण को प्रभावित करता है और जो हमारे दूरी के प्रत्यक्षण को प्रभावित करता है (इटलेसन, 1960)। हालांकि बाद में मनोवैज्ञानिक गोगल और डी

सिल्वा (1987) ने बताया कि परिचित आकार का सिद्धान्त सभी परिस्थितियों में सही होता है। जब परिस्थिति में सुधार होता है तब हम परिचित वस्तु आकार जानने के लिए अंकारी संदर्भ दूरी का उपयोग करते हैं।

3) I ki {k i R; {k.k dk fl) kUr

गिब्सन ने 1979 में सापेक्ष प्रत्यक्षण का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। आकार प्रत्यक्षण से सम्बन्धित इनके विचार का इपस्टेन द्वारा सक्षिप्तीकरण किया गया (1982: 78)। (i) वस्तु के अक्षिपटलीय आकार के साथ आकार के सम्बन्ध का कोई प्रत्यक्षणात्मक प्रतिनिधित्व नहीं है, (ii) कथित आकार और कथित दूरी उत्तेजना में जानकारी के स्वतंत्र कार्य है, (iii) कथित आकार और कथित दूरी को यथोचित रूप से जोड़ा नहीं गया है और न ही अक्षिपटल के आकार और कथित दूरी के बारे में जानकारी के संयोजन के संचालन द्वारा मध्यस्थता के आकार की धारणा को माना जाता है। कथित आकार और कथित दूरी के बीच संबंध उत्तेजना के विशिष्ट चर के बीच सम्बन्ध के लिए जिम्मेदार है जो विशेष परिस्थितियों में इन नियमों को नियंत्रित करती है।

ckk c' u 3

fjDr LFkku Hkja

- 1) एक महत्वपूर्ण प्रयोग में हमारे प्रत्यक्षण में प्रत्याशा की भूमिका की व्याख्या की।
- 2) एकनेत्री संकेत ताकत में द्विनेत्रीय संकेत से होते हैं।
- 3) वस्तु की बनावट जो हमारी आँखों के करीब होती है खुरदरी या विशिष्ट होती है लेकिन जैसे-जैसे आप इससे दूर होते जाएँगे वैसे-वैसे वस्तु की बनावट कम विशिष्ट व चिकनी होती जायेगी इस प्रकार प्रत्यक्षक के के बारे में पता चलता है।
- 4) वस्तुओं को दूर माना जाता है यदि वातावरण में उपस्थित होता है।
- 5) संकेत क्षितिज के एक बिन्दु पर सीधी रेखाओं के अभिसरण पर आधारित है।
- 6) हम मनुष्यों की दो आँखें हैं, जो औसत की दूरी से अलग हैं।
- 7) जब कोई वस्तु दूर होती है, हमारी आँखें अभिसरित कोण बनाती है लेकिन जब कोई वस्तु हमारी आँखों के करीब होती है, हमारी आँखें अंदर की ओर घूमती हैं और अभिसरण कोण बनाती है।

।।. 6.3 से 7) छत्ता (L "।।. 6.3 (9

' 1) र्ण और र्ण (1955), (2) कर्ण, (3) र्ण, (4) र्ण, (5) र्ण पृष्ठा

: ११२२

2-12 i R; {k.k ea =fV; ka % Hkz

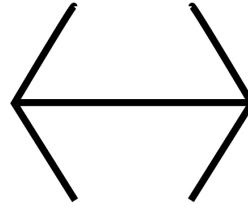
क्या प्रत्यक्षण एक वास्तविकता है? हमेशा नहीं। प्रत्यक्षण की प्रक्रिया गलत या दुरुपयोग भी हो सकती है। जानबूझकर या अनजाने में हम गलतियां करते हैं और उद्दीपनों का गलत मतलब निकालते हैं। जब हम संवेदी जानकारी का गलत मतलब निकालते हैं तब इसे भ्रम के रूप में जाना जाता है। हम इसको "किसी की जागरुकता और कुछ उद्दीपनों के बीच एक विसंगति" के रूप में परिभाषित कर सकते हैं (रेलॉल्ड्स, 2008)। भ्रम के कुछ विशिष्ट

i R; {khdj .k} vf/kxe
, oa Lefr

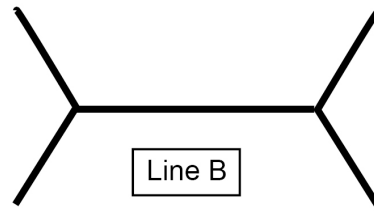
उदाहरणों में पेड़ की शाखाओं को भूत के रूप में समझना तथा रात में रस्सी को सांप के रूप में देखना शामिल है। इस खंड में हम भ्रम के कुछ सामान्य प्रकारों की चर्चा करेंगे।

1) $e\eta j-yk; j$ Hke

निम्न लकीरों में कौन सी लकीर सबसे लम्बी दिखाई दे रही है? चित्र 2.32 देखें।



Line A

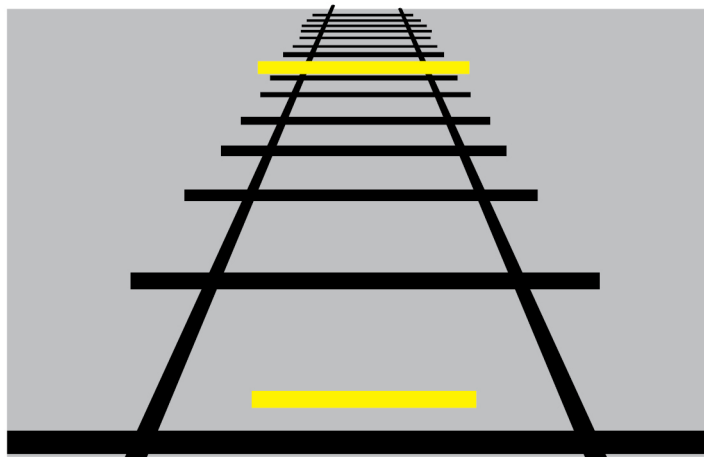


Line B

fp= 2-32 % $e\eta j-yk; j$ Hke

यदि आपका उत्तर लकीर A है तो आप गलत हैं और यदि आपका उत्तर B है तो दुबारा आपने गलत उत्तर दिया है क्योंकि दोनों ही लकीरें समान लम्बाई की हैं। आपके द्वारा अभी देखा गया भ्रम एक ज्यामितीय ऑप्टिकल भ्रम है जिसे मूलर-लायर भ्रम के रूप में जाना जाता है। इस भ्रम में, एक ही लम्बाई की दो सीधी रेखाएँ अलग-अलग लम्बाई को दिखाती हैं। ऐसी रेखा जिसमें तीर अन्दर की तरफ है वो बाहर की तरफ वाली रेखा से छोटी नज़र आती है। इसको तीर सिर भ्रम के नाम से भी जाना जाता है जिससे एक लाइन की कथित लम्बाई अन्य रेखाओं के आकार और स्थिति पर निर्भर करती है जो इसके साथ होती हैं।

2) $i k\delta tks$ Hke



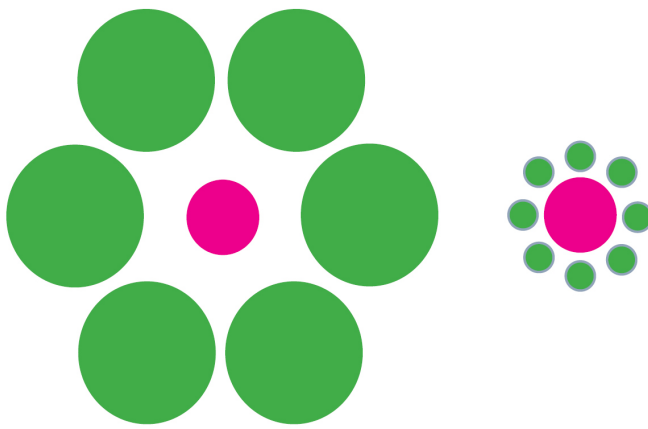
fp= 2-33 % $i k\delta tks$ Hke

यह भी एक दृश्य संबंधी भ्रम है जिसमें कि दो अधिसारित सीधी लकीर दो एक समान लकीर जो इसके ऊपर होती है के आकार के बारे में हमारे प्रत्यक्षण को विकृत कर देता है। ऊपर

की पीली लकीर नीचे की पीली लकीर से ज्यादा लम्बी दिखाई देती है जबकि वास्तव में दोनों की लम्बाई बराबर होती है (चित्र 2.32 देखिए)। पीली लकीर के बारे में गलत निर्णय होता है क्योंकि हम इसके आकार को आंकने के लिए रेखीय दृष्टिकोण संकेत का प्रयोग करते हैं। इसको रेलवे भ्रम के नाम से भी जाना जाता है।

3) , ffcu?kkl Hkæ (Ebbinghaus Illusion)

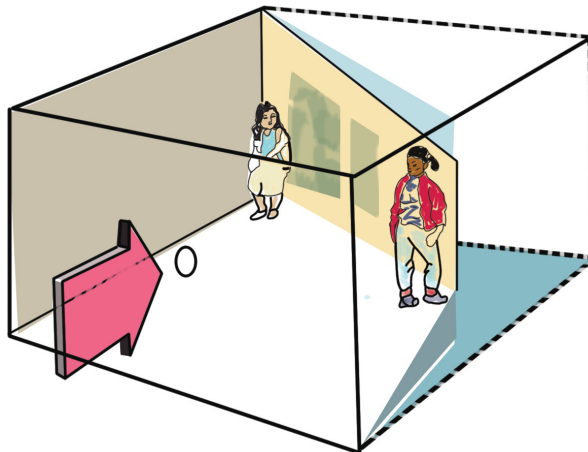
यह सापेक्ष आकार प्रत्यक्षण का एक दृश्य सम्बन्धी भ्रम है जोकि हरमन एब्बिनघास द्वारा खोजा गया लेकिन इडवार्ड बी टिटचनर द्वारा इसे लोकप्रिय बनाया गया। यह भ्रम टिटचनर वृत्त के नाम से भी जाना जाता है। अब उत्तर दीजिए, निम्न में से कौन सा, गहरे गुलाबी रंग का गोला छोटे आकार का है (चित्र 2.34 देखिए) आपका उत्तर जो भी हो, दोनों (गहरे गुलाबी रंग) के गोले एक ही आकार के हैं। इसे एब्बिनघास भ्रम के रूप में जाना जाता है। गहरे गुलाबी रंग के गोले के आकार का प्रत्यक्षण हरे गोलों के संबंधित आकार (के परिप्रेक्ष्य में) पर निर्भर करता है।



fp= 2-34 % , ffcu?kkl Hkæ

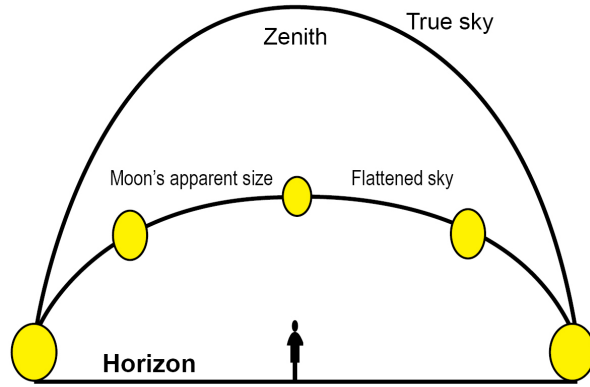
4) , El : e Hkæ

यह भ्रम इनके रचयिता अमेरिकन नेत्र विज्ञानी और प्रत्यक्ष-ज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक एडलबर्ट एम्स जूनियर के नाम पर रखा गया। इस तरह का भ्रम सम्बन्धित आकार के प्रत्यक्षण को विकृत कर देता है। एक दृष्टकर्ता होने के नाते कमरे के एक कोने में खड़ा व्यक्ति अर्थपूर्ण ढंग से दूसरे कोने में खड़े व्यक्ति से बड़ा देखा जाता है (चित्र 2.35)। भ्रम गहराई प्रत्यक्षण के संकेत का अत्यधिक आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत करता है।



fp= %2-35 % , El : e Hkæ

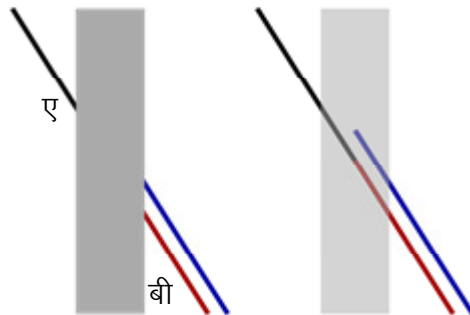
5) पकन Hkæ (The Moon Illusion)



fp= 2-36 % पकन Hkæ

क्या आपने कभी क्षितिज के ऊपर आते हुए चाँद के आकार पर ध्यान दिया है। यदि हाँ तो आपने ध्यान दिया होगा कि यह क्षितिज के ऊपर शिरोबिन्दु के बजाय क्षितिज पर बड़ा दिखता है। हालांकि वास्तव में चाँद के आकार में कोई अन्तर नहीं होता, चाँद का क्षितिज और शिरोबिन्दु पर अलग-अलग आकार का प्रत्यक्षण चाँद भ्रम के नाम से जाना जाता है (चित्र 2.36)। यह भ्रम होता है क्योंकि हमारा आसमान का प्रत्यक्षण चपटा गुंबदाकार होता है और इस प्रकार यह हमारे मस्तिष्क को शिरोबिन्दु पर चन्द्रमा का आकार कम करके देखने के लिए बाध्य करता है। इस प्रकार, भ्रम का यह प्रकार आकार या स्थान का है।

6) i kxumtQ Hkæ



fp= 2-37% i kxumtQ Hkæ

पोगेनड्राफ भ्रम, जोलनर भ्रम से प्रभावित है। जब एक तिरछी लाइन, एक रिक्त स्थान जोकि दो लम्बत लाइनों से बना होता है, द्वारा काटी जाती है, तिरछी लाइन का दो परिणामी खंड सीधी लाइन के रूप में प्रदर्शित नहीं होता है। चित्र 2.37 ऐसा दिखता है कि खंड ए खंड बी के साथ सीधी लाइन पर गिरती नहीं है। लाइन ए बहुत ऊँचाई पर दिखाई देती है या लाइन बी बहुत नीचे नज़र आती है यह पोगेनड्राफ भ्रम के रूप में जाना जाता है।

ckèk ç'u 4

[kkyh txg Hkjs

- 1) जब हम संवेदी सूचनाओं का करते हैं तो इसे भ्रम कहते हैं।
- 2) में एक ही लम्बाई की दो सीधी लकीर अलग-अलग लम्बाई की नज़र आती हैं।

- 3) आमस रूम कमना भ्रम अमेरिकन नेत्र विज्ञानी द्वारा प्रस्तुत किया गया ।
- 4) चन्द्रमा के बारे में हमारा प्रत्यक्षण और में अलग अलग होता है जो चाँद भ्रम के नाम से जाना जाता है ।
- 5) मूलर-लायर भ्रम में अन्दर की तरफ आते हुए तीर की लाइन, बाहर की तरफ जाते हुए की अपेक्षा दिखती है ।

1213 (5 'रिगुगुगुगु

गुगुगुगुगु (4 ररररररर रररर ररररररर (3 'ररर रररर-रररर (2 'ररर रररर (1 - रररर

2-13 I kjkk

अब जब हम इस इकाई के अंतिम पड़ाव में आ गए हैं तो उन सभी मुख्य बिन्दुओं को दोहरा लेते हैं जो हमने अभी तक पढ़ा है ।

- संवेदना ज्ञानेन्द्रिय उत्तेजनाओं से उत्पन्न जानकारी/जागरूकता है । 6 तरह की इन्द्रियाँ होती है, 1) देखना (आँख), 2) सुनना (कान), 3) सूँघना (नाक) 4) स्पर्श (त्वचा) 5) स्वाद (जीभ) 6) शरीर की अवस्था के अनुकूलन का ज्ञान और गति संवेदना ।
- प्रत्यक्षण प्रक्रियाओं का एक व्यवस्थित रूप है जो हमें आस-पास की दुनिया को समझने में मदद करता है । प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं जब कोई उद्दीपन सामने आता है 1) चयन 2) संगठन 3) व्याख्या ।
- प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की व्याख्या के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा दो अलग तरह की सैद्धान्तिक पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया उनमें से एक ऊपरी निचली प्रक्रिया पद्धति है और दूसरी आधारित ऊपरी प्रक्रिया पद्धति है ।
- आधारित ऊपरी प्रक्रिया पद्धति के अनुसार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष होती है । उद्दीपन के पास पर्याप्त सूचनाएं होती हैं जिसके द्वारा अर्थपूर्ण ढंग से उसकी व्याख्या की जा सके और हमें हमारे अनुभव का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ती है ।
- ऊपरी निचली प्रक्रिया के अनुसार प्रत्यक्षण अनुभव द्वारा निर्धारित प्रक्रिया है अर्थात् उद्दीपन के पास पर्याप्त सूचना नहीं होती कि अर्थपूर्ण ढंग से उसकी व्याख्या की जाए ।
- संगठन के गैस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुसार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया उद्दीपनों को एक वस्तु के रूप में नहीं देखती बल्कि इसमें एक रूप या आकार देखने की हमारी प्रवृत्ति शामिल होती है ।
- गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का मूल आधार है कि "सम्पूर्ण इसके भाग के योग से विभिन्न होता है" इनका मानना है कि संगठन प्रत्यक्षण को एक अलग अर्थ देता है । संगठन की वजह से ही किसी जटिल आकृति को हम एकल आकृति या वस्तु के रूप में देखते हैं ।
- प्रत्यक्षण की प्रक्रिया को कई तरह के कारकों द्वारा प्रभावित होते देखा गया है जैसे कि हमारी अपेक्षा, संवेग, उद्दीपन से सम्बन्धित विशेषताएं, पहले के अनुभव और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ।
- प्रत्यक्षण कई प्रकार के होते हैं जैसे कि गहराई का प्रत्यक्षण, दूरी का प्रत्यक्षण, गति का प्रत्यक्षण और आकार प्रत्यक्षण ।

i R; {khdj .k] vf/kxe
, oa Lefr

- भ्रम को प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की विकृति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि उद्दीपन का गलत अर्थ निकालना है। व्यक्ति को लगता है कि वे कुछ देख रहे हैं, वास्तव में सच्चाई उससे काफी अलग होती है। भ्रम कई तरह के होते हैं जैसे कि मूलर लायर भ्रम, पोंजो भ्रम, पोगेन्डार्फ भ्रम, आमश रूम भ्रम और चांद भ्रम।

2-14 eq; 'k0n

- i R; {k.k % यह ज्ञानेन्द्रिय सूचनाओं के चयन, संगठन व व्याख्या करने की प्रक्रिया है जो पहले के अनुभव, दूसरों के अनुभव, आवश्यकता या अपेक्षा पर निर्भर करती है।
- xgjk i R; {k.k % यह व्यक्ति की दुनिया को तीन विभागों में देखने की दृश्य क्षमता से संबंधित है। इस प्रकार से यह हमें वस्तु की दूरी के बारे में निर्णय लेने लायक बनाती है।
- xfr i R; {k.k % यह गतिशील वस्तु की रफ्तार और दिशा के बारे में निर्णय लेने की हमारी क्षमता है। इसमें चार कारक शामिल हैं जोकि रेटीना गति, गति के बाद प्रभाव प्रेरित, चाल, स्ट्रोबोस्कोपिक गति हैं।
- vkdkj i R; {k.k % उद्दीपन के आकार के बारे में उसकी दूरी में बदलाव के बावजूद सही ढंग से निर्णय लेने की क्षमता को ही आकार प्रत्यक्षण के रूप में जाना जाता है।
- vkNfr-i "Bhkfe | Ecu/k
fl n/kkr % इस सिद्धान्त के अनुसार हमारे अन्दर दुनिया को आकृति और पृष्ठभूमि के रूप में अलग करने की प्रवृत्ति होती है। चित्र उद्दीपन का वह भाग होता है जो हमारे दृश्य क्षेत्र का केन्द्र होता है जहां पीछे का हिस्सा पृष्ठभूमि होता है।
- vFkxHkrk dk fl)kur % इस सिद्धान्त के अनुसार उद्दीपन को समूह में करने के हर सम्भावित तरीकों में से हमारे अन्दर उद्दीपन को सबसे सरल व स्थिर रूप में करने (देखने) की प्रवृत्ति होती है।
- i R; {k.kRed vi\$kk % यह व्यक्ति की किसी वस्तु को एक निश्चित रूप में देखने की तत्परता या प्रवृत्ति है।
- , du=h | dr % यह ऐसी सूचनाएँ या संकेत हैं जिन्हें हमारा मस्तिष्क केवल एक ही आँख से प्राप्त करता है। यह संकेत द्विनेत्री संकेत से कमजोर होता है।
- f)us-h | dr % ऐसा संकेत जो हमारा मस्तिष्क दोनों आँखों से प्राप्त करता है।
- vfHkl fjr dksk % किसी वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते समय हमारी आँखों द्वारा बनाया जाने वाला कोण अभिसरित

कोण के रूप में जाना जाता है। दूर और नजदीक की वस्तु के लिए बनाया जाने वाला अभिसरित कोण अलग-अलग होता है।

1.0101 ,0a
i R; {khdj.k

f=foe xfr dk çHkko

% इस घटना के अनुसार जब स्थिर वस्तु एक के बाद एक लगातार प्रस्तुत की जाती है तो यह गति करते दिखती है? यह घटना, विडियो के गति- प्रत्यक्षण की व्याख्या करने के लिए उपयोग में लाई जाता है।

2-15 i qjkykdu i t u

- 1) प्रत्यक्षण प्रक्रिया का पहला चरण है।
 - क) ध्यान
 - ख) व्याख्या
 - ग) उद्दीपन का प्रदर्शन
 - घ) प्रतिक्रिया
- 2) लोगों में अधूरे चित्र की खाली जगह को भरने की प्रवृत्ति परिभाषा है।
 - क) समानता की
 - ख) निकटता के सिद्धान्त की
 - ग) आकृति और पृष्ठभूमि की
 - घ) बन्दी की
- 3) गहराई संकेत में दोनों आँखों की जरूरत होती है।
 - क) एक नेत्री
 - ख) द्विनेत्री
 - ग) एक कर्णी
 - घ) द्विकर्णी
- 4) के सिद्धान्त के अनुसार वस्तु जो एक दूसरे के करीब होती हैं वे एक समूह बनाने के लिए प्रवृत्त होती हैं।
 - क) समानता
 - ख) अच्छी निरंतरता
 - ग) निकटता
 - घ) बन्दी
- 5) प्रत्यक्षण से आप क्या समझते हैं? प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रिया के चरणों की व्याख्या कीजिए।
- 6) संगठन का गेस्टल्ट सिद्धान्त क्या है? निम्नलिखित सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।

- क) आकृति-पृष्ठभूमि सम्बन्ध
ख) बन्दी का नियम
ग) समानता का नियम
- 7) प्रत्यक्षणात्मक अपेक्षा की विवेचना कीजिए और वर्णन कीजिए कि यह किसी के प्रत्यक्षण को कैसे प्रभावित कर सकती है।
8) प्रत्यक्षण के एकनेत्री संकेत व द्विनेत्री संकेत में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
9) गति प्रत्यक्षण के लिए जिम्मेदार कारकों का वर्णन कीजिए।
10) आकार-दूरी परिवर्तन परिकल्पना के संदर्भ के साथ आकार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की विवेचना करिए।

2-16 I nHkZ , oa i <us ds I qko

- Baron, R.A.(2001). *Psychology*. 5th Edition. Pearson Education, New Delhi, India.
- Esgate, A. &Groome, D. (2005). *An Introduction to Applied Cognitive Psychology*. Hove: Psychology Press, USA.
- Foer, J. (2012). *Moonwalking with Einstein: The Art and Science of Remembering everything*. Penguin.
- Gibson, E.J., & Walk, R.D. (1960). The “visual cliff.” *Scientific American*, 202, 67–71.
- Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. &Schopler, J. (2004). *Introduction to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
- Mishra, G. & Baron, R. A. (2006). *Psychology: Indian Subcontinent* (5th Edition). New Delhi, Pearson Publication
- Nolen-Hoeksema, S., Fredrickson, B., Loftus, G. R., & Lutz, C. (2009). *Atkinson & Hilgard's Introduction to Psychology*. Wadsworth, Cengage Learning, United States.
- Reber, A.S & Reber, E.S (2001). *Dictionary of Psychology*. Penguin, UK.
- Rubin, D. C. (Ed.). (1999). *Remembering Our Past: Studies in Autobiographical Memory*. Cambridge University Press.
- Smith, E. E., Kosslyn, S. M., &Barsalou, L. W. (2007). *Cognitive psychology: Mind and Brain* (Vol. 6). Upper Saddle River: Pearson/Prentice Hall.
- Sternberg, R.J. & Sternberg, K. (2012). *Cognitive Psychology*. 6th Edition. Wadsworth Cengage Learning, United States.
- Styles, E. (2004). *Attention, Perception and Memory: An Integrated Introduction*. Psychology Press.

2-17 fp=ka dk I nHkZ

- The Forest Has Eyes by Bev Doolittle (1984). Retrieved March 20, 2018, from <http://www.greenwichworkshop.com/details/default.asp?p=32&t=1>

- The Gestalt Principle of Common Fate. Retrieved March 24, 2018, from <http://cdn.zmescience.com/wp-content/uploads/2013/09/traffic.jpg>
- A Flamingo shaped pen. Retrieved March 29, 2018, from <https://www.amazon.in>
- Rat-man stimulus used in experiment. Retrieved March 29, 2018, from <https://www.simplypsychology.org/perceptual-set.html>
- Use of monocular cues in flat painting for depth perception. Retrieved January 7, 2019, from https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/ad/Canaletto_Entrance_to_the_Grand_Canal_Venice
- Hot air balloons flying in the air. Retrieved May 5, 2018, from <http://www.freestockphotos.biz/stockphoto/5579>
- Flower meadows. Retrieved May 5, 2018, from https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Flowers_meadows.jpg
- Los Pinos Peak- Southern California, USA. Retrieved January 7, 2019, from <https://www.gohikeit.com/2013/10/los-pinos-peak-ortega-canyon-hiking.html>
- An example of monocular cue-linear perspective. Retrieved May 6, 2018, from <http://acddpsych.blogspot.in/2014/11/monocular-cues.html>
- Two convergence angles formed by our eyes. Retrieved May 6, 2018, from <https://psychlopedia.wikispaces.com/binocular+convergence>
- Moon behind clouds. Retrieved May 6, 2018, from http://courses.washington.edu/psy333/lecture_pdfs/Week8_Day1.pdf
- The Poggendorff Illusion. Retrieved January 8, 2019, from https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Poggendorff_illusion.svg

2-18 vkklykbu lkr

- For more understanding on perception as a phenomenon, visit:
 - <https://www.cognifit.com/perception>
- For more on principle of perceptual organization, visit:
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/9bcf/2a9b3ed3defe86059a3ac180a188fad53aff.pdf>
 - <http://courseweb.stthomas.edu/mjodonnell/cojo232/pdf/gestalt.pdf>
 - <https://courses.lumenlearning.com/wsu-sandbox/chapter/gestalt-principles-of-perception/>
- For more on the factors affecting perception, visit:
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/c4bd/148e1a26ee1fd23449a6ffe8131e62213e17.pdf>
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/e546/d1dd0c015059b4464fd8c178d89c9036bb9e.pdf>
 - <http://faculty.virginia.edu/perlab/pdf/ZadraClareEmotPercept.pdf>

i R; {khdj .k] vf/kxe
, oa Lefr

- For more understanding on theoretical approaches of perception, visit:
 - <http://cognitivepsychology.wikidot.com/cognition:topdown>
 - http://www.socialscientist.us/nphs/psychIB/psychpdfs/Theories_of_Perception.pdf

oLr(u"B ç' ukā ds mÙkj

1) (c) 2) (d) 3) (b) 4) (c)



bdkbz 3 vf/kxe*

: ij\$kk

3.0 अधिगम का उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 अधिगम का स्वरूप

3.3 अधिगम का प्रकार

3.4 अधिगम का सिद्धान्त

3.4.1 पैवलोव का क्लासिकी अनुबंधन

3.4.1.1 द लिटिल एलबर्ट प्रयोग : मानव सीखने में क्लासिकल अनुबंधन का प्रयोग करना

3.4.2 स्कीनर का क्रिया प्रसूत अनुबंधन

3.4.3 बैन्दुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त

3.5 संज्ञानात्मक अधिगम

3.5.1 अप्रकट अधिगम

3.5.2 सूझ से अधिगम

3.6 अधिगम की नीतियाँ : काल्पनिक चित्र, अभ्यास और संगठन

3.7 सारांश

3.8 पुनरावलोकन प्रश्न

3.9 मुख्य शब्द

3.10 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

3.11 चित्रों का संदर्भ

3.12 ऑनलाइन स्रोत

3-0 I h[kus dk mn\$;

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप सक्षम होंगे -

- अधिगम के स्वरूप और क्षेत्र की व्याख्या करने में;
- अधिगम के विभिन्न प्रकारों को पहचानने में;
- अधिगम के सिद्धान्त का वर्णन करने और अन्तर निकालने में; तथा
- अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग होने वाली नीतियों का संक्षेपीकरण करने में।

3-1 iLrkouk

आपने अपने जीवन काल में काफी अच्छी चीजों को अर्जित किया है, जैसे कि आपको पढ़ना, लिखना व सामाजिक रूप से वांछनीय तरीके से व्यवहार करना आता है। आपने इन चीजों को अपने जीवन के अनुभव से प्राप्त किया। ऐसा अनुभव संवादात्मक रहा है। ये कौशल आपको जीवन में सही तरीके से सामायोजन करने में आपकी सहायता करता है। आपने ऐसे व्यवहारगत तरीकों को कैसे प्राप्त किया? यह आपके सीखने की प्रक्रिया का परिणाम है। सीखने की प्रक्रिया सभी जीवों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो अन्ततः आपको विभिन्न

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

परिस्थितियों में सामंजस्य करने के लायक बनाती है। इस इकाई में, आपको अधिगम से अवगत कराया जायेगा जोकि जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। आप अधिगम की प्रक्रिया एवं उसकी विशेषताओं को भी सीखेंगे। अधिगम के सिद्धान्त और दूसरे सम्बन्धित तथ्य भी सरल तरीके से प्रस्तुत किए जाएंगे।

3-2 vf/kxe dk Lo: i

अधिगम प्राणी के व्यवहारात्मक परिवर्तन का मुख्य कारक है। अधिगम के द्वारा हम अपने व्यवहार को परिवर्तित करते हैं। बहुत सी ऐसी प्रक्रियाएं हैं जिनके द्वारा हम जीवन में अनुभव प्राप्त करते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसी बहुत-सी प्रक्रियाओं को प्राप्त किया है और अनवरत इन क्षेत्रों में शोध-कार्य करने में लगे हुए हैं।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिगम शब्द को कई ढंग से परिभाषित किया गया है। सबसे अधिक स्वीकार की जाने वाली परिभाषा बैरन (2001) द्वारा दी गई। यह अनुभव के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला व्यवहार में स्थायी सापेक्षिक परिवर्तन है अथवा व्यवहारिक क्षमता। इस परिभाषा के तीन बिन्दुओं के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है – प्रथम, जैसा कि परिभाषा में उल्लिखित है 'सापेक्षिक स्थायी परिवर्तन'। यहां इसका उल्लेख करना आवश्यक है कि व्यवहार में किसी भी प्रकार के अस्थायी परिवर्तन को अधिगम का नाम दिया जा सकता है। जैसे दवा लेने अथवा भारी भोजन के पश्चात् नींद का अनुभव करना अथवा बीमारी के कारण थकान अनुभव करना। द्वितीय, आयु बढ़ने अथवा परिपक्वता के कारण (जैसे एक व्यक्ति में वृद्धि एवं विकास होता है) हुए परिवर्तन के अधिगम नहीं माना जाता है। उदाहरण के लिए लम्बाई में परिवर्तन परिपक्वता के कारण आता है। तृतीय, यहाँ अनुभव का अर्थ केवल अपने स्वयं के अनुभव से नहीं है। अधिगम केवल सीधे अनुभवों के द्वारा नहीं बल्कि प्रतिनिधिमूलक (विकेरियस) के रूप में भी प्राप्त की जा सकती है, जैसे – घटनाओं का निरीक्षण करना एवं उसमें भाग लेना (बैन्दुरा – 1986)।

उपरोक्त व्याख्या से यह स्पष्ट है कि सभी परिमार्जित व्यवहार सीखे हुए नहीं होते, बल्कि व्यवहार में कुछ परिमार्जन शारीरिक परिपक्वता के कारण भी आते हैं। बहुत स्थितियों में अधिगम एवं परिपक्वता का अन्तर स्पष्ट है लेकिन कुछ जगह में यह कम स्पष्ट दिखाई देते हैं। आप एक नवजात शिशु के चलने का उदाहरण ले सकते हैं। प्रायः एक नवजात 12-15 माह की अवस्था से पूर्व नहीं चल सकता है। जब वे शारीरिक रूप से फिट एवं तैयार होगा तभी चल सकता है, संभवतः बिना सीखे हुए। अतः, यहाँ चलने में अधिगम की भूमिका नहीं है। लेकिन बच्चों को रंगों की पहचान अधिगम के परिणामस्वरूप आती है। इस प्रकार व्यवहार के परिमार्जन में अधिगम एवं परिपक्वता का प्रभाव भिन्न-भिन्न है।

प्रश्न उठता है कि हम क्यों सीखते हैं? वह प्रक्रिया जो अधिगम या सीखना कहलाती है उसका महत्व क्या है? मानव व्यवहार में अधिगम एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यही कारण है कि यह हमें अनुकूलन एवं जीवित रहने में सहायता करती है। अधिगम अच्छा भी एवं बुरा भी हो सकता है। अधिगम कई प्रकार के हो सकते हैं। अधिगम के कुछ महत्वपूर्ण प्रकारों की विवेचना निम्न अनुभाग में की जाएगी।

3-3 vf/kxe ds i dkj

अ) xR; kRed vf/kxe

प्रयासों अथवा अनुभव के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले नवीन गत्यात्मक कौशल अथवा कार्यात्मकता को गत्यात्मक अधिगम कहते हैं। यह अधिगम हमको गत्यात्मक कार्यों को

करने में सहायता करता है जैसे चलना, दौड़ना, स्केटिंग करना, कार/स्कूटर चलाना, चढ़ना आदि।

ब) okfpd vf/kxe

इस अधिगम में शब्दों, आवाजों, तस्वीरों आदि के प्रयोग द्वारा दूसरों से संप्रेषण करने का कौशल सन्निहित होता है। प्रारम्भिक अध्ययन निरर्थक पदों पर किए गए जो सार्थक पदों के अनुसार भिन्न थे। उच्च साहचर्य मूल्य वाले पदों की सूची जैसे एलयूवी(LUV), एलओएस(LOS), आरयूएफ(RUF) की तुलना कुछ अर्थहीन पदों से की गई जैसे एक्सयूवाई(XUY), जेडईआर(JTR), एक्सयूटी(XUT)। मैकगॉश (1930) ने यह निष्कर्ष दिया कि जब तीन वर्ण के शब्दों के अधिगम की तुलना विभिन्न साहचर्य के निरर्थक पदों से की जाती है तब 100 प्रतिशत साहचर्य मूल्य वाले निरर्थक पदों की तुलना में तीन वर्ण शब्दों सार्थकता के साथ आसानी से अधिगमित किया जा सकता है, जब साहचर्य मूल्य घटते हैं तब निरर्थक पदों को अधिगमित करना कठिन होता है।

स) l ã R; kRed vf/kxe

यह इस प्रकार का अधिगम है जिसमें हम उद्दीपकों को उनकी विशेषताओं एक रूप के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। उदाहरणार्थ, भौंकने वाले, चार पैरों वाले एवं एक पूंछ वाले जानवर को कुत्ते के रूप में पहचानने की योग्यता, संप्रत्यात्मक अधिगम का भाग है। हम यह सीख चुके हैं कि इस विशेष प्रकार के शब्दों से वर्णित जानवर 'कुत्ता' होता है। ब्रूनर, गुडनाउ एवं आस्टिन (1956) द्वारा किया गया एक प्रतिष्ठित अध्ययन संप्रत्यक्ष निर्माण के संज्ञानात्मक व्याख्या पर बल देता है। प्रयोग में 81 कार्ड्स का प्रयोग किया गया जो चार गुणों- बार्डर की संख्या, चित्रों का रंग, चित्रों का आकार, एवं चित्रों की संख्या के आधार पर अलग-अलग थे। इस प्रयोग में प्रयोगकर्ता के मानचित्र के प्रत्यक्ष को सीखना था, उदाहरणार्थ सभी कार्ड जिसमें एक चित्र एवं दो बार्डर थे, प्रस्तुत किए गए तथा प्रतिभागियों का यह बतलाना या की कार्ड प्रत्यय के उदाहरण हैं अथवा नहीं और प्रयोगकर्ता को प्रत्येक कार्ड के लिए यह बतलाना था कि उत्तर सही हैं अथवा गलत हैं। अतः यह प्रक्रिया इस परिकल्पना को बनाने में सहायक होती है कि प्रतिभागियों ने प्रत्यय निर्माण सीखा।

द) foHknhÑr vf/kxe

उद्दीपकों एवं उनके अनुसार दी गई अनुक्रियाओं में भेद करने की योग्यता विभेदीकृत अधिगम कहलाती है। हल (1920) द्वारा संप्रत्यक्ष निर्माण पर किया गया विशेष अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण विभेदीकृत अधिगम के आधार पर किया गया। प्रतिभागियों ने एक के अनुभव के आधार पर सामान्य तत्वों को विभेदीकृत करना सीखा तथा वही समान तत्व जब नई सेटिंग में प्रकट हुए तब उन्हें पहचान लिया गया तथा उनका प्रमाण किया। हल ने प्रत्यय निर्माण की व्याख्या अनुबन्धित अधिगम-प्रबलन, सामान्यीकरण एवं चयनात्मक विभेदन के आधार पर किया।

3-4 vf/kxe ds fl) kUr

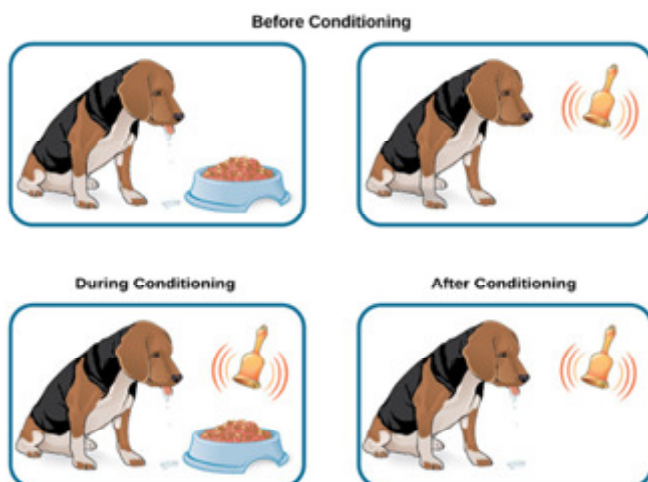
अधिगम हमारे जीवन का एक समग्र भाग है। जिस ढंग से हम सूचनाओं को प्रत्यक्षीकृत करते हैं, भाषा को समझते एवं उसका प्रयोग करते हैं, हमारा चिन्तन, विश्वास, मनोवृत्ति यह सब अधिगम द्वारा प्रभावित होते हैं। अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है जो सापेक्षिक रूप से स्थायी स्वरूप में है तथा यह अनुभव एवं प्रयास द्वारा प्रभावित होता है। व्यवहार में परिवर्तन अच्छा एवं बुरा हो सकता है तथा यह कुछ समय तक रह सकता है। अधिगम प्राप्त करने के विभिन्न रास्ते हैं, जिनकी व्याख्या निम्न प्रकार की गई है।

3-4-1 i sykb dk i kphu vuql/ku

प्रसिद्ध रूसी शरीरशास्त्री इवॉन पेट्रोविच पैवलॉव (1849-1936) अधिगम के अध्ययन के क्षेत्र में अग्रणी थे। सन् 1904 में इनको मेडिसिन के क्षेत्र में अपने शारीरिक पाचन के कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने अधिगम में प्राचीन प्रयोगों का उपयोग किया और सीखने के बहुत से मुख्य सिद्धान्तों को स्थापित किया। प्राचीन अनुबन्धन सीखने का एक प्रकार है जो पैवलॉव द्वारा किए गए, प्राचीन प्रयोगों पर आधारित है। इस प्रकार के अनुबन्धन को प्रतिक्रियात्मक अनुबन्धन अथवा पैवोलोवियन अनुबन्ध के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के अनुबन्धन के दो उद्दीपकों के जोड़ों को सम्मिलित किया जाता है। जिसमें एक अनुबन्धित उद्दीपक (सीएस) या दूसरा अनानुबन्धित (यूसीएस) उद्दीपक कहलाता है। अनुबन्धित उद्दीपक की तटस्थ उद्दीपक के रूप में भी जाना जाता है। क्योंकि जब यह प्रारम्भ में कुछ समय के लिए प्रस्तुत किया जाता है, तब यह प्राणी को केवल सावधान करता है, कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करता। यूसीएस ऐसा उद्दीपक है जो लगातार सहज अनुक्रिया को देता है जिसे अनानुबन्धित अनुक्रिया (यूसीआर) के नाम से जाना जाता है। सीएस एवं यूसीएस को कई बार लगातार साथ-साथ प्रस्तुत किया जाता है जिससे अनुबन्धन स्थापित हो जाता है अथवा अनुबन्धन स्थापित किया जाता है। सीएस को यूसीएस से थोड़ा पहले प्रस्तुत किया जाता है। सीएस एवं यूसीएस के बीच वे समय अन्तराल को आन्तरिक-उद्दीपक समयान्तराल के नाम से जाना जाता है। जिसका विस्तार आधे सेकेण्ड से कुछ सेकेण्ड के लिए होता है। जब तटस्थ उद्दीपक को लगातार यूसीएस के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है तब यह यूसीएस के गुणों को प्राप्त कर लेती है और अनानुबन्धित अनुक्रिया, यूसीआर देता है। यदि सीएस एवं यूसीएस को एक उपयुक्त 'अन्तर उद्दीपक समयान्तराल' के साथ कई बार प्रस्तुत किया जाए तो वह उद्दीपक जो प्रारम्भ के तटस्थ था वह तब वह, उस अनुक्रिया को देना प्रारम्भ कर देता है जो यूसीएस द्वारा सीएस एवं यूसीएस को एक साथ देने से पहले प्राप्त होता था।

इस प्राचीन प्रयोग में यह जानने के लिए कि भोजन को देखने के पश्चात् कुत्ते ने कितना लार स्राव किया एक विशेष डिजाइन के उपकरण का उपयोग किया। उन्होंने कुत्ते की लार स्राव ग्रन्थि से एक ट्यूब को जोड़ा जिसे साबित लार को कुत्ते की गर्दन से जुड़े हुए कप में एकत्रित किया जा सके। पैवलॉव ने कुत्ते को घंटी की आवाज पर लार एकत्रित करने के लिए प्रशिक्षित किया। उन्होंने भोजन देने के पश्चात् घंटी को बजाया जो यूसीएस था। इस प्रक्रिया को कई बार किया गया जब तक कि कुत्ते ने अनुबन्धन को प्राप्त नहीं कर लिया अथवा कुत्ता अनुबन्धित नहीं हो गया। यह भोजन एवं घंटी के बीच का सम्बन्ध था। इसे सीखने के वक्र पर प्लॉट किया गया जिसे अधिग्रहण कर्व के नाम से जाना जाता है। जब सीएस को यूसीएस से बार-बार युग्मित किया जाता है, लार स्राव बढ़ जाता है। पैवलॉव ने लगातार नए सीएस एवं यूसीएस के साथ प्रयोग किया और पाया कि कोई भी उद्दीपक जो विश्वसनीयता से प्रत्यावर्तित अनुक्रिया को प्रस्तुत करता है, यूसीएस होता है। एक बार अनुक्रिया प्राप्त करने के पश्चात् यदि घंटी (सीएस) बिना भोजन (यूसीएस) के बजायी जाती है तब कुत्ते के लार स्राव में कमी आ जाती है। अर्थात् यदि सीएस को बिना यूसीएस के प्रस्तुत किया जाता है तब सीआर धीरे-धीरे कम हो जाता है, जिसे विलोपन कर्व के नाम से जाना जाता है। विश्राम के अन्तराल के पश्चात् जब घंटी (सीएस) को पुनः बजाया जाता है, तब कुत्ता पुनः लार स्राव प्रारम्भ कर देता है। यह स्वतः पुनरावर्तन के नाम से जाना जाता है, क्यों कि अधिगम पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ और एक अन्तराल के पश्चात् कुत्ते ने पिछले सीएस एवं यूसीएस के मध्य साहचर्य के आधार पर पुनः प्रतिक्रिया करना प्रारम्भ कर दिया। अतः यह साहचर्य समाप्त नहीं हुआ। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि विलोपन के पश्चात् भी कुछ अधिगम बना रहता है (पैवलॉव के प्रयोग के आधार पर)। स्वतः पुनरावर्तन के समय

लार की मात्रा विलोपन के समय की अपेक्षा अधिक होती है। जब सीएस एवं यूसीएस को पुनः एक साथ प्रस्तुत किया जाता है, यह एक मजबूत प्रतिक्रिया (लार-स्राव) देता है। इसे पुनः अनुबन्धन के रूप में जाना जाता है।



fp= 3-1 % Dykfl dh vuçaku ds pj .k

I ksr%<https://courses.lumenlearning.com>

ckDI 3-1 % egRo iwz i nka dh I eh{k

vukuçfU/kr mîhi d ¼ h, I ½ % किसी उद्दीपक को जब भी प्रस्तुत किया जाता है वह बिना किसी शर्त के स्वाभाविक रूप से अनुक्रिया देता है। उदाहरणार्थ, प्याज काटना रूलाता है अथवा फूल का पराग, छींकने के लिए बाध्य कर सकता है। यह प्याज एवं पराग, यूसीएस के दो उदाहरण हैं।

vuçfU/kr mîhi d ¼ h, I ½ % वह उद्दीपक जो प्रारम्भ में तटस्थ स्वरूप का होता है, जिसमें अनुक्रिया देने की क्षमता नहीं होती है। बाद में यूसीएस के साथ बार-बार जुड़ने से यह यूसीएस की भविष्यवानी करने योग्य हो जाता है। अतः यह यूसीएस के वास्तविक अर्थ की अनुक्रिया के रूप में प्रकट करता है।

vukuçfU/kr i frfØ; k ¼ h hvkj ½ % वह अनुक्रिया जिसके लिए हमें पहले से किसी अधिगम की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् जो अपने आप बिना किसी परिस्थिति के प्राप्त होती है। जैसा कि पहले प्याज काटते समय रोने की अथवा पराग के द्वारा छींकने की विवेचना की जा चुकी थी।

vuçfU/kr vuçØ; k ¼ hvkj ½ % कुछ अनुभव के आधार पर जो अनुक्रिया अनुबन्धित उद्दीपक के लिए दी जाती है, सीआर के नाम से जानी जाती है।

i kphu vuçU/ku ds fl) klr %

पैवलॉव के प्राचीन अनुबन्धन के प्रयोगों के परिणामों की प्राप्ति के निष्कर्ष के आधार पर निम्नलिखित पांच मुख्य सिद्धान्तों का वर्णन किया जाता है :

mi yfC/k % सीएस एवं यूसीएस के युग्म को एक क्रम में लगातार संलग्न रहने के कारण सीआर प्राप्त होता है। समकालिक (simultaneous) अनुबन्धन में, सीएस एवं यूसीएस एक समय में प्रस्तुत किए जाते हैं और तब तक साथ-साथ रहते हैं, जब तक सीआर प्राप्त नहीं हो जाता है। संकेत (trace) अनुबन्धन में सीएस पहले प्रस्तुत किया जाता है, और थोड़े समय के विलम्ब के पश्चात् यूसीएस दिया जाता है। पूर्ववर्ती (backward) अनुबन्धन में, यूसीएस, सीएस के पहले प्रस्तुत किया जाता है। विलम्बित (delayed) अनुबन्धित प्रतिक्रिया में सीएस, यूसीएस के कुछ सेकण्ड से मिनट के पहले प्रस्तुत किया जाता है और इसके साथ कुछ सेकण्डों के लिए जारी रह सकता है। पैवलॉव के अनुसार समकालिक, संकेत एवं विलम्बित अनुबन्धन अधिगम प्राप्त करने की प्रभावकारी विधियां हैं।

foyki u % , d ckj vuçfU/kr] geškk vuçfU/kr \

अधिगम के सिद्धान्तों को जानने के पश्चात् पैवलॉव ने उन परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया जिसके द्वारा प्राप्त अनुबन्धन समाप्त हो सके। अतः हम अनुबन्धन से कैसे छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं? यूसीएस देना रोक दें। जब यूसीएस की अनुपस्थिति में अनुबन्धित उद्दीपक अनगिनत बार प्रस्तुत किए जाते हैं तो उस स्थिति में अनुबन्धित अनुक्रिया समाप्त हो जाती है, इस घटना को पैवलॉव ने **foyki u** का नाम दिया। पैवलॉव के कुत्ते के संदर्भ में यदि घंटी बजने के बाद कई प्रयासों में उसे भोजन नहीं दिया गया तब कुछ समय पश्चात् कुत्ता घंटी बजने के पश्चात् लार स्राव करना बन्द कर देगा। लेकिन यदि विलोपन होने के पश्चात् जब पुनः घंटी बजने के पश्चात् यूसीएस (भोजन) दिया जाएगा तब अनुबन्धित अनुक्रिया (लार स्राव) बहुत शीघ्र दुबारा होने लगेगी – यह प्रक्रिया पुनः अनुबन्धन के नाम से जानी जाती है। यूसीएस एवं सीएस के युग्मित होने के कारण अनुबन्धित अनुक्रिया के पुनः प्रकट होने की प्रक्रिया को स्वतः पुनरावर्तन के नाम से जाना जाता है।

I kekU; hdj .k , oa foHknhdj .k % I ekurk , oa foHkUurk ds i fr vuçfU; k

पैवलॉव ने यह देखा कि यदि पशु की घंटी बजने पर अनुक्रिया करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, तो उसको घंटी के बजने पर भी समान अनुक्रिया के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। इसे सीएस के सामान्यीकरण के रूप में जाना जाता है, जो वास्तविक सीएस जिसके द्वारा अधिगम प्राप्त हुआ वह उस उद्दीपक के समान है। सामान्यीकरण का सार इस पर निर्भर करता है कि नया उद्दीपक लड़के कितना समान है। कभी-कभी इस विधि के उपयोग द्वारा फोबिया का इलाज भी संभव है जब किसी डरावने उद्दीपक को सुखकारी उद्दीपक के साथ जोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है इसके विपरीत यदि पैवलॉव का कुत्ता केवल प्रयोग में प्रयुक्त घंटी पर अनुक्रिया देता है और बाकी उसी के समान बजने वाली घंटियों की उपेक्षा करता है तो यह घटना उद्दीपक विभेदीकरण कहलाती है – कुछ निश्चित उद्दीपकों पर अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति का होना एवं अन्य को उपेक्षित करना।

mPp-Lrjh; vuçU/ku

एक सीएस में जब सीआर को प्रकट करने की योग्यता आ जाती है तब वह प्रबलित गुणों को प्राप्त करता है। उदाहरणार्थ, घंटी (सीएस) भोजन (यूसीएस) के साथ लार-स्राव प्रकट करने के लिए प्रयोग किया गया। इसके पश्चात् लार-स्राव घंटी से सम्बन्धित (सीएस, या सीएस₁) हो गया। सीएस₁ को चमकती हुई लाइट (सीएस₂) से युग्मित किया गया। प्रयासों की पुनरावृत्ति करने के पश्चात् सीएस₂ सीआर₂ को प्रकट करेगा। ऐसा उसी समय होता है जब उच्च स्तरीय अनुबन्धन अनुक्रिया स्थापित होती है। ऐसी अनुक्रियाओं को स्थापित करना एवं बनाए रखना कठिन होता है।

प्राचीन अनुबन्धन के सिद्धांत, अप्रिय भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के विलुप्त होने या पुनः अनुबन्धन द्वारा व्यवहार आशोधन या व्यवहार थेरेपी में मदद कर सकता है।

3-4-1-1 n fyfVy ,ycVl iz kx% ekuo vf/kdkj ij ikphu vuçU/ku dk iz kx djuk

क्या हम प्राचीन अनुबन्धन के सिद्धान्त को मानव अधिगम पर प्रयुक्त कर सकते हैं? कुत्ते पर पैवलॉव के कार्य से जॉन बी. वाटसन बहुत अधिक प्रभावित थे। अतः वाटसन यह दिखलाना चाहते थे कि यह सिद्धान्त मनुष्यों पर भी प्रयुक्त किया जा सकता है। वाटसन एवं उनके सहयोगी अनुसंधानकर्ता रोजालि रेनर ने एक प्रयोग (वर्तमान शोध के नैतिक

निर्देश के अनुसार प्रयोग करना नैतिकता के विरुद्ध होगा) छोटा अलबर्ट नौ माह का बच्चा जिसका नाम 'अलबर्ट' था, पर किया। वाटसन ने यह उपकल्पना बनाई कि बच्चों की तेज आवाज के लिए डरावनी अनुक्रिया अनानुबन्धित अनुक्रिया है। प्राचीन अनुबन्धन के सिद्धान्त का प्रयोग करते हुए उन्होंने पुनः यह सुझाव दिया कि किसी भी तटस्थ उद्दीपक का प्रयोग करके बच्चे को डराया जा सकता है। प्रयोग की आधार लाइन की अवस्था में वाटसन एवं उनके सहयोगी ने छोटे अलबर्ट के समक्ष विभिन्न उद्दीपकों को प्रस्तुत किया (चोट न पहुँचाने वाली वस्तुएं एवं पशु) जैसे सफेद चूहा, एक खरगोश, मुखौटा आदि। जैसी कि अपेक्षित थी कि छोटे अलबर्ट ने इन वस्तुओं के लिए कोई डरावनी अनुक्रिया नहीं दिखाई। नियंत्रित अवस्था में जब चूहे को अलबर्ट के सामने प्रस्तुत किया गया, वाटसन ने एक लौहे के टुकड़े पर हथौड़े से प्रहार करके एक डरावनी आवाज उत्पन्न की। इससे अलबर्ट डर गया एवं रोना प्रारम्भ कर दिया। सफेद चूहे को तेज शोर के साथ कई बार प्रस्तुत करने के पश्चात् वह चूहे को देखकर रोना प्रारम्भ कर देता तथा पलायन करने का प्रयास करता। आगे चलकर यह देखा गया कि अलबर्ट ने अपने भय को सामान्यीकृत कर लिया और उसी की तरह सफेद एवं रोएदार वस्तुओं को देखकर डरने और भयभीत होने लगा जैसे खरगोश, रोएदार कोट आदि।

अतः उपरोक्त प्रयोग में,

तटस्थ उद्दीपक – सफेद चूहा

अनानुबन्धित उद्दीपक – ऊँचा शोर

अनानुबन्धित अनुक्रिया – रोना एवं संवेगात्मक डरावनी अनुक्रिया

अनुबन्धित उद्दीपक – सफेद चूहा

अनुबन्धित अनुक्रिया – रोना एवं संवेगात्मक डरावनी अनुक्रिया



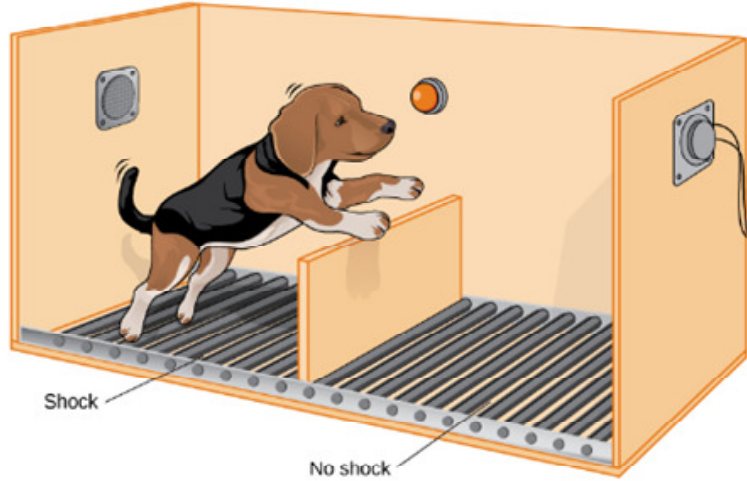
fp= 3-2 % p w k ; k [k j x k s k] e p s i l n u g h a g A

I k r % http://www.newscientist.com

वाटसन ने यह बतलाया की उद्दीपक एवं अनुक्रिया के सावधानीपूर्वक प्रहस्तर के द्वारा सम्पूर्ण मानव व्यवहार को निर्धारित किया जा सकता है।

ckDI 3-2% fu% gk; vf/kxe

निःसहायग अधिगम तथ्यों को 1960 में मार्टिन सेलीगमैन द्वारा दिया गया, जब वे कुत्तों के साथ प्राचीन अनुबन्ध पर कार्य कर रहे थे। उन्होंने देखा कि वे कुत्ते जो अपरिहार विद्युत आघात प्राप्त कर रहे थे, उनको जब उस परिस्थिति से बचाव का मौका मिला तब भी उन्होंने अपने को नहीं बचाया। जबकि वे कुत्ते जिन्हें अपलायनावादी आघात नहीं मिला, उन्होंने अपने को उस विद्युत-आघात से बचाने का प्रयास किया। उन्होंने पहले समूह के व्यवहार को निःसहाय अधिगम का नाम दिया जिसमें सीखी हुई अनुक्रिया द्वारा दर्द वाले उद्दीपक से बचने का प्रयास नहीं करता है। दूसरे शब्दों में यदि कोई दर्द वाले उद्दीपक से छुटकारा पाने में असफल हो जाता है तो वह उससे पलायन कराने का प्रयास नहीं करता है। निःसहाय अधिगम के सिद्धान्त को सफलतापूर्वक अवसाद से ग्रसित व्यक्ति को समझने में किया जाता है।



fp= 3-3% l fyxe% dk fu% gk; vfkxe dk d%ks i j ç; kx

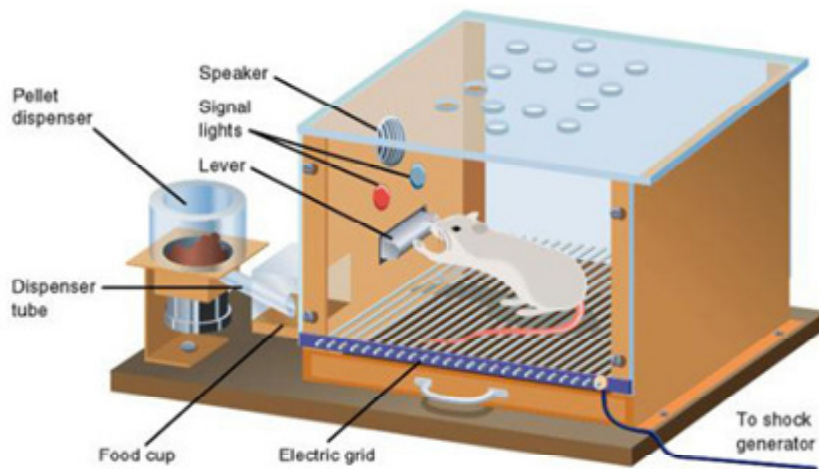
स्रोत : <https://virtualuniversity.in>

3-4-2 Ldhuj dk fØ; k çl r vuçl/ku

नैमित्तिक अनुबन्धन क्रिया प्रसूत अनुबन्धन के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के अधिगम में कुछ इस प्रकार के व्यवहार निहित होते हैं जो वातावरण में प्रबलन (पुरस्कार) के निमित्त प्रस्तुत किए जाते हैं। क्रिया-प्रसूत स्थिति एडवर्ड एल. थॉर्नडाइक एवं बी.एफ. स्कीनर के शोध निष्कर्ष पर आधारित है। इस अधिगम में सबसे महत्वपूर्ण प्रबलन को समझना है। प्रबलन कोई ऐसा उद्दीपक अथवा घटना है जो इस संभावना को बढ़ाता है कि अनुक्रिया पुनः घटित होगी। यह पुरस्कार या दण्ड हो सकता है। उदाहरणार्थ, यदि एक खरगोश को दूर से दौड़कर आने पर गाजर खाने को दी गई, वह गाजर खाने के लिए तेज दौड़गा। यहाँ गाजर पुरस्कार के रूप में प्रबलन है। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी अनुक्रिया का स्वरूप या उसका घटित होना दिए गए प्रबलन के विस्तार पर निर्भर करता है। अतः क्रिया प्रसूत शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार अनुक्रियाएं वातावरण में संचालित होती हैं, इसकी इच्छा अथवा अनिच्छा अनुक्रिया के घटित होने को मजबूत अथवा कमजोर करती हैं।

स्कीनर ने इस प्रत्यय की व्याख्या करने के लिए एक साधारण प्रयोग किया। उन्होंने एक चूहे को एक बाक्स में रखा। इसमें एक लीवर था जिसे दबाने से भोजन या पानी मिल जाता था। इस बाँक्स को स्कीनर बाक्स कहा जाता है। चूहे को बाँक्स में रखा गया और प्रयोगकर्ता ने बाहर से लीवर दबाकर खाने की सामग्री दी। चूहे ने एक समय खाने की सामग्री को खा लिया। कुछ प्रशिक्षण के पश्चात् चूहे को बाक्स में अकेले छोड़ दिया गया और प्रयोगकर्ता ने उसके लिए भोजन की गोली नहीं डाली। कुछ समय पश्चात् जब चूहे को

पुनः भूख लगी। वह बाक्स में भोजन खोजने के लिए घूमता रहा और संयोग से उससे लीवर दब गया जिससे भोजन की गोली प्राप्त हो गई। अतः भोजन की गोली एक प्रबलन है जो लीवर के दबाने पर प्राप्त होती है। इसके पश्चात् चूहा बॉक्स में घूमता रहा और पुनः संयोग से लीवर दबा दिया जिसके द्वारा उसे दूसरी बार भी भोजन की गोली खाने को मिल गई। इसके पश्चात् उसने बहुत अधिक बार नहीं खोजा लेकिन बार-बार लीवर को दबाकर भोजन की गोली को खाने के लिए प्राप्त करने लगा। अतः अब क्रिया प्रसून व्यवहार प्रकट होता है। एक समय विशेष में चूहे ने जितनी बार लीवर को दबाया उसे गिना गया एवं रिकार्ड किया गया जिससे यह पता चल सके कि प्रति इकाई प्रतिक्रिया का रेट कितना था। प्रतिक्रिया के रेट को रिकार्ड करने के लिए एक संचयी रिकार्डर का प्रयोग किया गया जिससे कि प्रति इकाई समय के अनुक्रिया की संख्या को रिकार्ड किया जा सके। प्रबलन का यह उदाहरण दूसरों के लिए अनुमोदन था जिससे अनुक्रिया के होने की संभावना बढ़ जाती है। क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन अनुक्रियाओं के शैपिंग में सहायता करती है। व्यवहार को सापेक्षिक रूप से कम समय में आकार (शैप) देने में प्रबलन का उपयोग किया जा सकता है। जैसे-जैसे वांछित व्यवहार को विभिन्न चरणों में प्रबलित किया जाता है, वैसे-वैसे सीखने वाला वांछित व्यवहार को सीख लेता है। जैसे प्रत्येक चरण को सीखता है और वांछित अनुक्रिया देता है, ऐसा प्रबलन के कारण होता है। यह अनुक्रिया को पुनः प्राप्त करने में सहायक होती है। शैपिंग की यह विधि प्रायः क्रमिक उपागम विधि के नाम से जानी जाती है। शैपिंग की यह विधि प्रायः बच्चों के व्यवहार, मनोवृत्ति, भाषा, विश्वास आदि को शैप देने के लिए प्रयुक्त की जाती है। उदाहरणार्थ जब बच्चा चलना सीखता है और वह एक पग (स्टेप) लेता है, तब उसे चलने के लिए साहस दिलाने के लिए प्रबलित किया जाता है।



fp= 3-4% Ldhuj ckDI

स्रोत: <https://www.simplypsychology.org/>

अतः सीखने की अनुक्रिया प्रबलन पर निर्भर करती है। अतः यदि अनुक्रिया प्रबलन को अनुसरित नहीं करती है, तब प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति भी घट जाएगी। यह प्रक्रिया, जब बार-बार प्रबलन प्राप्त होने के कारण प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति घटती है तब इसे विलोपन के नाम से जाना जाता है। इसका अर्थ यह हुआ की यदि एक बार अनुक्रिया प्रतिक्रिया प्रबलन द्वारा अनुसरित नहीं होती है तब उसके भविष्य में प्राप्त होने की संभावना कम हो जाती है।

क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन में उद्दीपक सामान्यीकरण भी होता है। नया उद्दीपक पहले वाले उद्दीपक के जितना समान होता है, उस अनुक्रिया के प्रबलित होने की संभावना बढ़ जाती है। उद्दीपक विभेदीकरण में विभेदीकरण की योग्यता सीखी जाती है जब एक उद्दीपक के

प्रबलित किए जाने पर अनुक्रिया प्रकट होती है, जबकि दूसरे उद्दीपक की उपस्थिति में उसे प्रबलित नहीं किया जाता। अतः प्रबलन की घटनाएं अथवा आइटम हैं जो अनुक्रियाओं को मजबूत बनाती हैं। प्रबलक दो प्रकार के होते हैं—प्राथमिक प्रबलक एवं द्वितीयक प्रबलक। भोजन प्राथमिक प्रबलक का उदाहरण है। यह भूख प्रेरणा की मुख्य आवश्यकता को पूरा करता है। पैसा एक द्वितीयक प्रबलक का उदाहरण है। यह प्राथमिक प्रबलन के साथ साहचरित होकर प्रबलन के गुणों को प्राप्त करता है। अतः एक बच्चा जब यह देखता है कि पैसे के बदले में टॉफी प्राप्त होती है, तब वह पैसे का उपयोग करना सीखता है।

स्कीनर ने यह अवधारणा प्रस्तुत की कि सीखने के लिए प्रबलन की समयावधि अधिक निर्णायक होती है। यह सीखने की गति को निर्धारित करती है साथ ही साथ सीखी हुई अनुक्रिया की शक्ति को भी निर्धारित करती है। सभी अनुक्रियाओं को प्रबलित नहीं करना चाहिए, उन अनुक्रियाओं को जिन्हें लम्बे समय तक जारी रखना है अथवा चलाना है। अतः क्रिया-प्रसून अनुबन्धन में प्रबलन की अनुसूची का उपयोग किया जाता है। सतत-प्रबलन में प्रत्येक सही अनुक्रिया सीखी अनुक्रिया, के पश्चात् प्रबलन दिया जाता है जिससे उसके पुनः प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाए। आंशिक प्रबलन प्रत्येक वांछित व्यवहार पर नहीं दिया जाता है। आंशिक प्रबलन अनुसूची का मुख्य प्रकार प्रबलन दिए जाने के समय पर निर्भर करता है अथवा दी गई अनुक्रिया को कितनी बार प्रबलित किया गया, इस पर निर्भर करता है।

- i) **fuf'pr vuq kr vuq ph %** इस अनुसूची में प्रत्येक निश्चित संख्या में की गई अनुक्रिया के बाद ही अनुक्रिया को प्रबलित किया जाता है। उदाहरणार्थ प्रत्येक चौथी अथवा तीसरी अनुक्रिया के पश्चात् प्रबलन दिया जाता है। यह अनुसूची अनुक्रिया के उच्च अनुपात की अगुवाई करती है जो कि सापेक्षिक रूप से स्थिर अनुपात में प्राप्त होती है।
- ii) **fuf'pr vlrjky vuq ph %** इसमें प्रबलन एक निश्चित समय अन्तराल के पश्चात् दिया जाता है, बिना यह देखे हुए कि (प्रयोज्य) कितनी बार अनुक्रियाएं देता है। इस प्रकार की अनुसूची में निष्पादन (प्रयोज्य का) सापेक्षिक रूप से परिवर्तित होता है। प्रबलन दिए जाने के पश्चात् अनुक्रियाएं कम हो जाती हैं और पुनः दूसरे प्रबलन के प्राप्त होने के समय यह धीरे-धीरे बढ़ती हैं तथा यह समय अन्तराल के दौरान दी गई अनुक्रिया के रेट परिवर्तन को बढ़ाता है।
- iii) **ifjor; Zvuq kr vuq ph %** इस अनुसूची में प्रबलन देने की अनुक्रिया की संख्या निश्चित नहीं होती है अर्थात् यह प्रबलन पहले अनुक्रिया के पश्चात् पुनः तीसरी, पाँचवी अनुक्रियाओं के पश्चात् दी जा सकती है। अतः इसमें प्रबलन दिए जाने से पहले अनुक्रियाओं की कोई निश्चित संख्या नहीं होती है। प्रबलन अनुसूची का यह प्रकार अनुक्रिया के उच्च एवं स्थिर अनुपात की अगुवाई करता है।
- iv) **ifjor; Zvlrjky vuq ph %** इस अनुसूची में प्रबलन देने के लिए कोई ऐसे निश्चित समय अन्तराल व निश्चित करके अनियमित अन्तराल के बाद प्रबलन दिया जाता है। यह व्यवहारों का कारण बनता है जो कि वी आर अनुसूचियों के मामले के रूप में विलुप्त होने का विरोध करता है और प्रतिक्रिया की स्थिर स्थिति प्रदान करता है।

fof/k	míhi d ?kVuk	i Hkko	0; ogkjKRed fu"d"KZ
धनात्मक प्रबलन	कुछ वांछित उद्दीपक (जैसे – भोजन, काम, सुख, प्रशंसा)	अनुक्रियाओं को दृढ़ करता है।	प्राणी अनुक्रिया को सीखता है।
ऋणात्मक प्रबलन	कुछ अवांछित (अरुचिकर) उद्दीपक (जैसे : उष्मा, ठंड, कठोर आलोचना)	उन अनुक्रियाओं को दृढ़ करना जो उद्दीपक से पलायन अथवा उसे छोड़ने की आज्ञा देते हैं।	प्राणी उन अनुक्रियाओं को निष्पादित करना सीखता है जो ऋणात्मक प्रबलक से पलायन करने की आज्ञा देता है।
धनात्मक दंड	कुछ अवांछित वस्तुएं (अरुचिकर उद्दीपक)	उद्दीपक के आने से पहले अनुक्रियाओं को कमजोर करना।	प्राणी उन अनुक्रियाओं को दबाना सीखता है जो असुखदायी परिणामों को प्रस्तुत करने में अग्रणी होते हैं।
ऋणात्मक दंड	कुछ वांछित वस्तुएं	उन अनुक्रियाओं को कमजोर करता है जो उद्दीपक के नुकसान अथवा उद्दीपक को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं।	प्राणी उन अनुक्रियाओं को दबाना सीखता है जो वांछित उद्दीपकों को खो देते हैं अथवा आगे बढ़ा देते हैं।

ckDI 3-3% 'kfi æ , oa Jµkyk ds fl) klr

क्या आपने सर्कस देखा है अथवा पिक्चर ये किसी जानवर को कुछ ट्रिक्स या स्टन्ट निष्पादित करते हुए देखा है? वे इतने जटिल व्यवहार को कैसे निष्पादित करते हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन के दो सिद्धान्तों पर निर्भर करता है जिनको शेपिंग एवं श्रृंखला कहा जाता है। शेपिंग नए व्यवहार को सीखने की वह प्रक्रिया है जिसमें वांछित व्यवहार के लगभग आसपास रहने वाले व्यवहार को प्रबलित किया जाता है अर्थात् प्राणी जैसे लक्षित व्यवहार की तरफ एक छोटा कदम बढ़ाता है, उसे पुरस्कृत किया जाता है।

कोई जटिल व्यवहार अथवा कौशल बहुत से चरणों की चेन होती है। चेनिंग की प्रक्रिया यह होती है कि इसमें कार्य को छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है और पुनः उनको एक क्रम या एक चेन में जोड़ना सिखाया जाता है। चेनिंग में केवल लक्षित व्यवहार ही पुरस्कृत होता है, अर्थात् यदि एक बार प्रशिक्षु कार्य के अन्तिम चरण को पूरा कर लेता है तो वह पुरस्कृत हो जाता है। उदाहरणार्थ, यदि आप एक बच्चे को अपने स्वयं के खाने के लिए चम्मच के प्रयोग को सिखाते हैं तब चेनिंग सिद्धान्त का उपयोग हो सकता है।

ckDI 3-4% i hed fl) klr

डेविड प्रीमेक द्वारा दिया गया, यह प्रबलन का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार कम वरीयता वाले व्यवहार की अपेक्षा, अधिक वरीयता वाले व्यवहार के लिए प्रबलन को उपयोग किया जा सकता है। उदाहरणार्थ अपने बच्चे में पुस्तक पढ़ने की आदत विकसित करने के क्रम में, एक माँ बच्चे को बताती है कि यदि वह 20 मिनट पुस्तक पढ़ेगी तब वह 20 मिनट के लिए बाहर खेलने जा सकती है। माँ यहाँ प्रीमेक सिद्धान्त का उपयोग कर रही है। इसे 'ग्रेन्ड मां रूल' के नाम से भी जाना जाता है क्यों

कि बड़ी मां अथवा माँ अथवा कोई भी ध्यान देने वाला व्यक्ति प्रायः इस सिद्धान्त का उपयोग करता है। उदाहरणार्थ बच्चे से कहा जाता है कि घर के बाहर खेलने जाने से पहले अपना कमरा साफ कर ले।

3-4-3 cSMjk dk I kekftd vf/kxe fl) kUr

बैन्दुरा (1977) के सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक स्थिति में दूसरों के व्यवहार एवं उसके प्राप्त परिणामों का निरीक्षण करने के पश्चात् अधिगम प्राप्त होता है। यह निरीक्षणात्मक अधिगम दो तरीके से प्राप्त हो सकती है। i) प्रत्यक्ष निरीक्षण ii) अप्रत्यक्ष निरीक्षण। प्रत्यक्ष निरीक्षण में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से देखकर सीखता है। जिसे मॉडल कहते हैं। जब कि अप्रत्यक्ष निरीक्षण में हम दूसरे के अनुभवों को सुनकर अथवा निरीक्षण करके सीखते हैं, इस प्रकार का अप्रत्यक्ष निरीक्षण को स्थानापन्न अधिगम के नाम से जाना जाता है। उदाहरणार्थ आप भारत के उत्तर-पूर्व प्रदेश की ट्रिप पर जाना चाहते हैं। आपका एक मित्र जो अभी जल्द ही उत्तर-पूर्व की ट्रिप से वापस आया है वह आपको सुझाव देता है कि आप अपने साथ छाता अथवा रेनकोट ले जाएँ क्योंकि वहाँ कभी भी वर्षा हो सकती है। आप क्या करेंगे? इसकी बहुत सम्भावना होगी कि आप उसके अनुभव को सुनेंगे और छाता ले जाएंगे। इस प्रकार का अधिगम स्थानापन्न अधिगम का उदाहरण है।

बोबो डॉल के साथ बैन्दुरा (1961) का प्रसिद्ध प्रयोग यह दिखलाता है कि दूसरों के व्यवहार को देखकर व्यवहारों को कैसे सीखा जा सकता है। जिन लोगों के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता है वे मॉडल के नाम से जाने जाते हैं। ये मॉडल यह सूचना प्रदान करते हैं कि दूसरों से कैसे अन्तःक्रिया की जाती है, अपने को कैसे अभिव्यक्त किया जाए, कैसे खेला जाए आदि। हमारे माता-पिता, अध्यापक, मित्र-समूह, टीवी अभिनेता, फिल्म अभिनेता, गायक, खिलाड़ी, अथवा अन्य कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति व्यवहार सिखाने के लिए मॉडल के रूप में हो सकता है जो परोपकारिता अथवा असामाजिक कार्य जैसे अपराधी कार्यों को सीखा सकता है।

ckDI 3-5 % ckcks Mky i z kx

बैन्दुरा एवं उनके सहयोगियों ने बच्चों पर सामाजिक व्यवहार के सीखने में निरीक्षणात्मकता एवं अनुकरण की भूमिका को जानने के लिए एक प्रयोग किया, जैसे क्रोध। उन्होंने तीन से छः वर्ष के समूह के 72 बच्चों का चयन किया। बच्चों को यादृच्छिक रूप से तीन समूहों में रखा। एक नियंत्रित एवं दो प्रयोगात्मक अवस्था में। प्रयोगात्मक समूह के बच्चों को क्रोधित मॉडल के साथ एक चलचित्र दिखाई जिसमें बोबो डॉल को मारना, धकेलना (हिट करना)/ टक्कर देना, अपशब्द का प्रयोग दिखाया गया। दूसरे प्रयोगात्मक समूह को क्रोधित करने वाला मॉडल दिखाया गया जो बोबो डॉल के साथ शान्ति एवं मित्रता के साथ खेल रहा है। जब कि नियंत्रित समूह को कोई भी पिक्चर नहीं दिखाई गई। बाद में सभी समूह के बच्चों को एक कमरे में रखा गया जिसमें विभिन्न प्रकार के खिलौने रखे हुए थे। यह निरीक्षित किया गया कि वे बच्चे जिनको क्रोधित मॉडल दिखाया गया था उन्होंने उस मॉडल के व्यवहार का अनुकरण किया। उन्होंने बोबो डॉल को मारा, पंच दिया तथा उसके द्वारा अपशब्दों का प्रयोग किया गया। इसके विपरीत दूसरे प्रयोगात्मक समूह के बच्चों को जिन्हें बिना क्रोध वाले मॉडल को दिखाया गया था उन्होंने बोबो डॉल के साथ किसी प्रकार के क्रोध को नहीं दिखाया। मनोविज्ञान में यह एक ऐतिहासिक अध्ययन था। इससे यह स्पष्ट होता है कि सीखने में निरीक्षण एवं अनुकरण की विशेष भूमिका होती है।



fp= 3-5% cPps fQYe ds dykdj ds vkØked 0; ogkj dk vuϕj.k djrs gq

स्रोत: <https://thedirtpsychology.org/>

बैन्दुरा ने पुनः यह सुझाव दिया कि व्यक्ति जो कुछ सूचनाओं को ग्रहण करता है, उसके पश्चात् ये सूचनाएं मुख्य रूप से आगे बढ़ती हैं और निरीक्षण से पूर्व व्यवहार के रूप में प्रदर्शित होने से पहले इसमें विभिन्न संज्ञान सन्निहित होते हैं। ये संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं हैं i) किस सीमा तक हम सूचना पर ध्यान देते हैं एवं, ii) कितनी अच्छी तरह हम निरीक्षण व्यवहार को धारित करते हैं अथवा याद रखते हैं। यह इसके द्वारा अनुसरित होता है कि हम कितनी अच्छी तरह देखे हुए व्यवहार को, पुनर् उत्पादित (दुबारा) करने योग्य है तथा निरीक्षित व्यवहार का निष्पादन करने के लिए हमें क्या प्रेरित करता है।

कक ङ' u 1

1) प्राचीन एवं क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन के मध्य अन्तर कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन अनुबन्धन सिद्धान्त की सहायता से निःसहाय अधिगम की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निरीक्षणात्मक अधिगम में सन्निहित मुख्य सिद्धान्तों को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

4) प्रबलन की आंशिक एवं सतत् अनुसूची के मध्य अन्तर कीजिए।

3-5 I KkukRed vf/kxe

बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने यह विचार रखा कि साधारणतः उद्दीपक अनुक्रिया साहचर्य के आधार पर व्यवहार के अधिगम की व्याख्या करना उचित नहीं है। मानव एवं पशु दोनों ही मस्तिष्क रखते हैं, अतः बिना उच्च मानसिक प्रक्रिया के अधिगम सम्भव नहीं है। संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर आधारित अधिगम को संज्ञानात्मक अधिगम के नाम से जाना जाता है। इस अनुभाग में संज्ञानात्मक अधिगम के दो प्रमुख स्वरूपों की विवेचना करेंगे – अप्रकट अधिगम एवं सूझ अधिगम।

3-5-1 v0; Dr@vi dV vf/kxe

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक, एडवर्ड टॉलमन अप्रकट अधिगम के मुख्य प्रणेता थे। टॉलमन एवं उनके सहयोगियों (टालमन एवं होनजिक 1930, टालमन, रिटजी, एवं कालिश, 1946) ने चूहों पर प्रयोग की एक शृंखला द्वारा यह प्रदर्शित किया कि बिना तात्कालिक प्रबलन दिए भी अधिगम को प्राप्त किया जा सकता है।

टॉलमन एवं होनजिक (1930) द्वारा किये गये एक अध्ययन में भूखे चूहे को भूलभुलैया (मेज) (चित्र 3.6) में दौड़ने के लिए प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने चूहों के तीन समूहों को लिया – पुरस्कृत समूह, अपुरस्कृत समूह, अपुरस्कृत/पुरस्कृत समूह। पहले समूह के लिए उन्होंने भूखे चूहों को एक जटिल भूलभुलैया में रखा जिसमें भोजन अन्तिम सिरे पर था जब कि दूसरे समूह ने भूलभुलैया से सफलतापूर्वक बाहर निकलने के पश्चात् भी कभी भोजन नहीं प्राप्त किया। तीसरे समूह के चूहों ने प्रथम दस सत्रों में कोई भोजन प्राप्त नहीं किया पर अपने ग्यारहवें सत्र में उन्होंने प्रबलन के रूप में भोजन प्राप्त किया। परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि प्रथम समूह में चूहों ने अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अगले प्रयास से कम समय लिया जबकि दूसरे समूह ने अपने समय एवं त्रुटियों में बहुत कम सुधार प्रदर्शित किया। तीसरे समूह के चूहों ने प्रारम्भ में अपनी त्रुटि में बहुत कम सुधार दिखाया परन्तु जब वे भोजन की सुगन्ध से उसके बारे में जागरूक हो गये, उनके निष्पादन पहले समूह के चूहों से बहुत अच्छा था। व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन अप्रकट अधिगम के गुण को दर्शाता है अथवा अधिगम तब तक प्रदर्शित नहीं होता जब तक परिस्थितियाँ इसके लिए सहायक नहीं होती।



fp= 3-6% Vklly/eu dh Hkly/Hkly\$ k

स्रोत: <https://courses.lumenlearning.com>

3-5-2 I ▸ vf/kxe

गैस्टाल्ट मनोविज्ञान के संस्थापकों में से एक मनोवैज्ञानिक वोल्फगैंग कोहलर द्वारा सूझा अधिगम दिया गया जो किसी भी समस्या के हल को तुरन्त साकार और कार्यान्वयन को प्रदर्शित करता है। कोहलर ने यह बतलाया कि सभी प्रकार के अधिगम प्रयास एवं त्रुटि अथवा अनुबन्धन पर निर्भर नहीं होते हैं। सीख अधिगम के लिए हम अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का भी उपयोग करते हैं। संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का उपयोग करके हम समस्या एवं उसके हल के लिए उसको आन्तरिक रूप से विजुअलाइज (देखते हैं) करते हैं। यद्यपि यह अधिगम आन्तरिक रूप से होता है परन्तु व्यवहार में परिवर्तन लम्बे समय तक रहता है।

इस तथ्य (बिन्दु) को प्रमाणित करने के लिए कोहलर ने चिम्पैंजी पर प्रयोगों की एक श्रृंखला संचालित की जिनमें मानव डीएनए की 99 प्रतिशत साझेदारी थी। इस प्रकार के एक प्रयोग में कोहलर ने एक चिम्पैंजी को एक मेज में रखा और उसमें एक केला उसकी पहुँच से ऊपर रखा। प्रारम्भ में केला प्राप्त करने के लिए कुछ असफल प्रयासों के पश्चात् चिम्पैंजी अपना समय खेलने, बैठने जैसे उत्पादक कार्यों में व्यतीत करने लगा। एकाएक कुछ समय पश्चात् चिम्पैंजी ने लकड़ी के रखें हुए बाक्स को एक के ऊपर एक रखा और उस पर चढ़ गया और केला को प्राप्त कर लिया। केला को पकड़ लिया। कोहलर ने बतलाया कि चिम्पैंजी की आन्तरिक प्रक्रियाओं ने उसे बाक्स को इस प्रकार प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जो सूझा अधिगम का एक उदाहरण है।



fp= 3-7 % fpEi \$th dlys dks i dM+us dk ç; kl djrs gg

स्रोत : <http://slideplayer.com>

आरचीमेड्स 'यूरेका' की प्रसिद्ध कहानी तथा आईज़ाक न्यूटन द्वारा सेब के गिरने के पश्चात् गुरुत्वाकर्षण शक्ति का एकाएक अनुभव करना सूझ अधिगम के कुछ बहुत महत्वपूर्ण उदाहरण है।

3-6 vf/kxe dh uhfr; k] % fcEcfoèkku] vH; kl , oa l xBu

सूचना अधिगम का सबसे अच्छा रास्ता अथवा महत्व क्या हो सकता है? संज्ञानात्मक एवं शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम की उपयुक्त नीति खोजने के लिए वृहद अध्ययन किया। प्राप्त हुए परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि अधिगम को बिम्बविधान, अभ्यास एवं संगठन की विधियों के द्वारा सुधारा जा सकता है। इस अनुभाग में हम लोग संक्षेप में इन स्ट्रैटजी की विवेचना करेंगे।

1) **fcEcfoèkku** % निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

- आपके घर में कितनी खिड़कियां हैं?
- 100 के अक्षरों (स्पेलिंग) में कितने स्वर वावेल हैं?

पहले प्रश्न का उत्तर देने के लिए व्यक्ति अपने में सोचेगा और खिड़कियों की संख्या को गिनने के लिए अपने घर का मानसिक टूर करेगा। दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए लोग 100 की संख्या के वर्णमाला की मानसिक स्तर पर प्रतिमा बनाकर उस वर्णमाला में प्रयुक्त स्वरों (वावेल) की संख्या को गिनेगा।

अतः यहाँ पर मानसिक प्रतिमाएं आपको इन प्रश्नों का उत्तर देने में सहायक होती हैं। बिना मानसिक प्रतिमाओं की योग्यता की उत्पन्न किये हुए, इन प्रश्नों का सही उत्तर दिया जा सकता है। अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि यदि आपके अन्दर याद की हुई सूचनाओं का मानसिक प्रतिमा के रूप में उत्पादित करने की क्षमता है तब आप वस्तुओं/घटनाओं को प्रभावशाली ढंग से अधिगमित कर सकते हैं। इसको मानसिक सूचनाओं अथवा स्थितियों को देखने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विकासात्मक अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है कि पुराने छात्र इस विधि का उपयोग करके अधिक लाभान्वित होते हैं। अधिगम सूचना में प्रतिभा का प्रयोग दो चरणों में सन्निहित होता है :

- 1) सूचना का अध्ययन स्मरण के लिए किया जाना।
- 2) उस सूचना की मानसिक तस्वीर बनाना।

यदि मानसिक सूचनाएं सभी उपयुक्त सूचनाओं को समाहित करती हैं तब यह अधिक सही ढंग से अधिगमित होगी। पुस्तक अथवा अन्य स्रोतों के अध्ययन द्वारा प्राप्त विस्तृत जानकारी भी प्रतिभाओं को बनाने में सहायता करती है जिससे अधिगम में सुधार होता है।

2) **vH; kl** % अधिगम के क्रम में अभ्यास किसी भी सूचना के बार-बार दोहराने को प्रदर्शित करता है। अभ्यास दो प्रकार का हो सकता है : अनुरक्षण अभ्यास एवं विस्तृत अभ्यास। अनुरक्षण अभ्यास में सूचनाओं को केवल स्मृति में रखने के लिए, उसको निहित अर्थ को समझे बिना साधारण रूप से उसे दोहराया जाता है। दूसरी तरफ विस्तृत अभ्यास सूचना अधिगम की ऐसी विधि है जिसमें सूचना को या तो समझकर अथवा उसमें निहित अर्थ को समझकर उसे अर्थ पूर्ण बनाया जाता है। अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट है कि अवधारणा अथवा सूचनाओं के अधिगम में विस्तृत अभ्यास विधि का

उपयोग अधिक प्रभावशाली होता है, क्योंकि यह सूचनाओं को लम्बे समय तक स्मरण करने में सहायक होता है। विस्तृत अभ्यास करने का एक रास्ता विस्तृत पूछताछ करना है। इससे सूचनाओं को स्मृति में रखने के लिए क्यों प्रश्न पूछा जाता है और पुनः उत्तर दिया जाता है। अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि यह विशिष्ट तकनीकी, तथ्यों को स्मरण करने में सहायक है।

- 3) **I & Bu %** अधिगम के इस स्ट्रेटजी में सूचनाओं को इस प्रकार पुनःसंगठित करने की आवश्यकता होती है कि वे इस प्रकार स्मरण/याद की जाए जिससे वे अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सके अथवा अधिगम की प्रक्रिया को सरल किया जा सके। उदाहरणार्थ आप स्मृति हेतु निम्नलिखित सूची के बारे में पूछ सकते हैं :

दिल्ली (D)

ऑसट्रीच (O)

लंदन (L)

लुधियाना (L)

याक (Y)

ग्रीनवीच (G)

आउल (O)

आप शहरों तथा पशुओं के नाम का अलग समूह बनाकर उन्हें अधिगमित कर सकते हैं अथवा आप प्रत्येक शब्द के प्रथम वर्ण को लेकर एक नया शब्द तैयार कर सकते हैं, जैसे – DOLLY-GO। यह विधि अधिगम को सुधारने में सूचनाओं के संगठन में दो कारणों से सहायता करती है, (1) यह बड़ी संख्या की सूचनाओं को नियंत्रण योग्य संख्या में कम करती तथा (2) यह सूचनाओं को बहुत सही ढंग से स्मरण करने में सहायता करती है।

ckək ç'u 2

fjDr LFkkuka dh iŋrɪ dʒs

- 1) अव्यक्त अधिगम के मुख्य प्रणेता थे।
- 2) जे अधिगम प्राप्त होती है परन्तु तब तक प्रदर्शित नहीं होती, जब तक परिस्थितियां इसके लिए रूप में उसकी सहायक नहीं जाती है
- 3) सूझ अधिगम के मुख्य प्रणेता थे।
- 4) समस्या के तुरन्त हल को प्रदर्शित करता है।
- 5) प्राप्त परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि प्रतिभा की विधि का प्रयोग करके अधिगम को सुधारा जा सकता है, और संगठन।
- 6) अभ्यास दो प्रकार के हो सकते हैं और एवं

(1) टूलमन (2) अव्यक्त अधिगम (3) वोलकमैन काहलर (4) सूझ अधिगम
(5) अभ्यास (6) अन्वेषण एवं विस्तृत अभ्यास

मनोज्ञ %

3-7 I kjka k

हम इस इकाई की समाप्ति पर पहुँच गए हैं, अतः उन सभी मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में दोहरा लें जिनको इस इकाई में प्रस्तुत किया गया है।

- अधिगम को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है “व्यवहार में (अथवा व्यवहार क्षमता) स्थाई परिवर्तन जो अनुभव के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है”।
- इवॉन पेट्रोविच पॉवलाव ने प्राचीन अनुबन्धन का सिद्धान्त दिया जो रेसपान्डेन्ट अनुबन्धन अथवा पैवलोवियन अनुबन्धन के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के अनुबन्धन में दो उद्दीपकों का समूह निहित होता है पहले को अनुबन्धित उद्दीपक (सीएस) तथा दूसरे को अनानुबन्धित उद्दीपक (यूसीएस) कहा जाता है।
- क्रिया प्रसूत अनुबन्धन, नैमित्तिक अनुबन्धन के नाम से भी जाना जाता है जिसे बी. एफ स्किनर द्वारा बताया गया था। इस प्रकार के अधिगम में कुछ प्रकार के व्यवहार या क्रियाएं निहित होती हैं जो प्रबलता (अथवा पुरस्कार) के कारण उत्पन्न होती हैं जब वे वातावरण पर संचालित की जाती हैं।
- अधिगमित निःसहायता की घटना 1960 में मार्टिन सेलिगमेन द्वारा दी गई थी, जब वे कुत्ते के साथ प्राचीन अनुबन्धन पर कार्य कर रहे थे। इसको किसी के द्वारा किसी पीड़ादायक परिस्थिति से सफलतापूर्वक पलायन की प्रवृत्ति छोड़ने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- बैन्दुरा (1977) के सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के अनुसार, यह अधिगम सामाजिक सेटिंग में दूसरों के व्यवहार और उसके प्राप्त परिणामों के द्वारा प्राप्त होती है। यह निरीक्षणात्मक अधिगम दो प्रकार से प्राप्त होती है (i) प्रत्यक्ष निरीक्षण एवं (ii) अप्रत्यक्ष निरीक्षण।
- संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर आधारित अधिगम संज्ञानात्मक अधिगम के नाम से जानी जाती है, संज्ञानात्मक अधिगम दो प्रकार की होती है अप्रत्यक्ष अधिगम एवं सूझ अधिगम।
- प्राप्त परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि अधिगम को बिम्बविधान, अभ्यास एवं संगठनात्मक विधियों का उपयोग करके सुधारा जा सकता है।

3-8 i qjkykdu i t u

- 1) हवा के झोंके की प्रतिक्रिया द्वारा आपकी आंखों की पलकों का झपकना क्या होता है—
 - अ) यूसीआर
 - ब) यूसीएस
 - स) सीआर
 - द) सीएस
- 2) कक्षा में शूटिंग की घटना के एक वर्ष बाद एक बच्चा आज भी खिलौने वाली बन्दूक देखकर तथा गुब्बारे के फटने की आवाज से भयभीत हो जाता है। यह घटना अच्छे से प्रदर्शित करती है—
 - अ) एक अनानुबन्धित अनुक्रिया

- ब) क्रिया-प्रसून अनुबन्धन
- स) अव्यक्ता अधिगम
- द) सामान्यीकरण
- 3) एयर लाइन के बार-बार उड़ने वाले प्रोग्राम के पुरस्कृत ग्राहकों को प्रत्येक 25000 माइल की यात्रा के पश्चात् मुफ्त फ्लाइट दी गई, यह अनुसूची के उपयोग को प्रदर्शित करती है-
- अ) निश्चित अन्तराल
- ब) परिवर्त्य अन्तराल
- स) निश्चित अनुपात
- द) परिवर्त्य अनुपात
- 4) किस प्रारम्भिक अधिगम शोधार्थी ने बच्चों के व्यवहार पर क्रोध मॉडल पर समाज विरोधी प्रभाव को दर्शाया?
- अ) वाटसन
- ब) बैन्दुरा
- स) पॉवलाव
- द) स्किनर
- 5.) विभिन्न प्रकार के अधिगम की व्याख्या कीजिए।
- 6) प्राचीन एवं क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन के सिद्धान्त में अन्तर कीजिए।
- 7) विलोपन, स्वतः पुनरावर्तन एवं पुनः अनुबन्धित सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
- 8) विभिन्न प्रकार के प्रबलन अनुसूचीयों को वर्णन कीजिए।
- 9) शेपिंग एवं चेनिंग के सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं?
- 10) अव्यक्त अधिगम एवं सूझ अधिगम में अन्तर कीजिए।

3-9 e[; 'kCn

i kphu vuçll/ku

% अधिगम का एक मुख्य प्रकार है, जिसमें एक उद्दीपक, दूसरे उद्दीपक की प्राप्ति के लिए संकेतक का कार्य करता है। प्राचीन अनुबन्धन के दौरान प्राणी विभिन्न उद्दीपकों के बीच के सम्बन्धों की सूचना को प्राप्त करता है, न कि केवल उनके साहचर्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करता है।

f0;k-i l r vf/kxe

% अधिगम का एक प्रकार है जिसमें व्यवहार अपने धनात्मक अथवा ऋणात्मक परिणामों के परिणामस्वरूप या तो स्थिर होता है अथवा परिवर्तित होता है। धनात्मक परिणामों के कारण व्यवहार की

i R; {khdj .k] vf/kxe
, oa Lefr

पुनरावृत्ति होती है, जबकि ऋणात्मक परिणामों के कारण व्यवहारों को छोड़ा जाता है।

- izyu** % यह कोई भी उद्दीपक अथवा घटना जो अनुक्रिया के पुनः होने की संभावना को बढ़ाती है। यह पुरस्कार या दण्ड कुछ भी हो सकता है।
- iæfd fl)klr** % यह सिद्धान्त यह बतलाता है कि अधिक वरीयता वाले व्यवहारों को कम वरीयता वाले व्यवहारों की अपेक्षा प्रबलन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- pfux** % कार्य को छोटे-छोटे चरणों में तोड़ना पुनः लक्षित व्यवहार को पुरस्कृत करके उन चरणों को एक क्रम अथवा चेन में लाना।
- izyu dh vuq ph** % वह नियम जिसके द्वारा यह निर्धारित किया जाता है कि कब एवं कैसे प्रबलन किया जाएगा प्रबलन की अनुसूची के रूप में भेजा जाता है।

3-10 I nHkZ , oa i <us ds I qko

- Baron, R.A.(2001). *Psychology*. 5th Edition. Pearson Education, New Delhi, India.
- Chaplin, James P. & Krawiec, T.S. (1979). *Systems and Theories of Psychology*. 4th Edition. Holt, Rinehart and Winston, Inc.
- Esgate, A. & Groome, D. (2005). *An Introduction to Applied Cognitive Psychology*. Hove: Psychology Press, USA.
- Foer, J. (2012). *Moonwalking with Einstein: The art and science of remembering everything*. Penguin.
- Galotti, K. M. (2017). *Cognitive Psychology in and Out of the Laboratory*. 5th Edition. Sage Publications, New Delhi, India.
- Mishra, G. & Baron, R. A. (2016). *Psychology: Indian Subcontinent (5th Edition)*. New Delhi, Pearson Publication
- Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (2004). *Introduction to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
- Smith, E. E., Kosslyn, S. M., & Barsalou, L. W. (2007). *Cognitive Psychology: Mind and Brain (Vol. 6)*. Upper Saddle River: Pearson/Prentice Hall.
- Sternberg, R.J. & Sternberg, K. (2012). *Cognitive Psychology*. 6th Edition. Wadsworth Cengage Learning, United States.

3-11 fp=ka dk I nHkZ

- Steps involved classical conditioning of a dog. Retrieved June 1, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/classical-conditioning/>

- Rat or rabbit, I don't like it. Retrieved June 1, 2018, from <https://www.newscientist.com/article/dn26307-baby-used-in-notorious-fear-experiment-is-lost-no-more/>
- Seligman's learned helplessness experiments with dogs used an apparatus that measured when the animals would move from a floor delivering shocks to one without. Retrieved August 21, 2018, from <https://virtualuniversity.in/mod/book/view.php?id=508&chapterid=1614>
- A Skinner box. June 1, 2018, from <https://www.simplypsychology.org/operant-conditioning.html>
- Children imitating aggressive behaviour of the actor of the film. Retrieved June 1, 2018, from <https://thedirtpsychology.org/bobo-doll-experiments/>
- Tolman's maze. Retrieved June 1, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/wmopen-psychology/chapter/psychology-in-real-life-latent-learning/>
- Chimpanzee trying to reach banana placed above his reach. Retrieved June 1, 2018, from <http://slideplayer.com/slide/7222286/>

3-12 vkWkykbu l kr

- For more on Latent learning, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/wmopen-psychology/chapter/psychology-in-real-life-latent-learning/>
 - <https://www.psychestudy.com/behavioral/learning-memory/latent-learning>
 - <http://fac.hsu.edu/ahmada/3%20courses/2%20learning/learning%20notes/9%20tolman.pdf>
- For more information on Social Learning Theory, visit
 - http://www.asecib.ase.ro/mps/Bandura_SocialLearningTheory.pdf
 - <https://www.lsrhs.net/sites/kleina/files/2012/11/SocialLearningTheory.pdf>
- For more information on Pavlov's classical conditioning, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/classical-conditioning/>
 - <https://web.mst.edu/~psyworld/general/cc/cc.pdf>
 - https://courses.edx.org/c4x/SMES/PSYCH101x/asset/Chapter_7.pdf
- For more on Learned Helplessness, visit
 - <https://ppc.sas.upenn.edu/sites/default/files/learnedhelplessness.pdf>
 - <https://positivepsychologyprogram.com/learned-helplessness-seligman-theory-depression-cure/>

oLr(fu"B ç'uka ds mUkj

- 1) (a), 2) (d), 3) (c), 4) (b)

bdkbz 4 Lefr*

I j puk

- 4.0 सीखने का उद्देश्य
- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 स्मृति के स्वरूप एवं क्षेत्र
- 4.3 स्मृति के सिद्धान्त अथवा मॉडल
 - 4.3.1 सूचना-प्रक्रिया मॉडल
 - 4.3.2 प्रक्रिया के स्तरों का सिद्धान्त
 - 4.3.3 एक सम्पूर्ण मॉडल : कार्यात्मक स्मृति
- 4.4 स्मृतियों के प्रकार
 - 4.4.1 अर्थगत स्मृति
 - 4.4.2 संवेदी स्मृति
 - 4.4.3 प्रासंगिक स्मृति
 - 4.4.4 आत्म-रचित स्मृति
 - 4.4.5 भ्रामक स्मृति
 - 4.4.6 कौंध बल्ब स्मृति
- 4.5 विस्मरण
- 4.6 स्मृति सुधार की तकनीकें
 - 4.6.1 स्मृति विज्ञान की प्रतिमाओं का उपयोग
 - 4.6.2 स्मृति विज्ञान के संगठन का उपयोग
- 4.7 सारांश
- 4.8 पुनरावलोकन शब्द
- 4.9 मुख्य शब्द
- 4.10 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 4.11 चित्रों का संदर्भ
- 4.12 ऑनलाइन स्रोत

4-0 I h[kus ds mÍs ;

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे कि:

- आप स्मृति प्रत्यय एवं इसके स्वरूप की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्मृति के विभिन्न मॉडल्स का वर्णन कर सकेंगे;
- स्मृति के विभिन्न प्रकारों को पहचान सकेंगे;

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

- विस्मरण की प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेंगे;
- विस्मरण की व्याख्या करने वाले विभिन्न सिद्धान्तों का वर्णन कर सकेंगे;
- स्मृति बढ़ाने के विभिन्न कौशलों को जान सकेंगे।

4-1 iLrkouk

निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करे :

क्या आप जानते हैं कि साइकिल पर कैसे चढ़ा जाता है? यदि हाँ, तब क्या आप पैडल को घुमाने के बारे में अथवा बाइक चलाते समय संतुलन के बारे में सोचते हैं?

दूरदर्शन के किसी विज्ञापन को जिसे आप दुबारा देख रहे हैं उस समय उसकी सूचना प्रक्रम के लिए आप कितना समय लेंगे?

अन्तिम दिन जब आप अपने स्कूल अध्यापक से मिले थे, क्या वह आपको याद है?

उपरोक्त उदाहरणों तथा ऐसे ही अन्य उदाहरण प्रतिदिन के जीवन में स्मृति के महत्व की श्रेष्ठता को प्रदर्शित करते हैं। स्मृति शब्द पूर्व सूचनाओं के चेतन अनुभव के पुनरुद्धार को प्रदर्शित करता है। अतः उपरोक्त उदाहरणों में पूर्व सूचना के चेतन पुनरुद्धार की प्रक्रिया इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का भाग है। यद्यपि सभी घटनाओं में विभिन्न प्रकार की स्मृति के प्रकार सम्मिलित हैं।

अधिगम एवं प्रत्यक्षीकरण की दो पूर्व इकाइयों पर ध्यान देने से यह प्रदर्शित होता है कि मानव व्यवहार में इन प्रक्रियाओं के साथ ही स्मृति भी महत्वपूर्ण है। प्रत्यक्षीकरण, अधिगम एवं स्मृति आपस में बहुत करीब से जुड़े हुए हैं। कोई भी घटना अथवा वस्तु प्रत्यक्षीकृत, अधिगमित, स्मृति एवं पुनः **Lej.k** की जाती है, जो व्यक्ति को इसे स्वीकार करने, पुनः अनुकूलन करने में सहायता करती है। इस इकाई में हम स्मृति की प्रक्रिया पर अपना ध्यान देंगे। इकाई के इस प्रथम भाग में स्मृति के स्वरूप, क्षेत्र एवं मॉडल की व्याख्या की जाएगी और उसके बाद स्मृति के प्रकार की व्याख्या की जाएगी। इकाई के बाद के भाग में विस्मरण की प्रक्रिया का सारांश तथा स्मृति में सुधार की विद्याओं पर चर्चा की जाएगी।

4-2 Lefr dk Lo: lk , oa {ks=

कल रात्रि के भोजन में आपने क्या खाया था? आपके सबसे अच्छे मित्र का क्या नाम है? क्या आप जानते हैं कि एक कार अथवा साइकिल कैसे चलायी जाती है? जब आप कक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करते हैं तब कैसा अनुभव करते हैं? उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर देने में आप जिस मानसिक प्रक्रिया का उपयोग करते हैं वह **Lefr** के नाम से जानी जाती है। जर्मनी के मनोवैज्ञानिक हरमन एबिंगहॉस (1850-1909) ने 1885 में सर्वप्रथम स्मृति का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया। एबिंगहॉस ने स्मृति से सम्बन्धित प्रयोगों को अपने पर किया और वैध परिणाम प्राप्त किया। एबिंगहॉस ने निरर्थक पदों को सीखा। (कान्सोनेन्ट-वावल-कान्सोनेन्ट जैस टीओबी (TOB) आदि)। उनको उच्चारित किया जा सकता था पर वे निरर्थक थे। अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में एबिंगहास ने इस प्रकार के तीन वर्णों के 20,000 निरर्थक पदों का निर्माण किया। उन्होंने यह माना कि निरर्थक पदों की अपेक्षा सार्थक पद अधिक समय तक स्मृति में रहते हैं। प्रयोगात्मक परिणामों के आधार पर एबिंगहास ने यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्रायः सम्पूर्ण प्रयास (एक ही बार में सम्पूर्ण सामग्री को याद करना) की अपेक्षा होती है। स्मृति सूचनाओं को धारित करने एवं कुछ समय पश्चात् जब संज्ञानात्मक कार्य को निष्पादित करने की आवश्यकता होती है तो उन सूचनाओं को पुनरुत्पादित करने

की योग्यता स्मृति को प्रदर्शित करती है। यह माना गया है कि इस प्रक्रिया में तीन चरण निहित होते हैं – (i) कूट संकेतन, (ii) संकलन, (iii) पुनरोत्पादन। हमारी संवेदनाओं द्वारा प्राप्त सूचनाएँ इन स्तरों द्वारा आगे जाती हैं:

- i) **dW I dru%** यह प्रक्रिया संवेदनात्मक सूचनाओं को स्मृति प्रणाली के द्वारा पुनः प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित करके एक स्वरूप दिया जाता है।
- ii) **I dyu%** इस दूसरे चरण में स्मृति प्रणाली द्वारा प्राप्त सूचनाओं को संकलित (एकत्र) किया जाता है जिससे इसका बाद में भी उपयोग हो सके।
- iii) **i q:) kj%** जब किसी कार्य को पूर्ण करने की आवश्यकता होती है, फिर यह प्रक्रिया एकत्रित सामग्री को पहचानने एवं एक व्यक्ति की जागरूकता (चेतन) में ले आती है।

यद्यपि इन चरणों के पूर्ण होने में यदि कोई बाधा आती है तो उससे स्मृति के असफल होने की संभावना होती है।

4-3 Lefr ds fl) kUr vFkok ekMy

हम सब ने जो कुछ भी अधिगमित किया है उसे सही ढंग से संकलित (एकत्र) करने की आवश्यकता है जिससे जब भी हम चाहें उसे पुनरोत्पादित कर सकें। स्मृति के विभिन्न सिद्धांत या मॉडल यहां दिए गए हैं।

4-3-1 I puk-i fØ; k ekMy

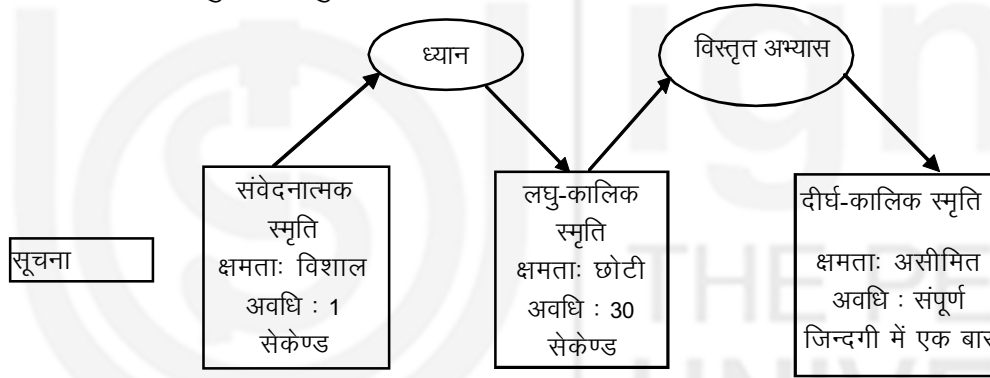
1960 से आगे संज्ञानात्मक उपागम सूचना-प्रक्रय यांत्रिकी हेतु कम्प्यूटर के मॉडल पर आधारित था। 1968 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक रिचर्ड एटकिन्सन एवं रिचर्ड शिफरीन (1968) ने स्मृति के एटकिन्सन-शिफरीन मॉडल को प्रस्तुत किया जो इसके बिल्कुल समान था जैसे कि कम्प्यूटर आंकड़ों को इनपुट देने एवं एकत्रित करने में काम करता है। इस मॉडल में सूचनाओं को एकत्रित/संकलित करने के लिए विभिन्न चरणों को सम्मिलित किया गया है:

क) **I dnukvka dks I phc) djuk vFkok Lefr%** इसमें संवेदनात्मक ग्राहक वातावरण से विभिन्न सूचनाओं को प्राप्त करते हैं। यहाँ सूचना बहुत कम समय के लिए होती है, संभवतः कुछ सेकिण्ड्स के लिए। सूचना संवेदनात्मक सूची से लघु-कालिक स्मृति में जाती है, यदि इस पर विशेष ध्यान दिया गया है।

ख) **y?kqdkfyd I dyu vFkok Lefr%** यह कार्यात्मक स्मृति के रूप में भी जानी जाती है, अब संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक कभी-कभी ही इस पद का प्रयोग करते हैं। विलियम जेम्स ने इसे प्राथमिक स्मृति के रूप में माना है। इसमें सूचनाएं 20 से 30 सेकेण्ड तक रहती हैं। वे सूचनाएं जिन पर ध्यान दिया जाता है, यहाँ इनका प्रक्रय अभ्यास अथवा बार-बार दोहरा कर किया जाता है। सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए इनकी क्षमता बहुत सीमित होती है। जी.ए. मिलर (1956) के अनुसार कार्यात्मक स्मृति की क्षमता लगभग सात पदों (प्लस अथवा माइनस दो) को होती है। पद के सम्बन्ध में मिलर का तर्क है कि अधिकांश सूचनाएं केवल एक पद में पैक हो जाती है। यह कौशल स्ट्रेटजी चंकिंग कहलाता एवं कार्यात्मक स्मृति की सूचना की प्रमुख इकाई चंक के नाम से जानी जाती है। चंकींग अधिकांश सूचना को लघु-कालिक स्टोर में संकलित करने में सहायक हो सकती है। सूचनाओं के विभिन्न टुकड़ों को चंक में जोड़कर लघु-कालिक स्टोर में रखा जाता है जिससे उसे बाद में पुनरोत्पादित किया जा सके। यह वर्षा की आवाज को, दृष्टि प्रतिमाओं की, शब्दों को, अर्थपूर्ण शब्दों को एकत्र करता है। प्रायः संकलन बहुत छोटा होता है, अतः अधिकांश नवीन प्राप्त सूचनाएं

पूर्व में संकलित सूचनाओं को विस्थापित कर देती है। जिन सूचनाओं का अभ्यास अच्छी प्रकार से होता है वे दीर्घ-कालिक स्मृति में चली जाती है। यहाँ अभ्यास का तात्पर्य यह है कि पद को क्रियात्मक स्मृति में सकारात्मक रूप से अनुरक्षित रखा जाए। अभ्यास दो प्रकार से किए जा सकते हैं। अनुरक्षण अभ्यास में, सूचनाओं को बारम्बार दोहराया जाता है। इन सूचनाओं को दीर्घ-कालिक स्मृति में नहीं भेजा जा सकता है। विस्तृत अभ्यास में सामग्री को अर्थ प्रदान करने एवं संगठित करने के कौशल का उपभोग होता है दूसरे प्रत्ययों के सन्दर्भ में जिन्हें कूटांकित किया गया है।

- ग) **nh?k dkfyd l dyu vFkok Lefr%** जिन सूचनाओं का अभ्यास भली-भांति प्रकार से किया जाता है वे दीर्घ-कालिक स्मृति में चली जाती हैं और जिन सूचनाओं का अभ्यास नहीं होता है वे समाप्त हो जाती है। दीर्घ कालिक स्मृति में सूचनाओं का एकत्रीकरण कुछ दिनों के लिए, कुछ महीनों के लिए, कुछ वर्षों के लिए अथवा हमेशा के लिए हो सकता है। दीर्घ कालिक स्मृति में सूचनाओं को एकत्रित करने की असीमित क्षमता होती है। दीर्घ कालिक स्मृति में सूचनाएं प्रायः विस्मृत नहीं होती है, और यदि कोई विस्मरण होता भी है तो वह केवल इसलिए क्योंकि उसको या तो सही ढंग से संगठित नहीं किया गया अथवा सही ढंग से पुनरुद्धार नहीं किया गया। सूचनाएं जो दीर्घकालिक स्मृति में एकत्रित की गई हैं उनमें अर्थपूर्ण शब्द, वाक्य, विचार/मत एवं जीवन के बहुत से अनुभव सम्मिलित होते हैं।



fp= 4-1 % l puk-çfØ; k ekMy

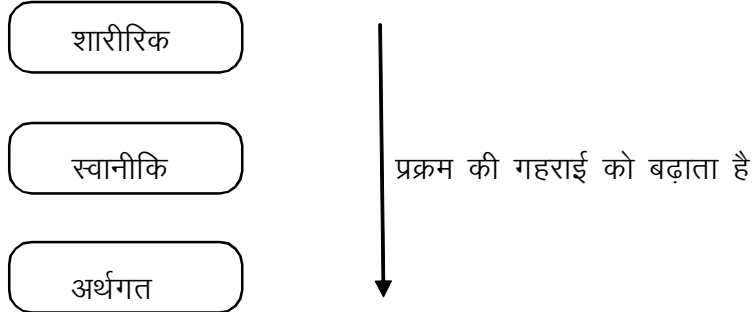
4-3-2 i fØ; k dsLrjka dk fl) kUr

यह मॉडल एटकिन्सन एवं शिफरिन के मॉडल का खंडन करता है जिसमें एटकिन्सन एवं शिफरिन ने यह दावा किया था कि स्मृति में विभिन्न उप प्रणालियां सम्मिलित होती हैं। प्रक्रय के स्तरों के अनुसार सूचनाएं सफलतापूर्वक पुनरुत्पादित होती हैं अथवा नहीं, यह प्रक्रय के स्तर पर निर्भर करता है। प्रक्रय स्तर इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि वह अधिक अर्थपूर्ण आधारित सूचनाओं के बेहतर कूट संकेतन के द्वारा आगे बढ़ता है। इस मॉडल के अनुसार कूट संकेतिक सूचनाएं विभिन्न स्तरों पर प्रकाशित होती हैं। सूचनाएं जिस ढंग से पहली बार प्राप्त होती हैं अथवा उनका अभ्यास किया जाता है वे विभिन्न गहराई के आधार पर प्रक्रम को आगे बढ़ाते हैं। फर्ग्यूस क्रेक एवं रॉबर्ट लोखोर्ट (1972) ने यह स्पष्ट किया कि विस्तृत अभ्यास प्रक्रय को गहराई से आगे बढ़ाता है। कर्क एवं टुलविंग (1975) ने तीन प्रकार के प्रक्रय स्तरों को बतलाया;

- क) शारीरिक/संरचनात्मक प्रक्रिया सूचनाओं का कूटसंकेतन उसके शारीरिक गुणों पर आधारित होता है: हल्का प्रक्रम।
- ख) स्वानिकी प्रक्रिया कूट संकेतन इस पर आधारित होता है कि आवाज कैसी है। जैसे "हैट" की लय "कैट" से मिलती है – हल्का प्रक्रम।

ग) अर्थगत प्रक्रम कूट संकेतन उसके अर्थ के आधार पर किया जाता है अथवा संप्रत्यय-गहराई का प्रक्रम।

इस मॉडल के अध्ययनों के आधार पर यह सुझाव दिया गया कि प्रक्रिया जितने गहराई के स्तर पर किया जाएगा उतने ही उच्च एवं सफल पुनरुद्धार होने की संभावना बढ़ जाएगी (हल्के प्रक्रम की अपेक्षा सूचनाओं का अच्छी प्रकार धारित होना)।



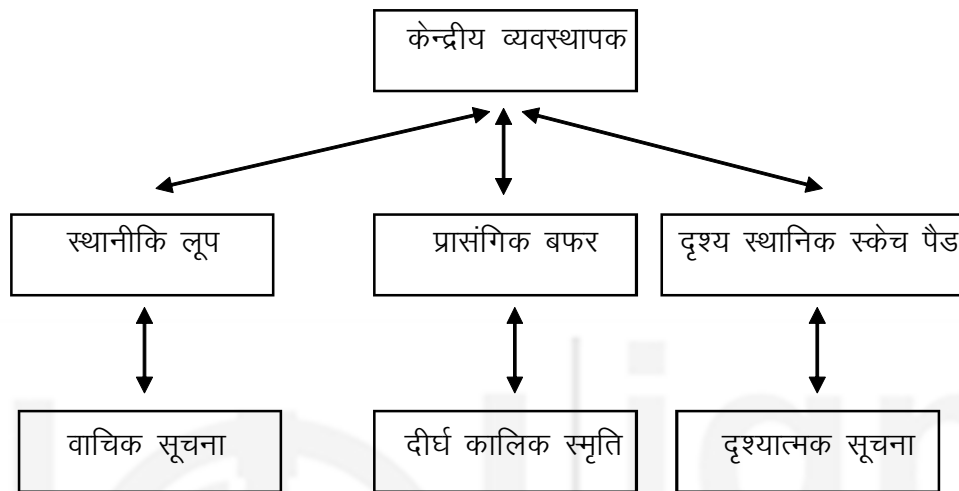
fp= 4-2% if0; k dk Lrj %dtd , oa Vy/foax] 1975%

4-3-3 I Ei wkZekMy %dk; kRed Lefr

एटकिन्सन एवं शिफरिन द्वारा दिया गया एसटीएम का संप्रत्यय बहुत संकीर्ण था। उन्होंने एसटीएम को केवल एक लघु कालिक स्मृति के संकलित घर के रूप में माना परन्तु बाद के अध्ययनों ने इसे अनुमोदित नहीं किया। बाद के अध्ययनों ने यह सुझाव दिया कि एसटीएम का स्वरूप गत्यात्मक है, अर्थात् यह केवल सूचनाओं के संकलित घर के रूप में कार्य नहीं करता बल्कि इसकी जिम्मेदारी संज्ञानात्मक कार्य को पूर्ण करने के लिए प्राप्त जानकारी को प्रहस्तन करना होता है। बैडेले एवं हिच्च (1974) ने प्रक्रम के स्तर के प्रत्यय को जोड़ने के पश्चात् एसटीएम के लिए एक नए मॉडल को दिया जिसको उन्होंने क्रियात्मक स्मृति का नाम दिया। अतः क्रियात्मक स्मृति को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह अस्थायी संकलन प्रणाली के लिए एक सीमित क्षमता एवं जटिल कार्यों जैसे – समझ, अधिगम एवं तर्क के लिए प्राप्त सूचनाओं का प्रहस्तन है (गोल्डस्टीन, 2011, पे. 13) बैडेले का कार्यात्मक स्मृति मॉडल चार तत्वों को सम्मिलित करता है: केन्द्रीय व्यवस्थापक स्वानीकि, स्वर विज्ञान लूप, दृश्य स्थानिक स्केच पेड, प्रासंगिक बफर (चित्र 4.3 देखें)।

- **dShh; 0; oLFkki d %** जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है कि यह हमारी कार्यात्मक स्मृति में एक व्यवस्थापक के रूप में कार्य करता है। यह अधीनस्थ प्रणालियों जैसे स्वानीकि लूप, दृश्य स्थानिक स्केच पेड एवं प्रासंगिक बफर के मध्य संज्ञानात्मक आपरेशन/परिचालन को समन्वित एवं संचालित करता है। यह निर्धारित करता है कि कौन-सी स्मृति दीर्घ-कालिक स्मृति का भाग होगी और कौन समाप्त हो जाएगी।
- **Lokuhfd yi%** स्वानीकि लूप की जिम्मेदारी, वाचिक एवं श्रवणात्मक सूचनाओं को संकलित करना होता है। सूचना स्वानीकि लूप में संकलित होती है और यदि इसका अभ्यास नहीं किया जाता है तो फिर यह केवल दो सेकेण्ड में क्षय/समाप्त हो जाती है। यह दो तत्वों को सम्मिलित करती है, स्वानीकि संकलन जो सूचनाओं को केवल कुछ सेकेण्ड के लिए संकलित करती है, एवं सुस्पष्ट अभ्यास प्रक्रय जो सूचनाओं के अभ्यास के लिए जिम्मेदार होती है जिसे कि सूचनाओं को स्थानीकि में संकलित करके श्रम से बचाया जा सके। उदाहरणार्थ एक फोन नम्बर को स्मरण करने का प्रयास कीजिए, जिसे आपके मित्र द्वारा तुरन्त बतलाया गया है, जिसमें स्वानीकि लूप निहित होता है।

- **n' ; LFkkfud Ldp iM %** यह दृश्य एवं स्थानिक सूचनाओं को संकलित करता है जब आप किसी कहानी को सुन रहे हैं अथवा भूलभुलैया को हल कर रहे हैं उस समय जो मानसिक तस्वीर आपके मस्तिष्क में आती है वह दृश्य स्थानिक स्केच पैड का उपयोग निहित होता है।
- **ikl fxd cQj%** इसमें स्वानीकि लूप, दृश्य-स्थानिक स्केच पैड एवं दीर्घ कालिक स्मृति की सूचनाओं को मिलाने की जिम्मेदारी होती है जिससे कि एकीकृत प्रासंगिक सूचनाओं को उत्पन्न किया जा सके। अतः यह तत्व प्राप्त सूचनाओं की एक अनुभूति करने में सहायक होता है।



fp= 4-3% cMys dk dk; kRed Lefr dk ekMy

ckDI 4-1 % ?kkSk. kRed cuke v?kkSk. kRed Lefr

?kkSk. kRed Lefr vFkok Li "V Lefr % यह उस स्मृति प्रणाली को सन्दर्भित करती है जिसे चेतनता के साथ नियंत्रित किया जा सकता है और जिसके लिए हम कुछ अवस्था में जागरूक होते हैं। इसमें प्रयास एवं अभिप्राय निहित होते हैं, तथा प्रायः उम्र के साथ यह कम होता जाता है। किसी मित्र के नाम का पुनःस्मरण करना, किसी मित्र के समर्थक नम्बर अथवा एटीएम के पिन का पुनःस्मरण करना घोषणात्मक स्मृति में सम्मिलित होता है। मुख्यतः घोषणात्मक स्मृति तीन प्रकार की होती है: कार्यात्मक स्मृति, प्रासंगिक स्मृति, एवं अर्थगत स्मृति।

v?kkSk. kRed Lefr vFkok vLi "V Lefr% स्मृति की वह प्रणाली है जिसके लिए हम जागरूक नहीं होते हैं। यह बिना प्रयास एवं अभिप्राय के अचेतन रूप से कार्य करती है। यह उम्र से प्रभावित नहीं होती है। इसके निम्नलिखित तीन स्वरूप हैं :

1) vks pkfj drk

यह वह प्रक्रिया है जो अचेतन के आधार पर कार्य करती है तथा पुनरुत्पादकता की प्रक्रिया को बढ़ाती है। यह प्रक्रिया यह भी सुझाव देती है कि स्मृति अचेतनता में भी सक्रिय हो सकती है।

2) vuclleku

जैसा कि पूर्व इकाई में वर्णन किया जा चुका है कि स्मृति का यह स्वरूप अधिगम के लिए जिम्मेदार है जहाँ दो उद्दीपकों में मध्य साहचर्य होता है।

3) xR; kRed@iØe Lefr

गत्यात्मक कौशल के अधिगम की प्रक्रिया धीमी है लेकिन यदि यह एक बार अच्छे से अधिगमित हो जाती है तब यह स्वचालित स्वरूप की होती है। अर्थात् पुनः इसमें किसी प्रकार के ध्यान की आवश्यकता अथवा चेतन प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। इस प्रकार की गत्यात्मक प्रक्रिया चलने में निहित होती है जिसमें किसी प्रकार के चेतन प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है।

ck&k ç' u 1

1) स्मृति की तीन अवस्थाएं क्या हैं?

.....
.....

2) लघु कालिक एवं दीर्घ कालिक स्मृति की महत्वपूर्ण विशेषताएं लिखिए।

.....
.....
.....
.....

3) क्रेक एवं टुलविंग द्वारा दिए गए स्मृति मॉडल के तीन प्रक्रिया स्तर प्रक्रम का नाम बताइए।

.....
.....

4) क्रियात्मक स्मृति में केन्द्रीय व्यवस्थापक तत्व का क्या महत्व है?

.....
.....

4-4 Lefr ds i&kj

अन्तिम दो वर्गों में स्मृति के स्वरूप एवं स्मृति के मॉडल पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस वर्ग में, हम स्मृति के विभिन्न प्रकारों की चर्चा करेंगे।

4-4-1 vfk&r Lefr

अर्थगत स्मृति विश्व के ज्ञान के समान है। अतः संस्कृति, इतिहास, खेल एवं संगीत आदि के ज्ञान में इसे जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार की स्मृति कूट संकेत, संकलन अथवा संगठन, के द्वारा उनके अर्थ के अनुसार संरचना के पुनरुद्धार (विश्व का ज्ञान) को स्मृति में लाता है। इसमें इसके सम्बन्ध में भी चर्चा होती है कि कैसे सूचनाएं दूसरे प्रकार की सूचनाओं से संबंधित होती हैं जो कि स्मृति में पहले से स्थापित है। जब सूचनाएं अर्थ के अनुसार, अथवा तार्किक अनुक्रमणिकाओं के अनुसार अथवा vfk&r के अनुसार संकलित होती हैं तब उनका विस्मरण बहुत कम होता है (क्यूलियन, 1966)। अन्तरंग रूप से सम्बन्धित परन्तु अलग प्रकार स्मृति y&DI dy Lefr है। यह हमारी भाषा के शब्दों के लिए प्रतिनिधियात्मक प्रणाली है। मनोभाषाविज्ञानियों की रुचि लेक्सिकल स्मृति की संरचना में होती है।

4-4-2 I &nfud Lefr

संवेदनिक स्मृति जो कभी-कभी 'क्षणिक स्मृति' के नाम से भी जानी जाती है, जो प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया से अन्तरंग रूप से सम्बन्धित है। हमारे प्रत्यक्षण के रिकार्ड को बहुत कम समय तक रखने के लिए यह जिम्मेदार है। यहाँ यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि हमारी संवेदनिक रजिस्टर एक स्मृति प्रणाली के रूप में कार्य करती है। वातावरण से सूचनाएं सर्वप्रथम

सांवेदनिक स्मृति में पहुँचती है और यदि आवश्यकता हुई तो उन सूचनाओं पर ध्यान दिया जाता है, जो दूसरी स्मृति प्रणाली में चली जाती है। यह सूचनाओं का संकलन केवल सेकेण्ड के कुछ भाग के लिए संज्ञानात्मक प्रक्रिया करने की अनुमति प्रदान कर सकता है। मनोवैज्ञानिकों ने दृष्टि संवेदनात्मक स्मृति, श्रवण संवेदनात्मक स्मृति, घ्राण संवेदनात्मक स्मृति, स्वाद संवेदनात्मक स्मृति, एवं स्पर्श संवेदनात्मक स्मृति के सम्बन्ध में चर्चा की है। बहुत सारे साहित्य प्रतिभा संवेदनात्मक स्मृति पर उपलब्ध है, अर्थात् दृष्टि प्राप्ति के लिए स्मृति एवं प्रतिध्वानिक संवेदनात्मक स्मृति, श्रवण प्राप्ति की स्मृति। कुछ लोगों के पास इडेटिक प्रतिभा अथवा फोटोग्राफिक स्मृति होती है जो कि एक दुर्लभ योग्यता है। दृष्टि स्मृति को लम्बे समय तक बनाए रखने की। संवेदनात्मक स्मृति पर प्राचीन प्रयोगों के करने का श्रेय जॉर्ज स्परलिंग (1960) को जाता है।

ckDI 4-2 %Lijfyx dk l onukRed Lefr iz kx

संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक जॉर्ज स्परलिंग (1960) ने अपने प्राचीन प्रयोग में प्रतिभा संबंधी (दृष्टि संवेदनात्मक स्मृति) स्मृति के उपकल्पनात्मक अस्तित्व को प्रदर्शित किया। प्रतिभागियों को 12 वर्ण (4×3 ग्रिड) में मैट्रिक्स को बहुत कम समय (50 मी सेकेण्ड) के लिए दिखलाया। प्रतिभागियों से पूरी रिपोर्ट प्रविधि अथवा आंशिक रिपोर्ट प्रविधि में रिपोर्ट देने के लिए कहा गया। बाद में प्रतिभागियों से मैट्रिक्स के सभी वर्णों की रिपोर्ट करने के लिए कहा गया। परन्तु प्रतिभागियों ने केवल पाँच वर्णों को ही रिपोर्ट किया। आंशिक रिपोर्ट तकनीकी में प्रतिभागियों को केवल शब्दों को रिपोर्ट करना था, उस टोन के आधार पर जो उद्दीपक ग्रिड हटने के तुरन्त बाद प्राप्त हुई। प्रत्येक लाइन हेतु टोन की प्रबलता भिन्न थी (ऊपरी पंक्ति के लिए उच्च टोन, मध्य पंक्ति के लिए मध्यम टोन, निचली पंक्ति के लिए धीमी टोन)। प्रतिभागी प्रत्येक लाइन से तीन शब्दों की रिपोर्ट कर सकते थे। अतः यह बताया गया की संपूर्ण रिपोर्ट कि स्थिति में पाँच वर्णों की तुलना में नौ वर्ण दृष्टिगत हुए। अतः स्परलिंग ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कार्यात्मक स्मृति से अलग होने के पश्चात, संवेदनात्मक स्मृति एक निम्न स्तरीय प्रणाली है।

4-4-3 i kl fxd Lefr

वे स्मृतियाँ जो घटित होने के समय के साथ संकलित होती रहती हैं, प्रासंगिक स्मृति के नाम से जानी जाती है। हमारे जीवन के अनुभवों के बहुत सारे प्रसंग जो कूटांकित, संकलित एवं पुनरुद्धार स्मृति के रूप में दीर्घ कालिक स्मृति में रहती है। वे हमारे व्यक्तिगत अनुभव होते हैं। वे हमारे विगत घटनाओं के सन्दर्भ रूप में हो सकते हैं अथवा वे चीजें जो समय विशेष में घटित हुई है।

4-4-4 vkRe-jfpr Lefr



fp= 4-4% gekjh l efr; k;

स्रोत: <https://www.newscientist.com>

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह हमारी अपनी विगत घटनाओं अथवा व्यक्तिगत अनुभवों की स्मृति है। हमारी आत्म-रचित स्मृति प्रायः सही एवं सटीक होती है परन्तु कभी-कभी यह स्मृति के संरचनात्मक स्वरूप से भी प्रभावित होती है। पर क्या हम सारे समय की जीवन घटनाओं को समान रूप से स्मरण कर पाते हैं? अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि लोग वर्तमान की विगत स्मृतियों की अपेक्षा अपनी प्रारम्भिक युवा एवं युवावस्था की स्मृतियों को धुँधलेपन के साथ मध्यस्था में स्मरण करते हैं (रीड एवं कोनोली, 2007)। मेरीगोल्ड लिन्टन (1975, 1982) ने एबिंगहॉस की अन्तर्दर्शन विधि का उपयोग करके आत्म-रचित स्मृति के स्वरूप को समझने के लिए इन रिकार्ड की गई स्मृतियों का अध्ययन किया।

4-4-5 Hkked Lefr

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह उस घटना की स्मृति है जो कभी घटित नहीं हुई। इसको परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि “यह एक ऐसा मानसिक अनुभव है जिसे किसी की व्यक्तिगत विगत घटना, गलती से सच्चे प्रतिनिधित्व के रूप में माना जाता है” (सामाजिक एवं व्यावहारिक विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय एन्सायक्लोपिडिया से, 2001)। यह पुनः प्राप्त स्मृति अथवा छद्म स्मृति के रूप में भी जानी जाती है, ये स्मृतियाँ बहुत धुँधली तथा संवेगात्मकता से भरी होती हैं। अधिकांश असत्य स्मृति के केस में लोगों की प्राप्त स्मृतियाँ बचपन के सेक्स दुर्व्यवहार अथवा हिंसा से सम्बन्धित होती हैं। विभिन्न अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है कि हमारी स्मृति स्थिर नहीं होती बल्कि यह प्रभावशाली सुझावों द्वारा आसानी से प्रहस्तान्तरित की जा सकती है, जैसे मनोचिकित्सा के सेशन के दौरान। असत्य स्मृति के लक्षणों के समूह मनोचिकित्सा एवं विधिक साक्ष्यों के सन्दर्भ में बहुत अधिक उपयुक्त होते हैं। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि लगभग 20 प्रतिशत साक्ष्यों की स्मृति असत्य थी (मेजोनी, स्कोबोरिया एवं होर्वे, 2010)।

4-4-6 dk/k cYc Lefr



fp= 4-5% cyMz VM l BVj] ; w9 , ij 9@11 dks vkrdoknh geyk

स्रोत: <https://www.onthisday.com>

पहली बार जब आपने 9/11 के हमले को सुना तब आप क्या कर रहे थे? आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी? बहुत से लोग आज भी 9/11 हमले की स्पष्ट स्मृतियों को रखते हैं। वे आज भी इसके बारे में धुँधला पुनःस्मरण कर सकते हैं कि जब पहली बार इसके बारे में सुना, उस समय वे क्या कर रहे थे। कहाँ से उन्होंने इसको सुना तथा उन्होंने कैसा अनुभव

किया। अतः इस स्मृति के संदर्भ में विशेष क्या है? रॉजर ब्राउन एवं जेम्स कुलिक (1977) के अनुसार ये स्मृतियाँ इतनी धुँधली होती हैं कि ये एक फिल्म के रूप में दृढ़ प्रतीत होती हैं। भारत के सन्दर्भ में ये आज भी लोग प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी एवं श्री राजीवगांधी की हत्या की घटनाओं को कौंध बल्ब स्मृति के रूप में पुनः स्मृति में लाते हैं।

किसी भी घटना के लिए इस प्रकार की धुँधली स्मृतियों के क्या कारण हैं? अध्ययनों ने बहुत से कारकों को बतलाया है जैसे घटना की संवेगात्मक तीव्रता (बोहानैन, 1988)। दूसरा दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि क्यों कि महत्वपूर्ण होने के कारण हम अपने अनुभवों को पुनः बतलाते हैं जिससे उनका बार-बार अभ्यास होता है जिससे कि वे स्मृतियाँ सालों के बाद भी अधिक सही एवं धुँधली होती है (बोहानैन, 1988)।

4-3 स्मृति प्रक्रिया का पुनरुद्धार

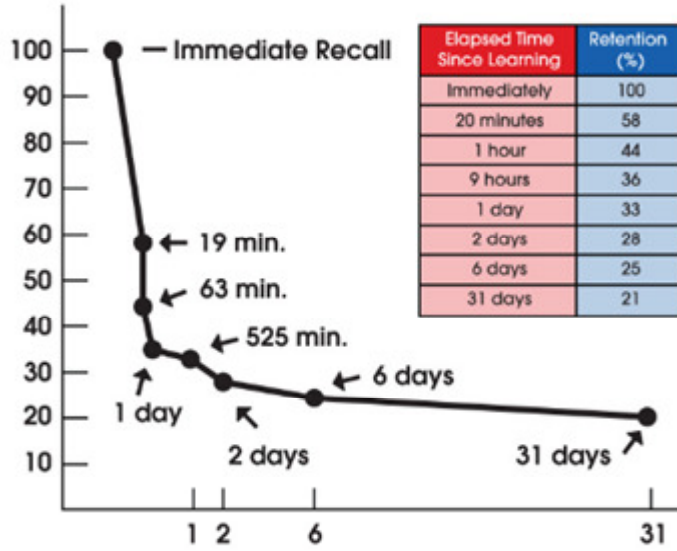
पुनः स्मरण एवं पहचानना यह दो ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जिनकी सहायता से हम सूचना का पुनरुद्धार कर सकते हैं। पुनः स्मरण ये सूचनाओं का पुनरुद्धार बिना किसी बाहरी संकेत की सहायता के होता है। उदाहरण के लिए, आपने अपनी स्कूली शिक्षा कहाँ से प्राप्त की। इसी प्रकार, निबन्ध प्रकार के प्रश्न, लघु उत्तर, रिक्त स्थानों की पूर्ति, पुनः स्मरण के उदाहरण हैं। पुनः स्मरण का एक महत्वपूर्ण फीचर क्रमिक-अवस्था प्रभाव (मरडॉक, 1962) है। मध्य की सूचना की अपेक्षा प्रारम्भ की तथा अन्त की सूचनाएँ अधिक अच्छे से स्मृति में होती हैं। आरम्भिक एवं नवीनता का प्रभाव भी पुनः स्मरण का एक रुचिकर फीचर है। प्रारम्भ में प्राप्त होने वाले शब्द को स्मरण करना प्रारम्भिक प्रवृत्ति होती है (सूचना अभी लघुकालिक स्मृति में होती है जो पुनरुद्धार होती है) (क्रेक, 1970, मरडॉक 1962)।

पहचान वह प्रक्रिया है जहाँ सूचनाओं का मिलान, स्मृति में रहने वाली सूचनाओं से होता है। उदाहरणार्थ, बहुविकल्पीय प्रश्न, मिलान सत्य-असत्य। यह पुनः स्मरण से ज्यादा आसान है, क्योंकि यहाँ संकेत उपस्थित होते हैं। पहचान का एक रुचिकर फीचर असत्य धनात्मकता है क्योंकि जब व्यक्ति यह सोचता है कि उसने कुछ सूचनाओं का पुनः स्मरण कर लिया अथवा उन्हें पहचान लिया है, परंतु वास्तव में वह उनकी स्मृति में नहीं होती है।

4-5 स्मरण का पुनरुद्धार

हम उन लोगों के नाम क्यों भूल जाते हैं जिनसे तुरन्त मिले हैं? अथवा हम उस फोन नम्बर को क्यों भूल जाते हैं जिसे कुछ मिनट पहले डायल किया था? हम सभी लोग अपनी प्रतिदिन की जिन्दगी में विस्मरण का अनुभव करते हैं परंतु इसके पीछे क्या कारण है? मनोवैज्ञानिकों ने विस्मरण को परिभाषित करते हुए बतलाया कि यह हमारी पहले से कूटांकित एवं संकलित की हुई सूचना का स्मृति प्रणाली में पुनः स्मरण न कर पाने की अयोग्यता है।

विस्मरण के स्वरूप को समझने के लिए जर्मन मनोवैज्ञानिक हरमन एबिंगहॉस ने 1879 में पहला क्रमबद्ध प्रयोग किया था (पहले वर्ग में चर्चा की जा चुकी है)। उन्होंने बहुत से सीवीसी (कान्सोनेन्ट, वावेल, कान्सोनेन्ट) निरर्थक पद जैसे एनएके अथवा पीयूके बनाए और उन्हें अपने ऊपर प्रशासित किया। केवल अपने ऊपर प्रयोगों को प्रशासित करना तथा अपने अनुभवों के उपयोग करने को अन्तर्दर्शन विधि के नाम से जाना जाता है। स्मरण एवं विस्मरण के स्वरूप को जानने के लिए उन्होंने सर्वप्रथम निरर्थक पदों की सूचियों को तब तक याद किया जब तक वे पूर्व परिभाषित मापन तक नहीं पहुँच गए। उसके बाद एक परिवर्तित समय अन्तराल के पश्चात् धारण किए हुए पदों का मापन किया। पुनः उन्होंने उसी सूची के पदों को एक परिवर्तित समय के पश्चात् पुनः सीखने में लिए प्रयासों की संख्या को भी नोट किया। अपने निरीक्षण के आधार पर उन्होंने विस्मरण के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए निम्नलिखित वक्र को बनाया गया (चित्र 4.6 को देखें)।



fp= 4-6% , fcægkW foLej.k odl

स्रोत : <http://www.keyandparent.com>

यह वक्र एबिंगहास के प्रसिद्ध विस्मरण वक्र के नाम से जाना जाता है। ग्राफ से यह देखा जा सकता है कि प्रारम्भ में विस्मरण का रेट अधिकतम था पर कुछ घंटों बाद यह धीमा हो गया। वर्तमान अध्ययन भी इसी प्रकार के परिणामों को रिपोर्ट करते हैं।

विस्मरण के कारणों की व्याख्या करने वाले साहित्य में उपलब्ध मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

क) **vojksk dk fl)klr**

इस सिद्धान्त के अनुसार दूसरी स्मृतियों के अवरोध के कारण विस्मरण उत्पन्न होता है। यह अवरोध दो प्रकार के होते हैं:

अग्रोन्मुख अवरोध (आगे) – नई प्राप्त की गई सूचनाओं का विस्मरण, पहले सीखी गई सूचना के अवरोध से होता है।

पृष्ठोन्मुख अवरोध (पीछे) – पहले संकलित सूचनाओं का विस्मरण नई सीखी सूचना के कारण होता है।

दोनों प्रकार के प्रयोगों को निम्नलिखित ढंग से सम्पादित किया जा सकता है:

i "Bkdeqk vojksk

l eng	okLrfod vf/kxe	vUro? kh; fØ; k	i q%Lej.k
नियंत्रित	सूची ए का सीखना 10 निरर्थक पद।	पाँच मिनट का विश्राम।	सूची ए
प्रयोगात्मक	सूची बी का सीखना 10 निरर्थक पद।	सूची सी का सीखना, 10 निरर्थक पद, पाँच मिनट के लिए।	सूची बी

vxkdeqk vojksk

l eng	okLrfod vf/kxe	vUro? kh; fØ; k	i q%Lej.k
नियंत्रित	सूची ए का सीखना 10 निरर्थक पद।	पाँच मिनट का विश्राम।	सूची ए
प्रयोगात्मक	सूची बी का सीखना 10 निरर्थक पद।	सूची का सीखना 10 निरर्थक पद।	सूची सी

ख) fpgu ál fl)klr

यह एक पुराना सिद्धान्त है जो अनुप्रयोग सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है। चिह्न ह्यस सिद्धान्त यह बतलाता है कि सीखने के कारण केन्द्रीय स्नायु संस्थान प्रणाली में परिवर्तन होता है जिसके द्वारा स्मृति चिन्ह निर्मित होते हैं अथवा सीखने के द्वारा मस्तिष्क में शारीरिक परिवर्तन होते हैं (ब्राउन, 1958)। जब इन स्मृति चिन्हों का लम्बे समय तक उपयोग नहीं होता, तब यह हल्के हो जाते हैं, जिससे विस्मरण होता है। अतः इस सिद्धान्त में निहित यांत्रिकी 'इसका उपयोग करो' अथवा 'इसे खो दो' अर्थात् यदि आप नियमित समय अन्तराल पर अपनी संकलित सूचना उपयोग नहीं करेंगे, तब उसके खोने का खतरा बना रहेगा।

ग) l dr vkfJr foLej.k fl)klr

इस सिद्धान्त के अनुसार विस्मरण एक उपयुक्त संकेत की अनुपस्थिति अथवा कमजोर संकेत की उपस्थिति के कारण होता है। मान लीजिए आपने वस्तुओं की एक सूची बाजार से खरीदने के लिए दी। गलती से आपसे वह सूची खो गई। अब आप सूची के सामानों को पुनः स्मरण करने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु इसकी अच्छी संभावना है कि आप उसमें से अधिकांश सामान भूल जाएँगे। अध्ययनों में यह सुझाव दिया गया है कि यदि प्रतिभागियों को उन सामानों की श्रेणी के बारे में संकेत दिया जाए तब उनके पुनःस्मरण में सुधार आ सकता है। अध्ययनों में यह बताया गया कि वातावरण के शारीरिक गुण भी पनुरुद्धार में धनात्मक भूमिका निभाते हैं।

घ) dWkdu dh vl Qyrk

जैसा कि पहले के अनुभाग में बतलाया जा चुका है कि स्मृति में कूटांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। बहुत-सी ऐसी घटनाएँ अथवा वस्तुएँ हैं जो सही ढंग से कूटांकित नहीं होती अथवा सांवेदनिक स्मृति से अलग नहीं जाते हैं, अतः इसका परिणाम यह होता है कि ये सूचनाओं को स्मृति में लाने में असफल होते हैं। कूटांकन असफलता भी लोगों के विस्मरण का एक कारण है।

ckk ç'u 2

1) सांवेदनिक स्मृति को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

2) आत्म-रचित स्मृति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) एबिंगहास का विस्मरण वक्र क्या है?

.....

.....
.....
.....
.....

4-6 Lefr I qkkjus dh rduhda

स्मृति सुधारने की विभिन्न तकनीकें हैं। विभिन्न तकनीकें का उपयोग विभिन्न स्थितियों हेतु होता है। स्मृति तकनीकों को संचालित करने वाले चार प्रमुख सिद्धांत हैं जो निम्नलिखित हैं:

- 1) **vfk dsfy, ifØ; k %** जैसे आप नई सामग्री सीखते हैं, उस समय ध्यान उद्दीपक के अर्थ पर होना चाहिए। इसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को ध्यान भंग होने से बचना चाहिए। ध्यान भंग की उपस्थिति में, हम जो सीखना अथवा स्मरण करना चाहते हैं, उसके अर्थ की तरफ हमारा ध्यान कमजोर हो जाता है।
- 2) **iq:)kj ifØ; k%** यह पुनरुद्धार अभ्यास से सम्बन्धित है। आप पढ़ने अथवा पुनः पढ़ने की अपेक्षा स्मृति से जिस चीज को याद करना चाहते हैं उसका अभ्यास करके प्राप्त किया जा सकता है। आत्म-परीक्षण सबसे उत्तम पुनरुद्धार अभ्यास है।
- 3) **es/k Lefr ves/keekjh%** यह अपनी स्वयं की स्मृतियों का ज्ञान एवं जागरूकता है। यह स्मृति को प्रतिविम्बित और निगरानी करने में मदद करती है। इस तरह से यह नीतिगत योजना अध्ययन के घंटों/संसाधनों, निष्पादन का मूल्यांकन आदि करने में मदद करती है।
- 4) **foHkkftr I h[kuk vFkok vH; kl %** संकलित अभ्यास की अपेक्षा विभाजित सीखना उत्कृष्ट विधि है (पहले सेक्शन में भी इसकी विवेचना की जा चुकी है)। अतः एक व्यक्ति को रटना छोड़ देना चाहिए क्योंकि यह सीखने का एक अप्रभावशाली तरीका है। विभाजित अभ्यास स्मृति की शक्ति को सुधारने में सहायक होती है।

अब कुछ उन तकनीकियों का परीक्षण करें जो सूचनाओं के पुनरुद्धार में सहायक होते हैं तथा विस्मरण की मात्रा को घटाते हैं। यह स्मृति विज्ञान सहायक के रूप में जाने जाते हैं। इस सेक्शन में हम स्मृति विज्ञान की विधियों के सम्बन्ध में अथवा स्मृति बढ़ाने की तकनीकों के सम्बन्ध में चर्चा करेंगे। स्मृति विज्ञान की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं; पहली वह श्रेणी जिसमें स्मृतिविज्ञान में प्रतिभाओं का उपयोग होता है, जब कि दूसरी श्रेणी सूचनाओं को स्मरण करने के लिए संगठन के सिद्धान्तों का उपयोग करती है।

4-6-1 LefrfoKku ea i frekvka dk mi ; ksx

बहुत से ऐसे तरीके हैं जो सूचनाओं के पुनरुत्पादन एवं धारण की क्षमता में सुधार हेतु प्रतिभाओं का उपयोग करते हैं। निम्नलिखित दो प्रकार की स्मृतिविज्ञान प्रतिभाओं का उपयोग करते हैं:

- 1) **ykd h ¼Locih½ dh fof/k % i frekvka dks LFkku ij j [kuk**

लोसी, 'स्थान' का बहुवचन है, जो स्थान अथवा स्थिति को बतलाता है। यह विधि सूचना के पुनरुद्धार हेतु जाने पहचाने स्थान को एक संकेत के रूप में प्रयोग करता है। मान लीजिए आप वस्तुओं की एक सूची को याद करना चाहते हैं जिसे आपको पास की पंसारी के स्टोर

से खरीदना है। सूची में अंडा, टमाटर, पेन, धुलाई का पाउडर तथा नमक है। इस सामानों को याद रखने के लिए पहले उनमें से प्रत्येक को दृष्टिगत करके उनके कुछ अलग स्थान पर रखना होगा, जैसे अपने घर के अलग कमरों में। इसके पश्चात् मानसिक रूप से अपने घर में जाकर प्रत्येक सामान को अलग जगह पर देखना होगा। बाजार पहुँचने के पश्चात् आपको जो करने की आवश्यकता है वह यह कि आप पुनः अपने घर का एक दूसरा मानसिक टूर करे और उन सामानों का पुनः स्मरण करें जिन्हें विभिन्न निर्धारित स्थान पर एक क्रम में रखा है।

2) **emy 'kɔn fof/k %** शब्दों एवं विदेशी भाषा को सीखने के लिए मूल शब्द विधि को उपयुक्त माना जाता है। इस विधि में सूचनाओं के किन्हीं दो टुकड़ों को प्रतिमाओं का प्रयोग करके जोड़ा जाता है। उदाहरणार्थ आप अंग्रेजी भाषा के लिए अपनी शब्दावली बढ़ाना चाहते हैं। आपके सामने 'त्योरी चढ़ाना' एक शब्द आता है, जो 'क्रोध अथवा बुरे स्वभाव प्रदर्शन के लिए होता है। इसके अर्थ को जानने के लिए पहले मूल शब्द को खोजने की आवश्यकता है, एक मिलता-जुलता शब्द जो लक्ष्य शब्द Scowl के समान हो। अब एक प्रतिमा का प्रयोग करके लक्ष्य शब्द को मूल शब्द से जोड़ने का प्रयास करें। Scowl शब्द owl शब्द के समान प्रतीत होता है, आप एक क्रोधित owl की तस्वीर की कल्पना कर सकते हैं। अध्ययनों में यह बताया गया कि परिभाषित शब्दों को सीखने की यह विधि, रूढ़िवादी सीखने की विधि से, अधिक उत्कृष्ट है।



fp= 4-7 % Øks/kh Hkfxek ea mYyw

स्रोत : <https://pixabay.com>

4-6-2 LefrfoKku ea l xBu dk mi ; ksx

यह सूचनाओं को सीखने एवं पुनरुद्धार करने की योग्यता को सीखी जाने वाली सामग्री को पुनः संगठित सिद्धान्त के द्वारा, सुधारने का प्रयास करती है। इस अनुभाग में हम दो प्रकार के स्मृतिविज्ञान की विवेचना करेंगे:

1) चंकिंग

यह एक विधि है जिसमें छोटी इकाइयों को अर्थपूर्ण बड़ी इकाइयों में मिलाया जाता है, जैसे, यदि आपसे निम्न अंकों के क्रम को स्मरण करने के लिए कहा जाए -

1-9-3-9-1-9-4-5

यदि आप विश्व के इतिहास से भलीभांति परिचित है, तब आप इन अंकों को निम्न तरीके से समूह में रख सकते हैं :

1939-1945

दूसरा विश्वयुद्ध 1939 में प्रारम्भ हुआ एवं 1945 में समाप्त हुआ। इस ढंग से आप इसे स्मरण भी कर सकते हैं तथा इन अंकों का सही ढंग से पुनः स्मरण भी कर सकते हैं। आप शब्दों के प्रयोग द्वारा सूचना का चंक भी कर सकते हैं। अतः यह बताया जा सकता है कि बड़ी सूचनाओं के स्मरण का यह दूसरा रास्ता है। सामग्रियों को कूटांकन के समय उनकी समानता के आधार पर एक साथ एक समूह में एकत्र कर लिया जाता है। अतः व्यक्तिगत टुकड़े की अपेक्षा सूचना को चंक में पुनः स्मरण करना आसान होता है।

2) प्रथम वर्ण तकनीकी

इस तकनीकी में प्रत्येक शब्द के प्रथम वर्ण को जिन्हें आप स्मरण करना चाहते हैं लिया जाता है। उदाहरणार्थ, तकनीकों को प्रयोग करके इन्द्रधनुष के रंग का स्मरण किया जा सकता है:

बैंगनी

जामुनी

नीला

हरा

पीला

नारंगी

लाल

विबग्योर शब्द इन्द्रधनुष के सातों रंगों के लिए है। यह विधि 'परिवर्णों' नाम से भी जाना जाता है, जब शब्द पहले वर्ण द्वारा अथवा वर्णों के समूह के नाम से बनाए जाते हैं अथवा मुहावरों से स्मरित किए जाते हैं। यह घटनाओं के नाम को स्मरण करने से अथवा, संगीत के नोट्स को आसानी के साथ स्मरण करने में सहायता करता है।

3) अनुप्रास

इसमें प्रत्येक कविता के अन्तिम लाइन के शब्द में समान आवाज का उपयोग निहित होता है। यह सूचना को ध्वनि के अनुसार कूटांकित करने योग्य बनाता है।

4-7 I kjka k

अब हम इस इकाई के अन्त में आ गए हैं, अतः उन सब मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में दोहरा लें जिन्हें इसमें प्रस्तुत किया गया है:

- स्मृति सूचना को धारण करने तथा लम्बे समय बाद संज्ञानात्मक कार्य हेतु इसे पुनरुद्धार करने की योग्यता को प्रदर्शित करती है। इसमें संप्रत्यात्मक प्रक्रिया के रूप में तीन अवस्थाएं होती हैं – (i) कूटांकन, (ii) संकलन, एवं (iii) पुनरुद्धार।
- 1968 में एटकिन्सन एवं शिफरिन द्वारा सूचना प्रक्रम मॉडल दिया गया। इस मॉडल के अनुसार स्मृति में तीन संकलन अथवा तीन उप प्रणालियां निहित होती हैं जिन्हें सांवेदनिक स्मृति, लघु कालिक स्मृति एवं दीर्घ-कालिक स्मृति के नाम से जाना जाता है।
- स्मृति के स्तर प्रक्रम मॉडल (एलओपी) को 1975 में क्रेक एवं टुलविंग द्वारा दिया गया।

इस मॉडल ने एटकिन्सन एवं शिफरिन मॉडल के दावे को नकार दिया कि स्मृति में विभिन्न उपप्रणालियां निहित होती हैं। इस मॉडल के अनुसार सूचनाएं सफलतापूर्वक पुनरुत्पादित होती हैं अथवा नहीं। यह उसके प्रक्रम के स्तर पर निर्भर करती है। एलओपी उस स्तर को सन्दर्भित करता है जिस स्तर पर सूचना का कूटांकन किया जा चुका है। क्रेक एवं टुलविंग (1975) ने तीन एलओपी दिए; शारीरिक/संरचनात्मक प्रक्रम, ध्वन्यात्मक प्रक्रम एवं अर्थगत प्रक्रम।

- बैडले ने कार्यात्मक स्मृति के लिए एक मॉडल दिया। उनके अनुसार कार्यात्मक स्मृति में चार तत्व निहित होते हैं – केन्द्रीय व्यवस्थापक, ध्वन्यात्मक लूप, दृश्य-स्थानिक स्केच पेड एवं प्रासंगिक बफर।
- स्मृति के विभिन्न प्रकार होते हैं – अर्थगत स्मृति, सांवेदनिक स्मृति, प्रासंगिक स्मृति, असत्य स्मृति एवं कौंध बल्ब स्मृति।
- स्मृति प्रणाली में पहले से कूटांकित एवं संकलित सूचनाओं पुनःस्मरण करने की अयोग्यता को विस्मरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- विस्मरण के स्वरूप को समझने के लिए 1879 में जर्मन मनोवैज्ञानिक हरमन एबिंगहास ने प्रथम क्रमबद्ध प्रयोग संचालित किया।
- विस्मरण के प्रमुख कारणों की व्याख्या सिद्धान्तों के रूप में की गई अवरोध का सिद्धान्त, चिह्न ह्रास सिद्धान्त, संकेत आश्रित विस्मरण सिद्धान्त एवं कूटांकन असफलता सिद्धान्त।
- अपनी स्मृति को सुधारने की विभिन्न तकनीकें हैं। ये तकनीकें मुख्य रूप से अर्थ के लिए प्रक्रिया के सिद्धान्त पर पुनरुद्धार प्रैक्टिस, नेटा स्मृति एवं खंडित अधिगम अथवा अभ्यास पर आधारित होती हैं। स्मृति को बढ़ाने की मुख्य तकनीकी स्मृतिशास्त्र के नाम से जानी जाती है। स्मृतिशास्त्र की दो मुख्य श्रेणियां हैं, स्मृति विज्ञान की एक श्रेणी प्रतिमाओं का उपयोग करती है (स्थानों एवं मुख्य शब्द विधि)। जबकि दूसरी विधि सूचनाओं के स्मरण के लिए संगठन के सिद्धान्त को उपयोग में लाती है (चंकिंग, प्रथम वर्ण तकनीकी, एवं अनुप्रास)।

4-8 i p j k o y k d u ç ' u

- 1) बाद में सीखने को, पहले सीखने से पहले, पुनः स्मरण को प्रकट करने की प्रवृत्ति कहलाती है
 - क) कूटांकन असफलता
 - ख) शमन
 - ग) पृष्ठोन्मुख अवरोध
 - घ) अग्रोन्मुख अवरोध
- 2) स्मृति शोध के मध्य अन्तर बताया गया स्मृति एवं स्मृति। पहले वाला प्रदर्शित करता है जब कि बाद वाला प्रदर्शित करता है।
 - क) अर्थगत; लघु-कालिक, अर्थपूर्ण घटनाओं के व्यक्तिगत स्मृति हेतु, अस्थायी संकलन में रोकी गई स्मृति।

- ख) प्रासंगिक, आत्म-रचित, अर्थपूर्ण घटनाओं की व्यक्तिगत स्मृति हेतु, सामान्य ज्ञान के लिए स्मृति ।
- ग) अर्थगत, प्रक्रमण, सामान्य ज्ञान के लिए स्मृति, अर्थपूर्ण घटनाओं की व्यक्तिगत स्मृति के लिए ।
- घ) अर्थगत, प्रासंगिक, सामान्य ज्ञान के लिए स्मृति, अर्थपूर्ण घटनाओं की व्यक्तिगत स्मृति के लिए ।
- 3) दीर्घ-कालिक स्मृति की संकलित क्षमता को अच्छी तरह वर्णित किया गया है जैसे
- क) एक मद
- ख) लगभग सात मर्दें
- ग) लगभग सात आयतन/मात्रा
- घ) सीमारहित/असीमित
- 4) स्मृति में सूचनाओं को संकलित करके रखने का पहला चरण है-
- क) स्मृतिविज्ञान
- ख) लघु-कालिक स्मृति
- ग) संवेदनिक स्मृति
- घ) अभ्यास
- 5) निर्धारित करता है कि कौन-सी सूचना संवेदनात्मक स्मृति से लघुकालिक स्मृति में जाती है।
- क) कूटांकन असफलता
- ख) चयनात्मक ध्यान
- ग) शमन
- घ) इडेटिक कूटांकन
- 6) स्मृति के स्वरूप एवं प्रकार का वर्णन कीजिए ।
- 7) कार्यात्मक स्मृति के बैडले के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।
- 8) आत्म-रचित स्मृति एवं असत्य स्मृति के मध्य अन्तर कीजिए ।
- 9) विस्मरण से आप क्या समझते हैं? विस्मरण के किन्हीं दो कारणों की व्याख्या कीजिए ।
- 10) विस्मरण के सूचना प्रक्रमण मॉडल की व्याख्या कीजिए ।
- 11) स्मृति सुधारने की विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए ।
- 12) प्रासंगिक स्मृति एवं अर्थगत स्मृति के मध्य अन्तर कीजिए ।

4-9 $ed\bar{;}'k\bar{C}n$

- Lefr** % यह सूचनाओं को धारण करने की योग्यता तथा लम्बे समय-अन्तराल के पश्चात जब संज्ञानात्मक कार्य निष्पादित करने की आवश्यकता के समय उसे पुनरुत्पादित करने की योग्यता को प्रदर्शित करती है।
- foLej.k** % अपनी स्मृति प्रणाली से पहले से कूटांकित एवं संकलित सूचनाओं को पुनः स्मरण करने की यह हमारी अयोग्यता है।
- LFkkuka dh fof/k** % यह स्मृति बढ़ाने की एक विधि है। यह जाने पहचाने स्थान के निर्धारण में सूचनाओं के पुनरुद्धार में संकेत का कार्य करता है।
- pdfax** % यह सूचनाओं को सही ढंग से पुनः स्मरित करने एवं याद करने की दूसरी स्मृति है। इस विधि में सूचना की छोटी इकाइयों को अर्थपूर्ण बड़ी इकाइयों के साथ मिलाया जाता है।
- vkRe-jfpr Lefr** % यह आपकी अपनी विगत घटनाओं अथवा व्यक्तिगत अनुभवों की स्मृति है।
- dk; kRed Lefr** % इसको अस्थायी संकलन एवं जटिल कार्य के लिए सूचनाओं को प्रहस्तन (मेनूपुलेशन) में सीमित-क्षमता प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसे धारणा, सीखना एवं तर्क।
- dlwkdud** % यह सांवेदनिक सूचना को इस रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया जिसे पुनः स्मृति प्रणालियों के द्वारा प्रक्रमित किया जा सके।
- i q:) kj** % जब कार्य को पूरा करने की आवश्यकता होती है उस समय व्यक्ति अपनी संकलित सामग्रियों में से वस्तुओं को खोजकर लाता है, यह पुनरुद्धार की प्रक्रिया होती है।

4-10 $I nHkZ , oa i <us ds I q>ko$

Baddeley, A. (1992). What is autobiographical memory? In *Theoretical Perspectives on Autobiographical Memory* (pp. 13-29). Springer, Dordrecht.

Baddeley, A.D. (1986). *Working Memory*. Clarendon Press.

Baddeley, A. D., & Baddeley, A. D. (2004). *Your Memory: A User's Guide*. New York, NY, USA:: Carlton Books.

Baron, R.A. (2001). *Psychology*. 5th Edition. Pearson Education, New Delhi, India.

Esgate, A. & Groome, D. (2005). *An Introduction to Applied Cognitive Psychology*. Hove: Psychology Press, USA.

- Foer, J. (2012). *Moonwalking with Einstein: The Art and Science of Remembering Everything*. Penguin.
- Goldstein, E. (2010). *Cognitive Psychology: Connecting Mind, Research and Everyday Experience*. Nelson Education.
- Jensen, A. R. (1990). Speed of information processing in a calculating prodigy. *Intelligence*, 14(3), 259-274.
- Mazzoni, G., Scoboria, A., & Harvey, L. (2010). Non-believed memories. *Psychological Science*, 21(9), 1334-1340.
- Mishra, G. & Baron, R. A. (2016). *Psychology: Indian Subcontinent Edition*. New Delhi, Pearson Publication.
- Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (2004). *Introduction to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
- Neisser, U., & Libby, L. K. (2000). Remembering life experiences. *The Oxford Handbook of Memory*, 315-332.
- Read, J. D., & Connolly, A. (2007). The effects of delay on long-term memory for witnessed events (pp. 117-155). New York: Lawrence Erlbaum.
- Rubin, D. C. (Ed.). (1999). *Remembering Our Past: Studies in Autobiographical Memory*. Cambridge University Press.
- Schwartz, Bennett L. (2018). *Memory. Foundations and Approaches*. Sage Publications, USA
- Smith, E. E., Kosslyn, S. M., & Barsalou, L. W. (2007). *Cognitive Psychology: Mind and Brain* (Vol. 6). Upper Saddle River: Pearson/Prentice Hall.
- Smith, E. E., Nolen-Hoeksema, S., Fredrickson, B., & Loftus, G. (2003). Atkinson and Hilgard's Introduction to Psychology. Wadsworth Publishing Company.
- Sternberg, R.J. & Sternberg, K. (2012). *Cognitive Psychology*. 6th Edition. Wadsworth Cengage Learning, United States.
- Styles, E. (2004). *Attention, Perception and Memory: An Integrated Introduction*. Psychology Press.

4-11 fp=ka dk l nHkZ

- Our memories. Retrieved September 17, 2018, from <https://www.newscientist.com/article/mg21628852-200-memory-how-the-brain-spins-your-life-story/>
- 9/11 terrorist attack on twin towers of World Trade Centre, USA. September 17, 2018, from <https://www.onthisday.com/photos/9-11-attack-on-world-trade-towers>
- Ebbinghaus forgetting curve. Retrieved September 17, 2018, from <http://www.keyandparent.com/Newsletter/04/news.html>
- An owl with angry expression. Retrieved September 17, 2018, from <https://pixabay.com/en/owl-animal-bird-angry-156933/>

- For more understanding on the theory of level of processing, visit
 - http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/41677/9/09_chapter%202.pdf
 - <https://www.instructionaldesign.org/theories/levels-processing/>
 - http://wixtedlab.ucsd.edu/publications/Psych%20218/Craik_Lockhart_1972.pdf
- For more understanding on Baddeley's working memory, visit
 - <http://www.csuchico.edu/~nschwartz/1.%20Working%20Memory%20-%20Theories%20and%20Models%20and%20Controversies.pdf>
 - <https://app.nova.edu/toolbox/instructionalproducts/edd8124/fall11/1974-Baddeley-and-Hitch.pdf>
 - <https://www.cs.indiana.edu/~port/HDphonol/Baddely.wkg.mem.Science.pdf>
 - <https://www.unige.ch/fapse/logopedie/files/1914/1285/1086/article1-barrouillet.pdf>
- For a glimpse on how false memory can influence one's life and judiciary system, visit
 - <https://www.wired.co.uk/article/false-memory-syndrome-false-confessions-memories>
 - <https://www.theguardian.com/science/2017/sep/23/inside-case-of-repressed-memory-nicole-kluemper>
 - <https://www.theguardian.com/science/2010/nov/24/false-memories-abuse-convict-innocent>
 - <https://www.independent.co.uk/news/false-memory-ends-sex-assault-case-1354848.html>
- For more understanding on forgetting, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/the-process-of-forgetting/>
 - <http://thepeakperformancecenter.com/educational-learning/learning/memory/forgetting/>
 - http://psychologyrats.edublogs.org/files/2012/02/Unit_3_2012_INSJ_Theories-of-Forgetting-1612h26.pdf
 - <http://socialscientist.us/nphs/psychIB/psychpdfs/TheoriesofForgetting.pdf>
- For more understanding on mnemonics memory strategies, visit
 - <https://www.memory-key.com/sites/default/files/books/mnemonics.pdf>
 - <http://www.ucdenver.edu/life/services/LRCOLD/Documents/Self-paced%20trainings/memory%20Techniques-%20student%20version.pdf>

i R; {khdj .k] vf/kxe
, oa Lefr

- <http://thepeakperformancecenter.com/educational-learning/learning/memory/memory-techniques/>
- <https://www.mobap.edu/wp-content/uploads/2013/01/memorystrategies.pdf>

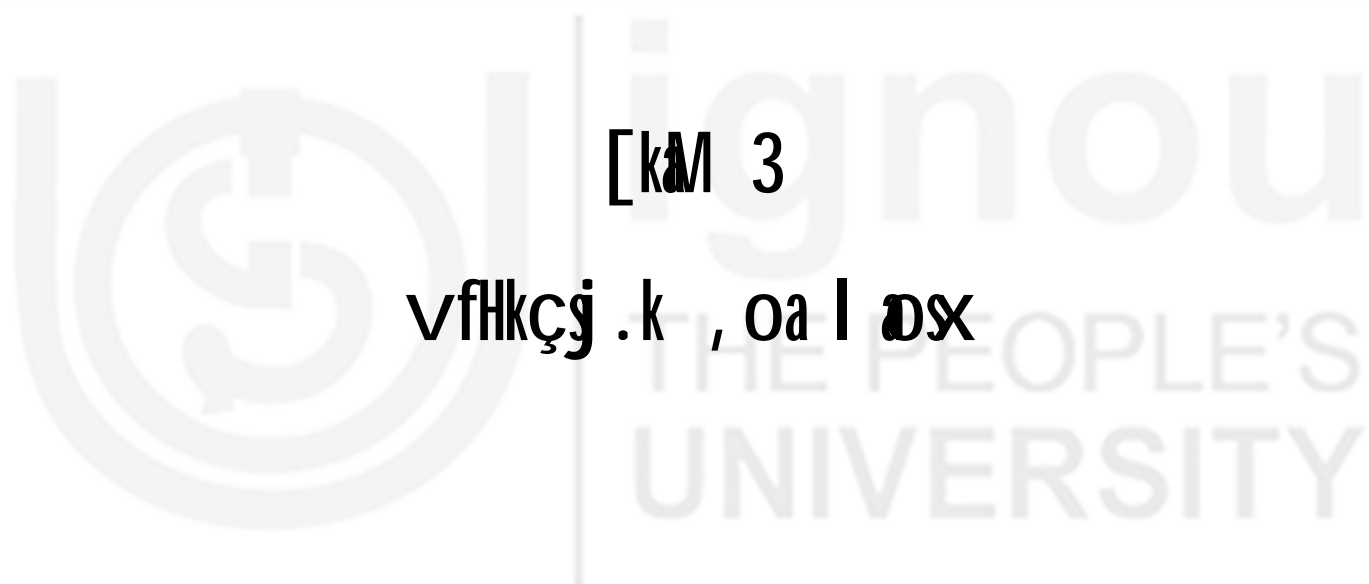
oLr(u"B ç' ukā ds mÙkj

(1) d, (2) d, (3) d, (4) c, (5) b



[kM 3

vfHkçj .k , oa l ØX



: ijkk

- 5.0 सीखने का उद्देश्य
- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 अभिप्रेरण: संप्रत्यय
- 5.3 अभिप्रेरण का स्वरूप
- 5.4 अभिप्रेरण के प्रकार
 - 5.4.1 जीवजनित अभिप्रेरक
 - 5.4.1.1 भूख अभिप्रेरक
 - 5.4.1.2 प्यास अभिप्रेरक
 - 5.4.1.3 यौन क्रिया अभिप्रेरक
 - 5.4.2 मनोजन्य अभिप्रेरक
 - 5.4.2.1 वातावरण का अन्वेषण
 - 5.4.2.2 सामर्थ्य अभिप्रेरक
 - 5.4.2.3 आत्म सिद्धि
 - 5.4.3 समाज-जनिक अभिप्रेरक
- 5.5 अभिप्रेरण के सिद्धान्त
 - 5.5.1 विकासात्मक पद्धति
 - 5.5.2 प्रणोद पदावनति प्रतिमान
 - 5.5.3 अनुकूलतम उत्तेजना प्रतिमान
 - 5.5.4 प्रोत्साहन सिद्धान्त
 - 5.5.5 अभिप्रेरण का संज्ञानात्मक सिद्धान्त
 - 5.5.6 लक्ष्य-स्थापन सिद्धान्त
 - 5.5.7 पदानुक्रम सिद्धान्त
 - 5.5.8 आत्म निर्धारण सिद्धान्त
 - 5.5.9 अभिप्रेरण का स्व-सिद्धान्त
 - 5.5.10 अल्डरफर का ई आर जी सिद्धान्त
 - 5.5.11 हार्जबर्ग का द्वि-कारक सिद्धान्त
 - 5.5.12 मैक्लेलैण्ड का उपार्जित आवश्यकता-सिद्धान्त
- 5.6 कुंठा और संघर्ष
 - 5.6.1 कुंठा
 - 5.6.2 संघर्ष
- 5.7 सारांश
- 5.8 पुनरावलोकन प्रश्न
- 5.9 प्रमुख शब्द
- 5.10 संदर्भ

* डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और डॉ. सुहास शेटगोवाकर, प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली।

5-0 I h[kus dk mÍŠ ;

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्, आप निम्नलिखित बातों को समझ पायेंगे:

- अभिप्रेरण का अर्थ और स्वरूप;
- अभिप्रेरण के प्रकार;
- विभिन्न सिद्धान्तों की तुलना और संक्षेपीकरण; तथा
- कुण्ठा और संघर्ष का स्वरूप।

5-1 iLrkouk

mnkgj.k 1% शीना अपने विद्यालय में 100 मीटर के मैराथन में हिस्सा लेती है। लेकिन जैसे ही वह दौड़ना शुरू करती है उसके बांये पैर में ऐंठन शुरू हो जाती है। लेकिन दर्द और बेचैनी के बावजूद भी शीना न सिर्फ किसी तरह दौड़ खत्म करती है बल्कि पहला स्थान भी प्राप्त करती है। आपको क्या लगता है कि किस वजह से शीना ने दौड़ को जारी रखा और अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन करके दिखाया।

mnkgj.k 2% सानिया के भाई का दूसरे ही दिन विवाह होने जा रहा है और विवाह की तैयारी में लगे रहने के बावजूद उसने यह सुनिश्चित किया कि जो आख्या उसे अपने अधिकारी के पास जमा करना था वह तैयार था और समय सीमा के अन्दर जमा हो चुका था।

उपर्युक्त दोनों संक्षिप्त उदाहरणों में मुख्य प्रश्न यह उठता है कि उन लोगों (शीना और सानिया) ने ऐसा विशिष्ट व्यवहार क्यों किया। उनके व्यवहार के पीछे कौन सी प्रबल शक्ति कार्य कर रही थी। हमारे रोज के जीवन में भी आप इस तरह के व्यवहारों से रूबरू होते होंगे जहाँ आपको आश्चर्य हो सकता है कि आखिर क्यों कुछ लोग कुछ खास तरह का व्यवहार कर जाते हैं। जैसे कुछ लोगों द्वारा भोजन प्राप्त करने के लिए कुछ खास व्यवहार किया जाना। किसी दुर्घटना में चोट लगे व्यक्ति की मदद करना, समय पर कार्य को पूरा करना। इन सबके पीछे जो एक महत्वपूर्ण कारक की भूमिका होती है वह अभिप्रेरण है। जिस प्रकार कुछ व्यवहार अभिप्रेरण की वजह से दिखते हैं उसी प्रकार यह भी सम्भव है कि अभिप्रेरण की कमी से एक व्यक्ति एक निश्चित तरीके से व्यवहार न करे। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी कभी भी पर्याप्त आन्तरिक या बाहरी अभिप्रेरण, महसूस नहीं करता। वह परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं करता है या एक व्यक्ति अभिप्रेरण की कमी की वजह से अपने कार्य में सबसे अच्छा नहीं करता।

उपर्युक्त उदाहरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिप्रेरण वह मुख्य कारक है जो मानव व्यवहार को निर्धारित करता है। मनोविज्ञान का शिक्षार्थी होने के नाते यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस पद को हम और बेहतर तरीके से समझें। इसीलिए इस खंड में अभिप्रेरण के संप्रत्यय की विस्तार से चर्चा की जा रही है। सबसे पहले हम अभिप्रेरण की परिभाषा, प्रकृति व इसके प्रकारों की चर्चा करेंगे। तत्पश्चात् अभिप्रेरण के संप्रत्यय की व्याख्या करने वाले विभिन्न सिद्धान्तों, का वर्णन किया जायेगा।

5-2 vfhki j.k% l á R; ;

कुछ करने या अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए एक व्यक्ति के अन्दर अभिप्रेरण की जरूरत होती है। हमारी इच्छाओं को उत्पन्न करने व उद्देश्यों, आवश्यकताओं और इच्छाओं

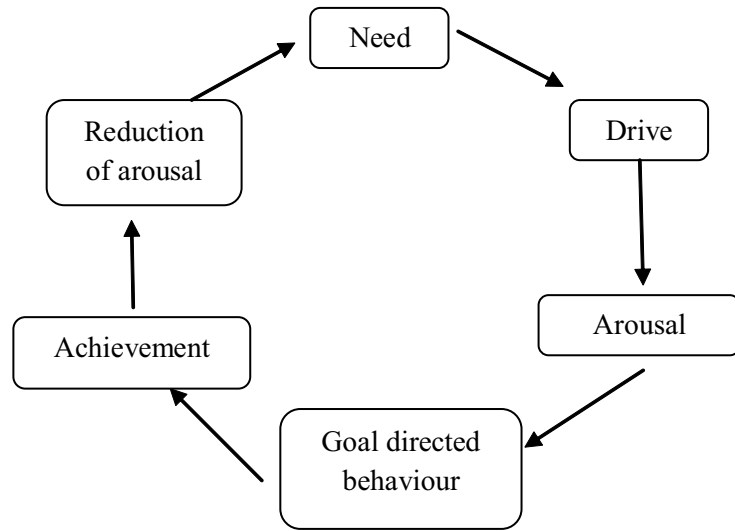
को पूरा करने की कोशिश के लिए हमें ऊर्जा (बल) प्रदान करने के लिए कुछ आन्तरिक व बाहरी कारक जिम्मेदार होते हैं। अभिप्रेरण के अन्तर्गत तीन तत्व आते हैं। जिनको समझना जरूरी है। पहला, यह व्यक्ति में आवश्यकता की अवस्था के बारे में बात करता है जो उसे जैविक आवश्यकता की संतुष्टि के लिए बाध्य करता है। यह आवश्यकता आन्तरिक सोच या भावनाओं की वजह से या फिर वातावरण के बाहरी कारकों की वजह से हो सकता है। दूसरा, यह आवश्यकता उत्तेजना की अवस्था या क्रिया प्रवृत्ति को उत्पन्न करता है। तीसरा, उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य का किया जाना।

5-3 vflki j .k dk Lo: i

मनचाही स्थिति या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमारे कार्य प्रवृत्ति को प्रेरित करने के लिए अभिप्रेरक ही जिम्मेदार होते हैं दूसरे शब्दों में अभिप्रेरक हमें उन व्यवहारों को करने के लिए प्रेरित करते हैं जिसकी जरूरत हमें मनचाही स्थिति या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होती है।

अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप में नहीं देखा जा सकता है बल्कि हम इसका अनुमान मनुष्य द्वारा किए गए व्यवहारों से लगाते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम किसी विद्यार्थी को देखते हैं जो कि दिन रात एक करके मेहनत कर रहा है तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वह अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए प्रेरित है। यदि हम सही अनुमान लगाने में सक्षम होते हैं तो जो भी व्यवहार हम देखते हैं उनका सही तरीके से वर्णन करने में भी हम सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए आप जिस विद्यालय में दाखिला लेते हैं वह यह बताता है कि आप जो सीखना चाहते हैं या एक ऐसी संस्था से जुड़ना चाहते हैं जिससे कि अच्छी नौकरी के लिए आपको पद मिल सके या फिर आप इसको निकटता की वजह से चुनते हैं। अभिप्रेरणा हमें चुनाव करने में मदद करती है साथ ही व्यवहार के बारे में अनुमान लगाने में भी मदद करती है। उदाहरण के लिए यदि दो दोस्त कक्षा में हमेशा साथ-साथ आते हैं तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि ये दोनों अच्छे दोस्त होंगे और यदि एक दोस्त कक्षा में अनुपस्थित है तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि दूसरा भी अनुपस्थित होगा। अनुमान सही नहीं भी हो सकता है लेकिन हम किसी व्यवहार या प्रतिक्रिया की संभावना के बारे में एक अन्दाजा तो लगा ही सकते हैं।

किसी व्यवहार को समझने में अभिप्रेरणात्मक चक्र हमारी मदद करते हैं (मोरगॉन और किंग, 1979)। यह अभिप्रेरणात्मक चक्र किसी जरूरत से शुरू होता है जो कि किसी चीज की कमी या कमी हो जाने को दर्शाता है। जरूरत की अवस्था हमारे अन्दर अंतर्नाद की अवस्था को उत्पन्न करती है। आंतरिक और बाह्य कारकों के कारण अंतर्नाद उत्तेजित होते हैं आंतरिक कारक विचार तथा समृति हो सकते हैं जबकि बाह्य कारक पर्यावरणीय अंतर्नाद व्यक्ति को सक्रिय बनाता है और उस पर उद्देश्यपूर्ण व्यवहार करने के लिए दबाव डालता है। उदाहरण के लिए यदि हमें प्यास लगी है तो पानी की आवश्यकता होगी यह आवश्यकता पानी पीने के लिए हमारे अन्दर क्रियाशीलता/अंतर्नाद को उत्पन्न करेगा और एक बार जब हम पानी पी लेते हैं तो संतुष्ट हो जाते हैं और तब हमारे अन्दर की क्रियाशीलता कम हो जाती है या गायब हो जाती है। एक बार जब हम अपने मनचाहे उद्देश्य को प्राप्त कर लेते हैं तो इससे हमारी क्रियाशीलता को कम हो जाती है और अंतर्नाद व्यक्ति अपनी संतुलित अवस्था में वापस आ जाता है और यहीं पर अभिप्रेरणात्मक चक्र पूरा हो जाता है। अभिप्रेरणात्मक चक्र दुबारा उस समय फिर शुरू होता है जब पानी पीने की जरूरत (या कोई अन्य आवश्यकता) फिर से उत्पन्न होती है। रेखाचित्र 5.1 अभिप्रेरणात्मक चक्र को प्रदर्शित कर रहा है।



जसुक्कफ= 5-1% vfhki j.k.kkRed pØ

आगे बढ़ने से पहले, अभिप्रेरण से सम्बन्धित 4 पद, (1) आवश्यकता, (2) अंतर्नाद, (3) प्रोत्साहन और (4) अभिप्रेरण, की चर्चा करते हैं।

- 1) **vko' ; drk%** यह कोशिकीय या शारीरिक कमियों की जैविक अवस्था से संबंधित होती है जोकि हमारे अन्दर अंतर्नाद (drive) पैदा करती है। उदाहरण के लिए व्यक्ति को जीने के लिए पानी, खाना और आक्सीजन की जरूरत होती है (फीस्ट और रोज़नबर्ग, 2015)
- 2) **vrukh%** फीस्ट और रोज़नबर्ग (2015), के अनुसार अंतर्नाद से तात्पर्य है ऐसी "तनाव की कथित अवस्था जो हमारे शरीर में किसी चीज की कमी होने पर घटित/उत्पन्न होती है और जो तनाव को कम/दूर करने की इच्छा पैदा करती है"
इसका मतलब है कि आवश्यकता अंतर्नाद को उत्पन्न करती है। उदाहरण स्वरूप जब व्यक्ति भूखा होता है तो वह भोजन करता है। इस प्रकार आवश्यकता अंतर्नाद के पहले उत्पन्न होती है और व्यक्ति को इस तरह से व्यवहार करने के लिए तैयार करती है कि उसके अन्दर जो कमी उत्पन्न हुई है उस कमी को पूरा करके उसके साथ सामंजस्य स्थापित कर सके।
- 3) **i kkl kgu%** यह वातावरण में उपस्थित ऐसी चीज होती है (यह आन्तरिक अंतर्नाद का उल्टा होता है) जो हमारे व्यवहार को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कोई वस्तु या फिर घटना भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, किसी खेल में ट्रॉफी का जीतना उस खेल में अच्छा करने के लिए एक प्रोत्साहन का काम कर सकता है।
- 4) **vfhki j d%** प्रायः अभिप्रेरण और अभिप्रेरक एक दूसरे की जगह प्रयोग किए जाते हैं। हालांकि ये एक दूसरे से अलग हैं। अभिप्रेरण को जहां प्रचलित रूप में प्रयोग किया जाता है वहीं अभिप्रेरक एक विशिष्ट शब्द है। अभिप्रेरक वास्तव में व्यक्ति को एक निश्चित व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है जबकि अभिप्रेरण एक प्रक्रिया है जिसके तहत अभिप्रेरक व्यक्ति को कुछ निश्चित व्यवहार करने के लिए संचालित करता है।

ckDI 5-1 % vfhki j.k dh dN i fjHkk"kk, a

अभिप्रेरण शब्द लैटिन शब्द 'movere' से लिया गया है जिसका मतलब हिलना है। अभिप्रेरण की कई परिभाषाएँ हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं।

फेल्डमैन (2015) ने अभिप्रेरण को परिभाषित किया कि "ऐसा कारक जो मानव व अन्य जीवों के व्यवहार

को दिशा व ऊर्जा प्रदान करता है”।

फीस्ट और रोज़नबर्ग (2015) ने अभिप्रेरण को परिभाषित किया कि “अपने कार्य को पूरा करने के लिए उद्देश्य की तरफ आगे बढ़ने की इच्छा”।

चेमारो-प्रिमाइज़ (2015) द्वारा अभिप्रेरण को परिभाषित किया गया कि “एक आन्तरिक अवस्था जिसका स्वरूप स्थिर होने के बजाय गतिशील होता है। जो क्रिया को प्रेरित करता है, व्यवहार को निर्देशित करता है और सहज ज्ञान व सांस्कृतिक जरूरतों तथा उद्देश्यों दोनों को संतुष्ट करने के लिए उन्मुख होता है।

क्युक, नेलसन और खंडेलवाल (2013) ने अभिप्रेरण को परिभाषित किया कि “उद्देश्य निर्देशित व्यवहार को उत्तेजित व जारी रखने की प्रक्रिया” अभिप्रेरण है।

नोलेन-होक्समा फ्रेडरिकसन लोफ्टस और लट्स (2009) ने अभिप्रेरण का वर्णन किया कि “एक ऐसी अवस्था जो व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करती है और इसे दिशा निर्देश देती है”।

çkçk ç'u 1

1) अभिप्रेरण को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

2) अभिप्रेरणात्मक चक्र को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आवश्यकता, अंतर्नाद और अभिप्रेरक में अन्तर बताइये।

.....

.....

.....

.....

5-4 vfhki çj .k ds i çkj

इस भाग में अभिप्रेरक के प्रकारों की चर्चा की जाएगी।

5-4-1 thotfur vfhki çj d

इसको जैविक अभिप्रेरक भी कहा जाता है। पहले के मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसी अभिप्रेरक का प्रयोग, व्यवहार के कारणों को समझने के लिए किया जाता था। जब संतुलित शारीरिक अवस्था (जिसे समस्थिति कहते हैं) से विचलन होता है तो यह स्थिति संतुलन को दुबारा वापस लाने के लिए कई तरह के जैविक अभिप्रेरकों को उत्तेजित करती है। यह संतुलन

जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस तरह के कई अभिप्रेरक होते हैं। कुछ मूल जैविक अभिप्रेरक इस भाग में प्रस्तुत किये जा रहे हैं जैसे कि भूख, प्यास, काम/यौन क्रिया।

5-4-1-1 Hku[k vflki j d

जब आमाशय में भोजन की कमी होती है तो इस स्थिति में भूख दर्द उत्पन्न करती है और जब आमाशय में संकुचन होता है तो भूख से अंतर्नाद उत्पन्न होता है। भूख लगने के कई कारण होते हैं। बहुत से अध्ययन यह प्रदर्शित करते हैं कि लम्बे समय तक भोजन न करने पर जब व्यक्ति के खून में चीनी की मात्रा कम हो जाती है तो इससे भूख का अनुभव होता है। फ्रीडमैन और स्ट्रीकर (1976) के अनुसार जब लीवर के उपापचयी कार्य में बदलाव आता है और शरीर में भोजन कम होता है तो यह भूख को उत्पन्न करता है हाइपोथैल्मस में भूख से जुड़े हुए दो क्षेत्र होते हैं। शोध यह दिखलाते हैं कि जब लेटरल हाइपोथैल्मस में उत्तेजना होती है तो यह भोजन करने की क्रिया शुरू करता है। दूसरी तरफ यदि यह भाग क्षतिग्रस्त हो जाता है तो यह जानवरों के भोजन करने के व्यवहार को रोक देता है (इप्सटेन, 1960)। हाइपोथैल्मस का वेन्ट्रो-मेडियल भाग भी भूख अभिप्रेरण से जुड़ा होता है। इसको भूख अंतर्नाद का दमनकारी क्षेत्र कहा जाता है। इप्सटेन ने अपने प्रयोगों में यह दिखलाया है कि जब वेन्ट्रो-मेडियल हाइपोथैल्मस को क्षति पहुँचाई जाती है तो जानवरों को यह एहसास ही नहीं होता है कि उन्हें भोजन करना कब बन्द करना है और उनका वजन (अधिक खाने की वजह से) काफी बढ़ जाता है।

भोजन करने का व्यवहार कई अन्य कारकों से भी रोका जा सकता है। खाने की सुगन्ध, खाने का न पचना/अपचन, और भोजन का स्वाद दूसरे दर्जे के/अमुख्य कारक होते हैं जो भोजन करने के व्यवहार को रोक सकते हैं। गिब्स, यंग और स्मिथ, (1973) ने अपने अध्ययन में दिखाया कि जब भोजन आंत में पहुँचता है तो यह हमारे खून में हार्मोन्स का विमोचन करता है जिसे कोलिसिस्टोकेनिन (Cholecystokinin) कहते हैं। इस प्रकार उन्होंने दिखलाया है कि दूसरे कारक भी भूख को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। विशेषकर यह तृप्ति के संकेत को रोक देते हैं जो कि जानवरों को और भोजन न करने का संकेत देते हैं। भूख अभिप्रेरण के बारे में यह भी विश्वास किया जाता है कि यह खून में घुले हुए भोज्य पदार्थ के प्रयोग के स्तर दर पर निर्भर करती है। जब यह एक निश्चित स्तर से नीचे गिर जाता है जो कि स्वभाविक स्थिति बिन्दु के नाम से जाना जाता है तो भूख अंतर्नाद उत्पन्न होता है और खून में पोषण को स्वभाविक स्थिति बिन्दु में लाने के लिए भोजन को अवशोषित किया जाता है। इस प्रकार भोजन करने की क्रिया को नियंत्रित करने में आंतरिक और बाह्य कारक अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

5-4-1-2 l;kl vflki j d

ऐसा माना जाता है कि प्यास लगना व पानी पीना शरीर द्वारा आन्तरिक तौर पर नियंत्रित किए जाते हैं। जब मुँह सूखता है तभी व्यक्ति प्यास महसूस करता है। एंटी ड्यूरेटिक हार्मोन (Antidiuretic hormone, ADH) शरीर में पानी के स्तर को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाता है। ब्रक्क (kidney) से पानी की कमी को एडीएच रोकता है। ऐसा माना जाता है कि प्यास अंतर्नाद और प्यास बुझाने का व्यवहार कोशिका में पानी की कमी या खून की मात्रा में कमी से आरम्भ होता है। जब शरीर के तरल पदार्थ में पानी के स्तर में कमी आती है तो कोशिका से पानी तरल पदार्थों में चला जाता है। यह कोशिका के आन्तरिक भाग में पानी की कमी कर देता है। परासरणग्राही जब निर्जलित होते हैं तो तंत्रिका आवेग को उत्पन्न करते हैं। ये तंत्रिका आवेग ऐसे संकेत उत्पन्न करता है जो कि प्यास बुझाने के व्यवहार को शुरू करता है जब परासरणग्राही (ऐसे तंत्रिका कोशिकायें जो तंत्रिका आवेग उत्पन्न करते हैं जब यह निर्जलित होते हैं) से पानी की कमी की वजह से प्यास उत्पन्न होती है तो इसे कोशिकीय निर्जलित प्यास कहते हैं।

शरीर से पानी की हानि होना का कारण एक स्थिति है जिसे हाइपोवोलेमिया के नाम से जाना जाता है। इस स्थिति में रक्त का आयतन घटता है जिसके कारण रक्त दबाव (ब्लड प्रेशर) में कमी हो जाती है। रक्त दबाव में कमी होने के कारण ब्रक्क (किडनी) से रेनिन नाम का एक एन्जाइम निकलता है जोकि एन्जियोटेन्शन II के पैदा होने में मदद करता है। एन्जियोटेन्शन II एक पदार्थ है जो रक्त में जाता है और पीने के व्यवहार को उत्तेजित करता है।

द्वि-क्षीणता परिकल्पना (Double-depletion hypothesis) यह बताती है कि कब हाइपोवोलेमिया और कोशिकीय निर्जलन की स्थितियाँ काम करती हैं। जब मुँह और पेट यह संकेत देते हैं कि अब और पानी की जरूरत नहीं है तो हम पानी पीना बन्द कर देते हैं। जब परासरणग्राही में पर्याप्त मात्रा में पानी होती है तो रक्त प्लाज्मा स्तर अपनी सामान्य मात्रा में पहुँच जाता है।

5-4-1-3 ; kŭ fØ; k vflki çd

यौन अंतर्नाद शरीर की जैविक अवस्था पर निर्भर करती है। इसको शारीरिक/जैविक अंतर्नाद भी कहा जाता है। कई ऐसी बातें हैं जो इसको भूख और प्यास अंतर्नाद से अलग करती हैं। काम अंतर्नाद शरीर में किसी चीज की कमी या किसी पदार्थ की कमी को नहीं दिखाता है। इस प्रकार यह किसी समस्थितिक असंतुलन या शरीर में किसी अंतःस्राव की अधिकता की वजह से शुरू नहीं होता है। पुरुषों में पुरुष हारमोन्स, टेस्टोस्ट्रान का स्तर यौन/काम अंतर्नाद के लिए जिम्मेदार होता है। स्त्रियों में स्त्री हारमोन्स, एस्ट्रोजेनस यौन क्रिया के लिए जिम्मेदार होता है। हाइपोथैलमस द्वारा अंतःस्राव का निकलना/निर्गमन नियंत्रित होता है।

भूख और प्यास अंतर्नाद हमारे जीवित रहने के लिए आवश्यक है लेकिन काम अंतर्नाद के साथ ऐसा नहीं है। काम अंतर्नाद जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं है। हालांकि यह किसी जाति के आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसे कई तरह के बाहरी उद्दीपक होते हैं जो यौन अंतर्नाद को सक्रिय करता है। यह किसी गंध को पसन्द करने, साथी की महक या उसे देखने से भी हो सकता है। यद्यपि पारिवारिक पालन-पोषण और सामाजिक मानक यौन क्रिया को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5-4-2 eukstU; vflki çd

मनोजन्य अभिप्रेरक को सामान्य अभिप्रेरक भी कहा जाता है। ये अभिप्रेरक "सीखने" या "असंतुष्टि समस्थिति" की वजह से उत्पन्न नहीं होते हैं। इनका स्वरूप जन्मजात होता है और ये व्यक्ति के साथ उम्र भर रहते हैं और इन्हें संतुष्ट करना अक्सर मुश्किल होता है। वातावरण का अन्वेषण करना, चुनौतियों पर विजय प्राप्त करना, खुद को योग्य बनाकर और आत्म सिद्धि के द्वारा (अपनी क्षमता के हिसाब से किसी कार्य को सबसे अच्छा करना।) मुसीबतों का सामना करना ये सभी अभिप्रेरक मनोजन्य अभिप्रेरक के अन्तर्गत आते हैं।

5-4-2-1 okrkøj.k dk vŭošk.k

अन्वेषण एक ऐसा अभिप्रेरक है जिसके तहत व्यक्ति या जानवर या प्राणी अपने नए वातावरण में जिज्ञासा के साथ सक्रिय होकर घूमता है। हम सभी के अन्दर नए स्थान को, पहले देखे गए स्थान की अपेक्षा, ज्यादा जानने की इच्छा होती है इसीलिए जिज्ञासा के साथ हम किसी स्थान को देखते हैं। एक बार जब यह अंतर्नाद (अंतर्नाद) संतुष्ट हो जाती है तो हम किसी दूसरी स्थान को देखना चाहते हैं जो हमारे लिए नया हो। इस प्रकार हम जिज्ञासा के चलते किसी वातावरण की खोज करते हैं व एक सक्रिय रुचि किसी नई जगह/घटना/परिस्थिति

को खोजने/देखने में लेते हैं। कई वैज्ञानिकों ने किसी अनजान चीज के लिए अपनी जिज्ञासा का प्रयोग करके आश्चर्यजनक खोज की है और कई नई वस्तुएँ, सम्प्रत्यय आदि का आविष्कार किया। मानवजाति के साथ ही साथ जानवर भी नई जगहों में बहुत रुचि लेते हैं। कई लोग अपने सांवेदिक अभिग्राहक को संतुष्ट करने के लिए भी ऐसा करते हैं। संवेदी उद्दीपक भी कई तरह की क्रियाओं में लगे रहने के लिए आवेग उत्पन्न करते हैं। शायद इसके द्वारा हम यह समझ सकते हैं कि हम टीवी क्यों देखते हैं या गाना क्यों सुनते हैं या एक जगह से दूसरी जगह क्यों जाते हैं। हमारे अन्दर संवेदी उत्तेजना की जन्मजात आवश्यकता होती है। और जब एक बार हम किसी उद्दीपक को लेकर अभ्यस्त हो जाते हैं तो ये बदल जाते हैं अर्थात् हमारे संवेदक को कुछ नए उद्दीपकों की आवश्यकता होने लगती है।

5-4-2-2 I keF; l vflki j d

वातावरण की चुनौतियों को पूरा करने की यह एक क्षमता होती है। इसको प्रभावकारी अभिप्रेरण भी कहते हैं। यह एक ऐसी प्रवृत्ति होती है जो किसी वातावरण को समझती और प्रभावित करती है (वाइट, 1959)। सुसन हारटर, (1978) के अनुसार "सामर्थ्य अभिप्रेरण उस वक्त बढ़ता है जब एक व्यक्ति सफलतापूर्वक किसी कार्य को कर लेता है। यह व्यक्ति को अन्य कार्यों में सफल होने के लिए प्रोत्साहित करता है"।

5-4-2-3 vkRe fl f)

यह अभिप्रेरक व्यक्ति को वह बनने या प्राप्त करने में मदद करता है जो वह बनने या प्राप्त करने के सक्षम होता है। यह व्यक्ति को अपने गुणों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने में सक्षम बनाता है। मैस्लो (1954) ने अलग-अलग स्तर पर विभिन्न आवश्यकताओं के साथ आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत दिया जिसमें उन्होंने बताया कि पहले निचले स्तर की आवश्यकता पूरी होती है इसके बाद ऊँचे स्तर की आवश्यकता पूरी होती है। मैस्लो का पदानुक्रम सिद्धान्त, शारीरिक आवश्यकताएँ जैसे भूख, प्यास, यौन से शुरू होती है। इसके पश्चात सुरक्षा की आवश्यकता अर्थात् सुरक्षित होने, स्थिर होने व व्यवस्थित होने की आवश्यकता उत्पन्न होती है। एक बार जब इस स्तर की जरूरत की संतुष्टि हो जाती है तो तीसरे स्तर की आवश्यकताएँ-अपनेपन और स्नेह की आवश्यकता उत्पन्न होती है जिसमें अनुराग, संबद्धीकरण, और पहचान की आवश्यकता विकसित होती है। अगले स्तर की आवश्यकता सम्मान की जरूरत होती है जिसके अन्तर्गत प्रतिष्ठा, सफलता व आत्म सम्मान की आवश्यकता विकसित होती है। पदानुक्रम में सबसे ऊँचे स्तर की जरूरत आत्मसिद्धि से जुड़ी है। यह सबसे ऊँचे स्तर की जरूरत होती है। बहुत से लोग आवश्यकता पदानुक्रम में इस ऊँचे स्तर पर पहुँचने में सक्षम नहीं होते हैं।

5-4-3 I ekt- tfud vflki j d

समाजजनिक अभिप्रेरक अपेक्षाकृत एक बाहरी आवश्यकता है जो कि विभिन्न सामाजिक समूह जैसे मित्र, समय या परिवार जहां हम पलते-बढ़ते हैं, इनमें रहकर सीखे जाते हैं। ऐसी आवश्यकताओं में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में काफी अन्तर पाया जाता है जो कि व्यक्तित्व के प्रकार पर निर्भर करती हैं। सामाजिक अभिप्रेरक कई प्रकार के होते हैं जिनमें यह कह पाना एक मुश्किल कार्य है कि कौन-सा अभिप्रेरक सबसे महत्वपूर्ण है और कौन-सा सबसे कम महत्व का है। इनका मापन भी अत्यंत मुश्किल कार्य है। उपलब्धि अभिप्रेरक एक प्रकार का सामाजिक अभिप्रेरक है, और किसी कार्य को पूरा करने या प्राप्त करने और दूसरे व्यक्ति से आगे निकलने से संबंधित है। सम्बन्धन अभिप्रेरण दोस्त बनाने और दूसरों के साथ सहयोग

करने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। आक्रमणशीलता अभिप्रेरक दूसरों से झगड़ा करने या बदला लेने, दूसरों का अनादर करने, कोसने या बहिष्कृत करने के व्यवहार को प्रदर्शित करता है। पोषण अभिप्रेरक ऐसी आवश्यकता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति दूसरों की सहायता या देखभाल उस समय करता है जब वे बीमार होते हैं या किसी समस्या से ग्रसित होते हैं। प्रभुत्व अभिप्रेरक की आवश्यकता तब दिखाई देती है जब एक व्यक्ति नेता बनने के लिए (नेतृत्व करने के लिए) दूसरों को प्रभावित या नियंत्रित करना चाहता है। सत्ता अभिप्रेरक व्यक्ति कुछ ऐसा करना चाहता है या ऐसी शक्ति प्राप्त करना चाहता है जिससे वह अपने आप को अधिक शक्तिशाली व मजबूत महसूस कर सके।

ckDI 5-2 %e[; vkj xksk vflki j .k

मुख्य अभिप्रेरण को मूल अभिप्रेरण के नाम से भी जाना जाता है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से भूख, प्यास, यौन, सोना (नींद लेना), दर्द से बचना आदि से जुड़ी जरूरतें आती हैं। ये मुख्य रूप से व्यक्ति के व्यवहार को बुनियादी स्तर पर प्रभावित करते हैं और अपने को बचाने से सम्बन्धित मूल जरूरतों से जुड़ी होती है।

गौड़ अभिप्रेरण को अर्जित अभिप्रेरण के नाम से भी जाना जाता है जो कि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग-अलग रूप में पाए जाते हैं। ये व्यक्ति के मूल्य और अहमियत से भी जुड़े होते हैं। इसके बारे में अंतर्नाद कमी सिद्धांत के अन्तर्गत चर्चा की जाएगी।

ckk ç'u 2

1) जीवजनित अभिप्रेरक, मनोजन्य अभिप्रेरक व समाजजनिक अभिप्रेरक को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) द्वि-क्षीणता परिकल्पना क्या है?

.....

.....

.....

.....

3) सामर्थ्य अभिप्रेरक से आप क्या समझते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

5-5 vfhki j .k ds fl) kUr

अभी तक आपने जो भी पढ़ा है उसके आधार पर आप अभिप्रेरण को परिभाषित करने व जैविक और मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरण में अन्तर बताने में समर्थ होंगे। अब इस भाग में अभिप्रेरण के विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

5-5-1 fodkl kRed i) fr

व्यवहार के शारीरिक कारण और जन्मजात विशेषताओं जिन्हें सहज प्रवृत्ति कहते हैं, के बारे में शुरुआती दौर के मनोवैज्ञानिक अधिक विचारवान थे। सहज प्रवृत्ति जानवरों और इन्सानों दोनों में होती है। जानवरों में देशांतर प्रवसन स्वरूप, मैथुन, घौसला बनाना, क्षेत्रीयता, आदि सहज प्रवृत्ति से ही संचालित होते हैं। इसी प्रकार मानवजाति के व्यवहार जैसे कि प्रजनन सहज स्वभाविक व्यवहार है और यौन व्यवहार के लिए जिम्मेदार है (जेम्स, 1890 मैकडूगल, 1908)। शुरुआती समय में विलियम मैकडूगल ने 18 प्रकार की सहज प्रवृत्तियों की पहचाना की। जो कि व्यवहार का केवल वर्णन करते हैं परन्तु इसकी व्याख्या नहीं करते।

5-5-2 vruk h inkoufr ifreku

अंतर्नाद सिद्धान्त अभिप्रेरण के सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त है। जब व्यक्ति के अन्दर किसी तरह की आवश्यकता उत्पन्न होती है तो यह एक तरह का मनोवैज्ञानिक और शारीरिक तनाव उत्पन्न करती है जो व्यक्ति को अपनी आवश्यकता पूरी करके तनाव को कम करने के लिए प्रेरित करता है। इसी तनाव को अंतर्नाद कहते हैं (हल, 1948)। इन सिद्धान्तों को अभिप्रेरण का बल सिद्धान्त भी कहते हैं। “व्यक्ति या जानवरों के अन्दर उत्पन्न अंतर्नाद शक्ति द्वारा उनके व्यवहार को उद्देश्य की दिशा में आगे बढ़ाकर/धक्का देकर प्रेरित किया जाता है” (मॉरगन, किंग, वेस्ज और शोपलर, 1996, पृ. 269)।

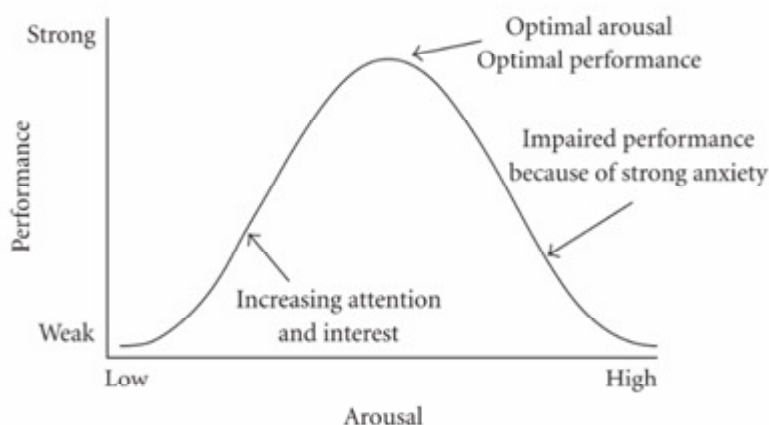
अंतर्नाद पदावनति प्रतिमान के अनुसार “कुछ मूल जैविक आवश्यकताओं की कमी, अंतर्नाद को उत्पन्न करती है जो व्यक्ति को, उसकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है” (फेल्डमैन, 2015, पृ. 288)। अंतर्नाद को पहले ही इस खंड में समझाया जा चुका है। इसे एक तनाव या उत्तेजना की तरह देखा जा सकता है जो व्यक्ति के व्यवहार को उसकी जरूरत पूरा करने के लिए दिशा प्रदान करता है। अंतर्नाद को दो भागों में बांटा जा सकता है मुख्य और गौण। प्यास, भूख, नींद लेना, यौन क्रिया मुख्य अंतर्नाद के उदाहरण हैं जो कि मुख्य रूप से व्यक्ति की शारीरिक जरूरतों से जुड़े होते हैं। गौण अंतर्नाद हमारे पहले के अनुभव और सीख से जुड़े होते हैं जो कि आवश्यकता का विकास करते हैं। उदाहरण के लिए किसी के कार्य क्षेत्र में उपलब्धि की आवश्यकता। इस प्रकार यह गौण अंतर्नाद व्यक्ति के कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित उसके व्यवहार को दिशा प्रदान करता है।

एक ऐसा महत्वपूर्ण पद जिसकी चर्चा इस प्रतिमान के अन्तर्गत करने की जरूरत है वह है समस्थिति जिसको इस तरह से वर्णित किया जा सकता है “ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा सभी प्राणी सर्वोत्कृष्ट निर्देश बिन्दु के आस-पास जैविक सम्यावस्था या संतुलन बनाये रखने के लिए कार्य करते हैं” (फीस्ट और रोज़नबर्ग, 2015)। इसे (शरीर की) एक ऐसी प्रवृत्ति की तरह भी वर्णित किया जा सकता है जो संतुलन या स्थिरता की अवस्था को बनाए रखती है (फेल्डमैन, 2015)। इस प्रकार जब कभी आदर्श अवस्था या निर्देश बिंदु से किसी तरह का विचलन होता है तब संतुलित अवस्था को फिर से स्थापित करने के लिए या निर्देश बिन्दु को प्राप्त करने के लिए शरीर के द्वारा सामंजस्य किया जाता है। इस प्रकार फिर से संतुलन उत्पन्न होता है। समस्थिति भोजन, पानी, नींद, शारीरिक तापक्रम आदि से जुड़ी आवश्यकताओं को परिचालित करने में सहायता करती है।

अंतर्नाद पदावनति प्रतिमान पूर्ण रूप से यह बताता है कि किस तरह से मुख्य अंतर्नाद द्वारा व्यवहार को दिशा प्रदान की जाती है हालांकि यह पर्याप्त रूप से यह नहीं बताता है कि किन व्यवहारों के द्वारा हम अपने किन उद्देश्यों को बनाए रखते हैं या उत्तेजना को बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए यह ऐसे वयस्क के व्यवहार का वर्णन करने में मदद नहीं करते हैं जो रोलर-कोस्टर की सवारी करते हैं या तेज रफ्तार से बाइक को चलाते हैं। इस प्रकार रोमांचकारी व्यवहार व जिज्ञासा से भरे हुए व्यवहार को इस प्रतिमान द्वारा नहीं समझा जा सकता है।

5-5-3 vudlyre mRrstuk i freku

जैसा कि अंतर्नाद पदावनति प्रतिमान में चर्चा की गई थी कि यह प्रतिमान जिज्ञासा व रोमांच संबंधी व्यवहार के बारे में व्याख्या नहीं करता है। अतः इस तरह की परिस्थिति में व्यवहार को समझने के लिए अनुकूलतम उत्तेजना प्रतिमान का प्रयोग किया जा सकता है। यह प्रतिमान यर्क्स और डोडसन, (1908) के कार्य पर आधारित है जो कि यर्क्स-डोडसन ला (फ्रीस्ट और रोज़नबर्ग, 2015) से सम्बन्धित है। इस प्रतिमान के अनुसार "हम उस वक्त सबसे अच्छे तरीके से व्यवहार करते हैं जब हम सामान्यतः मध्यम रूप में उत्तेजित या क्रियाशील होते हैं। निम्न व उच्च स्तर की उत्तेजना, दोनों ही अपर्याप्त कार्य-निष्पादन उत्पन्न करते हैं"। रेखाचित्र 5.2 कार्य निष्पादन और उत्तेजना में संबंध को स्पष्ट करता है।



fp= 5-2% ; DI ZMkMI u fu; e

स्रोत: <https://en.wikipedia.org>

5-5-4 i kRl kgu fl) kUr

इस सिद्धान्त को बल सिद्धान्तों के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है (मार्गन, एट एल 1996) इन सिद्धान्तों का कहना है कि "अभिप्रेरण बाहरी इनाम या प्रोत्साहन पाने की चाहत का परिणाम होती है"। उदाहरण एक बच्चे से उसका गृहकार्य कराने के लिए प्रोत्साहन के रूप में एक चाकलेट दिया जा सकता है, यहाँ तक कि यह हो सकता है वह वास्तव में भूखा न हो (यह आन्तरिक संकेत हो सकता है) यद्यपि ये सिद्धान्त यह नहीं बताते हैं कि एक व्यक्ति कुछ ऐसे कार्य क्यों करता है जिसके लिए उसे कोई बाहरी प्रोत्साहन नहीं मिलता है।

अब हम कह सकते हैं कि अंतर्नाद पदावनति सिद्धान्त और प्रोत्साहन सिद्धान्त दोनों ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं और दोनों को एक साथ उन उद्दीपनों को समझने के लिए प्रयोग किया जा सकता है जो व्यवहारों को प्रेरित करते हैं। उदाहरण के लिए एक भूखा व्यक्ति भोजन की तलाश करता है (अंतर्नाद पदावनति प्रतिमान), हालांकि वह ऐसे भोजन की तरफ आकर्षित होता है जो ज्यादा क्षुधावर्धक (भूख बढ़ाने वाला) या आकर्षक होता है।

5-5-5 vfhki j.k dk l kKukRed fl) kUr

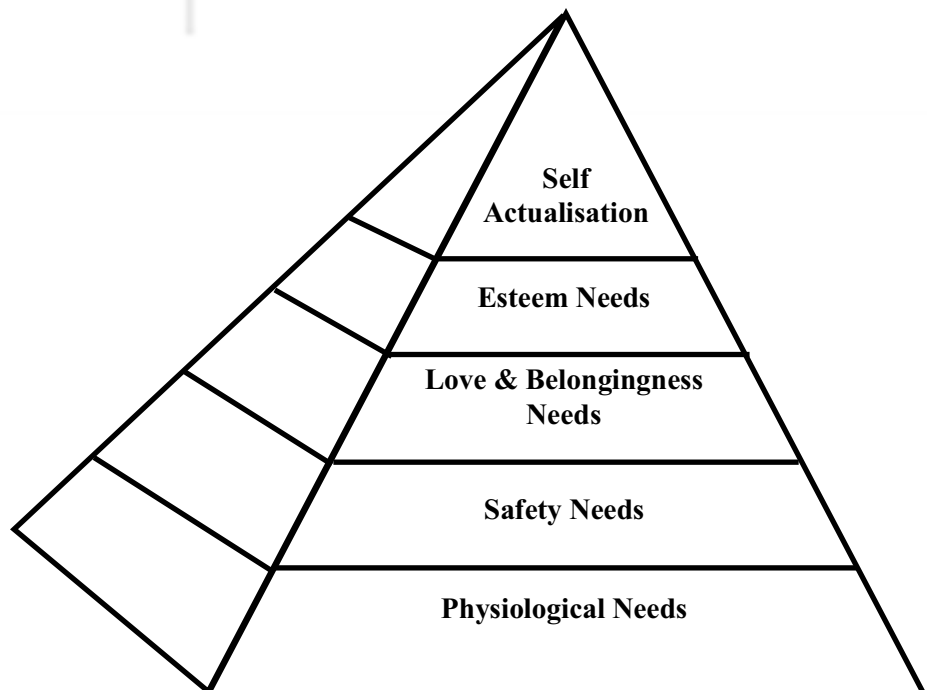
इस सिद्धान्त के अनुसार "अभिप्रेरण व्यक्ति के विचार, विश्वास, उम्मीद और उद्देश्य का परिणाम होता है"। इस प्रकार एक विद्यार्थी उस वक्त परीक्षा में पढ़ने के लिए अभिप्रेरित होता है जब उसे यह उम्मीद है कि अध्ययन परीक्षा में अच्छे नम्बर दिलाएगा। यह सिद्धान्त आन्तरिक व बाह्य अभिप्रेरण के बीच अन्तर करने में भी मदद करता है (इसके बारे में अभिप्रेरण के प्रकार के अन्तर्गत विस्तार से बताया गया है)। व्यक्ति अपने कर्तव्य या निश्चित उद्देश्य को पूरा करने के लिए उस वक्त ज्यादा प्रयास करता है जब वह आन्तरिक रूप से प्रेरित होता है जो कि बाहरी रूप से अभिप्रेरित होने के उल्टा है। ऐसा हो सकता है कि जब बाहरी अभिप्रेरण को बढ़ाने का प्रयास किया जाए तो यह आन्तरिक अभिप्रेरण को कम कर दे।

5-5-6 y{; LFkku fl) kUr

लक्ष्य स्थापन सिद्धान्त (लोके एवं लाथम 1990) यह कहता है कि अभिप्रेरण उद्देश्य से प्रभावित को सकते हैं। अध्ययनकर्ताओं द्वारा अपने अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि लोग अपने कार्य में बेहतर प्रदर्शन तब करते हैं जब उन्हें कुछ निश्चित उद्देश्य दिए जाते हैं न कि तब जब उनसे कहा जाता है कि "अपना सबसे अच्छा करो" यह तरीका तब काम करता पाया गया है जब उद्देश्य, विशेष और चुनौतीपूर्ण होता है लेकिन लक्ष्य प्राप्त करने लायक होने चाहिए। लोग उस परिस्थिति में बेहतर करते हैं जब उनके प्रदर्शन के बारे में उन्हें प्रतिपुष्टि दी जाती है।

5-5-7 inkupe ifreku

मैस्लो द्वारा यह प्रतिमान प्रस्तुत किया गया। यहाँ तक कि इसे मैस्लो के पदानुक्रम प्रतिमान के रूप में जाना जाता है। इस प्रतिमान में आवश्यकताओं को एक प्रदानुक्रम नियम में रखा गया है। इस प्रतिमान के अनुसार उच्च आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि मूल आवश्यकताओं की पूर्ति पहले ही हो चुकी हो। मैस्लो की आवश्यकताओं के पदानुक्रम को एक पिरामिड की सहायता से दिखाया जा सकता है। मूल आवश्यकताएँ पिरामिड की निचले हिस्से में व उच्च स्तर की आवश्यकताएँ पिरामिड के ऊपरी सतह पर पाई जाती हैं। चित्र 5.3 देखिये।



fp= 5-3% eLyks dk vko'; drk inkupe ifreku

जैसा कि चित्र 5.3 में दिखाया गया है कि मूल आवश्यकताएँ जैविक आवश्यकताएँ हैं (मुख्य अंतर्नाद से सम्बन्धित)। अर्थात् भोजन, पानी, नींद, यौन क्रिया की आवश्यकता इसमें सम्मिलित है। इसके पश्चात् सुरक्षा की आवश्यकता आती है जो कि ऐसे वातावरण की आवश्यकता से संबंधित होती है जो कि हमें सुरक्षित और निर्भर रखे। इन दो तरह की आवश्यकताओं को निम्न स्तरीय आवश्यकताएँ भी कह सकते हैं और जब एक बार ये पूरी हो जाती हैं तब व्यक्ति उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की तरफ जाता है। इसके पश्चात् सदस्य होने और स्नेह की आवश्यकता आती है जो कि प्यार देने और लेने से संबंधित होती है। इसके बाद एक दूसरी उच्च स्तरीय आवश्यकता उत्पन्न होती है जो कि आत्म-सम्मान की आवश्यकता है। ये आत्मविकास के एहसास की आवश्यकता से संबंधित है। अन्तिम उच्च स्तरीय आवश्यकता, आत्मसिद्धि की आवश्यकता होती है। यह एक व्यक्ति की पूर्ण क्षमता के बांध की आवश्यकता से जुड़ी होती है (फीस्ट और रोजनबर्ग, 2015) इसको आत्म तृप्ति की अवस्था भी कह सकते हैं (फेल्डमैन, 2015)। जब आत्म सिद्धि थोड़े समय के लिए प्राप्त होती है तो हमें अधिकतम चोटी का या आध्यात्मिकता का अनुभव होता है। आत्म सिद्ध व्यक्ति तीव्र और असीम आनन्द के पल को जानता है जो वास्तव में किसी भी क्रिया के साथ घटित हो सकता है।

5-5-8 vkRe fu/kkçj .k fl) kUr

रिचार्ड रयान और इडवार्ड डेसी (2000) द्वारा प्रस्तावित यह सिद्धान्त पदानुक्रम सिद्धान्त से काफी मिलता-जुलता है। इस सिद्धान्त की अभिधारणा यह है कि तीन तरह की जन्मजात व सार्वलौकिक आवश्यकताएँ होती हैं जो कि व्यक्ति को आत्म का पूर्ण अनुभव करने, दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने में मदद करती हैं। ये तीन आवश्यकताएँ – स्वायत्तता जिसका मतलब दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करना है। सामर्थ्य जिसका मतलब चुनौतीपूर्ण कार्य को करने की क्षमता से है और संबद्धता जिसका अर्थ लोगों से जुड़ना और सुरक्षित सम्बन्ध बनाना है।

5-5-9 vflki çj .k dk Lo-fl) kUr

व्यक्तित्व अध्ययन कर्ता करोल डेवक (1999) के अनुसार उपलब्धि की आवश्यकता व्यक्तित्व कारकों से संबंधित होती है। उपलब्धि की आवश्यकता खुद के प्रत्यक्षीकरण (अपनी खुद की क्षमताओं और दूसरों के साथ सम्बन्ध के बारे में विश्वास) द्वारा प्रभावित होती है तथा व्यक्ति के द्वारा किए गए कार्यों की सफलता व असफलता पर असर डालती है।

यह सिद्धान्त नियंत्रण की स्थिति (Locus of control) के काफी करीब है (रॉटर 1966)। जब लोग यह मानते हैं कि जो भी उनके जीवन में हो रहा है उस पर उनका नियंत्रण है तो इसका मतलब यह है कि उनकी आन्तरिक नियंत्रण स्थिति है। जब लोग यह सोचते हैं कि उनका जीवन बाहरी कारकों जैसे भाग्य, दुर्भाग्य, होनी, आदि के द्वारा नियंत्रित होता है तो उनकी बाहरी नियंत्रण स्थिति होती है।

5-5-10 vkYMjQj dk bMkj th fl) kUr

क्लेटन पी. अल्डरफर के द्वारा प्रस्तुत अस्तित्व, संबद्धता और विकास सिद्धान्त (जो कि 1961 से 1978 के बीच विकसित किया गया), मैस्लो के द्वारा प्रस्तुत किए गए सिद्धान्त जैसा ही है। हालांकि यह सिद्धान्त पाँच की जगह केवल तीन स्तरों की आवश्यकता के बारे में बात करता है। पदानुक्रम के निम्न स्तर पर अस्तित्व की आवश्यकता (जीवित रहने की आवश्यकता) आती है। जैसा कि नाम से पता चल रहा है कि ये ऐसी मूल आवश्यकताएँ हैं जो कि जैविक आवश्यकता और सुरक्षा की आवश्यकता से सम्बन्धित है। अगला स्तर

संबद्धता की आवश्यकता है जो कि सामाजिक संबंधों से संबद्ध हैं। अन्तिम स्तर विकास की आवश्यकता है। यह व्यक्ति के क्षमता को प्राप्त करना, योग्यता को विकसित करना और इसी तरह की आवश्यकता से जुड़ा है। यह सिद्धान्त ज्यादातर, कार्यक्षेत्र अभिप्रेरण में कर्मचारी के नैतिक स्तर व उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में प्रयोग होता है।

5-5-11 gktcx/dk f}-dkjd fl) klr

फ्रेडरिक हार्जबर्ग का सिद्धान्त मुख्य रूप से दो मुख्य कारकों पर केंद्रित है, वह हैं स्वास्थ्य सम्बन्धी कारक और अभिप्रेरणात्मक कारक। इस सिद्धान्त के अनुसार संतुष्टि और असंतुष्टि का एहसास इन दोनों कारकों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। संतोष और असंतोष दो चरम सीमाएं हैं और जैसा कि संतुष्टि का उल्टा संतुष्ट न होना (असंतुष्ट होना नहीं) और असंतुष्टि का उल्टा असंतुष्ट न होना (न कि संतुष्ट होना) है। इस सिद्धान्त की उपयोगिता मुख्य रूप से कार्य क्षेत्र में पाई जाती है। तालिका 5.1 में स्वास्थ्य सम्बन्धी कारक और अभिप्रेरणात्मक कारक दिखाया गया है।

Rkfydk 5-1% LokLF; | Ecu/kh vkj vfHki j .kkRed dkjd

LokLF; Ecu/kh dkjd	vfHki j .kkRed dkjd
<ul style="list-style-type: none"> - पर्याप्त काम का बोझ और काम करने का माहौल - वेतन - प्रबन्धक, मित्र/साथियों एवं अधीनस्थों के साथ अच्छे सम्बन्ध - सुरक्षा 	<ul style="list-style-type: none"> - उच्च वेतन, अधिलाभ - उपलब्धि/उन्नति - पहचान - जिम्मेदारियाँ - उन्नति और विकास

स्वास्थ्य सम्बन्धी कारक असंतुष्टि के स्तर को निर्धारित करते हैं और जब व्यक्ति ऐसी आवश्यकताओं पर ध्यान देता है तो व्यक्ति के अन्दर असंतुष्टि की मात्रा कम पाई जाती है। यद्यपि यह व्यक्ति के जीवन में संतुष्टि के लिए सहयोग नहीं करती और अभिप्रेरणात्मक कारक इस चीज के लिए जिम्मेदार होते हैं कि एक व्यक्ति संतुष्टि का अनुभव करता है या नहीं।

5-5-12 eDyysM dk mikft' vko' ; drk fl) klr

यह सिद्धान्त डेविड मैक्लेलैण्ड (1961, 1987) द्वारा विकसित किया गया जो कि तीन मूल आवश्यकताओं को दर्शाता है, उपलब्धि, संबद्धता और शक्ति। तालिका 5.2 में संक्षिप्त रूप में तीनों आवश्यकताओं को दर्शाया गया है। nAch, nAff, and nPow मैक्लेलैण्ड द्वारा संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया गया है।

rkfydk 5-2 % eDyysM }kjk crk; s x; s rhu emy fl) klr

mi yfC/k dh vko' ; drk	यह श्रेष्ठता को पाना, चुनौतीपूर्ण उद्देश्य, बाधाओं एवं मुसीबतों को पार करना, प्रतियोगिता और अटलता, कुशलता को प्राप्त करने आदि से सम्बन्धित है। जिन लोगों के अन्दर उच्च मात्रा में nAch पाया जाता है वे लोग अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं और अपने लिए चुनौतीपूर्ण उद्देश्य बनाते हैं। उन्हें अपने प्रदर्शन के बारे में प्रतिपुष्टि भी चाहिए होती है।
------------------------	--

l æn/krk dh vko' ; drk	यह दूसरों के साथ गहरा और करीबी रिश्ता बनाए रखने से सम्बन्धित है। जिन लोगों में सम्बन्धन उच्च मात्रा में पाई जाती है वे चाहते हैं कि उन्हें दूसरे लोगों द्वारा पसंद किया जाए।
'kfDr dh vko' ; drk	यह आवश्यकता दूसरों को प्रेरित करने, प्रभाव डालने व नियंत्रित करने से सम्बन्धित है। जिन लोगों में nPow उच्च मात्रा में पाई जाती है वे दूसरों को प्रेरित करने व दूसरों पर प्रभाव डालना चाहते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त सिद्धान्त विभिन्न दृष्टिकोणों के द्वारा हमें अभिप्रेरण के सम्प्रत्यय को समझाने में मदद करते हैं।

ckèk ç'u 3

1) अभिप्रेरण के अंतर्नाद पदावनति सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यर्क्स-डाडसन नियम की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मैस्लो के द्वारा बताए गए निम्न व उच्च स्तर की आवश्यकता की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) शक्ति की आवश्यकता और उपलब्धि की आवश्यकता में अन्तर बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

5-6 dqBk vkj I ?k"kl

अभी तक हमने अभिप्रेरण की प्रक्रिया तथा अभिप्रेरण के प्रकारों के बारे में चर्चा की है जो कि हमारे व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अब हम यह समझेंगे कि उस वक्त क्या होता है जब हमारे अभिप्रेरित व्यवहार के पूरा होने में कुछ कारणों से बाधा पहुंचती है और उस वक्त क्या होता है जब हमें किन्हीं दो अभिप्रेरणों में से एक को ही चुनना होता है।

5-6-1 dqBk

जब किसी उद्देश्यपूर्ण व्यवहार को करने में किन्हीं कारणों से रुकावट पैदा होती है तो ऐसी परिस्थिति, एक मनोवैज्ञानिक स्थिति को उत्पन्न करती है जिसे कुण्ठा कहते हैं। इसके स्रोत (मूल कारण) के अन्तर्गत अग्रलिखित बातें आती हैं। (i) पर्यावरणीय कारक – इसके अन्तर्गत ऐसी परिस्थिति, लोग या जैविक कारक आते हैं जो कि उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा की तरह कार्य करते हैं। (ii) व्यक्तिगत कारक – जैसे कि उद्देश्य की प्राप्ति में संसाधन, क्षमता या बुद्धि की कमी। (iii) संघर्ष – यह उस वक्त उत्पन्न होता है जब दो परस्पर विरोधी अभिप्रेरणों में से एक का ही चुनाव करना होता है।

कुण्ठा कई तरह की व्यवहारगत व संवेगात्मक प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्त होती है जैसे कि अवसाद, क्रोध, चिढ़, रोना, परिहार आदि। डोलार्ड और मिलर (1939) ने “कुण्ठा-क्रोध परिकल्पना” प्रस्तुत की जिसे “कुण्ठा क्रोध-स्थानांतरण सिद्धान्त” के नाम से भी जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा (कुण्ठा) ही क्रोध का कारण बनती है या दूसरे शब्दों में क्रोध कुण्ठा का परिणाम होता है।

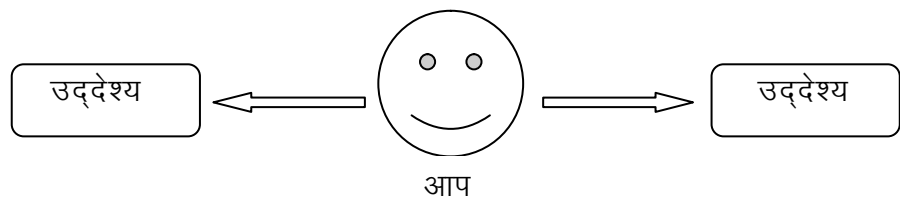
ckDI 1-3

शोध के अनुसार क्रोध की कई वजहों में से कुण्ठा एक वजह है। लेकिन कई लोग कुण्ठा की वजह से क्रोधित होने के बजाय अवसादग्रसित हो जाते हैं (बर्कोविट्ज़, 1989)। व्यक्ति उस वक्त भी क्रोधित हो जाता है जब नौकरी या अपनी भूमिका निभाने में इसके गुस्से की जरूरत पड़ती है।

5-6-2 I ?k"kl

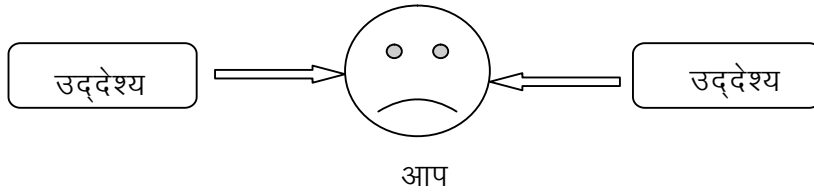
जब परस्पर विरोधी अभिप्रेरणों, आवश्यकताओं या अभिलाषाओं के बीच चुनाव करना होता है तो ऐसी स्थिति संघर्ष उत्पन्न करती है। संघर्ष मूल रूप में चार तरह के होते हैं। (i) उपागम – उपागम संघर्ष (ii) परिहार-परिहार संघर्ष (iii) उपागम – परिहार संघर्ष और (iv) द्वि-उपागम – परिहार संघर्ष।

i) **mikxe-mikxe I ?k"kl**: जब दो बराबर रूप से आकर्षित करने वाले उद्देश्य होते हैं जिसमें से किसी एक का ही चुनाव करना होता है तो यह इस तरह का संघर्ष उत्पन्न होता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति दो समान रूप से सकारात्मक उद्देश्यों की ओर बढ़ता है। इनमें से एक को संतुष्ट करके और दूसरे उद्देश्य को छोड़कर, सुलझाया जा सकता है। इसका समाधान अपेक्षाकृत सरल होता है (चित्र 5.4 देखिये)। उदाहरण के लिए दोस्तों के साथ चलचित्र देखने जाना या परिवार जनों के साथ पार्टी जाना।



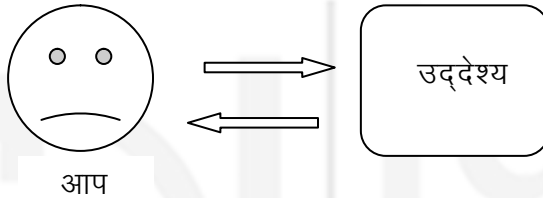
fp= 5-4% mikxe-mikxe I ?k"kl

- ii) **ifjgkj-ifjgkj I žk"ž**: जब दो उद्देश्य समान रूप से अवांछनीय या अनाकर्षित होते हैं तब व्यक्ति के अन्दर परिहार-परिहार संघर्ष उत्पन्न होता है। व्यक्ति संघर्षमयी परिस्थिति और नकारात्मक स्थिति को छोड़ने या टालने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए यदि आपको कोई अवांछित कार्य करने या कमरे की सफाई में से एक चीज को चुनना पड़े (चित्र 5.5 देखिये)।



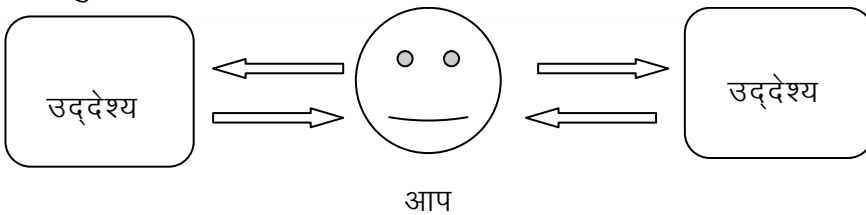
fp= 5-5% ifjgkj ifjgkj I žk"ž

- iii) **mikxe-ifjgkj I žk"ž** इस तरह के संघर्ष की अवस्था में व्यक्ति एक ही उद्दीपन या परिस्थिति के प्रति आकर्षित भी होता है और उससे दूर भी जाना चाहता है। उदाहरण के लिए फरहत एक संगठन में कार्य करती है जिसको कि नौकरी में तरक्की का प्रस्ताव मिलता है (उपागम) हालांकि, तरक्की को स्वीकार करने पर उसको अपने परिवार से दूर दूसरे शहर में जाना पड़ेगा (परिहार)।



fp= 5-6% mikxe-ifjgkj I žk"ž

- iv) **f}-mikxe – ifjgkj I žk"ž** यह एक और तरह का संघर्ष होता है जिसमें कि दो या दो से अधिक धनात्मक उद्देश्य और निषेधात्मक उद्देश्य साथ-साथ होते हैं। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति शहर से कुछ सकारात्मक पहलू जैसे ताजी हवा, खुली जगह, कम भीड़-भाड़ को ध्यान में रखकर अपना एक घर खरीदता है। लेकिन साथ ही साथ उसको अपने कार्यस्थल में आने के लिए लम्बी दूरी तय करना पड़ेगा और वह शहरी जीवन से भी काफी दूर हो जाता है। इस प्रकार शहर में रहने के फायदे और नुकसान दोनों ही हैं। सामान्यतः ज्यादा सकारात्मक विकल्प चुनकर ऐसी स्थिति को सुलझाया जा सकता है।



fp= 5-7% nkgjk mikxe-ifjgkj I žk"ž

ckèk ç'u 4

- 1) कृण्टा से आप क्या समझते हैं और इसके विभिन्न कारण क्या हैं।

.....

.....

.....

2) संघर्ष कैसे उत्पन्न होता है? विभिन्न संघर्षमयी परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।

5-7 I kjk k

अब हम इस इकाई के अन्तिम भाग में पहुंच चुके हैं। अभी तक हमने जो भी पढ़ा है उसके सभी प्रमुख बिन्दुओं का संक्षेप में वर्णन निम्नलिखित हैं।

- अभिप्रेरण एक ऐसा आन्तरिक या बाहरी बल है जो हमारे व्यवहार में क्रियाशीलता उत्पन्न करता है और दिशा प्रदान करता है।
- अभिप्रेरण से सम्बन्धित कई पद हैं जैसे आवश्यकता (कोशिकीय या शारीरिक कमी से सम्बन्धित जैविक अवस्था जो अंतर्नाद उत्पन्न करता है) अंतर्नाद तनाव की अवस्था का प्रत्यक्षीकरण जो तब उत्पन्न होता है जब शरीर किसी तरह की कमी महसूस करता है जो तनाव को कम करने के लिए दबाव उत्पन्न करता है) और प्रोत्साहन (यह बाहरी होता है या वातावरण से होता है)। अंतर्नाद का उल्टा जो कि आन्तरिक होता है और व्यवहार को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- स्थूल रूप से तीन तरह के अभिप्रेरक होते हैं:- जीव जनित, मनोजन्य और समाज जनित।
- जीव जनित अभिप्रेरक मूल जैविक आवश्यकताएँ जैसे कि भूख, प्यास और यौन क्रिया। समाजजनित अभिप्रेरक बाहरी आवश्यकताएँ हैं जो कि सामाजिक समूह में सीखे जाते हैं जैसे दोस्तों का समूह या परिवार जहाँ हम समय बिताते हैं वहीं मनोजन्य अभिप्रेरक व अभिप्रेरक हैं जो जन्मजात होते हैं जैसे सामर्थ्य की आवश्यकता और आत्मसिद्धी विभिन्न सिद्धान्तों के द्वारा अभिप्रेरणात्मक व्यवहार को समझा जा सकता है। अंतर्नाद पदावनति सिद्धान्त, अनुकूलतम उत्तेजना प्रतिमान, प्रोत्साहन सिद्धान्त, अभिप्रेरण का संज्ञानात्मक सिद्धान्त, पदानुक्रम प्रतिमान, आल्डरफर ईआरजी सिद्धान्त, हार्जबर्ग का द्वि कारक सिद्धान्त, मैक्लेलैण्ड का उपार्जित आवश्यकता सिद्धान्त और आत्म निर्धारण सिद्धान्त। ये सभी कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण हैं।
- जब उद्देश्य पूर्ण व्यवहार करने में कोई रुकावट पैदा होती है तो कुण्ठा उत्पन्न होता है। जब किसी व्यक्ति को एक से ज्यादा असंगत उद्देश्यों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है तो यह संघर्ष उत्पन्न करता है। संघर्ष चार तरह के होते हैं। (i) उपागम-उपागम संघर्ष, (ii) उपागम-परिहार संघर्ष, (iii) परिहार-परिहार संघर्ष, (iv) बहु उपागम-परिहार संघर्ष।

- 1) यदि पार्श्व अधोत्वक को नष्ट कर दिया जाए, तो चूहा
 - क) जैविक आवश्यकता से ज्यादा पानी पिएगा
 - ख) पानी पीने के लिए मना कर देगा जब तक कि उस पर पानी पीने के लिए दबाव न डाला जाए।
 - ग) जब तक वह मोटा न हो जाए तब तक खाता रहेगा
 - घ) जब तक कि खाने के लिए दबाव न डाला जाए वह खाना नहीं खाएगा
- 2) यदि आपके शरीर में पानी की कमी है लेकिन आप प्यासे नहीं हैं तो हम कह सकते हैं कि
 - क) आपके अन्दर अंतर्नाद तो है लेकिन जरूरत नहीं है
 - ख) जरूरत है किन्तु अंतर्नाद नहीं है
 - ग) अंतर्नाद और आवश्यकता दोनों हैं
 - घ) न जरूरत है न अंतर्नाद है।
- 3) संतुलित स्तर पर ताप और रक्त के दबाव को बनाए रखना एक उदाहरण :
 - क) ताप को स्थाई रखना
 - ख) समस्थिति
 - ग) आन्तरिक अभिप्रेरण
 - घ) जैविक आवर्तन
- 4) मैस्लो के पदानुक्रम में सही क्रम क्या है।
 - क) जैविक, सम्मान, सुरक्षा, आत्मसिद्धी, प्यार और जुड़ाव
 - ख) आत्म सिद्धी, जैविक, सुरक्षा, प्यार और जुड़ाव, सम्मान
 - ग) जैविक, सुरक्षा, प्यार और जुड़ाव, सम्मान, आत्म सिद्धी
 - घ) आत्म सिद्धी, सुरक्षा, प्यार और जुड़ाव, सम्मान, जैविक
- 5) उत्तेजन स्तर, कार्य कठिनता, प्रदर्शन की कुशलता के बीच सम्बन्ध का वर्णन करते हैं।
 - क) उत्तेजना सिद्धान्त
 - ख) अंतर्नाद पदावनती सिद्धान्त
 - ग) यार्क्स डाडसन लॉ
 - घ) उल्टा-U प्रकार्य
- 6) प्यास अभिप्रेरण क्या है? कोशिकीय निर्जलन प्यास की विवेचना कीजिए।
- 7) अभिप्रेरणात्मक चक्र की विवेचना रेखाचित्र की मदद से कीजिए।

- 8) समाज जनिक अभिप्रेरक व इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।
9) संघर्ष से आप क्या समझते हैं। इसके कारणों को बताइयें।

5-9 eq; 'kCn

- vko'; drk** % यह कोशिकीय या शारीरिक कमी की जैविक अवस्था से सम्बन्धित है जो अंतर्नाद उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति को जीवित रहने के लिए भोजन, पानी व आक्सीजन की जरूरत होती है।
- vrukH** % इसको तनाव की कथित अवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो तब उत्पन्न होता है जब हमारे शरीर में किसी आवश्यकता की कमी उत्पन्न होती है व तनाव को कम करने की चाहत पैदा होती है।
- i kRl kgu** % यह बाहरी होता है या वातावरण से होता है (अंतर्नाद, के उल्टा जो कि आन्तरिक होता है) और व्यवहार को प्रेरित करने में भूमिका निभाता है। यह कोई वस्तु या फिर घटना भी हो सकती है।
- vkRe fl)h dh vko'; drk** % यह अभिप्रेरक व्यक्ति की प्राप्त करने या बनने में मदद करता है जो वह बनने में सक्षम होता है। यह व्यक्ति को अपनी क्षमता का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के योग्य बनाता है।
- vrukH inkoufr ifreku** % इस प्रतिमान के अनुसार कुछ मूल जैविक आवश्यकताओं की कमी व्यक्ति में अंतर्नाद उत्पन्न करती है जो उसकी जरूरतों को संतुष्ट करने के लिए बल प्रदान करता है।
- l efLkfr** % यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सभी प्राणी जैविक समानता या सर्वोत्कृष्ट निर्देश बिन्दु के आसपास संतुलन बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं। यह शरीर की स्थिर या संतुलित आन्तरिक अवस्था को कायम रखने की प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया जा सकता है।
- l ekt tfur vflki j d** % ऐसी बाहरी आवश्यकताएँ जो कि सामाजिक समूह, जैसे कि मित्र मंडली, या परिवार जहाँ हम समय बिताते हैं, में सीखी जाती हैं। उपलब्धि की आवश्यकता व सम्बन्धन की आवश्यकता ऐसे ही अभिप्रेरक के दो उदाहरण हैं।
- eukstfur vflki j d** % आन्तरिक आवश्यकताएँ जैसे सामर्थ्य की आवश्यकता या आत्मसिद्धि की आवश्यकता।

tho tfur vflkiçd	% मूल जैविक आवश्यकताएँ जैसे कि भूख, प्यास और यौन क्रिया।
dqBk-Øksk i fjdYi uk	% गुस्सा, कुण्ठा का परिणाम होता है।
I 2k"kl	% यह ऐसी परिस्थिति होती है जिसमें दो असंगत अभिप्रेरकों, आवश्यकताओं या इच्छाओं में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है।

5-10 I nHkZ , oa i <us ds I q>ko

- Baron, R. A. (2005). *Psychology*. Delhi: Pearson Education.
- Buck, R. (1988). *Human Motivation and Emotion*. John Wiley & Sons.
- Ciccarelli, S. K and White, J. N. (2015). *Psychology*. New York: Pearson Education Limited.
- Edwards, D. C. (1998). *Motivation and Emotion: Evolutionary, Physiological, Cognitive, and Social Influences* (Vol. 3). SAGE publications.
- Eysenck, M. W. (2013). *Simply Psychology*. New York: Psychology Press.
- Feist, G. J and Rosenberg, E. L. (2015). *Psychology: Perspectives and Connections*. New York: McGraw- Hill Education.
- Feldman, R. S. (2015). *Essentials of Understanding Psychology*. New York: McGraw- Hill Education.
- Gerrig, R. J and Zimbardo, P. G. (2006). *Psychology and Life*. Delhi: Pearson Education.
- Gorman, P. (2004). *Motivation and Emotion*. Routledge.
- Hall, N. C., & Goetz, T. (2013). *Emotion, Motivation, and Self-regulation: A Handbook for Teachers*. Emerald Group Publishing.
- Hewstone, M; Fincham, F. D and Foster, J. (2005). *Psychology*. USA: Blackwell Publishing.
- Jain, Sashi. (2009). *Introduction to Psychology*. Jalandhar: Kalyani Publishers.
- Kosslyn, S. M and Rosenberg, R. S. (2013). *Introducing Psychology*. India: Pearson Education.
- Mishra, B. K. (2016). *Psychology: The Study of Human Behaviour*. Delhi: PHI Learning Private Limited.
- Morgan, C. T; King, R. A; Weisz, J. R and Schopler, J. (1996). *Introduction to Psychology*. Delhi: Tata McGraw- Hill Publishing Company Limited.
- Myers, D. G. (2010). *Exploring Psychology*. New York: Worth Publishers.
- Nolen-Hoeksema, S., Fredrickson, B., Loftus, G., & Lutz, C. (2009). *Atkinson & Hilgard's Psychology An Introduction to Psychology*. United Kingdom: Cengage Learning.
- Parmeswaran, E. G and Beena, C. (2004). *An Invitation to Psychology*. Delhi: Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Quick, J. C., Nelson, D. L. and Khandelwal, P. (2011). *Organisational Behaviour: A South-Asian Perspective*. Delhi: Cengage Learning.

Rathus, S. (2008). *Psychology: Concepts and Connections*. United States: Wadsworth Cengage Learning.

5-11 fp=ka dk l nHkZ

The Yerkes- Dodson law. Retrieved August 21, 2011, from https://en.wikipedia.org/wiki/Yerkes%E2%80%93Dodson_law

5-12 vkWykbu l kr

- For information on motivation as a concept, visit
 - http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/77445/8/09_chapter_01.pdf
- For more understanding on types of motivation, visit
 - <https://www.princeton.edu/~rbenabou/papers/RES2003.pdf>
 - http://ijbssnet.com/journals/Vol_3_No_24_Special_Issue_December_2012/24.pdf
- For more understanding on theories of motivation, visit
 - https://www.tankonyvtar.hu/hu/tartalom/tamop412A/2011-0023_Psychology/030300.scorml
 - <http://www.basicknowledge101.com/pdf/control/Motivation.pdf>
 - <https://nscpolteksby.ac.id/ebook/files/Ebook/Business%20Administration/ARMSTRONGS%20HANDBOOK%20OF%20HUMAN%20RESOURCE%20MANAGEMENT%20PRACTICE/19%20-%20Motivation.pdf>
- For more information on Frustration-Aggression Hypothesis, visit
 - <https://psFrychclassics.yorku.ca/FrustAgg/miller.htm>

oLr(u"B ç'uka ds mÙkj

1) (d), 2) (b), 3) (b), 4) (c), 5) (c)

बकबल 6 | डस*

: i j k k

- 6.0 सीखने का उद्देश्य
- 6.1 प्रस्तावना
- 6.2 संवेग: प्रकृति
 - 6.2.1 संवेग की परिभाषा
- 6.3 संवेग के प्रकार
- 6.4 संवेग के कार्य
- 6.5 संवेगात्मक प्रक्रिया के घटक
- 6.6 संवेग और मनोदशा
- 6.7 संवेग और भावना
- 6.8 संवेग के सिद्धान्त
 - 6.8.1 जेम्स-लांजे सिद्धान्त
 - 6.8.2 कैनन-बार्ड सिद्धान्त
 - 6.8.3 आनन प्रतिपुष्टि परिकल्पना
 - 6.8.4 स्कैकटर-सिंगर सिद्धान्त
 - 6.8.5 संवेग का संज्ञानात्मक मध्यस्थता सिद्धान्त
 - 6.8.6 विरोधी प्रक्रिया सिद्धान्त
- 6.9 संवेग की माप
- 6.10 सारांश
- 6.11 पुनरावलोकन प्रश्न
- 6.12 प्रमुख शब्द
- 6.13 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 6.14 चित्रों का संदर्भ
- 6.15 ऑनलाइन स्रोत

6-0 | ह[kus dk mnns] ;

इस इकाई को पढ़ने के पाश्चात्, आप निम्नलिखित बातों को समझ पाएंगे:

- संवेग का स्वरूप;
- संवेग का स्वभाव और प्रकार;
- संवेग, मनोदशा व भावना में अन्तर; तथा
- संवेग के सिद्धान्त।

* डॉ. सुहास शेटगोवाकर, प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली और डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

6-1 i Lrkouk

अपने चारों तरफ लोगों को देखने की कोशिश कीजिए, खासतौर से उनके संवेगों को। क्या आप बता सकते हैं कि वे कब खुश हो रहे हैं और कब दुःखी या क्रोधित हो रहे हैं? अधिकतर, हम उनकी आनन अभिव्यक्ति या फिर आवाज के तरीकों के आधार पर यह कह सकने में समर्थ होते हैं कि वे खुश, क्रोधित, दुःखी या फिर आश्चर्य चकित हो रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम संवेग के स्वरूप की चर्चा करें जिससे मनोविज्ञान के विद्यार्थी होने के नाते हम अपने आस-पास के लोगों को बेहतर तरीके से समझ सकें। अभिप्रेरण और संवेग एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं (मिश्रा, 2016) और ये दोनों ही व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब व्यक्ति की भलाई, जीविका और भूख से सम्बन्धित तथ्य होते हैं तब व्यक्ति के अन्दर अभिप्रेरण और संवेग दोनों उत्पन्न होते हैं (फीस्ट और रोसनबर्ग, 2015)। जब व्यक्ति कुछ निश्चित उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है तो वह खुशी का अनुभव करता है और यदि वह असफल हो जाता है तो दुःख का अनुभव करता है।

इस प्रकार अभिप्रेरण और संवेग दोनों की मानव व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जैसा कि पहले इकाई में हम अभिप्रेरण के स्वरूप की चर्चा कर चुके हैं, इस इकाई में हम संवेग के स्वरूप, प्रकार व सम्बन्धित सिद्धान्तों की चर्चा करेंगे।

6-2 l dx% i Nfr

हमारे जीवन में l dx का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी संवेग के अन्दर सुख या दुःख की भावना होती है जो कि विभिन्न तरीकों से प्रकट होती है जैसे कि आनन अभिव्यक्ति, आवाज की तीव्रता और उच्चारण व व्यवहारगत क्रियाएँ। संवेग कई तरह के आन्तरिक व बाहरी कारणों से उत्पन्न होते हैं। वातावरण की घटनाएँ व परिस्थितियाँ, कई तरह के संवेगों जैसे कि जलन, आत्मदोष, और शर्मिन्दगी आदि उत्पन्न करती हैं। ऐसे संवेगों को लेकर हम ज्यादा सचेत/आत्मचिंतन में होते हैं क्योंकि ऐसे संवेग हमारे नैतिक पक्ष से जुड़े होते हैं। कुछ मुख्य संवेग होते हैं जिनमें विकासात्मक दृष्टिकोण होता है। (इजार्ड, 1971) संवेग सामाजिक प्रदर्शन नियमों के अनुसार होते हैं तथा अन्य लोगों पर प्रभाव डालते हैं (मात्सुमोतो, 1998)।

एकमैन (1980) ने आनन अभिव्यक्ति पर अत्यन्त प्रभावशाली कार्य किया छह प्रकार के मूल संवेगों डर, क्रोध, आश्चर्य, उदासी, खुशी व विरक्ति के बारे में बताया जो कि सभी संस्कृतियों में समान रूप से पाया जाता है यद्यपि अब उपेक्षा (contempt) नामक संवेग को भी मूल संवेगों में शामिल कर लिया गया है। कई अनुसंधानकर्ताओं ने आनन अभिव्यक्ति पर अध्ययन किया है (खोसला, 2001)।

आनन अभिव्यक्ति पर कई अनुसंधानकर्ताओं द्वारा अध्ययन किया गया है (खोसला 2001)। इनके द्वारा संवेगों की अभिव्यक्ति को उस वक्त अंकित कर लिया जाता है जब संवेग अपने आप उत्पन्न होते हैं या उन्हें उत्पन्न करने के लिए कहा जाता है। बाद में अंकित किये गये विवरण की विस्तृत जांच की जाती है। एकमैन (1980) द्वारा आनन क्रिया व्याख्या पद्धति (Facial action coding system/FACS) को विकसित किया गया जिसमें कि चेहरे की माँसपेशियों से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित करके आनन अभिव्यक्ति की व्याख्या की जाती है। आनन अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करते समय भी इसकी प्रबलता में अन्तर आ सकता है। जब संवेगों को प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है तो साधारणतया इनकी अभिव्यक्ति काफी तीव्र रूप में होती है। जबकि स्वभाविक अभिव्यक्ति का स्वरूप काफी हल्का होता है। अक्सर कुछ अस्थिर पल होने पर अतिसूक्ष्म अभिव्यक्ति होती है जिसे प्रयोगकर्ता द्वारा

पहचान पाना कठिन होता है। इस तरह की अभिव्यक्ति को पकड़ा जाना, झूठ को पहचानने में काफी कारगर होती है। चार्ल्स डार्विन अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। इनके अनुसार मूल संवेगों का आधार विकासपरक होता है जो कि वंशानुगति का एक हिस्सा है। अलग-अलग संस्कृति के लोग आनन अभिव्यक्ति के आधार पर विभिन्न संवेगों को पहचानने में समर्थ होते हैं। संवेग जिस सामाजिक संदर्भ में उत्पन्न होते हैं उसकी भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फ्रिजडा (1969) बताते हैं कि किसी संवेग के बारे में निर्णय देते समय हम सामान्यतः व्यक्ति के आनन अभिव्यक्ति या अशाब्दिक सूचनाओं का प्रयोग करते हैं। यद्यपि संवेग की अभिव्यक्ति पर सीखने का प्रभाव पड़ता है। उदाहरण स्वरूप विभिन्न संस्कृतियों में कुछ विशेष प्रकार के सामाजिक नियम होते हैं जो हमारे संवेगों की अभिव्यक्ति को बदल देते हैं। इन नियमों के द्वारा हम सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से उचित अभिव्यक्ति को करना सीखते हैं। मूल संवेग मस्तिष्क के लिम्बिक सिस्टम, अमेगडाला, थैलमस और हाइपोथैलमस के द्वारा ज्यादातर निर्धारित होते हैं।

6-2-1 I dx dh i fjHkk"kk

संवेग शब्द लैटिन शब्द Emovere से बना है जिसका अर्थ उत्तेजित करना होता है। संवेग की कई तरह की परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

फीस्ट और रोसनवर्ग (2015) के अनुसार “चेतन संक्षिप्त, तीक्ष्ण बदलाव जो कि व्यक्तिगत रूप से अर्थपूर्ण परिस्थिति के प्रति होता है”।

कोसलाइन और रोसनवर्ग (2013) ने संवेग को इस प्रकार परिभाषित किया “एक मनोवैज्ञानिक दशा जिसके चार घटक होते हैं – सकारात्मक या नकारात्मक व्यक्तिगत अनुभव, शारीरिक उत्तेजना, विशेष मानसिक प्रक्रियाओं और संग्रहित सूचनाओं का सक्रियकरण तथा प्रत्यक्ष व्यवहार की विशेषताएँ”

फील्डमेन (2015) के अनुसार “(ऐसी) भावना जिसमें शारीरिक और संज्ञानात्मक दोनों ही तत्व होते हैं जो व्यवहार को प्रभावित करते हैं”।

मिश्रा (2016) “संवेग एक ऐसा विचलित, द्रवित या उत्तेजित व्यवहार है जो कि भावनात्मक स्थिति को अनुभव करने पर होता है और जिसमें बाह्य व आन्तरिक शारीरिक बदलाव सम्मिलित होते हैं”।

उपर्युक्त परिभाषाओं से जो सबसे महत्वपूर्ण बात समझ में आती है वह बदलाव है। यह बदलाव आत्मनिष्ठ भाव के रूप में या शारीरिक उत्तेजना या फिर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के रूप में हो सकता है। संवेग की अवस्था में व्यक्ति के आनन व शारीरिक गतिविधियों में होने वाले परिवर्तन को देखा भी जा सकता है। यह बदलाव उस परिस्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है जो कि व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए अगर किसी बच्चे को स्वर्ण पदक मिलता है तो उसके माता-पिता खुशी के संवेग को प्रदर्शित करते हैं इसका कारण यह है कि बच्चे के द्वारा स्वर्ण पदक जीतना माता-पिता के लिए व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण बात है और ऐसे में वे अपने शारीरिक, संज्ञानात्मक व भावात्मक स्तर पर कुछ बदलाव महसूस करते हैं जो कि उनके आनन अभिव्यक्ति के रूप में स्पष्ट देखा जा सकता है।

6-3 I dx ds i dxkj

हम विभिन्न कारणों से कई तरह के संवेगों का अनुभव करते हैं व उन्हें प्रकट करते हैं। इन संवेगात्मक भावनाओं के विभिन्न स्रोत हैं, जिसका स्वस्थ क्षणिक होता है की अपेक्षा लम्बे समय तक रहते हैं।

[kq kh - जब हम अपने जीवन में कुछ और उत्तेजना को महसूस करते हैं, यह एक तरह की प्रसन्नता होती है जो हमें तब महसूस होती है जब हम अपने जीवन में संतुष्ट होते हैं। यह हमारे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ाने में सहायक होता है। यह अक्सर हमारी मुस्कुराहट आदि के द्वारा प्रकट होता है। खुशी की अवस्था में हम ज्यादा सक्रिय और ऊर्जावान होते हैं।

Mj - जब हम किसी ऐसी परिस्थिति में होते हैं जो हमारे जीवन के लिए खतरा पैदा करे तो हमारे अन्दर डर की उत्पत्ति होती है। हमारे जीवन यापन में डर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह व्यक्ति को अपने आप को बचाने के लिए अभिप्रेरणा (motivation) का काम करता है। डर की अवस्था में हमारी हृदय गति तथा सांस लेने की गति बढ़ जाती है और मांसपेशियाँ तनाव में आ जाती हैं। भयपूर्ण परिस्थिति में व्यक्ति या तो और सतर्क होकर उसका सामना करता है या फिर उस परिस्थिति से भाग जाता है। भय उत्पन्न करने वाली कोई परिस्थिति जब व्यक्ति के सामने बार-बार आती है तो व्यक्ति उस परिस्थिति से अपेक्षाकृत कम डरने लगता है। यह एक तरह का यथाक्रम में उस परिस्थिति के प्रति असंवेदनशील होना होता है।

mnl h - उदासी में असंतुष्टि व दुःख की भावना पाई जाती है। व्यक्ति अपने जीवन की कुछ असफलताओं व व्यक्तिगत हानि की वजह से कुंठित हो जाता है और उसके अन्दर उदासी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे में व्यक्ति आसपास की चीजों के प्रति निरुत्साहित, अरुचिकर दिखने लगता है। व्यक्ति निराशा व असंतुष्टि महसूस करता है। अगर यह अवस्था लम्बे समय तक बनी रहे तो व्यक्ति अवसाद में भी जा सकता है। यह संवेग लटकते हुए कंधों के साथ होटों को नीचे करके, चिल्लाकर या दुःख विभोर होकर प्रदर्शित किया जाता है।

Øksk - जब हम अपने किसी उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं तो कुण्ठा (Frustration) की उत्पत्ति होती है और यह कुण्ठा ही हमारे क्रोध का कारण बनती है। शाब्दिक या शारीरिक रूप से जब हमारे साथ अनुचित या चोट पहुँचाने वाला व्यवहार किया जाता है तो यह हमारे क्रोध को उत्तेजित करता है। क्रोध के पीछे कई तरह के कारण हो सकते हैं तथा इसकी अभिव्यक्ति भी उम्र व लिंग के अनुसार अलग-अलग होती है। औरत की अपेक्षा आदमी अक्सर क्रोध का व्यवहार ज्यादा करते पाए जाते हैं। कई तरह के उपचार के तरीके होते हैं जो क्रोध की दिशा को बदलकर, इसे नियंत्रित करके व इसका अनुभव करने तथा प्रदर्शित करने की तीव्रता को कम करके व्यक्ति की सहायता करते हैं।

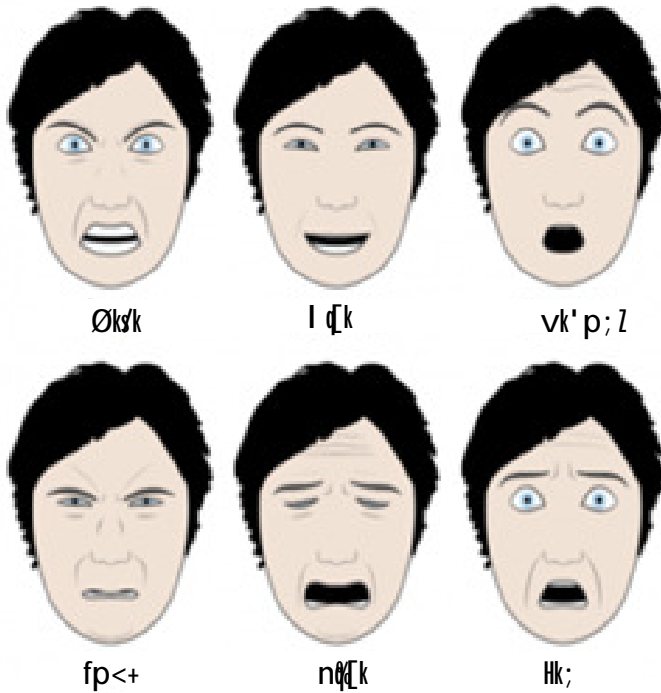
vk' p; l - आश्चर्य एक बहुत ही थोड़े समय के लिए उत्पन्न संवेग होता है जिसकी तीव्रता अक्सर काफी ज्यादा होती है। यह एक प्रतिक्रिया है जो कि अप्रत्याशित या दुःख और सुख से सम्बन्धित उद्दीपनों के प्रति होता है और इसमें चौकन्नेपन की स्थिति उत्पन्न होती है। इस संवेग को व्यक्ति अपने भाँवो को ऊँचा करके, आँखों की पुतलियों को तानकर, जोर से चीख कर, अचानक से स्थिर होकर, मुँह को खुला रखकर प्रकट करता है। इस संवेग को उत्पन्न करने वाली घटनाएँ हमें अन्य घटनाओं के अपेक्षाकृत अधिक याद रहती हैं।

fojDr - जब हम ऐसी परिस्थिति या हालात में होते हैं जो कि देखने में गंदी, अरुचिकर, या बुरी होती है या सूँघने में अप्रिय होती है तो हमारे अन्दर जो एक तरह की चिढ़ पैदा होती है उसी को विरक्ति का संवेग कहते हैं। सामान्यतः ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अपनी नाक को सिकोड़ता है और उस चिढ़ पैदा करने वाली स्थिति से दूर हट जाता है जिससे कि व्यक्ति उस अप्रिय परिस्थिति को अनुभव करने से बच सके। कई बार व्यक्ति उल्टी तक कर देता है। जब हम किसी दूसरे व्यक्ति को अनैतिक या अरुचिकर कार्य करते देखते हैं तब

भी हम चिढ़ पैदा करते हैं या फिर जब हम बहुत नकारात्मक चीज देखते हैं जैसे कि किसी को चोट पहुँचाना या किसी चीज का देखने में बदसूरत होना तो ऐसी परिस्थिति भी हमारे अन्दर चिढ़ पैदा कर सकती है।

okDI 6-1%ewy I 0X

मूल संवेग वे होते हैं जो सामान्यतः सभी मनुष्यों में पाए जाते हैं। क्रोध, चिढ़, सुख, भय, दुःख क्वाश्चर्य के संवेग मूल संवेग के अन्तर्गत आते हैं। इन संवेगों को जन्मजात संवेग भी कहा जाता है जो कि सभी मनुष्यों द्वारा प्रकट किए जाते हैं।



fp= 6-1%ewy I 0X

I kr%https://managementmania.com/

हम कई प्रकार के संवेगों का अनुभव करते हैं। संवेगों पर किए गए शोधों से यह पता चलता है कि हमारे सभी संवेग अक्सर कई मूल संवेगों के मिलाप के परिणाम होते हैं (कोसलाइन और रोसनबर्ग, 2013)। आगे चलकर चार्ल्स डार्विन ने कहा कि संवेगों के परिणामस्वरूप जो व्यवहार हम करते हैं उनका स्वरूप जन्मजात होता है और यह विभिन्न संस्कृतियों में आनन अभिव्यक्ति के रूप में एक समान पाए जाते हैं। यहाँ तक कि जो व्यक्ति जन्मजात दृष्टिहीन होते हैं वे भी औरों की तरह आनन अभिव्यक्ति करते पाए जाते हैं जबकि उन्होंने औरों को कभी ऐसा करते देखा नहीं होता है। आगे चलकर दूसरे शोधकर्ताओं ने मूल संवेग से सम्बन्धित थोड़ी अलग सूची प्रस्तुत की (कोसलाइन और रोसनबर्ग, 2013)। हालांकि मूल संवेगों के इन विचारों पर कई अन्य शोधकर्ताओं ने आपत्ति जताते हुए कहा है कि मूल संवेग इतने सरल नहीं होते हैं। उदाहरण के रूप में रोजन, लोवरी और इबर्ट (1994) ने आनन अभिव्यक्ति के आधार पर तीन तरह के विकृत संवेग होने की बात कही। ऐसी ही बात कोसलिन और रोसनबर्ग (2013) ने भी कही। आगे चलकर कहा गया कि यद्यपि कुछ संवेग सभी संस्कृतियों में समान रूप से पाए जाते हैं परन्तु कई संवेग हमारी संस्कृति के मानक व कार्यप्रणाली से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यद्यपि मूल संवेग जन्मजात माने जाते हैं परन्तु समाज के मानक, कार्यप्रणाली व सीखने की प्रक्रिया के प्रभाव को भी कमतर नहीं आंका जा सकता है।

ckrk iz u 1

1) संवेग की प्रकृति और संप्रत्यय का वर्णन कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

2) संवेग के विकासात्मक दृष्टिकोण से क्या तात्पर्य है?

.....
.....
.....
.....
.....

3) मूल संवेगों की सूची बनाइए।

.....
.....
.....
.....
.....

6-4 l dx ds dk; l

संवेग के संदर्भ में अभी तक जो भी चर्चा की जा चुकी है उससे यह तो स्पष्ट है कि यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण संप्रत्यय है लेकिन इसमें कार्यविधि को भी समझना उतना ही महत्वपूर्ण है जो कि निम्नलिखित हैं :

- 1) l dx 0; fDr dks 0; ogkj djus ds fy, r\$ kj djrk g% संवेग व्यक्ति के व्यवहार व वातावरण के बीच में एक कड़ी का कार्य करता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति सड़क पार कर रहा है और अचानक वह किसी ट्रक को अपनी तरफ आते देखता है तो वह भय के रूप में संवेगात्मक प्रतिक्रिया करता है जो उसके अन्दर शारीरिक उत्तेजना पैदा करता है।
- 2) l dx 0; fDr ds Hkfo"; ea gkus okys 0; ogkj dks fn'kk inku djrk g% संवेगात्मक अनुभव के द्वारा हम बहुत कुछ सीखते हैं। परिणामस्वरूप हम ऐसी परिस्थितियों को पहले ही टाल या रोक सकते हैं जो हमारे अन्दर नकारात्मक संवेग उत्पन्न कर सकते हैं।
- 3) l dx gea nll jka ds l kfk i Hkkoi wkZ vr%Ø; k djus ea enn djrk g% संवेगों को शाब्दिक या अशाब्दिक तरीके से प्रकट करके हम एक दूसरे के साथ ज्यादा प्रभावपूर्ण ढंग से अन्तःक्रिया कर सकते हैं।

ऐसे संवेग जिसमें खुद के प्रति चेतनता की जरूरत होती है साथ ही साथ खुद के व्यवहार को प्रतिबिंबित करने की क्षमता की जरूरत होती है। ऐसे संवेग सामाजिक नियम व मानकों की उम्मीदों को पूरा कर पाने या न कर पाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। शर्मिंदगी, अपराध बोध, गर्व करना, लज्जित होना और अपमान, आत्म चेतन संवेग के उदाहरण हैं (फीस्ट और रोजनबर्ग, 2015)। जब व्यक्ति अपनी खुद की व दूसरों की उम्मीदों या सामाजिक मानकों को पूरा करता है तो परिणामस्वरूप आत्म चेतन संवेग की उत्पत्ति होती है।

6-5 l dxkRed i fØ; k ds ?kVd

संवेग को एक ऐसा प्रकरण कहा जा सकता है जो कि जटिल होते हैं और जिसके कई घटक होते हैं (नोलेन-हॉकसेमा, 2009)। मुख्य रूप से छह तरह के सांवेगिक घटक होते हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

- 1) **l KkukRed eW; kdu%** संवेग का पहला घटक संज्ञानात्मक मूल्यांकन है जिसमें परिस्थितियों को अपने व्यक्तिगत अर्थ के अनुसार समझा जाता है। उदाहरण के रूप में क्रिकेट के खेल में जब क्रिकेट टीम जीतती है तो व्यक्तिगत अर्थ के अनुसार हम संज्ञानात्मक मूल्यांकन करते हैं। यदि हम जीतने वाली टीम को सहयोग करते हैं और इसके बड़े प्रशंसक हैं तो परिस्थिति का मूल्यांकन हम अपने व्यक्तिगत अर्थ के अनुसार करेंगे या यह परिस्थिति व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए महत्वपूर्ण होगी। संज्ञानात्मक मूल्यांकन संवेग के अन्य घटकों को प्रभावित करता है।
- 2) **0; fDrxr vuuk%** यह व्यक्ति की उन भावात्मक दशा से सम्बन्धित होता है जो कि संवेग के द्वारा उत्पन्न होते हैं (नोलेन-हॉकसेमा, फ्रेडरिकसेन, लोफटस और लट्स, 2009)
- 3) **fopkj vkj 0; ogkj djusdh i dfuk%** इस अवस्था में व्यक्ति कुछ खास तरीके से सोचने और व्यवहार करने की इच्छा रखता है। उदाहरण के लिए जब एक व्यक्ति क्रोधित होता है तो वह आक्रामक व्यवहार कर सकता है।
- 4) **vkUrfjd 'kkjhfjd cnyko %** संवेग की अवस्था में कुछ शारीरिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं जिनमें स्वायत्त तंत्रिका तंत्र का योगदान काफी महत्वपूर्ण है जिसमें व्यक्ति के हृदय की गति में परिवर्तन हो सकता है या व्यक्ति को पसीना आना शुरू हो सकता है। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति क्रोधित होता है तो उसकी साँसे तेज हो जाती हैं।
- 5) **vkUU vfHk0; fDr%** आनन अभिव्यक्ति में चेहरे के हर भाग जैसे- गाल, होंठ, नाक आदि के आकार में कुछ परिवर्तन होता है (नोलेन-हॉकसेमा, 2009)। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति खुश होता है तो वह मुस्कुराता है।
- 6) **l dx dsifr ifrfØ; k%** यह इस बात से सम्बन्धित है कि किस तरह एक व्यक्ति अपने खुद के संवेग के प्रति प्रतिक्रिया करता है व उसका सामना करता है।

कोई भी संवेग उपरोक्त छह घटकों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। संवेगों पर और प्रकाश डालते हुए यह कह सकते हैं कि इसके अन्दर शारीरिक, संज्ञानात्मक व व्यवहारगत घटक पाए जाते हैं। जब एक व्यक्ति क्रोधित होता है तो वह अनुकंपी उत्तेजना के रूप में शारीरिक उत्तेजना महसूस करता है। अगर व्यक्ति यह विश्वास करता है कि वह खतरे में है तो इसमें संज्ञानात्मक घटक भी पाया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति दूर होने की प्रवृत्ति दिखा सकता है जो कि व्यवहारगत घटक से सम्बन्धित है। इसी प्रकार जब एक व्यक्ति क्रोधित होता है वह अनुकम्पी और उप अनुकम्पी उत्तेजना अनुभव करता है। जब व्यक्ति को

लगता है कि उसके साथ गलत हो रहा है तब उसके अन्दर आक्रमण करने की प्रवृत्ति देखी जाती है (राथुस, 2008)।

6-6 l dx vkj eukn'kk

संवेग की स्थिति मनोदशा से अलग होती है। मनोदशा से तात्पर्य है कि "ऐसी भावात्मक अवस्था जो हमारे चेतन स्तर के आधार को तैयार करता है व संवेग के अपेक्षाकृत लम्बे समय तक रहता है" (फीस्ट और रोजनबर्ग, 2015)। एक तरह की मनोदशा कुछ विशेष संवेगों की उपस्थिति को अन्य संवेगों की अपेक्षा ज्यादा प्रकट करती है। उदाहरण के लिए एक ऐसा निरीक्षक जिसकी मनोदशा चिड़चिड़ी है और तो वह उस वक्त जल्द ही गुस्से में आ सकता है। जब उसका कर्मचारी काम पर देर से आता है तो वह जल्द ही गुस्से में आ सकता है। संवेग और मनोदशा के बीच में अन्तर संक्षिप्त रूप में सारणी 6.1 में प्रदर्शित किया गया है।

l kj.kh 6-1% l dx vkj eukn'kk ea vlurj

l dx	eukn'kk
किसी भी संवेग के कुछ स्पष्ट कारण होते हैं जैसे कि जब एक व्यक्ति कोई खूबसूरत स्मारक (समाधि) देखता है तो स्तंभित होने का भाव दिखलाता है।	"मनोदशा एक मुक्त और असंगठित भावात्मक अवस्था है" (नोलेन-हॉकसेमा, 2009)। उदाहरण के रूप में कोई व्यक्ति किसी दिन उल्लसित अनुभव करता है और दूसरे ही दिन वह चिढ़न की अवस्था में जा सकता है।
इसका स्वरूप संक्षिप्त होता है जो कि कुछ सेकण्ड या मिनट में गायब हो सकता है।	मनोदशा अपेक्षाकृत लम्बे समय तक होती है।
संवेग एक बहुसंघटक प्रकरण होता है	मनोदशा मुख्य रूप से उन अनुभवों से जुड़ी होती हैं जो कि व्यक्तिगत होते हैं।
संवेगों को कुछ समूहों में बांटा जा सकता है जो कि अवसरानुसार दिखते हैं/प्रदर्शित होते हैं जैसे कि क्रोध, आनन्द आदि।	मनोदशा सुखदता और उत्तेजना के अनुसार बदल सकते हैं।

6-7 l dx vkj Hkkouk

यद्यपि संवेग और भावना दोनों ही भावात्मक प्रक्रिया के लिए प्रयोग किए जाते हैं परन्तु इनके बीच में अन्तर किया जा सकता है (सारणी 6.2)।

Lkkj.kh 6-2% l dx vkj Hkko ea vlurj

l dx	Hkkouk
संवेग अपेक्षाकृत ज्यादा जटिल होते हैं।	इसका स्वरूप काफी सरल होता है।
संवेग में कोई न कोई भाव अवश्य होता है कोई भी संवेगात्मक अनुभव किसी भाव के साथ और भाव के उत्पन्न होने के बाद ही होता है। उदाहरण के लिए प्रसन्नता की भावना के साथ या प्रसन्नता की भावना के बाद खुशी का संवेग उत्पन्न होता है।	भावना में संवेगात्मक अनुभव हो भी सकता है और नहीं भी। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति बिना किसी संवेग के सुख या दुःख के भाव का अनुभव कर सकता है।
संवेग व्यक्तिनिष्ठ व वस्तुनिष्ठ दोनों ही होते हैं।	भावना स्वभावतः व्यक्तिनिष्ठ होता है।
संवेग कई तरह के होते हैं जैसे कि क्रोध, उल्लास, जलन आदि।	भावना को मुख्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है। सुख और दुःख।
संवेग में शारीरिक बदलाव महसूस होता है	भाव में शारीरिक बदलाव नहीं भी महसूस किए जाते हैं।

Ckks'k i'z u 2

1) संवेगात्मक प्रक्रिया के छह मुख्य घटकों को सूची तैयार कीजिए।

- क)
- ख)
- ग)
- घ)
- च)
- छ)

2) संवेग और मनोदशा में अन्तर बताइए

I 0x	eukn' kk

3) संवेगों के कार्यों की सूची तैयार कीजिए।

-
-
-
-
-

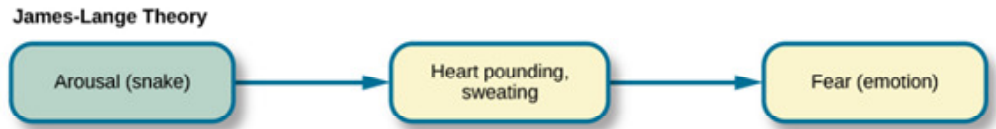
6-8 I 0x dk fl) kUr

संवेग के कई सिद्धान्त हैं जो अलग-अलग विचारों को महत्व देते हैं। प्रारम्भिक सिद्धान्त मुख्यतः शारीरिक अवस्था पर आधारित हैं। आधुनिक सिद्धान्त संज्ञानात्मक पद्धति पर आधारित हैं।

6-8-1 tEl -y& fl) kUr

अमेरिकन मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स, (1884, 1891, 1894) और डेनिश शरीरक्रिया वैज्ञानिक कार्ल लैंग (1885) ने इस सिद्धान्त को विकसित किया। इनके अनुसार संवेग एक तरह का प्रत्यक्षण है जो कि हम अपने शारीरिक परिवर्तन के आधार पर करते हैं। पहले हम

परिस्थिति को देखते हैं, तब हम परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं और तब हम लोग अपनी प्रतिक्रिया को देखते हैं। इस प्रकार जो संवेग हम महसूस करते हैं वह शारीरिक परिवर्तन के बाद होता है।

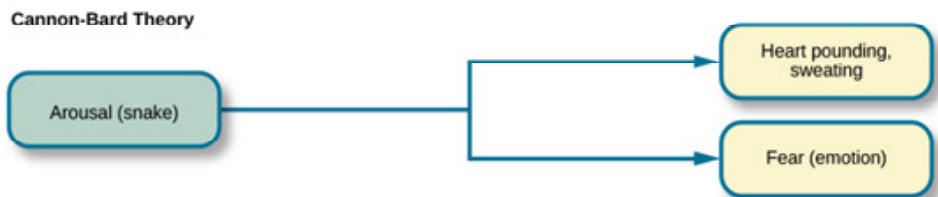


fp= 6-2% tfl -y& fl) klr

स्रोत: <https://course.lumenlearnign.com/>

6-8-2 dflu-ckMZ fl) klr

शरीरक्रिया वैज्ञानिक वाल्टर कैनन (1927) और फिलिप बोर्ड (1934) ने एक अलग सिद्धान्त को विकसित किया जिसके अनुसार जो संवेग हम अनुभव करते हैं वह हमारे मस्तिष्क के निचले हिस्से में उत्तेजना की वजह से होता है। इसके अनुसार जो संवेग हम अनुभव करते हैं और संवेग के प्रति जो व्यवहार करते हैं वे दोनों ही एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं न कि दोनों साथ-साथ पैदा होते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार पहले हम ऐसी परिस्थिति का प्रत्यक्ष करते हैं जो संवेग उत्पन्न कर सकते हैं। तत्पश्चात हाइपोथैलेमस में सक्रियता उत्पन्न होती है जो शरीर के आन्तरिक अंगों और मांसपेशियों में उत्तेजना भेजता है जो कि संवेगिक अभिव्यक्ति पैदा करता है। सेरेबल कारटेक्स में भी इन उत्तेजनाओं को भेजा जाता है जहाँ पर संवेग अनुभव किए जाते हैं।



fp= 6-3% dflu-ckMZ fl) klr

l kr%<https://courses.lumenlearning.com/>

6-8-3 'kDVj-fl xj fl) klr ; k nksdkj d fl) klr

स्कैटर और सिंगर (1962) के अनुसार संवेग हमारी शारीरिक-उत्तेजना की व्याख्या का परिणाम होता है। पहले हमारे द्वारा संवेग पैदा करने वाले हालात का प्रत्यक्षण किया जाता है फिर हमारे अन्दर शारीरिक प्रतिक्रिया होती है। अपने अनुभव के आधार पर हम इन शारीरिक प्रतिक्रियाओं की व्याख्या करते हैं। इस प्रकार संज्ञान और चिंतन मिलकर हमारे संवेग को उत्पन्न करते हैं।



fp= 6-4% 'kDVj-fl xj f) -dkjd fl) klr

स्रोत: <https://courses.lumenlearning.com/>

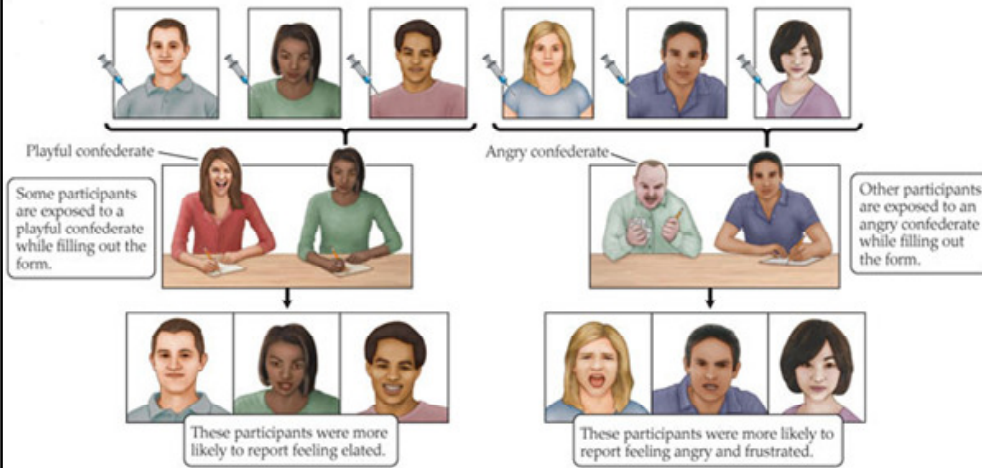
ckDI 6-3% 'kDVj rFkk fl xj }kjk fd;k x; k Á; kx

1962 में 184 भागीदारों पर एक प्रयोग किया गया (पुरुष कालेज विद्यार्थी) जिन्हें यह सूचना दी गई थी कि उन्हें विटामिन की सुई दी जा रही है जिससे उनके दृष्टि कौशल पर इसका प्रभाव देखा जा सके।

सहभागियों को डाक्टर के द्वारा प्रायोगिक औषधि (नमक का पानी जिसका कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होता) या एड्रिनालिन दिया गया। एड्रिनालिन एक ऐसी दवा होती है जो ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है जो कि तीव्र सांवेगिक अनुभव की अवस्था में उत्पन्न होता है। (उदाहरण के लिए हृदय गति बढ़ना, खून में सुगर का बढ़ना, साँस की गति तेज होना, माँसपेशियों व मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बढ़ना) जिनको एड्रिनलाइन की सुई लगाई जाती है वे कपकपाना, तेज हृदय गति, घबड़ाना आदि का अनुभव करता है।

सहभागियों को चार समूहों में बांटा गया।

- सहभागी जिन्हें एड्रिनालिन दिया गया लेकिन उन्हें इसके प्रभाव के बारे में नहीं बताया गया (असूचित समूह)
- ऐसे सहभागी जिन्हें दिया तो एड्रिनालिन गया परन्तु उनसे कहा गया कि उन्हें विटामिन की सुई दी गई है और उन्हें विटामिन के प्रभाव के बारे में बताया गया (सूचित समूह)
- सहभागी जिन्हें एड्रिनालिन दिया गया जबकि उनसे कहा गया कि उन्हें विटामिन दिया जा रहा है लेकिन उन्हें सूई के प्रभाव के बारे में गलत सूचना दी गई कि उन्हें सरदर्द व पैर में सुन्नता महसूस हो सकती है (गलत सूचित समूह)।
- सहभागी जिन्हें प्रायोगिक औषधि दिया गया (नियंत्रित समूह)



'kDVj rFkk fl xj }kjk fd;k x; k Á; kx

स्रोत: <https://2e.mindsmachine.com/figures/11/11.02.html>

सहभागियों को व्यक्तिगत रूप से उनके एक साथी के साथ रखा गया जो या तो खुश और प्रसन्नचित थे या क्रोधित और शत्रुनुमा थे। शोध का उद्देश्य सहभागियों द्वारा उनके साथी के द्वारा दिखलाए गए व्यवहार के प्रति की गई भावात्मक प्रक्रिया को देखना था।

शोध के परिणाम द्वारा यह प्रदर्शित होता है कि सहभागियों द्वारा उनमें शारीरिक उत्तेजना की व्याख्या दूसरों के द्वारा दिखलाए गए व्यवहार व वातावरणीय संकेतों के आधार पर निर्धारित होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह सिद्धान्त संवेग के प्रति संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

6-8-4 vkuu ifriqV idYiuk

चार्ल्स डार्विन (आदमी और जानवर में संवेग की अभिव्यक्ति, 1998) ने कहा कि आनन अभिव्यक्ति सभी जातियों में समान रूप से पाई जाती है। यह संस्कृति से प्रभावित नहीं होती है। इसी प्रकार का विचार आनन प्रतिपुष्टि अवधारणा (जेजैक और मैटोसे, 1992) भी मानते हैं कि आनन अभिव्यक्ति न केवल मस्तिष्क के प्रकट संवेग को उत्प्रेरित करता है बल्कि संवेग का कारण भी बनता है। यह सिद्धान्त जेम्स लैंग सिद्धान्त की पुष्टि करता है।

6-8-5 l dx dk l KkukRed e/; LFkrk fl) kUr

लेजारस (1970) का कहना है कि जो सूचनाएँ हमें मिलती हैं, उनका मूल्यांकन महत्वपूर्ण होता है। मध्यस्थता का मतलब है कि उद्दीपन और उसके प्रति किए जाने वाले व्यवहार के बीच में संज्ञानात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया आती है। सूचनाओं के मूल्यांकन में संज्ञान सम्मिलित होता है जिसमें वातावरण से मिलने वाली सूचनाओं को देखा व उनका मूल्यांकन किया जाता है, शारीरिक प्रतिक्रिया को देखा जाता है, और बीते हुए अनुभव व उससे सम्बन्धित जो स्मृतियाँ होती हैं, उनका विश्लेषण किया जाता है, तुलना की जाती है तथा सभी सूचनाओं को संगठित करके परिस्थिति का मूल्यांकन किया जाता है। यही मूल्यांकन हमारे संवेग, जो हम महसूस करते हैं, का कारण बनता है। इस प्रकार संवेग को अनुभव करने में मूल्यांकन अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उत्तेजना (साँप) मूल्यांकन डर/ हृदय गति तेज होना पसीना आना

Lazarus' Cognitive-mediational Theory



fp=% 6-5% ystkj l dk l KkukRed eè; LFkrk fl) kUr

स्रोत: <https://courses.lumenlearning.com/>

6-8-6 fojks/kh i fØ; k fl) kUr

इस सिद्धान्त के अनुसार "किसी उद्दीपन के प्रति भावात्मक प्रक्रिया उत्पन्न होने के बाद अपने आप एक विरोधी प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती है। उद्दीपन के बार-बार उत्पन्न होने पर उसके प्रति उत्पन्न पहली प्रतिक्रिया कमजोर पड़ जाती है और विरोधी प्रक्रिया (प्रतिक्रिया) मजबूत हो जाती है (बारोन, 2005)। इस प्रकार भौतिक विज्ञान का नियम है कि हर एक क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती है, और यह संवेग पर भी लागू होता है। जब एक व्यक्ति नशा करना शुरू करता है तो शुरू में वह तीव्र खुशी का अनुभव करता है हालाँकि बार-बार ऐसा करने से अर्थात् नशा लेने से आनन्द की अनुभूति में कमी आ सकती है और प्रतिकार से सम्बन्धित प्रतिक्रिया मजबूत हो जाती है। इस प्रकार अब व्यक्ति नशा उन नकारात्मक अनुभूति को न महसूस करने के लिए करता है जो कि नशा न करने की वजह से उत्पन्न होती है न कि किसी आनन्द की अनुभूति के लिए।

ckrk izu 3

1) निम्नलिखित सिद्धान्तों की मूल धारणाओं को प्रस्तुत कीजिए।

fl) klr

fooj .k

जेम्सलांगे सिद्धान्त

कैनन बार्ड सिद्धान्त

स्कैटर सिंगर सिद्धान्त

विरोधी प्रक्रिया सिद्धान्त

संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धान्त

6-9 I dx dh eki

संवेग को मापना एक जटिल कार्य है क्योंकि इसकी रचना बहुआयामी है। संवेग में व्यवहारगत, शारीरिक प्रतिक्रिया के साथ-साथ आत्मगत भाव ही होते हैं और प्रत्येक ऐसा उपकरण जिसके लिए माना जाता है कि वह संवेग को नाप रहा है वास्तव में वह संवेग के किसी एक घटक को ही नाप रहा होता है (डेसमेट, 2005)।

1) **v'kkfCnd mi dj.k%** ऐसे उपकरण जो मुख्य रूप से संवेग के शारीरिक पहलू को मापते हैं, इस समूह में रखे जाते हैं। जैसा कि हम इस भाग में पढ़ चुके हैं कि संवेग की उत्पत्ति के साथ-साथ उसकी अभिव्यक्ति भी होती है। इस प्रकार आनन अभिव्यक्ति व मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर संवेग को मापा जा सकता है। आनन अभिव्यक्ति को फोटो खींचकर व वीडियो बनाकर देखा जा सकता है व इसकी विवेचना की जा सकती है। केसर और वेहर्ल द्वारा "आनन अभिव्यक्ति विवेचना उपकरण" नामक उपकरण विकसित किया गया है। आनन क्रिया को डिंग सारणी का भी प्रयोग चेहरे की मांसपेशीय गतिविधियों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार से स्वर उपकरण का भी प्रयोग कुछ खास संवेग जो कि स्वर संकेत तरीका से सम्बन्धित होते हैं, के लिए किया जाता है।

संवेग को शारीरिक घटक के आधार पर भी मापा जा सकता है। एक महत्वपूर्ण शारीरिक माप जो कि संवेग को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है वह पॉलीग्राफ है। पॉलीग्राफ किसी व्यक्ति के तंत्रिका तंत्र में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों को मापता है। सूक्ष्म रूप में होने वाले परिवर्तनों को विद्युत संकेतों के संदर्भ में दर्ज किया जाता है। इसे कागज के रोल पर अंकित किया जाता है। कोसलाइन और रोसनवबर्ग (2013) के अनुसार पालीग्राफ "एक मशीन है जो कि अनुकम्पी और सहानुकम्पी तंत्रिका तंत्र में होने वाली गतिविधियों को देखकर झूठ को पकड़ने में प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से इस मशीन द्वारा यह देखा जाता है कि त्वचा कितनी आसानी से बिजली, सांस और हृदय गति का संचालन करती है।" पॉलीग्राफ में जो तरीका अपनाया जाता है वह यह है कि सबसे पहले संवेदक को व्यक्ति के शरीर से लगाया जाता है तब व्यक्ति से बहुत से प्रश्न पूछे जाते हैं और व्यक्ति के उत्तर देने पर उसकी शारीरिक प्रतिक्रिया को नापा जाता है। पॉलीग्राफ का प्रयोग मुख्य रूप से न्यायिक व अपराध सम्बन्धी मनोविज्ञान, अपराध विज्ञान, कानून प्रवर्तन आदि जगह किया जाता है। इस सन्दर्भ में मुख्यतः चार तरीकों से प्रश्न पूछे जाते हैं।

क) पहला तरीका जिसके द्वारा प्रश्न पूछा जाता है वह है संगत/असंगत प्रविधि।

उदाहरण के लिए अपराध से सम्बन्धित कुछ संगत व असंगत प्रश्न पूछे जाते हैं जो कि तटस्थ रूप में होते हैं। इन दो प्रकार के प्रश्नों के परिणामस्वरूप व्यक्ति की प्रतिक्रिया के दौरान होने वाले शारीरिक परिवर्तन को मापा जाता है। यहाँ यह माना जाता है कि जब शारीरिक प्रतिक्रिया अलग होती है तो व्यक्ति झूठ बोल रहा होता है।

- ख) दूसरा तरीका **fu; f=r iz u ifof/k** है। इसमें तुलनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं जिनमें सांवेगिक प्रतिक्रिया के होने की उम्मीद की जाती है जो कि गुनाह सम्बन्धित प्रश्न से सम्बन्धित होते हैं।
- ग) एक दूसरी प्रविधि **xpkq Kku ijh{k.k** है जिसमें परोक्ष रूप से प्रश्न किए जाते हैं जिसमें ज्यादातर के उत्तर देते हैं। जो किसी दोष भाव में रहते हैं। आगे बहुविकल्प वाले प्रश्न पूछे जाते हैं।
- घ) चौथा प्रविधि **nkskhko fØ; k ifof/k** है जहाँ व्यक्ति की उन प्रतिक्रियाओं को देखा जाता है जो कि वे उस समय व्यक्त करते हैं जब उनके सामने उन्हीं के द्वारा किए गए व्यवहार से सम्बन्धित कथन प्रस्तुत किए जाते हैं।

इस प्रकार पॉलीग्राफ का प्रयोग न केवल संवेग मापन के लिए किया जाता है बल्कि झूठ पहचानने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। हांलाकि पॉलीग्राफ द्वारा झूठ को सही तरीके से पहचानने से सम्बन्धित कई तरह के प्रश्न किए जाते हैं। अशाब्दिक प्रविधि का मुख्य लाभ यह है कि यहाँ किसी भाषा का प्रयोग नहीं होता है (इस प्रकार इन पर संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ता है) और ये अपेक्षाकृत कम व्यक्तिगत होते हैं। यद्यपि इस प्रविधि से हानि यह है कि इसके द्वारा जटिल संवेग और मिश्रित संवेग को मापना सम्भव नहीं है इसलिए इस प्रविधि का प्रयोग मूल संवेग में ही प्रभावकारी ढंग से किया जाता है।

- 2) **vkre-o.ku iz ukoyh%** संवेग को मापने का एक तरीका आत्म वर्णन प्रश्नावली भी है इसमें व्यक्ति को प्रश्नावली पर प्रतिक्रिया करने को कहा जाता है। इस तरह की माप मुख्य रूप से व्यक्तिगत घटकों का मापन करती है। व्यक्तिगत भावना केवल आत्म बयान की सहायता से ही नापे जा सकते हैं। ऐसी प्रश्नावली में जो प्रश्न पूछे जाते हैं वे कुछ इस प्रकार के होते हैं जैसे कि "तुम्हें कैसा लग रहा है? क्या तुम दुखी हो?" आदि। ऐसे ही रेटिंग पैमानों का भी प्रयोग इसके लिए किया जा सकता है। इसका प्रयोग किसी संवेग और साथ ही साथ मिश्रित संवेगों को नापने के लिए प्रभावकारी ढंग से किया जा सकता है। अन्य वर्णन प्रश्नावली का एक अच्छा उदाहरण सकारात्मक और नकारात्मक भाव सारणी (Positive and Negative Affect Schedule/PANAS-X) है। इस प्रश्नावली के द्वारा 11 तरह के संवेग प्रदर्शित किये जाते हैं जिनका नाम "डर (fear), दुःख (sadness), बैर (hostility), अपराध बोध (guilt), लज्जा (shyness), थकान (fatigue), आश्चर्य (surprise), प्रसन्नता (joviality), आत्म आश्वासन (self assurance), सावधानी (attentiveness) और निस्तब्धता (serenity) है" (आइसनेक, 2013)

यद्यपि आत्म वर्णन प्रश्नावली द्वारा संवेगों को मापने के कई लाभ हैं फिर भी इसकी अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें सामाजिक अनुकूलता जैसे दोष देखने को मिलते हैं जिनमें व्यक्ति अपनी वास्तविक भावना को प्रकट न करके सामाजिक अनुकूलित व्यवहार करता है। इसके अलावा क्योंकि ऐसे माप शाब्दिक होते हैं। अतः इसमें भाषा की जरूरत होती है और यह जरूरी नहीं होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रयोग किए जाने वाली भाषा से हम उसके वास्तविक अनुभव को माप सकें।

क्योंकि अब हम इस खंड के अन्तिम चरण में आ चुके हैं तो यहाँ उन सभी मुख्य बिन्दुओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है जो हम ने इस इकाई में सीखा है।

- संवेग एक ऐसी मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसके चार घटक होते हैं – (1) सकारात्मक या नकारात्मक व्यक्तिगत अनुभव, (2) शारीरिक उत्तेजना, (3) विशिष्ट मानसिक प्रक्रिया और (4) संचित सूचनाओं की सक्रियता तथा प्रकट व्यवहार की विशेषताएँ।
- हम कई तरह के संवेगों का अनुभव करते हैं व उन्हें प्रकट करते हैं। ऐसे संवेगों की श्रेणी जो कि सभी मनुष्यों द्वारा समान रूप से प्रकट किए जाते हैं उन्हें हम मूल संवेग कहते हैं। ये क्रोध, खुशी, डर, दुःख और आश्चर्य नामक संवेग है। यह संवेग जन्मजात होते हैं व सभी मनुष्यों द्वारा प्रकट किए जाते हैं।
- संवेग को उत्पन्न करने में सामाजिक संदर्भों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फ्रिज्दा, (1969) के अनुसार संवेग के बारे में किसी तरह का निर्णय लेते समय हम प्रायः व्यक्ति के आनन अभिव्यक्ति व अशाब्दिक सूचनाओं का सहारा लेते हैं। यद्यपि सीखने का, संवेग की अभिव्यक्ति पर असर पड़ता है।
- संवेग का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह हमारे जीवन में मुख्य रूप से तीन तरह के कार्य करता है। यह व्यक्ति को क्रिया करने के लिए तैयार करता है। यह व्यक्ति द्वारा भविष्य में किए जाने वाले व्यवहार की दिशा को तय करने में भूमिका निभाता है और यह दूसरों के साथ प्रभावकारी ढंग से अन्तःक्रिया करने में मदद करता है।
- संवेगात्मक प्रक्रिया के मुख्य रूप से छह घटक होते हैं जो कि इस प्रकार हैं: (1) संज्ञानात्मक मूल्यांकन, (2) व्यक्तिगत अनुभव, (3) सोचने और कार्य करने की प्रवृत्ति, (4) आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन, (5) आनन अभिव्यक्ति और (6) संवेग के प्रति प्रतिक्रिया।
- मनोदशा “एक ऐसी भावात्मक अवस्था होती है जो कि चेतना का आधार तैयार करती है तथा संवेग की अपेक्षा लम्बे समय तक रहती है” (फीस्ट और रोसनवर्ग, 2015)। खास तरह की मनोदशा कुछ खास तरह के संवेगों को, अन्य संवेगों की अपेक्षा ज्यादा प्रकट करती है।
- संवेग के स्वरूप को समझने के लिए प्रस्तुत किए गए मुख्य सिद्धान्तों के नाम इस प्रकार हैं – जेम्स लांगे सिद्धान्त, कैनन बोर्ड सिद्धान्त, स्कैटर-सिंगर सिद्धान्त, आनन प्रतिपुष्टि परिकल्पना, विरोधी प्रक्रिया सिद्धान्त और संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धान्त।
- संवेग को इन दो तरीकों से नापा जाता है (i) अशाब्दिक उपकरण (ii) आत्म वर्णन प्रश्नावली।

6-11 | ijkykdu izu

- 1) निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभव शारीरिक उत्तेजना से उत्पन्न होता है।
 - क) जेम्स-लैंग
 - ख) स्कैटर-सिंगर दो कारक

- ग) कैनन- बार्ड
घ) लेजारस
- 2) विभिन्न संस्कृतियों के लोग किस आनन अभिव्यक्ति को पहचान सकते हैं?
क) डर
ख) क्रोध
ग) अरुचि/चिढ़
घ) इनमें से सभी
- 3) कौन सा सिद्धान्त कहता है कि क्योंकि हम दौड़ते हैं इसलिए डरते हैं या हम प्रहार करते हैं इसलिए क्रोधित होते हैं।
क) शैक्टर और सिंगर
ख) जेम्स-लैंग
ग) कैनन-बार्ड
घ) संज्ञानात्मक
- 4) मनोदशा
क) अनके संवेगों का अत्यधिक तीव्र रूप होती है
ख) सूक्ष्म भावात्मक अंतर्प्रवाह होती है।
ग) बुनियादी शारीरिक बदलाव को प्रदर्शित करती है।
घ) केवल सकारात्मक संवेगों को प्रदर्शित करती है।
- 5) संवेग से आप क्या समझते हैं? संवेग के घटकों का वर्णन कीजिए।
6) जेम्स-लैंग सिद्धान्त और शैक्टर-सिंगर सिद्धान्त में अन्तर बताइए?
7) संवेग को परिभाषित कीजिए और इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।
8) संवेग के विरोधी प्रक्रिया सिद्धान्त पर प्रकाश डालिए
9) संवेग को किस प्रकार नापा जा सकता है। इसके बारे में वर्णन कीजिए।

6-12 eq; 'kCn

l dx : यह एक व्यक्तिगत अवस्था है जो अक्सर भाव के रूप में वर्णित होता है।

l dx dk tfl yk fl)klr : पहले शारीरिक उत्तेजना होती है तत्पश्चात हम संवेगात्मक अनुभव करते हैं।

l dx dk l kKukRed fl)klr % संवेग उद्दीपन के विवेचना का परिणाम होता है।

Hkko % एक ऐसी भावात्मक अवस्था है जो कि संवेगात्मक अवस्था की अपेक्षा काफी सरल होती है। इसका

स्वरूप आत्मगत होता है और इसमें होने वाले शारीरिक बदलाव को मुश्किल से ही देखा जा सकता है।

I 0x dk fodkl kRed nf"Vdksk : चार्ल्स डार्विन द्वारा इसको प्रस्तुत किया गया। इनके अनुसार मूल संवेग का एक विकासात्मक आधार होता है जो कि हमारी जाति/नस्ल से हमे विरासत के रूप में मिली है इस लिए अलग-अलग संस्कृति के लोग आनन अभिव्यक्ति के द्वारा अलग अलग/कई तरह के संवेगों को पहचानने में सक्षम होते हैं।

I 0x dk dſu-ckMz fl) kUr : इस सिद्धान्त के अनुसार सबसे पहले हम संवेग उत्पन्न कर सकने वाली परिस्थिति का प्रत्यक्षण करते हैं। तत्पश्चात हमारे हाइपोथैलेमस में सक्रियता होती है जो कि हमारे शरीर के आन्तरिक अंगों और माँसपेशियों को उत्तेजना भेजता है जो कि ये संवेगों को अभिव्यक्ति करते हैं।

6-13 I nHkZ , oa i <us ds I q>ko

Baron, R. A. (2005). *Psychology*. Delhi: Pearson Education.

Buck, R. (1988). *Human Motivation and Emotion*. John Wiley & Sons.

Caicedo, D. G and Beuzekom, M. (2006). How Do you Feel? An Assessment of Existing Tools for the Measurement of Emotions and their Application in Consumer Products research. Retrieved from <http://bluehaired.com/corner/wp-content/uploads/2008/10/final-report-assessment-of-existing-tools-for-the-measurement-of-emotions.pdf>.

Candland, D. K; fell, J. P; Ken, Ernest; Leshner, A. I; Tarpy, R. M and Plutchik, R. (1977). *Emotion*. USA: Wadsworth Publishing Company.

Ciccarelli, S. K and White, J. N. (2015). *Psychology*. New York: Pearson Education Limited.

Desmet, P. (2005). Measuring Emotion: Development and Application of an Instrument to Measure Emotional Responses to products. In M. A. Blythe, A. F. Monk, Overbeeke and P. C. Wright (Eds.) *Funology*. USA: Kulwer Academic Publishers (112-123) from <http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.104.1400&rep=rep1&type=pdf>

Edwards, D. C. (1998). *Motivation and Emotion: Evolutionary, Physiological, Cognitive, and Social Influences* (Vol. 3). SAGE publications.

Eysenck, M. W. (2013). *Simply Psychology*. New York: Psychology Press.

Feist, G. J and Rosenberg, E. L. (2015). *Psychology: Perspectives and Connections*. New York: McGraw- Hill Education.

Feldman, R. S. (2015). *Essentials of Understanding Psychology*. New York: McGraw- Hill Education.

Gerrig, R. J and Zimbardo, P. G. (2006). *Psychology and Life*. Delhi: Pearson Education.

Gorman, P. (2004). *Motivation and Emotion*. Routledge.

Hall, N. C., & Goetz, T. (2013). *Emotion, motivation, and Self-regulation: A handbook for Teachers*. Emerald Group Publishing.

Hewstone, M; Fincham, F. D and Foster, J. (2005). *Psychology*. USA: Blackwell Publishing.

Jain. Sashi. (2009). *Introduction to Psychology*. Jalandhar: Kalyani Publishers.

Kosslyn, S. M and Rosenberg, R. S. (2013). *Introducing Psychology*. India: Pearson Education.

Mishra, B. K. (2016). *Psychology: The Study of Human Behaviour*. Delhi: PHI Learning Private Limited.

Morgan, C. T; King, R. A; Weisz, J. R and Schopler, J. (1996). *Introduction to Psychology*. Delhi: Tata McGraw- Hill Publishing Company Limited.

Myers, D. G. (2010). *Exploring Psychology*. New York: Worth Publishers.

Nolen-Hoeksema, S., Fredrickson, B., Loftus, G., & Lutz, C. (2009). *Atkinson & Hilgard's Psychology An Introduction to Psychology*. United Kingdom: Cengage Learning.

Parneswaran, E. G and Beena, C. (2004). *An Invitation to Psychology*. Delhi: Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Power, M and Dalglish, T. (2016). *Cognition and Emotion*. New York: Psychology Press.

Rathus, S. (2008). *Psychology: Concepts and Connections*. United States: Wadsworth Cengage Learning.

6-14 fp=ka dk l nhlz

Basic emotions. Retrieved January 08, 2018, from <https://managementmania.com/en/six-basic-emotions>

James-Lange Theory. Retrieved October 08, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/waymaker-psychology/chapter/emotion/>

Cannon-Bard Theory. Retrieved October 08, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/waymaker-psychology/chapter/emotion/>

Schacter and Singer Two-factor Theory. Retrieved October 08, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/>

Lazarus' Cognitive Theory. Retrieved October 08, 2018, from <https://courses.lumenlearning.com/waymaker-psychology/chapter/emotion/>

The classic Schacter and Singer Experiment. Retrieved October 08, 2018, from <https://2e.mindsmachine.com/figures/11/11.02.html>

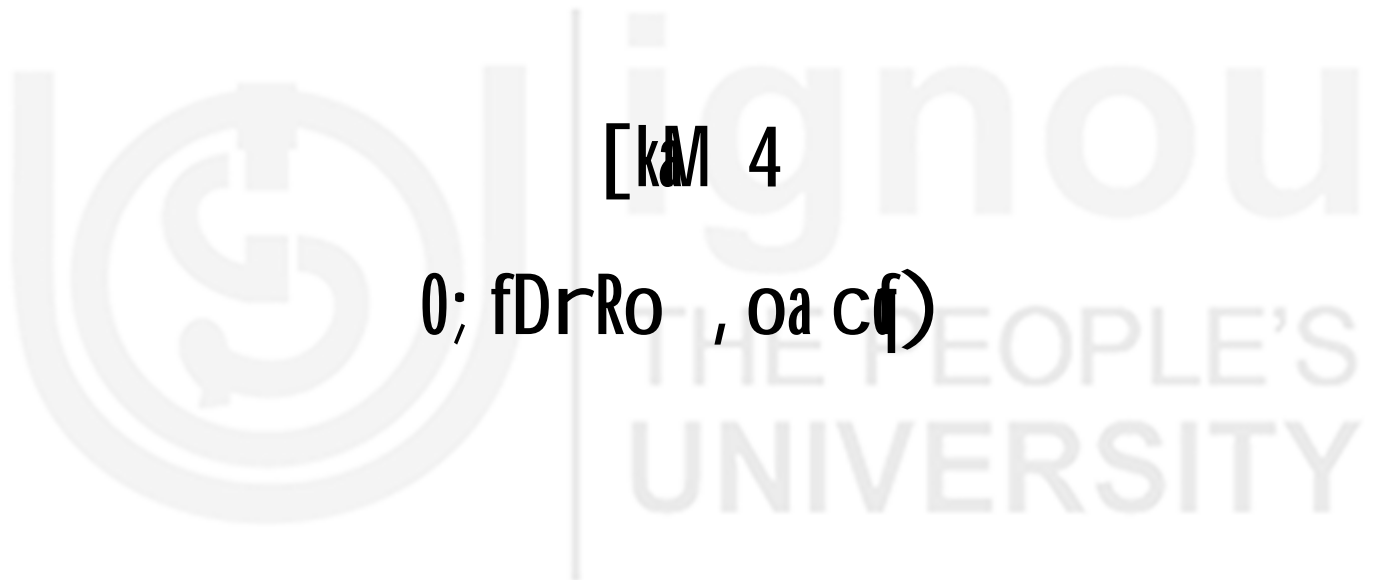
- For more on concept of emotion, visit
 - <http://www.indiana.edu/~p1013447/dictionary/emodefs.htm>
 - <http://www.oxfordhandbooks.com/view/10.1093/oxfordhb/9780199235018.001.0001/oxfordhb-9780199235018-e-2>
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/838f/c631b95738f45d97124cc3809f6fcbd92b07.pdf>
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/fe58/786f82c0bbb1ee8a37c4d1f3ca3deb844c1f.pdf>
- For information on theories of emotions, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/waymaker-psychology/chapter/emotion/>
 - <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/theories-of-emotion/>
 - <http://www.psychologydiscussion.net/emotion/theories-of-emotions-notes-on-3-theories-of-emotions/678>
 - <https://biblio.ugent.be/publication/790890/file/6823319>
- For more on measurement of emotions, visit
 - https://www.ocf.berkeley.edu/~eerlab/pdf/papers/2009_Mauss_Measure_of_emotion.pdf
 - <https://www.magnus.nl/wp-content/uploads/2012/03/papermeasuring.pdf>
 - <https://www.affective-science.org/pubs/2016/barrett-navigating-2016.pdf>
 - <https://edu.cs.uni-magdeburg.de/EC/lehre/wintersemester-2011-2012/seminar/material-1/What%20are%20emotions-%20And%20how%20can%20they%20be%20measured.pdf>

oLr(u"B ç'uka ds mUkj

1) (a), 2) (d), 3) (b), 4) (b)

[kM 4

0; fDrRo , oa cf)



: ij\$kk

7.0 सीखने का उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 व्यक्तित्व की परिभाषा एवं प्रकृति

7.3 व्यक्तित्व के सिद्धान्त

7.3.1 फ्रायड का व्यक्तित्व सम्बन्धी सिद्धान्त

7.3.1.1 नव-फ्रायडवादी : फ्रायड के अनुयायी तथा विरोधी आलोचक

7.3.2 व्यक्तित्व का व्यवहारवादी उपागम

7.3.3 व्यक्तित्व का मानवतावादी उपागम

7.3.4 व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त

7.3.4.1 आलपोर्ट का लक्षणात्मक सिद्धान्त

7.3.4.2 कैटेल का लक्षणात्मक सिद्धान्त

7.3.4.3 आइजेंक का लक्षणात्मक सिद्धान्त

7.3.4.4 मैकरे तथा कोस्टा का पंच घटकीय सिद्धान्त

7.3.5 व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा

7.4 व्यक्तित्व मापन

7.4.1 कागज और पैनसिल परीक्षण

7.4.2 प्रक्षेपीय तकनीक

7.5 सारांश

7.6 मुख्य शब्द

7.7 पुनरावलोकन प्रश्न

7.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

7.9 चित्रों का संदर्भ

7.10 ऑनलाइन स्रोत

7-0 I h[kus ds mÍ\$;

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे कि,

- व्यक्तित्व को परिभाषित कर सकें;
- व्यक्तित्व की प्रकृति को जान सकें;
- व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धान्तों की तुलना तथा निष्कर्ष कर सकें; तथा
- व्यक्तित्व के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकें।

* डॉ. आरती सिंह, इम्नू नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

7-1 iLrkouk

लोगों के बीच व्यक्तित्व पर प्रायः चर्चाएँ होती रही हैं। फिर भी व्यक्तित्व की एक सुनिश्चित परिभाषा तय करना तथा उसकी प्रकृति को समझना और समझाना मनोवैज्ञानिकों के लिए सदैव एक चुनौती पूर्ण कार्य रहा है। जब हम यह कहते हैं कि “वह एक अच्छी डॉक्टर है” अथवा “मैं वास्तव में एम.एस. धोनी को पसंद करता हूँ”। तब क्या हम सही अर्थों में उस डॉक्टर के चिकित्सा संबंधी ज्ञान तथा अनुभवों के बारे में पूरी तरह जान गए होते हैं? क्या आप एम.एस. धोनी को इसलिए पसंद करते हो कि वह एक बहुत अच्छा खिलाड़ी है या फिर वह अपनी टीम का नेतृत्व बहुत अच्छी तरह से करता है, या फिर उसके व्यावहारिक दृष्टिकोण से आप प्रभावित हैं। क्या हम किसी के व्यक्तित्व को ठीक से परिभाषित कर पाते हैं? किसी के व्यक्तित्व को हम सही अर्थों में किस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं?

पर्सनाल्टी शब्द लैटिन भाषा के शब्द ‘परसोना’ से लिया गया है। रोमन थियेटर में काम करने वाले कलाकार जो मुखौटा लगाकर अभिनय करते थे उसे ‘परसोना’ कहा जाता था। जैसे-जैसे किरदार बदलते थे वैसे ही मुखौटे भी बदल जाया करते थे। इस आधार पर पर्सनाल्टी का मतलब है ‘परसोना’ का लगातार बदलते जाना। हम मनुष्यों का व्यवहार स्थिर नहीं होता। वह सदैव बदलता रहता है। इसीलिए किसी के व्यवहार के बारे में पहले से कुछ नहीं कहा जा सकता। कभी-कभी हम उसी तरह का व्यवहार करते हैं जैसी हमसे अपेक्षा की जाती है परन्तु कभी-कभी हम उससे थोड़ा हटकर भी व्यवहार करने लग जाते हैं। इतना ही नहीं कभी-कभी हमारा व्यवहार इतना बदल जाता है कि जैसा लोगों ने हमारे बारे में सोचा था उससे हम बिल्कुल अलग लगते हैं। हमारा व्यवहार सदा बदलता रहता है फिर भी उसका एक स्वरूप होता है। व्यक्तित्व की अवधारणा को लेकर कुल मिलाकर व्यापक रूप से भ्रम की स्थिति बनी हुई है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की खासियत होती है और उसका व्यवहार अपेक्षाकृत रूप से एक तरह का होता है। जिनपर उसके विचार और भावनाओं का प्रभाव पड़ता है (नेल्सन तथा मिलर 1995, जुकरमैन, 1995)। इस इकाई में हम व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्तित्व की प्रकृति और उसके विभिन्न सिद्धान्तों पर विचार करेंगे। हम व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक आयाम पर भी विचार करेंगे।

7-2 0; fDrRo dh ifjHkk"kk , oa iNfr

किसी व्यक्ति की वे विशेषताएँ जिनके आधार पर उसके चरित्र को सुनिश्चित किया जा सकता है, उसका व्यक्तित्व कहलाता है। इसके लिए हमें यह देखना होगा कि वे कौन-सी चीजें हैं जिनकी वजह से व्यक्ति एक जैसे लगते हैं अथवा अलग-अलग लगते हैं। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक एसोसियेशन के अनुसार “किसी व्यक्ति के सोचने, महसूस करने, तथा व्यवहार करने के जो खास ढंग होते हैं वे ही उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं” तथा “व्यक्तित्व का अध्ययन दो आधारों पर किया जा सकता है, एक, किसी विशेष संदर्भ में व्यक्ति के व्यवहार में आने वाले परिवर्तन जैसे वह व्यक्ति सामाजिक है या समाज से चिढ़ता है तथा दूसरा है उसके विभिन्न अंग मिलकर किस प्रकार कार्य करते हैं। व्यक्तित्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि उसकी ऐसी विशेषताएँ क्या हैं जो खास परिस्थितियों में खास ढंग से बदल जाती हैं” (शुल्ज एंड शुल्ज, 2013, पृष्ठ 8)

हर व्यक्ति में कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जिनके आधार पर वह व्यक्ति दूसरों के साथ व्यवहार करता है। वह कैसे बोलता है और कैसे व्यवहार करता है, यह सब उसके व्यक्तित्व के अंतर्गत ही आता है और विभिन्न परिस्थितियों में लोग जिस तरह का व्यवहार करते हैं, वही उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ समझी जाती हैं। इन विशेषताओं के आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि किन परिस्थितियों में वह व्यक्ति कैसा व्यवहार करेगा, इस प्रकार उसके व्यवहार करने के तरीकों से उसके व्यक्तित्व का पता लगता है। किसी व्यक्ति के

व्यक्तित्व की विशेषताएँ विचारों, भावनाओं तथा व्यवहारों से निर्धारित की जा सकती हैं। किसी व्यक्ति का समय का पाबंद होना, जिम्मेदार होना, ईमानदार होना, प्रतिभाशाली तथा विवेकी होना, उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं की व्याख्या करता है।

व्यक्तित्व की विशेषताओं के आधार पर यह पता लगाया जा सकता है कि वह व्यक्ति 'अंतर्मुखी' है या 'बहिर्मुखी'। उसमें, नेतृत्व के गुण हैं या नहीं। लोगों को सामान्य विशेषताओं के आधार पर उनका वर्गीकरण किया जा सकता है तथा उनके व्यवहार के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। संदर्भ यह है कि किसी व्यक्ति की विशेषताओं का पता कैसे लगाया जाय, और यदि लगा लिया गया है तो उस व्यक्ति में वे विशेषतायें कब तक टिकी रहेंगी यह कैसे जाना जाये। ऐसी स्थिति में मनुष्य के अन्दर की ऐसी विशेषताओं का पता लगाना बहुत कठिन होता है जो उसके व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं, परन्तु एक बात तय है कि मनुष्य का व्यवहार उसके चरित्र में निहित स्थायी विशेषताओं जैसा ही होता है और इन्हीं के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है। इस अवधारणा को अन्योन्य क्रियावादी अवधारणा (Interactionist Perspective) कहा जाता है। इस अवधारणा को प्रायः सभी मनोवैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है।

7-3 0; fDrRo ds fl) kUr

व्यक्तित्व के बारे में आरम्भ में जो सिद्धान्त सामने आए वे शारीरिक संरचना पर आधारित हुआ करते थे। जर्मनी के चिकित्सक फ्रेंज़ जोसफ गॉल (1758-1828) के विचार से व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी खोपड़ी के उभार से मापा जा सकता है। जिसे मस्तिष्क विज्ञान कहा जाता था। विलियम हारवर्ट शैल्डन (1898-1977) के अनुसार व्यक्तित्व का निश्चयन व्यक्ति के शरीर की आकृति से किया जा सकता है। जैसे कोई व्यक्ति दुबला-पतला है या लम्बा-चौड़ा भरे हुए शरीर वाला है, या फिर हृष्ट-पुष्ट और मजबूत मांसपेशियों वाला है। दुबले-पतले व्यक्ति को कृशकाय कहा जाएगा तथा लम्बे-चौड़े और भारी-भरकम शरीर वाले को अन्तः आकृतिक कहा जाएगा तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले व्यक्ति को मध्यकाय कहा जायेगा। व्यक्तित्व के निश्चयन की इस विधि को देह विज्ञान कहा जाता था।

लेकिन समय के साथ-साथ व्यक्तित्व के बारे में धारणाएँ बदलती चली गईं। शरीर विज्ञान और शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व के आंकलन का तरीका गैर-वैज्ञानिक ही माना गया। आधुनिक मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व का आंकलन करते हैं। वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करने के लिए नए परिप्रेक्ष्य सामने रखें। इस भाग में व्यक्तित्व के प्रमुख सिद्धांत की व्याख्याएँ की गई हैं :

7-3-1 Ýk; M dk 0; fDrRo fl) kUr

सिंगमंड फ्रायड एक चिकित्सक थे। उन्होंने व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त को जन्म दिया। उनके दिमाग में यह सिद्धान्त तब आया जब वे अपने क्लीनिक में रोगियों का इलाज कर रहे थे। फ्रायड के सिद्धान्त के अनुसार अचेतन मन की प्रविधियाँ प्रमुख रूप से कार्य करती हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व और उसका व्यवहार उन इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा मनोविकारों से संबंधित होते हैं, जिनके बारे में प्रायः मनुष्यों को जानकारी नहीं होती। फ्रायड के अनुसार मनुष्य का आक्रमक व्यवहार तथा कामवासनाएँ जैसे तथ्य उसके व्यक्तित्व के निर्माण में विशेष रूप से योगदान देते हैं।

हमारा दिमाग किस तरह कार्य करता है, इसके लिए फ्रायड ने बताया कि,

- दिमाग का स्थलाकृतिक मॉडल यह होता है कि मस्तिष्क किस प्रकार बना है और उसकी व्यवस्था क्या होती है।

- हमारे व्यक्तित्व का संरचनात्मक मॉडल।
- विकास की मनोसामाजिक अवस्थाएँ।

fnelx dk LFkykNfrd ekMy

फ्रायड के अनुसार दिमाग को तीन भागों में बांटा जा सकता है – चेतन मन, अवचेतनमन तथा अचेतन मन। फ्रायड ने अपने इस विचार की व्याख्या एक लेख में की थी जो “द सायकोपैथोलॉजी ऑफ एवरी डे लाइफ” नामक पत्रिका में 1901 में प्रकाशित हुआ था। फ्रायड के अनुसार हमारा चेतन मन सामाजिक सूचनाएँ ग्रहण करता है। इनमें तरह-तरह के विचार भावनाएँ और गति विधियाँ होती हैं जिनकी खबर हर समय चेतन मन को होती है। अग्रचेतन मन अथवा अवचेतन मन उन सूचनाओं तथा भावनाओं से भरा रहता है जिनकी जानकारी मनुष्य को नहीं होती लेकिन यदि मनुष्य ध्यान दे तो उसे पता लग जाता है कि उसके अवचेतन मन में क्या हैं। मन का तीसरा स्तर अचेतन मन कहलाता है। मन के इस हिस्से में सामाजिक कुंठाएँ, इच्छाएँ तथा वे सब मनोविकार भरे रहते हैं जो मनुष्य के बिल्कुल निजी होते हैं और प्रायः समाज में जिनके लिए स्वीकृति नहीं मिलती। इन कुंठाओं की जानकारी उस मनुष्य को भी नहीं होती जिसके मन में ये कुंठाएँ छिपी रहती हैं। फ्रायड का यह मानना है कि हम अपने जीवन में जितने भी काम करते हैं उन सब में अचेतन मन में अंतर्निहित ये कुंठाएँ और वासनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

gekjs 0; fDrRo dk I jpkRed ekMy

फ्रायड के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व तीन अवयवों से बनता है। ये हैं – इड, अहं तथा पराहम। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इड, अहं और पराहम इन तीनों अवयवों की कोई भौतिक संरचना अथवा आकृति नहीं होती परन्तु इनका अस्तित्व होता है।

bm%मनुष्य के व्यक्तित्व का यह भाग अचेतन अवस्था में काम करता है। यह जिन आधारभूत घटकों से संचालित होता है, वे हैं – मौलिक प्रवृत्तियाँ, शारीरिक आवश्यकताएँ तथा आक्रामक आवेग। पहचान की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्म से ही मौजूद रहती है तथा यह पीढ़ी-दर पीढ़ी मनुष्य के अस्तित्व के आरंभ से ही चली आ रही है। पहचान की प्रवृत्ति मनुष्य की मौलिक प्रवृत्ति होती है। इसी प्रवृत्ति से बाद में अहं और पराहम का विकास होता है। इड की प्रवृत्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सदैव आनंद की खोज में रहती है, इसे कोई चुभन या दर्द अच्छा नहीं लगता और हमेशा सुख ही खोजती रहती है। एक और इसकी विशेषता होती है कि जो मन में आया ये वो तुरंत मिले चाहे उससे सामाजिक नियम टूटते हों या नैतिक मूल्य और चाहे किसी को व्यक्तित्व रूप से ठेस पहुँचती हो। इस प्रवृत्ति में दो प्रकार की वासनाएँ मूल रूप से काम करती हैं। एक कामवासना और दूसरी मृत्यु का अहसास। इन्हें ग्रीक मिथक में ‘इरोज़’ तथा ‘थानाटॉस’ कहा जाता है। इरोज़ का अर्थ है प्यार का देवता तथा थानाटॉस का अर्थ है मृत्यु का देवता। फ्रायड के अनुसार – काम जीवनी शक्ति है। हमारे जीवित रहने तथा जीवन में क्रियाशील रहने के पीछे यही शक्ति काम करती है। काम नामक इस जीवनी शक्ति में तीन प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से अंतर्निहित रहती हैं – कामवासना, अपनी नस्ल को आगे बढ़ाने की इच्छा और दुःखों से दूर भागने की प्रवृत्ति। काम नामक जीवनी शक्ति की ठीक विरोधी शक्ति होती है, मृत्यु की शक्ति। भौतिकी शक्ति के अथवा प्रवृत्ति के अंतर्गत सभी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ समाहित होती हैं। जैसे- हिंसा, क्रोध, घृणा, आदि। मृत्यु का देवता, थानाटॉस कामवासना की शक्ति को संतुलित करने के लिये मनुष्य को धीरे-धीरे मृत्यु अथवा विनाश की ओर ले जाता है। जब किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में पहचान की प्रवृत्ति अत्यधिक तीव्र होती है तो वह व्यक्ति अत्यधिक गति और रुचि से काम करता है। ऐसे व्यक्ति जुनूनी होते हैं, जो उनके मन में आता है, उसे करने के लिए वे किसी बात की परवाह किए बिना बच्चे की तरह जुट जाते हैं। वे देश काल और परिस्थिति की सीमा भी नहीं मानते।

वगैरहं मनुष्य के व्यक्तित्व का वह हिस्सा है जो वास्तविकता के सिद्धान्त पर काम करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का मन मानी करने वाला हिस्से पर वह नियंत्रण रखता है और तब तक उसे इच्छा की पूर्ति नहीं करने देता जब तक कि वह उचित न हो। उदाहरण के लिये – एक दस साल का बच्चा फ्रिज में रखी हुई आइसक्रीम खाना चाहता है। लेकिन बच्चे को आइसक्रीम खाने से पहले माता-पिता से पूछना पड़ता है और यदि वे बिना पूछे आइसक्रीम ले ले तो माता-पिता उसे सज़ा दे सकते हैं। ठीक इसी प्रकार अहं मनुष्य को चाहे जो करने से रोकता है।

अहं का जन्म मूलतः पहचान से ही होता है परन्तु इसका मुख्य उद्देश्य होता है मनुष्य को वही करने देना जो उचित है। इस प्रकार अहं तर्क के आधार पर कार्य करता है। फ्रायड के शब्दों में – “अहं पहचान का वही हिस्सा है जो विश्व की वास्तविकताओं से पूरी तरह से अवगत होता है” (फ्रायड, 1923)। यदि अहंकार मनुष्य की अतिवादी प्रवृत्तियों पर रोक न लगाए तो व्यक्ति के अंदर उत्तेजना और तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इस तनाव और उत्तेजना पर नियंत्रण रखने के लिए व्यक्ति को अचेतन मन की सुरक्षा व्यवस्था का सहारा लेना पड़ता है।

इजके यह हमारे व्यक्तित्व का नैतिक पक्ष होता है। पराहम के कारण मनुष्य, समाज के नैतिक मूल्यों तथा अनुशासनों को, सामाजिकता द्वारा सीखता है। पराहम मनुष्य को विभिन्न परिस्थितियों में सही व्यवहार करना सिखाता है। पराहम का विकास बच्चे में तीन से पांच वर्ष की आयु के बीच हो जाता है। इसका उपयुक्त उदाहरण दस साल का वह बच्चा है जो फ्रिज में रखी आइसक्रीम खाना तो चाहता है परन्तु, ऐसा करने से पहले माता-पिता से अनुमति लेना अपना नैतिक कर्तव्य मानता है। फ्रायड के अनुसार पराहम में दो प्रणालियां काम करती हैं। एक, समझ या विवेक और दूसरी आदर्श। स्व-विवेक का काम अहं को दंब्रित अथवा पुरस्कृत करना होता है। जब वह अहं को दण्डित करता है तो मनुष्य में अपराध बोध आ जाता है और जब वह पुरस्कृत करता है तो मनुष्य में घमण्ड पैदा हो जाता है। उदाहरण के लिये, यदि कोई मनुष्य औचित्य की सीमायें तोड़कर कोई काम करता है तो पराहम मनुष्य को उसकी गलती का अहसास कराता है। पराहम की दूसरी प्रणाली मनुष्य की व्यक्तित्व का आदर्श प्रस्तुत करती है और अपने किये काम पर मनुष्य या तो गर्व का अनुभव कर सकता है या अपराध बोध से पीड़ित हो सकता है।



fp= 7-1 % Ÿk; M ds pruk ds Lrj , oa 0; fDrRo dh I jpkuk I cãkh fopkj

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

मनुष्य के जीवन में उसे उत्तेजना और तनाव से बचाने में अहं की विशेष भूमिका रहती है। जब हमसे कोई ऐसी भूल हो जाती है कि हम ऐसा कुछ कर बैठते हैं जो हमें नहीं करना

चाहिये, तो हम मनोवैज्ञानिक युक्ति का सहारा लेते हैं इसी को अहं की सुरक्षा प्रणाली कहा जाता है। फ्रायड का मानना है कि हमारे अन्दर मौजूद अहं की सुरक्षा प्रणाली हमारे मन की उत्तेजना और तनाव से रक्षा करती है। नीचे की तालिका 7.1 में आठ महत्वपूर्ण सुरक्षा प्रणालियों का विवरण दिया गया है।

rkfydk 7-1% vgdjk dh l gj{kk izkky; ka dk fooj.k

izkkyh	fooj.k
दमन	अचेतन में स्मृतियों तथा मनोभावों से इनकार करना। यह काफी दर्दनाक और डरावना होता है।
तर्क	अपने व्यवहार अथवा तर्क से यह साबित करने का प्रयास करना कि जो हमने किया है वैसा करने की कोई न कोई वजह ही है।
प्रतिक्रिया व्यक्त करना	अनचाही भावनाओं या मनोभावों को उनके ठीक विपरीत व्यवहार करते हुए नियंत्रण में रखना।
प्रक्षेपण	दूसरों पर अपनी अवांछित विशेषताओं को थोपना।
प्राज्ञीकरण	सामने आने वाली समस्या को बुद्धिमत्ता और विवेक से इस तरह विश्लेषित करना कि भावनाओं का मन पर प्रभाव न पड़े।
इंकार	सामने आई समस्या से सीधा इंकार करना।
विस्थापन	इच्छाओं को व्यक्ति अथवा स्थान से स्थानांतरित कर देना।

फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व के विकास की पांच अवस्थाएँ होती हैं। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मौलिक हिस्सा पांच साल की उम्र तक पूरा विकसित हो जाता है। इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि किसी बच्चे को जैसा बनाना है उसे पांच साल तक ही बनाया जा सकता है। उसके बाद वह वैसा ही रहता है जैसा कि पांच साल तक बन चुका होता है। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुंचने के लिए मनुष्य को सामने आने वाले अवरोधों को हराना पड़ता है। नीचे हम मनोवैज्ञानिक विकास की पांच अवस्थाओं का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

igyh volFkk% ek{k[kd pj.k %tle l s 18 eghus rd½

इस अवस्था में बच्चे के पास आनन्द का अनुभव करने के लिए केवल उसका मुख होता है। इस अवस्था में बच्चे पूरी तरह अपनी मां पर अथवा अन्य अभिभावक पर निर्भर करते हैं। अपनी चारों ओर की दुनियां को समझने और उसमें से सुख प्राप्त करने के लिए उनके पास केवल दो तरीके होते हैं – चूसना और निगलना। इस अवस्था में यदि बच्चे को ज्यादा या कम खिला-पिला दिया जाए तो उसे अधिक खाने की आदत पड़ जाती है और बड़े होने पर उसमें नशा करने की आदत पड़ सकती है। बच्चे का खुराक ठीक से न मिलने पर उसके अंदर मनोवैज्ञानिक द्वंद्व पैदा हो जाता है जिसे वह नियंत्रण में करना नहीं जानता। जिसे के परिणामस्वरूप आगे चलकर बच्चे में किसी भी चीज़ को उठाकर चूसने या काटने की आदत पड़ जाती है। वह अपने नाखून भी चबाने लग जाता है। फ्रायड ने स्पष्ट किया कि ये लक्षण सामान्य से थोड़ा हटकर होते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो आक्रामक प्रवृत्ति के हो जाते हैं या दबू प्रवृत्ति के।

ni jh voLFkk % xqk voLFkk ¼18 eghus l s 3 l ky rd½

इस अवस्था के दौरान बच्चे को यह सीखना होता है कि वह अपनी पेशाब करने की प्रवृत्ति तथा मल त्याग करने की प्रवृत्ति को नियंत्रण में कैसे रखे। बच्चों को इस अवस्था में अपने पाचन संस्थान से जुड़े अंगों में होने वाली गति से सुख का अनुभव होने लगता है। इस अवस्था में यदि बच्चे को पेशाब और मल त्याग पर सही रूप से नियंत्रण करना नहीं सिखाया जाए तो उसकी इन प्रणालियों में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो सकते हैं।

rhl jh voLFkk% tuukakka ds vuqkfr dh voLFkk ¼3 l s 5 o"kl rd½

इस अवस्था में आते-आते बच्चे को अपने जननांगों में एक प्रकार की सनसनी सी अनुभव होने लगती है। वे जाने या अनजाने अपने जननांगों को छूते हैं और सुख का अनुभव करते हैं। इसी अवस्था में बच्चों को नर और मादा का अन्तर समझ आ जाता है। फ्रायड का कहना है कि नर बच्चा इडीपस ग्रंथि महसूस करता है। इस अवस्था में नर बच्चा अपनी मां के प्रति काम-वासना का अनुभव करता है। साथ ही उसके मन में पिता के प्रति दुर्भाव पैदा होता है और एक तरह का डर भी कि मां के प्रति काम-वासना रखने के कारण कहीं पिता उसे सजा न दे दे। मादा बच्चे में इलैक्ट्रा कामप्लेक्स पैदा हो जाती है। इसके प्रभाव से लड़की में पिता के प्रति काम-वासना उत्पन्न होती है तथा माता के प्रति दुर्भाव पैदा होता है। फ्रायड के अनुसार इन ग्रंथियों को सफलतापूर्वक निष्क्रिय कर देने के बाद बच्चों में नर या मादा के रूप में पहचान स्थिर हो जाती है तथा वैसा ही व्यक्तित्व बन जाता है।

pkFkh voLFkk% foyEc voLFkk ¼6 l s 12 o"kl rd½

बच्चे में जो काम ऊर्जा होती है वह इस अवस्था तक आते-आते शिक्षा खेल तथा सामाजिक गतिविधियों से जुड़ जाती है और उसमें विपरीत लिंग के प्रति लगाव सीमित हो जाता है।

ikpoh voLFkk% tuukx voLFkk ¼13 o"kl l s o; Ld gkus rd½

तेरह वर्ष की उम्र पार करते-करते मनुष्य में काम ऊर्जा फिर से लौट आती है। विकास के विभिन्न चरणों को पार करते हुए जब बच्चा तेरह वर्ष की उम्र में पहुंचता है तो उसके मन में विपरीत लिंग वाले बच्चे के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय इसकी समझ उसमें आने लगती है। यदि पिछली अवस्थाओं में बच्चे के विकास में बाधाएँ हों तो उसमें ऐसी कुंठाएँ उत्पन्न हो सकती हैं जिसके कारण विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के साथ संबंध बनाने में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। मनोवैज्ञानिक रोगों का इलाज करने के लिए फ्रायड ने 'मनोविश्लेषण' की ओर पूरा ध्यान दिया।

7-3-1-1 uo-Ýk; Mohnh% Ýk; M ds vuq k; h rFkk fojks/kh

व्यक्तित्व के मामले में फ्रायड ने जो विचार व्यक्त किए थे, वे आगे चलकर बहुत लोकप्रिय हुए। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने फ्रायड के विचारों का समर्थन किया लेकिन जैसे-जैसे समय बीता, कुछ ऐसे विचारक सामने आए जो फ्रायड के सिद्धान्तों को कुछ हद तक मानने को तैयार थे परन्तु पूरी तरह से नहीं। इनमें से कुछ विद्वानों ने मानव व्यक्तित्व को लेकर गहन अध्ययन किए और उन्होंने मानव व्यक्तित्व विकास के अपने नये सिद्धान्तों का अन्वेषण कर लिया। क्योंकि ये नये विचारक अपने सिद्धान्तों और विचारों के आधार पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने आप को नव-फ्रायडवादी, नवविश्लेषणात्मक अथवा मनोवेगीय विश्लेषक, आदि कहने लगे। नव-फ्रायडवादी विचारकों में प्रमुख हैं- एडलर, हॉर्नी, फ्रॉम, युंग तथा इरिक्सन थे। इस इकाई में हम केवल दो नव-फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों पर विचार करेंगे जिनके नाम हैं, एडलर और युंग।

vYŸM , Myj% 0; fDrijd eukfoKku

अल्फ्रेड एडलर (1870-1937) ऑस्ट्रेलिया के चिकित्सक थे। उन्होंने मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास को सामाजिक संदर्भों में देखने का प्रयास किया। साथ ही मनुष्य के अन्य व्यक्तियों से संबंधों की भूमिका को भी रेखांकित किया। एडलर का विचार था कि मनुष्य का यह स्वभाव होता है कि वह अपने जीवन में प्रसिद्ध होना चाहता है, शक्तियां प्राप्त करना चाहता है और दूसरों की तुलना में अपने आपको बेहतर साबित करना चाहता है। इन्हीं तीनों स्थितियों को प्राप्त करने की धुन में वह जिन्दगी की सारी बाधाओं से संघर्ष करता है और अंततः उन्हें जीत लेता है। अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए लोग अपनी अलग जीवन शैलियां भी विकसित कर लेते हैं। 1954 में एडलर ने अपने विचारों के आधार पर अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त की स्थापना की जिसे व्यक्तिपरक अथवा वैयक्तिक मनोविज्ञान कहा जाता है। उनका मानना था कि बचपन के आरंभिक दौर के अनुभव, मनुष्य के व्यक्तित्व को आधार प्रदान करते हैं। यदि उसे बचपन में प्रोत्साहन मिले तो उसकी क्षमताओं में वृद्धि हो जाती है, और उसके व्यक्तित्व में जीवन भर के लिए दूसरों का सहयोग करने का गुण समाहित हो जाता है। यदि बच्चे को बचपन में बार-बार झिड़का जाए तो उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। वह दुर्व्यवहार करने लग सकता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिये गलत तरीका अपनाना भी सीख सकता है। एडलर का विचार है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसके सामाजिक संदर्भों में ही किया जाना चाहिये। हमारे व्यवहार के पीछे कोई प्रवृत्ति काम नहीं करती (जैसा कि फ्रायड मानते हैं)। हमारे अन्दर से प्रस्फुटित होने वाली अंदरूनी शक्ति हमें किसी खास किस्म के व्यवहार को करने के लिये उकसाती है। उसने इस शक्ति को मनुष्य की पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा का नाम दिया है। यह अंदरूनी इच्छा व्यक्ति को प्रोत्साहित करती है और वह अपनी पूरी क्षमता विकसित करने के लिये सक्रिय हो जाता है।

ghurk dh Hkkouk vkj JSBrk dh Hkkouk

जब हम अपने आपको दूसरों की तुलना में कमजोर, अक्षम, पराश्रित आदि महसूस करते हैं, तो हमें ऐसा लगने लगता है कि हम दूसरों से कमतर हैं। इसे हीनता की भावना कहते हैं। हीनता का अहसास होना आंतरिक है और प्राकृतिक भी। यदि कोई मनुष्य वह पाता है कि उसके अन्दर हीनता की भावना आ रही है, और वह उससे बाहर निकलना चाहता है और कोई ऐसा काम कर डालना चाहता है जिससे उसे जीवन में बड़ी उपलब्धि अथवा सफलता प्राप्त हो जाय। इससे स्पष्ट है कि अधिक से अधिक विकास करना अथवा अधिक से अधिक उपलब्धियां प्राप्त करना ही जीवन में हीनता की भावना को जीतना है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाता, तो उसके अंदर हीनता की ग्रंथि बन जाती है। और यदि ऐसे में व्यक्ति अत्यधिक उपलब्धियां प्राप्त कर ले, बहुत ज्यादा सफलताएं हासिल कर ले, तो उसके अन्दर उच्चता की ग्रंथि बन जाती है।

I gknj Li) kL , oa tle Øe

दो भाइयों के बीच में आपस में माता-पिता अथवा अभिभावकों का प्यार और निकटता प्राप्त करने के लिए जो प्रतिस्पर्द्धा की भावना होती है उसे सहोदर स्पर्द्धा कहा जाता है। इससे उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एडलर के अनुसार जब घर में कोई नया बच्चा पैदा होता है तो उसे देखकर पहले वाले बच्चे में उसके प्रति ईर्ष्या अथवा वैमनस्य का भाव पैदा हो जाता है। उसे ऐसा लगने लग जाता है कि यह नवजात अब माता-पिता की दृष्टि में मेरा महत्व कम कर देगा। क्योंकि जब वे इसे प्यार करने लगेंगे तो मुझे अपने हिस्से का पूरा प्यार नहीं मिल पाएगा।

इसी आधार पर एडलर का यह मानना है कि मनुष्य के व्यक्तित्व पर इस बात का भी प्रभाव

पड़ता है कि वे अपने परिवार में पहले पैदा हुआ है अथवा बाद में। प्रायः पहला बच्चा ज्यादा जिम्मेदार, आज्ञाकारी और प्रतिभा सम्पन्न होता है। उसके बाद में पैदा होने वाला बच्चा अपना ध्यान समाज के साथ तारतम्य स्थापित करने में ज्यादा लगाता है। उसके केन्द्र में उसके अपने उतने नहीं होते जितने कि दूसरे होते हैं। और यदि तीसरा बच्चा आ गया तो, वह अपने आपको ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगता है, इसीलिए वह दिखाने का प्रयास करता है कि वह बहुत मजबूत है। उसके अन्दर स्वाभिमान की भावना बहुत ऊँची होती है परन्तु प्रतियोगिता की भावना साधारण रह जाती है। इसी संदर्भ में एक बात और महत्वपूर्ण है कि जो बच्चा सबसे बाद में पैदा होता है उसकी कभी उपेक्षा नहीं होती। वह परिवार की नजरों में जीवन भर के लिए नन्हा बच्चा ही बना रहता है।

dkyl ; % fo' ysk.kkRed eukfoKku

कार्ल युंग (1875-1961) स्वित्जरलैण्ड के मनोवैज्ञानिक थे और वह फ्रायड के घनिष्ठ मित्र भी थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्यों के व्यक्तित्व और व्यवहारों को जानने के लिए हमें उन संस्कृतियों का अध्ययन करना चाहिए जिनमें वे मनुष्य पले बढ़े हैं। क्योंकि वह संस्कृति ही है जो मानवता के विभिन्न रहस्यों को अपने अन्तर में छिपाए रहती है। युंग के व्यक्तित्व के सिद्धान्त को विश्लेषणात्मक सिद्धान्त अथवा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (1933) कहा जाता है। युंग के अनुसार हर व्यक्ति का अपना अचेतन मन होता है। जिसमें व्यक्ति के सारे अनुभव भरे रहते हैं परन्तु कुछ कारणों से मनुष्य उस पर ध्यान नहीं दे पाता। हर मनुष्य में चेतन और अचेतन मन की शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने की क्षमता होती है। फ्रायड यह मानते थे कि किसी मनुष्य का व्यक्तित्व उसके अचेतन मन से सीधा जुड़ा होता है। 'कार्ल गुस्ताव युंग' ने फ्रायड के इस सिद्धान्त को थोड़ा और आगे बढ़ाते हुए कहा कि अचेतन मन मनुष्य की दमित स्मृतियों, काम वासनाओं तथा आक्रामक प्रवृत्तियों का संग्रहालय होता है।

युंग, फ्रायड के व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्त को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करा। वह अचेतन मन में भरे समस्त मनोविकारों व इच्छाओं को केवल उसी व्यक्ति की निजी अनुभूतियों नहीं माना, अपितु उसकी अपनी तथा जिनके संपर्क में मनुष्य आता है, उन सबकी अनुभूतियों का सामूहिक व साझा संचलन माना है। इस प्रकार मनुष्यों के अचेतन मन सभी मनुष्यों की अनुभूतियों के संचय होते हैं। क्योंकि हम सभी मनुष्य अपने पूर्वजों के अंश हैं और हम सबके पूर्वज एक ही थे इसीलिये हम सबका अतीत एक साझा अतीत है। हमारे अचेतन मन में हम सबके साझा अतीत की जो स्मृतियां भरी हैं उन्हीं को सामूहिक अचेतन कहा जाता है। कार्ल युंग के अनुसार यही सामूहिक अचेतन मन व्यक्ति के व्यक्तित्व की आधारशिला रखता है। सामूहिक अचेतन मन में सभी आद्य या आद्य रूप और विचार समाहित रहते हैं जो हमें अपने आदिकाल से लेकर अब तक के पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। उदाहरण के लिये पुनर्जन्म की अवधारणा, ईश्वर की अवधारणा तथा बुराई की अवधारणा, आदि। हमारे सामूहिक अचेतन को कार्ल युंग ने आद्य रूपों की संज्ञा दी है। इसमें सभी मनुष्यों की भागेदारी है तथा सर्व व्यापकता का गुण विद्यमान है। कार्लयुंग ने विभिन्न प्रकार के आद्यरूपों की व्याख्या की है इनमें से कुछ आद्यरूपों का विवरण इस प्रकार है-

- i) अपनी स्वयं की पहचान को संपूर्णता के साथ समझना।
- ii) छवि जिसे मनुष्य दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- iii) अणिमा पुरुषों का स्त्रैण पक्ष।
- iv) विद्वेष : स्त्रियों का मर्दाना पक्ष।

- v) प्रतिच्छाया: हमारे व्यक्तित्व की कमजोरियाँ – जिनमें आक्रामक इच्छाएं, शारीरिक प्रवृत्तियां तथा हीनता की भावना आदि सम्मिलित हैं।

ck/k i' u 1

- 1) यौन व्यवहार के विकास की पहली दो अवस्थाओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 2) इड, अहं तथा पराहम की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 3) 'सामूहिक अचेतन' से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

- 4) सहोदर स्पर्द्धा से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

7-3-2 0; fDrRo clk 0; ogkj oknh mi kxe

व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त की सबसे ज्यादा आलोचना व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने की है। वे इस विचार को नहीं मानते कि मनुष्य के व्यक्तित्व को उसके मानस तथा अचेतन मन में संग्रहित मनोविकारों के आधार पर समझा जा सकता है। जॉन बी. वाटसन ने सबसे पहले व्यवहारवादी सिद्धान्त को व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए आधार माना। इसके बाद 'बी. एफ. स्किनर' ने व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए व्यवहारवाद पर सबसे ज्यादा जोर दिया।

व्यवहारवादी सिद्धान्तकारों के अनुसार व्यक्तित्व एक अदृश्य तथा काल्पनिक अवधारणा है। इसे आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं से जोड़ना एक दम गलत है। व्यवहारवादियों के अध्ययन के केंद्र में संबंधों से पैदा होने वाली उत्तेजना प्रतिक्रिया तथा उसका सुदृढीकरण विशेष रूप से विद्यमान रहता है। उनके अनुसार व्यक्तित्व को समझने के लिए उस व्यक्ति के एसआर संबंधों को समझने की जरूरत है। उनके अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न प्रोत्साहनों एवं संदर्भों के प्रति पैदा होने वाली सुदृढ प्रतिक्रियाएँ मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। व्यवहारवादियों के अनुसार व्यवहार को समझने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है, ये हैं – क्लासिकी अनुबंधन, यंत्रीय अनुबंधन तथा अवलोकन अधिगम। व्यवहारवादी यह मानते हैं कि 'हम जो कुछ हैं वह सीखने के कारण हैं'। सीखने या जानने की प्रक्रिया सुदृढीकरण तथा अनुबंधन द्वारा सम्पन्न होती है। व्यक्ति अलग-अलग स्थितियों-परिस्थितियों में जीवन जीता है, इसलिए उसका एसआर अधिगम पेटर्न भी अलग-अलग होता है। यही कारण है कि सबके व्यक्तित्व एक दूसरे से बहुत अलग प्रकार के होते हैं।

वाटसन का यह दावा है कि मानव-व्यवहार को समग्रता के साथ उसके प्रोत्साहनों तथा प्रतिक्रियाओं से तय किया जा सकता है। वाटसन ने कहा था - "मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दे दीजिए, मैं उनका इस तरह पालन-पोषण करके दिखा दूंगा कि उनमें से हर कोई किसी न किसी क्षेत्र में विशेष रूप से दक्ष होगा – कोई सफल डाक्टर बन जाएगा, कोई अधिवक्ता, कोई कलाकार, कोई उच्च कोटि का व्यवसायी, यहां तक मैं उनमें से किसी को भिक्षा मांगने में दक्ष भिखारी बना सकता हूँ और शातिर चोर भी, फिर चाहे वे किसी भी वंश के हों, किसी भी जाति के हों, उनके माता-पिता का व्यवसाय कुछ भी क्यों न रहा हो, उनमें प्रतिभा, लगन तथा रुचियों व क्षमताओं का कोई भी स्तर क्यों न हो"।

7-3-3 0; fDrRo dk ekuorkoknh mi kxe

मानव व्यवहार के प्रति मनोविश्लेषकों तथा व्यवहारवादियों के निराशावादी रूझान की प्रतिक्रिया स्वरूप, मनोविज्ञान के तीसरे महत्वपूर्ण सिद्धान्त का जन्म दिया जिसे मानवतावादी सिद्धान्त कहा जाता है। अब्राहम मैस्लो तथा कार्ल रोजर्स, दो मनोवैज्ञानिक मानवतावादी व्यक्तित्व के सिद्धान्त के अगुआ रहे हैं। मानवतावादी सिद्धान्त इस बात पर विचार करता है कि व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार होता है। मैस्लो तथा रोजर्स हमारे सोचने के तरीकों को केन्द्र में रखकर व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं। हमारी भावनाएँ, हमारे दृष्टिकोण, हमारे विचार और हमारा व्यवहार हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे किसी व्यक्ति के चरित्र में उसकी स्वयं की छवि को अध्ययन के केंद्र में रखते हैं जिसमें भावनाएँ, सोचने का तरीका, दृष्टिकोण और स्व-मूल्यांकन का तरीका शामिल हैं (हॉल तथा लिन्डज़ी, 1970)।

dkyl jkst l l

कार्ल रोजर्स (1902-1987) एक परामर्शदाता मनोवैज्ञानिक था और वो मैस्लोव के साथ काम करते थे। कार्ल रोजर्स ने व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त को जन्म दिया। मैस्लोव की तरह वह भी मनुष्यों में मानव की अच्छाइयां देखने में विश्वास रखते थे। वह मनुष्यों के व्यवहार को उनके जीवन के लक्ष्यों से जोड़कर देखते थे। वह किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जैविक व्यवहार को महत्व देते थे। वह मानते थे कि मनुष्य के घटना संबंधी क्षेत्र में उसके जीवन के अनुभव विशेष रूप से कार्य करते हैं। इन अनुभवों से उसके स्वयं के व्यक्तित्व का विकास होता है। जब एक बच्चा बड़ा होता है तो वह अनेक प्रकार का व्यवहार करता है। उनमें से कुछ ऐसे व्यवहार होते हैं जिन्हें अच्छा माना जाता है और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें अच्छा नहीं माना जाता। बच्चे के जो व्यवहार तथा काम ठीक नहीं माने जाते, तब उसे ऐसा लगता है कि उसमें इन कामों को करने की क्षमता नहीं है और इसलिए वह आगे उन कामों तथा व्यवहारों से बचने लगता है। हर व्यक्ति अपनी वास्तविक छवि और आदर्श छवि के बीच

संघर्ष करता हुआ दिखता है क्योंकि उसकी आदर्श छवि वह होती है जिसे वह बनाना चाहता है और वास्तविक छवि वह होती है जिसके साथ वह जीवन यापन कर रहा होता है। वास्तविक छवि और आदर्श छवि के बीच के अन्तर को वह मिटाना चाहता है परन्तु यदि मिटा नहीं पाता तो उसके अन्दर मानसिक द्वंद्व पैदा हो जाता है जिसे मनोचिकित्सा द्वारा ठीक किया जा सकता है। कार्ल रोजर्स ने अपना यह सिद्धान्त उस समय बनाया था जब वह अपने क्लिनिक में आने वाले रोगियों से बातें करते थे। उन्हें पता लगा कि हर व्यक्ति के लिये उसका स्वं सबसे महत्वपूर्ण होता है। यही कारण है कि कार्ल रोजर्स का मानवतावादी सिद्धान्त मनुष्यों के अपने अस्तित्व तथा स्वार्थ के इर्द-गिर्द घूमता है। कार्ल रोजर्स के अनुसार मनुष्य अपने साथ दो स्तरों पर जीता है। एक वह स्तर जिसे वह जी रहा है और एक वह जिसे वह जीना चाहता है। जिस तरह का जीवन वह जीना चाहता है वह उसका आदर्श होता है और जिस तरह का जीवन वह जी रहा होता है वह उसके जीवन की वास्तविक अवस्था होती है। अगर किसी व्यक्ति की वास्तविक जीवन अवस्था और आदर्श जीवन अवस्था के बीच की खाई पार दी जाय, यदि उन दोनों अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित हो जाय तो उस मनुष्य में जो चाहे वह करने अथवा प्राप्त करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। यह वह अवस्था है जब मनुष्य अपने अन्दर उच्चतम अवस्था उत्पन्न कर लेता है। उच्चतम अवस्था वाले मनुष्यों को कार्ल रोजर्स पूर्ण विकसित मनुष्यों की संज्ञा देता है।

इसके विपरीत यदि मनुष्यों की वास्तविक और आदर्श जीवन अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो उससे मनुष्य उत्तेजना और तनाव का शिकार हो जाता है। कार्ल रोजर्स यह भी मानते हैं कि इन दोनों अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने में बाहरी वातावरण का विशेष योगदान रहता है। यदि किसी व्यक्ति को बिना शर्त सकारात्मक स्वीकृति मिल रही है तो वह अपने वास्तविक आत्म विश्वास को महसूस कर सकता है और उसमें अपने संकल्प को वास्तविकता में बदलने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। बिना शर्त सकारात्मक स्वीकृति का अर्थ है कि हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी क्षमताओं को बिना शर्त स्वीकार करते हैं।

कडल 7-1 % I gku#kfr

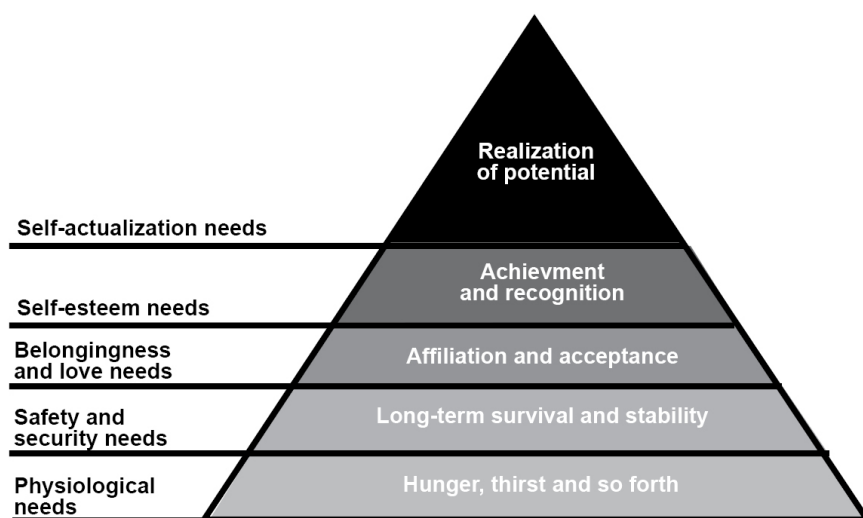
यह शब्द सबसे पहले पिछली शताब्दी में जर्मन भाषा में "einführung" अथवा in-feeling के लिए इस्तेमाल हुआ था। इसका इस्तेमाल सौन्दर्य शास्त्र के सन्दर्भ में किया गया था। तब से लगातार इस शब्द के अर्थ और प्रयोग में परिवर्तन होते रहे हैं। कार्ल रोजर्स ने सहानुभूति शब्द का इस्तेमाल इस संदर्भ में किया है कि मनोवैज्ञानिक को रोगी से बात करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह उसको जैसा कि वह है उसी रूप में स्वीकारे और उसके साथ सहयोग व सहानुभूति का व्यवहार करे।

e1yks dk Lo-okLrfodhdj.k dk fl) kUr

अब्राहम मैस्लो (1908-1970) ने सकारात्मक व्यवहारिक गुण पर जोर दिया था। उसे मनुष्य के अस्तित्व की आशावादी सोच पर पूरा विश्वास था। मैस्लो यह मानते हैं कि हर मनुष्य खास होता है और उसे स्व-वास्तविकीकरण अर्थात् अपनी क्षमताओं को पूरी तरह समझने और स्वीकार करने की स्थिति में पहुंचने के लिये अनेक स्तरों से गुजरना पड़ता है। हर मनुष्य को अपनी योग्यता को निखारने के लिए तथा अपनी क्षमताओं में अधिकतम वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाने पड़ते हैं। अपने आपको विकसित करने की क्षमता हर व्यक्ति में अंतर्निहित होती है। जब कोई मनुष्य अपनी क्षमताओं को उच्चतम बिन्दु तक बढ़ा लेता है तो इस उपलब्धि को स्व-वास्तविकीकरण कहा जाता है।

मनुष्य के व्यक्तित्व तथा उसके विकास की उच्चतम संभावनाओं को समझने के लिए मैस्लो ने अनेक ऐसे व्यक्तियों का अध्ययन किया जिन्होंने स्व-वास्तविकीकरण की अवस्था को प्राप्त किया था। जिनमें से प्रमुख नाम हैं – अलवर्ट आइन्सटीन, एलीनर रूजवैल्ट, थॉमसजैफरसन

तथा अब्राहम लिंकन। मैस्लो के अनुसार यदि हम किसी व्यक्ति की केवल बुराइयों पर ध्यान केंद्रित रखेंगे तो उसके व्यक्तित्व की वास्तविक प्रकृति को नहीं जान पाएँगे। मैस्लो ने सुझाव दिया है कि किसी मनुष्य की प्रकृति को सही अर्थों में समझना है तो हमें आशावादी दृष्टिकोण अपनाना होगा, हमें व्यक्ति की आशावादी प्रकृति पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। व्यक्तित्व का विकास करने के लिये मनुष्य को पांच चीजों की जरूरत पड़ती है, जैसा कि आकृति संख्या 7.1 में दिखाया गया है। उच्च स्तरीय आवश्यकताओं को पूरा करने से पहले हमें निम्नस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। तभी हम व्यक्तित्व का उच्चतम बिन्दु तक विकास कर सकते हैं।



fp= 7-2% eLyks dk vko' ; drivka dk vupe

मैस्लो ने पाया कि जिन्होंने स्व-वास्तविकीकरण के लिए सतत प्रयत्न किए, उनके व्यक्तित्व में कुछ खास विशेषताएं थीं। इनमें प्रमुख थीं – चीजों को निस्वार्थ भाव से देखना और अनुभव करना, हर चीज को, हर घटना को स्पष्टता के साथ और समूची एकाग्रता के साथ देखना (मैस्लो, 1967)। जीवन के विविध आयामों से गुजरते हुये अपने अंदर पूरी तरह सामंजस्य बनाए रखना एवं अपने अंदरूनी अस्तित्व को पूरी तरह महसूस करना। ये सब लोग पूरी तरह से सहज, अपने ऊपर स्वयं शासन करने वाले स्वतंत्र तथा अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित थे। इन के अत्यधिक समीपी प्रियजनों की संख्या कम थी और किसी संस्कृति विशेष की सीमाओं में पूरी तरह नहीं बंधे थे।

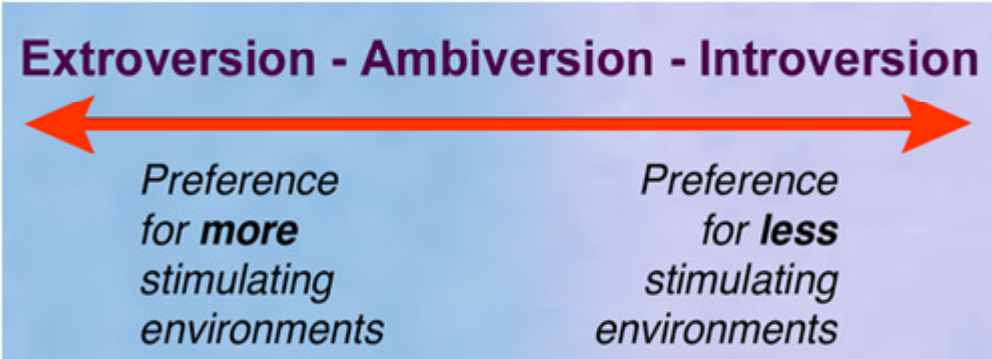
ckDI 7-2 % Lo-okLrfodhN'r ykxka dh fo'k'krk, a

- 1) सच्चाई को परखने की अतिरिक्त क्षमता।
- 2) अपने आपको, दूसरों को तथा प्रकृति को यथारूप स्वीकार करना।
- 3) सहजता, सरलता, प्राकृतिकता।
- 4) समस्या के केन्द्र में पहुंचकर उसका समाधान तलाशने की क्षमता।
- 5) तटस्थ : निजता में जीने के अभ्यास की।
- 6) स्वशासी : संस्कृति और बाह्य परिवेश आदि से मुक्त।
- 7) सदा तरोताजा रहने वाले और दूसरों को प्रोत्साहन देने वाले।
- 8) रहस्यमय अथवा उच्च कोटि की अनुभव-क्षमता से संपन्न।
- 9) संबंधों को तटस्थता से जीने वाले।

- 10) सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले ।
- 11) सक्रियता ।
- 12) सांस्कृतिक बन्धनों से आजाद ।
- 13) लोकतांत्रिक चरित्र ।
- 14) संसाधन और लक्ष्य को अलग-अलग समझने वाले ।
- 15) विचारशील परंतु हंसमुख ।

7-3-4 0; fDrRo dsy{k.kkRed fl) kUr

कुछ सिद्धान्तकारों का यह मानना था कि व्यक्तित्व हमारे समस्त गुणों व विशेषताओं का समूह होता है जो हमारे व्यवहार को सुनिश्चित करता है। किसी व्यक्ति के गुणों व लक्षणों की पहचान करके उनका गहराई से अध्ययन करने के बाद, हम यह बता सकते हैं कि उस व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है। आगे बढ़ने से पहले हमें लक्षणों के स्तरों की अवधारणा को समझना होगा जिनके आधार पर व्यक्ति व्यवहार करता है। व्यक्ति के गुणों के आधार पर हम यह पता लगा सकते हैं कि उसका व्यक्तित्व अंतर्मुखी है या बहिर्मुखी। जो लोग बहिर्मुखी होते हैं उनका स्वभाव ज्यादा दोस्त बनाना होता है। वे बाहर निकलने में झिझक महसूस नहीं करते, खुलकर बातें करते हैं तथा खतरे उठाने में आनंद का अनुभव करते हैं। जो अंतर्मुखी होते हैं वे किसी को अपना दोस्त नहीं बनाना चाहते हैं, वे अपने आप में ही रहते हैं और नई-नई चीजों को देखने का उन्हें कोई चाव नहीं होता। जैसा कि चित्र 7.2 में दिखाया गया है कोई व्यक्ति किसी ओर जा सकता है और उसका व्यवहार उसी के अनुसार होगा।



fp= 7-3 %cfge{kh-vre{kh o.kz iV

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व की पहचान, हिप्पोक्रेटस के काल से ही आरंभ हो गया था। आधुनिक काल में लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करने वाले मतों में गॉर्डन अलपोर्ट, रेमंड केटिल, हैस इसेनक, रोबर्ट मेक्रे तथा पॉल कोस्टा विशेष रूप से चर्चा में है।

7-3-4-1 vyi kVZ dk y{k.kkRed fl) kr

गार्डन अलपोर्ट (1897-1967) तथा उनके साथी हैनरी ऑडबर्ट ने अंग्रेजी भाषा में 17953 लक्षणात्मक शब्दों की सूची तैयार की थी जिनके आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन किया जा सकता है। बाद में चलकर यह मनोवैज्ञानिक अध्ययन व्यक्तित्व विकास संबंधी पांच सूत्रीय सिद्धान्त (1936) का आधार बने। इस खोज के आधार पर अल्पोर्ट ने 4500 लक्षणात्मक शब्दों की सूची बनाई और व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त की स्थापना की। इस सिद्धान्त के अनुसार तीन प्रकार के लक्षण प्रमुख रूप से हमारे व्यक्तित्व को संचालित करते हैं। इन

लक्षणों को कार्डिनल लक्षणों, केन्द्रीय लक्षण तथा माध्यमिक लक्षण कहा जाता है। अल्पोर्ट ने इन सभी लक्षणों को क्रमबद्ध किया है।

dkfMuy y{k.k % ये व्यक्तित्व के प्रमुख लक्षण होते हैं। अल्पोर्ट द्वारा तैयार की गई लक्षणों की सूची में ये सबसे पहले आते हैं और ये ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं। कभी-कभी तो ये लक्षण किसी व्यक्ति में इतने ज्यादा उभर कर आ जाते हैं कि वह व्यक्ति इन्हीं के लिये प्रसिद्ध हो जाता है। जैसे मदर टैरेसा परोपकार के लिए प्रसिद्ध हो गई और महात्मा गांधी अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हो गए। दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या गिनी चुनी ही होती है जिनके व्यक्तित्व पर कार्डिनल लक्षण पूरी तरह हावी होता है। सामान्यतः अधिकतर लोगों के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं।

dslnh; y{k.k % इस श्रेणी में आने वाले लक्षण अल्पोर्ट के लक्षणों की सूची में दूसरे स्थान पर आते हैं। अल्पोर्ट के अनुसार हर व्यक्ति के व्यक्तित्व में पांच से लेकर दस तक केन्द्रीय लक्षण अलग-अलग अनुपात में होते हैं। ये लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं और हमारे व्यक्तित्व को एक खास तरह का बना देते हैं। ये लक्षण है प्रतिभा, वफादारी, निर्भरता, आक्रामकता।

ek/; fed y{k.k% व्यक्तित्व के ये लक्षण अपेक्षाकृत कम महत्व के माने जाते हैं। ये वे लक्षण हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में स्थितियों व परिस्थितियों के अनुसार प्रकट होते हैं। जैसे एक तेज तर्रार बच्चा अपने शिक्षक के सामने उतना खुलकर नहीं बोलता जितना कि सामान्यतः बोलता है। यह लक्षण बड़ी संख्या में होते हैं और किसी व्यक्ति के निजी व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अल्पोर्ट के अनुसार ये लक्षण विभिन्न स्थितियों में उत्पन्न होते हैं और ये व्यक्ति के व्यक्तित्व की संकोची प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

7-3-4-2 dS/y dk y{k.kkRed fl) kUr

ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक रैमण्ड बी. कैटेल ने (1905-1998), अल्पोर्ट द्वारा अंग्रेजी में तैयार किए गए 4500 लक्षणों का विश्लेषण किया और उनके आधार पर उसने मानव व्यक्तित्व के लक्षणों को 16 आयामों में विभक्त किया।

rkfydk 7-2 % dS/y nekjk fu/kkTjr 0; fDrRo ds y{k.kka dh Jf.k; ka

y{k.k	fuEu Lrj	mPp Lrj
A	अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
B	कम प्रतिभाशाली	अधिक प्रतिभाशाली
C	स्थिरता	भावुकता
E	विनम्र	उग्र
F	सादा	उत्साही
G	तिकड़मी	ईमानदार
H	दबू	साहसी
I	कठोर	कोमल
L	विश्वसनीय	अविश्वसनीय

M	व्यावहारिक	अव्यावहारिक
N	सीधासादा	शरारती
O	सौम्य	आशंकित
Q ₁	अपरिवर्तनवादी	प्रयोगवादी
Q ₂	पराश्रित	स्वावलम्बी
Q ₃	अनुशासन हीन	अनुशासित
Q ₄	तनावरहित	तनावयुक्त

कैटेल ने मुख्य लक्षणों को ज्यादा महत्वपूर्ण माना है तथा सतही लक्षणों को कम महत्वपूर्ण। कैटेल ने सामान्य लक्षणों तथा विशेष लक्षणों की तुलना भी की है। सामान्य लक्षण प्रायः हरेक में पाए जाते हैं जैसे बुद्धिमानी। परन्तु विशेष लक्षण व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न अनुपात में होते हैं और किसी-किसी में ही पाए जाते हैं। जैसे – व्यवहार तथा रुचियाँ। कैटेल ने आगे चलकर योग्यता, स्वभाव तथा गत्यात्मक लक्षणों को भी पहचान की है। योग्यता के लक्षणों से यह पता लगता है कि कोई व्यक्ति किसी काम को कैसे पूरा करेगा। स्वभाव नामक लक्षण से पता लगता है कि कोई व्यक्ति विभिन्न स्थितियों में अपनी भावनाओं को किस प्रकार प्रकट करता है। गत्यात्मक लक्षण व्यक्ति के दूसरों को बढ़ावा देने, रुचियाँ तथा महत्वाकांक्षा आदि का परिचय देता है। कैटेल ने आगे चल कर संरचनात्मक लक्षण तथा वातावरण आधारित लक्षणों की भी व्याख्या की। ये लक्षण व्यक्तित्व के प्रमुख लक्षणों में आते हैं और हमारी शारीरिक विशेषताओं पर निर्भर करते हैं। वातावरण तथा परिस्थितिगत लक्षण समाज तथा परिस्थितियों के साथ मनुष्यों की प्रतिक्रियाओं का परिचय देते हैं। सोलह प्रकार के लक्षणों को क्रमबद्ध करने के लिये कैटेल ने अपने साथियों इबर तथा टैस्टुका के साथ मिलकर 1977 में एक प्रश्नावली तैयार की जिसे 16 व्यक्तित्व घटक प्रश्नावली कहा जाता है।

7-3-4-3 व्यक्तित्व के लक्षणों का वर्गीकरण

हैन्स आइजेक (1916-1997) कैटेल के समकालीन मनोवैज्ञानिक थे। यद्यपि वह व्यवहारवाद में विश्वास रखते थे। लेकिन फिर भी वह यह मानते थे कि हमारा व्यक्तित्व आंतरिक होता है तथा 'जीन्स' आधारित होता है। उन्होंने व्यक्तित्व के लक्षणों को समझने के लिए विश्लेषणात्मक सिद्धान्त को आधार बनाया। आरम्भ में वह यह मानते थे कि हमारे व्यक्तित्व के दो आयाम होते हैं – एक बहिर्मुखी दूसरा अंतर्मुखी। इसको उसने भावुकता और स्थिरता की श्रेणियों में भी बांट कर देखा। उसके सिद्धान्त के अनुसार इन आयामों के विभिन्न युग्म अनेक प्रकार के व्यक्तित्वों के विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। बाद में अपने मॉडल में तीसरा आयाम भी जोड़ा और इसे सामाजिकरण अथवा समाज विरोधी नाम दिया। बहिर्मुखता और अंतर्मुखी प्रकट करने वाले व्यक्तित्व के आयाम इस बात के प्रतीक हैं कि मनुष्य अपने बहिर्जगत से और आंतरिक जगत से किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है। जो लोग बहिर्मुखी होते हैं वे प्रायः सामाजिक होते हैं और नए-नए क्षेत्रों से परिचय प्राप्त करने में उन्हें अच्छा लगता है और जब कभी भी वे तनाव में होते हैं तो दूसरों से खुलकर बात करने का उनका मन होता है। लेकिन जो लोग अंतर्मुखी होते हैं वे बहुत संकोची स्वभाव के होते हैं उन्हें अकेलापन पसंद आता है। जब कभी भी वे तनाव में होते हैं तो किसी से बात करना तक पसंद नहीं करते और अपने में ही डूबते चले जाते हैं। स्थिरता व आयाम है जो मनुष्यों के भावनात्मक व्यवहार तथा दुर्भावना से पीड़ित व्यवहार दर्शाता है। जो लोग अधिक भावुक होते हैं वे अपने मन पर काबू नहीं रख पाते और उनका स्वभाव अजीब तरह का होता है। उनके

मन में दूसरों के प्रति दुर्भावना घर करने लगती है। लेकिन इसके विपरीत स्थिर मन लोग प्रायः शान्त रहते हैं तथा व्यक्तित्व के अंतिम आयाम में सामाजिकता और समान के प्रति असहिष्णुता शामिल हैं। जो लोग असहिष्णु होते हैं उनका व्यवहार आक्रामक हो जाता है। वे अहंकारवादी हो जाते हैं, समाज विरोधी और विद्रोही हो जाते हैं। इसके विपरीत जिनके अंदर सामाजिकता होती है उनमें सहनशीलता होती है, सहानुभूति होती है और दूसरों के साथ मिलकर रहने की भावना भी होती है।

7-3-4-4 eDs rFkk dkLVk dk ip ?kVdh; fl)kUr

मनोवैज्ञानिक मैक्रे तथा कोस्टा के अनुसार मानव व्यक्तित्व के लक्षणों को पांच घटकों में बाँटा जा सकता है।

- 1) *अनुभवों के लिए खुलापन*: ऐसे लोग बहुत सक्रिय होते हैं, उनके अन्दर उत्सुकता भरी रहती है। वे कला और सौन्दर्य प्रेमी होते हैं। वे निरपेक्ष, विचारक होते हैं और प्रायः लीक से हटकर चलते हैं। तरह-तरह के काम करने में उनकी विशेष रुचि होती है।
- 2) *अंतर्विवेकशीलता* : इस श्रेणी में आने वाले लोग लक्ष्य परक होते हैं। वे अपने पर नियंत्रण रखते हुए कठोर परिश्रम करने, ईमानदारी का व्यवहार करने तथा अपनी क्षमताओं को निरंतर बढ़ाते जाने में विश्वास रखते हैं। उनका जीवन सुव्यवस्थित होता है और वे अपने आपको अस्त-व्यस्त नहीं होने देते।
- 3) *बहिर्मुखता* : इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो बाहरी जगत से प्रतिक्रियाएँ एकत्रित करना पसंद करते हैं। दूसरों से संबंध/संपर्क बढ़ाना उन्हें अच्छा लगता है।
- 4) *सहमतिशीलता* : ऐसे लोग दूसरों के कामों में अड़ंगा नहीं डालते, ना ही मन में विरोधी भाव पालते हैं। ये प्रायः सहयोगी स्वभावक के होते हैं, दूसरों की मदद करना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। ये लोग दूसरों का विश्वास अर्जित करने में सबसे आगे रहते हैं।
- 5) *मनोविक्षुब्धता* : ऐसे लोगों का मन स्थिर नहीं रहता। वे प्रायः चिन्तित रहते हैं, असुरक्षा की ग्रंथि से पीड़ित होते हैं और दयनीय जीवन जीते हैं। लेकिन फिर भी इस श्रेणी में आने वाले लोग यदि अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रख सकें तो वे जीवन में संतोष और सुरक्षा दोनों ही प्राप्त कर लेते हैं।

7-3-5 0; fDrRo dh Hkkj rh; vo/kkj .kkk

मनुष्यों की प्रकृति और उनके व्यक्तित्व के बारे में गहरी समझ रही है। भारत में ऐसे वैज्ञानिक ढांचे पहले से ही मौजूद हैं जो आधुनिक मनोविज्ञान के व्यक्तित्व के सिद्धान्तों के संकेत देते हैं। संस्कृत में एक शब्द है स्वभाव, यह शब्द मनुष्य के व्यक्तित्व स्थाई विशेषताएँ बताता है। एक दूसरा शब्द है प्रकृति जो सांख्य पद्धति से लिया गया है। यह 'प्रकृति' सभी घटनाओं तथा मनुष्यों में अंतर्निहित विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करती है। प्रकृति के तीन गुण होते हैं सत्त्व, रजस, और तमस। सतोगुण, ज्ञान एवं बौद्धिकता का प्रतीक हैं। जो गुण ऊर्जा और गति के प्रतीक हैं, और तमोगुण, अंधकार और जड़त्व का प्रतीक है। भगवद्गीता में इन तीनों गुणों का विशद वर्णन किया गया है।

- 1) *l rksqk %* जब व्यक्ति में सतोगुण प्रधान होता है तब उस में भावात्मक स्थिरता आ जाती है और वह व्यक्ति अच्छे कार्यों के प्रति समर्पित होता है एवं दूसरों की परवाह करता है।
- 2) *j tksqk %* रजोगुण प्रधान व्यक्ति भावनात्मक रूप से अत्यधिक क्रियाशील होते हैं।

ये लोगों के प्रति लगाव रखते हैं, उत्सुकता और प्रफुल्लता से भरे रहते हैं, विभिन्न कार्यों में रुचि लेते हैं।

- 3) **रेक्सिक %** जब किसी व्यक्ति की प्रकृति तमोगुण प्रधान हो जाती है तो उसे आलस्य और अज्ञान घेर लेता है। ऐसे में यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति को जागृत करके तमोगुण की नकारात्मक प्रवृत्तियों से मुक्ति पा सके तो वह बहुत परिश्रमी और सफल साबित हो सकता है।

कक्ष 2

- 1) व्यक्तित्व के बारे में मैस्त्रों के विचारों का वर्णन कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 2) अल्पोर्ट द्वारा वर्णित व्यक्तित्व के तीन प्रकार के लक्षणों की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 3) बृहत् पंच घटकीय सिद्धान्तों के पांच घटकों की सूची तैयार कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 4) भारतीय मनोवैज्ञानिक के अनुसार व्यक्तित्व की तीन प्रकृतियां कौन-कौन सी होती हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

7-4 0; fDrRo eki u

विभिन्न विधियों द्वारा व्यक्तित्व का मापन किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों तथा मनोचिकित्सकों को, जब किसी व्यक्ति की चिन्ता व तनाव जनित मानसिक दुरावस्था की जांच करनी होती है, तो वे उसका व्यक्तित्व परीक्षण करते हैं। औद्योगिक संस्थानों के मनोवैज्ञानिक कर्मचारियों के चयन से पहले उनकी मानसिक दशा का व्यक्तित्व का निरीक्षण करते हैं। स्कूलों में मनोविश्लेषक सलाहकार बच्चों के व्यक्तित्व में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान तलाशने के लिए उन्हें परामर्श देते हैं। व्यक्तित्व को समझ लेने से उसमें वांछित सुधार किए जा सकते हैं जिससे व्यक्ति में प्रवीणता उत्पन्न हो जाती है। वह अपने कामों को बेहतर ढंग से करने की क्षमता अर्जित कर लेता है। प्रशासनिक कार्यों में कुशलता अर्जित की जा सकती है, परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं तथा आनुवांशिक रूप से उपयोगी उपाय किए जा सकते हैं। जिससे,

- रोगियों के रोग का ठीक से पता लगाया जा सकता है
- तदानुसार मनोचिकित्सकों की मदद ली जा सकती है
- व्यक्तियों के व्यवहार के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा उसके अनुसार सुधार के लिए समुचित मनोवैज्ञानिक तरीके अपनाए जा सकते हैं। (जैसे, नैदानिक, फोरेंसिक, संगठनात्मक, शैक्षणिक)

व्यक्तित्व निर्धारण की उपयुक्त परिभाषा से यह पता लगता है कि व्यक्तित्व का आंकलन अत्यंत दक्ष व्यक्ति ही कर सकते हैं। आंकलन करने वाले को साइकोमेट्रिक परीक्षण की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उन्हें व्यक्तित्व के सिद्धांतों तथा संबंधित व्यवस्थाओं की व्याख्या करने में निपुण होना चाहिए। तब ही वे व्यक्तित्व का सही आंकलन कर सकते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन करने और समझने के लिए आधुनिक युग में अनेक उपाय किए जाते हैं। कुछ उपायों का विवरण इस प्रकार है -

7-4-1 dlxt vlg i fl y ijh{k.k

व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए कागज और पेंसिल टैस्ट बहुत लोकप्रिय है। इसे अनेक प्रकार के प्रयोग में लाया जा सकता है। इनमें से एक प्रकार है—अपने बारे में जानकारी का विवरण प्रस्तुत करना अथवा प्रश्नों के उत्तर देना। इस प्रक्रिया में कुछ सरल प्रश्न पूछे जाते हैं और व्यक्ति को दिए हुए दो या तीन विकल्पों में से एक को चुनना होता है उत्तर देते समय वे 'हां' कह सकता है, या 'नहीं' कह सकता है अथवा 'कोई नहीं' कह सकता है। इन प्रश्नों के उत्तर 'सही या गलत' में नहीं दिए जाते हैं और उत्तर देने की कोई समय सीमा नहीं रखी जाती। लगभग सभी प्रश्न इसी तरह के होते हैं जिनके उत्तरों से व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता लगाया जा सकता है। feuhl k/k cgqkk"kh 0; fDrRo l ph सबसे ज्यादा लोकप्रिय तरीका है। मनोचिकित्सक द्वारा रोगी के व्यक्तित्व को समझने का। इसके आधार पर मनोचिकित्सक रोगी को उचित परामर्श दे सकता है। यह तकनीक हैथवे तथा मैकलिन द्वारा 1943 में विकसित की गई थी और इसमें अनेक बार संशोधन किए जा चुके हैं। इनमें सबसे अधिक संशोधित और व्यावहारिक तकनीक एमएमपीआई-2 है। इसे किशोरों, नशेड़ियों आदि पर आजमाया जा सकता है। इस प्रविधि के अन्दर जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनके उत्तर में रोगी 'सही', 'गलत' या 'कह नहीं सकते', तीनों में से कोई एक विकल्प चुनता है। 1983 में जोशी और मलिक ने tkkij eYVhQsl d i l LkYVh bllo/h का भारत में निर्माण किया था; जिसमें मनः स्नायु विकृति (तंत्रिका रोग) मनोविकृति, मनोदैहिक विकृतियों तथा वैद्यता सूचकांक का पता लगाया जाता है और उनकी चिकित्सा की जाती है।

dyhQkfu; k i l LkYVh bDh (गुफ, 1969) में सामान्य व्यक्तियों के लक्षणों, जैसे आत्म-स्वीकृति, उपलब्धियां, प्रभुत्व आदि, का आंकलन किया जाता है। , MokMZ i l Ly i hYd 'kMy % प्रभुत्व की इच्छा, जरूरतों आदि का आंकलन करने में सक्षम है (एडवार्ड, 1954)। feyu Dyhfudy efYV, D'ky bDh] 1987] 1997 तथा fu; ks i l LkYVh bDh %dkLVk , oa eD] 1989½ में व्यक्तित्व के पंच घटकीय मॉडल के आधार पर व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है। es l ZfcXI VkbZ bMkcdVj - मेयर्स एण्ड मेकॉले, 1985 में संवेदना, सोच, भावनाओं तथा अंतर्ज्ञान के अध्ययन के आधार पर व्यक्तित्व का आंकलन किया जाता है।

फिर भी व्यक्ति-सूची तथा कागज पेंसिल टैस्ट के परिणाम पूरी तरह पूर्ण नहीं होते, इनकी अपनी सीमाएं हैं। पहली बात यह है कि जिनसे प्रश्न पूछे जाते हैं वे अनेक कारणों से बिल्कुल वही जवाब नहीं देते जो उनके अंदर के व्यक्तित्व को उजागर कर सके। दूसरा यह कि परिचितता प्रभाव के कारण आंकलन ठीक नहीं हो पाता। लोगों की प्रायः यह आदत होती है कि वे अधिकतर प्रश्नों के जवाब 'हां' में दे जाते हैं। वे दबाव मुक्त नहीं रह पाते और एक बात यह भी है कि व्यक्ति सूची संस्थानों का संचालन अच्छे पढ़े-लिखे तथा विशेष रूप से जानकार व्यक्ति ही कर सकते हैं।

7-4-2 i {ksh rduhd

प्रक्षेपी तकनीक प्रायः व्यक्तिपरक होती हैं। जो सीमाएं कागज व पेंसिल परीक्षण में पाई जाती हैं, वे प्रक्षेपी तकनीक में नहीं होतीं, इसीलिए इसके माध्यम से व्यक्तित्व का बेहतर आंकलन संभव है। अचेतन प्रक्षेपी परीक्षण व्यक्तित्व के अदृश्य गुणों को समझने में सहायता कर सकता है। यह तकनीक मानकीकृत उजागर उत्तेजनाओं के आधार पर काम करती है, इस तकनीक का प्रयोग करने पर व्यक्ति अपने अंदर जो कुछ देखता है, वही बताता है। इच्छाएं, भय तथा मूल्य उभर कर उद्दीपन में आ जाते हैं। जैसा कि jkVj dk bDfi yhV l Vd cyd (रोटर, 1950), बताता है, जो कुछ लोग बोलते हैं वह पूरे वाक्यों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा पाता। आधे-अधूरे शब्दों को जोड़कर अर्थ निकालना पड़ता है।

हैनरी मुरे तथा क्रिस्टीना मोरगन ने 1935 में FkhesVd , i j l s'ku V l V %AT½ का विकास किया था। इस टैस्ट में विभिन्न प्रकार के 20 कार्ड होते हैं जिनमें अस्पष्ट चित्र बने होते हैं। ये कार्ड उन व्यक्तियों को दिए जाते हैं जिनका व्यक्तित्व-परीक्षण होना है। उस व्यक्ति से यह कहा जाता है कि वह चित्र के आधार पर एक कहानी लिखे, उस कहानी के नायक तथा कहानी के उद्देश्य के बारे में लिखे। जब वह व्यक्ति कहानी लिखता है तो उसमें उसका निजी व्यक्तित्व, उसकी सोच, उसकी भावनाएं, जीवन के प्रति दृष्टि ब्यौरा आदि उतर आते हैं।



एक और टेस्ट होता है **jkwwkd V&V** (1921)। इस टेस्ट में व्यक्तित्व का आंकलन करने की क्षमता होती है। हर कार्ड पर एक स्याही का धब्बा होता है। व्यक्ति से कहा जाता है कि वह बताये कि धब्बे में उसे क्या नजर आ रहा है। इसे देखकर उन्हें किस की स्मृति हो रही है। जितनी जानकारियाँ व्यक्ति मनोविज्ञानी को देता है, उसके आधार पर वह व्यक्तित्व का पता लगा लेता है। हर स्याही के धब्बों के लिए पहले से ही कुछ अंक निर्धारित होते हैं (एकज़नर, 1993)। परन्तु एक बात जरूर है कि प्रेक्षणी तकनीक विशिष्ट व्यक्ति परक होती है। अतः उसके परिणाम वस्तुनिष्ठ तरीकों से आए परिणामों की तुलना में कम विश्वसनीय होते हैं।

7-5 | kjkd k

इस इकाई के अंत में उस सब का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा जिसका हमने विस्तार से वर्णन किया है।

- व्यक्तित्व का अध्ययन करते समय दो आयामों पर विचार करना होता है : एक है व्यक्तिगत विभिन्नताएं तथा दूसरा है व्यक्तिगत विशेषताएं जैसे कि सामाजिकता। इसके बाद यह समझना होता है कि व्यक्ति के विभिन्न अंगसमग्र रूप से मिलकर कैसे काम करते हैं।
- व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर आधारित है एक है व्यक्तित्व की संरचना में तीन घटक होते हैं – इड, अहं तथा पराहम। दूसरा है व्यक्तित्व की गत्यात्मकता जिसमें चेतन, अचेतन तथा अचेतन की प्रेरकता तथा अहंकार सुरक्षा प्रणाली व्यक्तित्व को आकार प्रदान करती है। तीसरा है विभिन्न यौन व्यवहार अवस्थाएँ जो विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ अस्तित्व में आती हैं। उनके दौरान शरीर के विभिन्न अंगों में विशेष लक्षण देखे जा सकते हैं जिनसे व्यक्ति की वयस्कता का पता लगता है।
- अनेक सिद्धान्तकारों ने फ्रायड का अनुसरण किया। कुछ सिद्धान्तकार जिन्होंने आरम्भ में फ्रायड के साथ काम किया था, बाद में फ्रायड के विचारों से सहमत नहीं हुए और उन्होंने अपने सिद्धान्तों का विकास कर लिया। अपनी अलग पहचान बनाने के लिए उन्होंने अपने आपको नव-फ्रायडवादी, नवविश्लेषणात्मक अथवा मनोगतिक कहा। इनमें से कुछ प्रमुख सिद्धान्तकारों के नाम हैं – अल्फ्रेड एडलर, कारेन हॉर्नी, एरिक फ्रॉम, कार्ल युंग, एरिक एरिकसन, आदि।
- व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यैक्तिवक मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त की कुछ आलोचना की। वे इस बात को मानने को तैयार नहीं थे कि मानव व्यक्तित्व को उसके मानस और अचेतन मन से समझाया जा सकता है। जॉन बी. वाटसन तथा बी. एफ स्किनर सबसे अधिक प्रभावशाली व्यवहारवादी सिद्धान्तकार थे।
- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तकारों तथा व्यवहारवादियों के सिद्धान्तों के विरुद्ध व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त का जन्म हुआ। अब्राहम मैस्लो तथा कार्ल रोजर्स प्रमुख मानवतावादी सिद्धान्तकार के रूप में जाने जाते हैं। मानवतावादी सिद्धान्त व्यक्ति के निजत्व के माध्यम से यह जानने का प्रयास करते हैं कि व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार होता है।
- व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले सिद्धान्तकार यह मानते हैं कि व्यक्ति के व्यवहार का आंकलन उसके व्यक्तित्व में स्थित समस्त लक्षणों के आधार पर

किया जा सकता है। व्यक्तियों के लक्षणों या विशेषताओं का अध्ययन करके यह बताया जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व कैसा है।

- व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा व्यक्ति की प्रकृति अंतर्निहित तीन गुणों पर निर्भर करती है, ये तीन गुण हैं – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।
- व्यक्तित्व को मापने के लिए दो प्रमुख विधियां उपयोग में लाई जाती हैं, जैसे, कागज़ और पेन्सिल परीक्षण एवं प्रक्षेपीय तकनीक।

7-6 e[; 'kCn

0; fDrRo

% किसी व्यक्ति के सोचने के अनुभव करने और व्यवहार करने के तरीकों में जो खास बातें होती हैं उन्हें उस व्यक्ति का व्यक्तित्व कहा जाता है।

y{k.k

% लक्षणों के अंतर्गत व्यक्ति के विचार, भावनायें तथा व्यवहार आदि आते हैं। इनके आधार पर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आंकलन किया जा सकता है।

iæ[k y{k.k

% किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में पाये जाने वाले ये सबसे खास लक्षण हैं। अल्पोर्ट ने लक्षणों की सूची में इन लक्षणों को सबसे पहले स्थान दिया है। ये लक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व को संचालित करते हैं। यदि किसी व्यक्ति में ये लक्षण अत्यधिक उभर कर सामने आ जाते हैं तो संबंधित क्षेत्र में वह व्यक्ति इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि ये लक्षण उसकी पहचान बन जाते हैं।

d[nt; y{k.k

% अल्पोर्ट के अनुसार हर व्यक्ति में पांच से दस तक केन्द्रीय लक्षण विभिन्न अनुपातों में पाए जाते हैं। ये लक्षण स्पष्ट दिखते हैं तथा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण के लिए ये जिम्मेदार होते हैं। प्रमुख केन्द्रीय लक्षण – बुद्धिमत्ता, वफादारी, आश्रितता, आक्रामकता आदि।

ek/; fed y{k.k

% ये वे लक्षण हैं जिनकी व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका अपेक्षाकृत कम रहती है। इनका उदय खास स्थितियों और परिस्थितियों में होता है।

bM

% व्यक्तित्व का ये भाग अचेतन रूप से कार्य करता है। इसका संबंध आधार भूत प्रवृत्तियों, शारीरिक आवश्यकताओं तथा आक्रामक आवेगों से होता है।

vopru eu

% यह मस्तिष्क का वह भाग है जिसमें पूर्व संचित सूचनाएँ भरी रहती हैं। आमतौर पर मनुष्य को इनका आभास नहीं होता, विशेष ध्यान देने पर ही इनका आभास होता है।

7-7 i qjkoykdu it u

- 1) पहचान का 'इसे करो' से वही संबंध है जो पराहम को हैं -
 - अ) "देर तक प्रतीक्षा करो" से
 - ब) "अपना काम करो" से
 - स) "इसे मत करो" से
 - द) "बस चुपचाप बैठे रहो" से।
- 2) लक्षणों को निम्न में से मनुष्य की कौन सी विशेषताओं से संबंधित माना जाता है।
 - अ) शारीरिक।
 - ब) अपेक्षाकृत स्थायी तथा लम्बे समय तक रहने वाला।
 - स) स्थिति जन्य।
 - द) समूह का अंश।
- 3) सिद्धान्त अधिकतम तथा सिद्धान्त न्यूनतम अचेतन की भूमिका
 - अ) लक्षण, मानवतावादी
 - ब) मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी
 - स) मनोविश्लेषणात्मक, मानवतावादी
 - द) लक्षण, व्यवहारवादी
- 4) वे मनोवैज्ञानिक जो यह मानते हैं कि मनुष्य जीवन पर्यंत बढ़ते और विकसित होते रहते हैं तथा वे स्वाभाविक रूप से अच्छे होते हैं, कहे जाते हैं
 - अ) मनोविश्लेषणवादी
 - ब) उग्रव्यवहारवादी
 - स) समाजज्ञाता सिद्धान्तकार
 - द) मानवतावादी
- 5) व्यक्तित्व के पंच घटकीय मॉडल की व्याख्या कीजिये।
- 6) फ्रायड के व्यक्तित्ववादी सिद्धान्त में अचेतन का इतना महत्व क्यों है?
- 7) व्यक्तित्व के विश्लेषणात्मक सिद्धान्तकारों द्वारा वर्णित पांच सुरक्षा प्रणालियों की व्याख्या कीजिये।
- 8) व्यक्तित्व निर्धारण की विधियों का वर्णन कीजिये।
- 9) व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त का वर्णन कीजिये।

7-8 I kr , oa vU; I nHkZ

- इंडिविजुअल डिफरेंसेज एण्ड पर्सनाल्टी, एकेडैमिक प्रैस, यू.एस.ए. – एम. एस्टन, 2013
- साइकोलॉजी – इंडियन सबकॉन्टिनेंट एडीशन, पर्सन एजुकेशन, दिल्ली – आर. ए. एण्ड जी. मिश्रा, 2016
- साइकोलॉजी, पर्सन एजुकेशन लिमिटेड, न्यूयार्क – एस. के. सिसरैली एण्ड जे. एन. हाइट, 2015
- इमोशनल एण्ड सोशल इंटेलिजेंस एण्ड बिहेवियर इन : एस. गोडस्टीन, डी. प्रिंसीचोटा, जे. नागलोरी हेंड बुक ऑफ इंटेलिजेंस श्रीनगर, न्यूयार्क – आर. ई. बॉयजेज, जे. गास्केन, एच. बी, 2015
- पर्सनाल्टी एण्ड इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज़, जॉन विली एण्ड सन्स – केमरों – प्री मुजीक
- पर्सनाल्टी थ्योरीज़ : क्रिटीकल पर्सपेक्टिब्स, सेज़ पब्लिकेशन – ए एलिस, एम. अब्राहम एण्ड एल अब्राम्स, 2009
- हेंडबुक ऑफ साइकोलॉजी, वोल्यूम – 5 पर्सनाल्टी एण्ड सोशल साइकोलॉजी – एम. जे. लर्नर, टी. मिलन एण्ड आई वी वीनर, 2003
- ‘ए कलैक्शन ऑफ डैफिनेशन्स ऑफ इंटेलिजेंस’ फ्रंटियर्स इन आर्टोफीसियल इंटेली जेंस एण्ड एप्लीकेसन्स 157, 17 – एस लैंग एण्ड एम. हट्टर, 2007
- इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज़ एण्ड डिफ्रेंसियल साइकोलॉजी, द विली ब्लैक वैल हेंडबुक ऑफ इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज़ 1 – 38. जे. डब्ल्यू. विल्ट, रिवैली एण्ड डी एम कंडन, 2011
- थ्योरीज़ ऑफ पर्सनाल्टी, सेंगेज़ लर्निंग दिल्ली, इंडिया – डी. पी. शुल्ज एण्ड एस. ई. शुल्ज, 2013

7-9 fp=ka ds fy, I nHkZ

- Diagram of Freud's psyche theory. Retrieved October 6, 2018 from <https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Structural-Iceberg.svg>
- Extrovert-Introvert Spectrum. Retrieved October 6, 2018 from <https://commons.wikimedia.org/wiki/File:ExtrovertIntrovertSpectrum.png>.

7-10 vkWkykbu I kr

- For information on Psychodynamic theory, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/suny-hccc-ss-152-1/chapter/freuds-psychoanalytic-theory/>
 - <http://journals.iupui.edu/index.php/advancesinsocialwork/article/view/140>
 - <https://nobaproject.com/modules/the-psychoanalytic-perspective>
- For more on Behaviourist Theory of Personality, visit
 - <https://www.simplypsychology.org/behaviorism.html>

- <https://chasqueweb.ufrgs.br/~slomp/edu01011/watson-behaviorist.pdf>
- <https://plato.stanford.edu/entries/behaviorism/>
- To learn more about Trait Theory of Personality, visit
 - http://www.ep309.org/faculty/LAMBJEN/Chapter6/trait_theories_of_personality.pdf
 - http://www.ufrgs.br/psico-laboratorio/textos_classicos_3.pdf
 - <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/trait-perspectives-on-personality/>

oLrqu" B i z uka ds mUkj

1 (स), 2 (ब), 3 (ब), 4 (द)



: ij\$kk

- 8.0 सीखने का उद्देश्य
- 8.1 प्रस्तावना
- 8.2 बुद्धि की परिभाषा संप्रत्यय
 - 8.2.1 बुद्धि पर आनुवंशिकता बनाम वातावरण विवाद
- 8.3 बुद्धि के सिद्धांत
 - 8.3.1 स्पीयरमैन बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.2 थर्स्टन बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.3 स्टर्नवर्ग का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.4 गार्डनर का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.5 कैटल का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.6 पास सिद्धान्त
 - 8.3.7 प्रोद्योगिक बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.8 अविभाज्य बुद्धि का सिद्धांत
- 8.4 बुद्धि की माप
 - 8.4.1 बुद्धि परीक्षण के प्रकार
 - 8.4.1.1 वैयक्तिक और समूह बुद्धिपरीक्षण
 - 8.4.1.2 शाब्दिक और अशाब्दिक परीक्षण
 - 8.4.1.3 संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण एवं सांस्कृतिक पक्षपात परीक्षण
- 8.5 सारांश
- 8.6 मुख्य शब्द
- 8.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 8.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 8.9 चित्रों का संदर्भ
- 8.10 ऑनलाइन स्रोत

8-0 mnns ;

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात्, आप निम्नलिखित बातों को समझ पाएँगे:

- बुद्धि का स्वरूप संप्रत्यय;
- बुद्धि के आनुवंशिकता बनाम वातावरण पर विवाद;
- बुद्धि के विभिन्न सिद्धान्तों की तुलना और सारांश;
- बुद्धि को मापने के लिए प्रयोग होने वाले विभिन्न तरीके; तथा
- विभिन्न प्रकार के बुद्धि परीक्षण का वर्णन।

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू, नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।



fp= 8-1% Hkkj rh; oMjfdM fç; k' kh l kèkuh

प्रियांशी सोमानी ने 16 नवम्बर 1998 को जन्म लिया जिनका दिमाग एक मानसिक गणना यन्त्र की तरह है और जो मानसिक गणक विश्व कप, की सबसे कम उम्र की प्रतिभागी थी और जिन्होंने पद को जीत कर भारत को गौरवन्वित किया। केवल ये ही ऐसी भागीदार थी जिन्होंने सभी 5 मानसिक गणक विश्वकप में जोड़, गुणा, वर्गमूल में 100 प्रतिशत प्राप्त किया।

l ks %http://www.indiatimes.com/culture/

ऊपर के उदाहरण में ऐसी कौन सी बात है जिसने इस बच्चे को, अपनी आयु के अन्य बच्चों से अद्भुत बनाया? या ऊपर के उदाहरण में इनके अन्दर अपने हम उम्र बच्चों से अलग ऐसी कौन सी ऐसी बात थी जिसने चमत्कारी बनाया। क्या यह जन्मजात थी या गणित की समस्या को हल करने में इनको प्रशिक्षित किया गया था? कभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस तरह के बुद्धिमय व्यवहार को वर्णित करने के लिए विभिन्न सिद्धान्त विकसित किए गए। इस इकाई में हम बुद्धि के संप्रत्यय, बुद्धि के सिद्धान्त एवं बुद्धि के मापने के तरीके की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात, उन कारकों को पहचानने की कोशिश कीजिएगा जो इस तरह के बच्चे की विलक्षणता का सही तरीके से वर्णन करते हैं और अपने दोस्तों के साथ इसकी चर्चा कीजिएगा।

8-2 cf) dh ifjHkk"kk vkj l à R; ;

बुद्धि के अन्तर्गत कई तरह की योग्यताएँ एक साथ आती हैं। ये मिलने वाली सूचनाओं को समझकर उसका अर्थ निकालने की क्षमता है। यह नए गुणों को प्राप्त करने और मौजूदा ज्ञान में इसका प्रयोग करके कार्य को पूरा करने या परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता है। बुद्धि के अन्तर्गत नए उद्दीपनों को समझने, भाषा को सीखने और दूसरों के साथ संबंध रखने, वातावरण के प्रति जागरूक होने, तर्क करने, योजना बनाने और समस्या की रचनात्मकता के साथ समाधान करने की क्षमता आती है। वेचस्लेर (1944) के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है।" भारतीय परिदृश्य में बुद्धि को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति की

अनुकूलन अन्तःशक्ति के रूप में देखा जाता है। यह केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र को प्रस्तुत नहीं करता है। यह अनुकूलन अन्तःशक्ति कई तरह की योग्यताओं से बना होता है जो व्यक्ति को उसके जीवन की समस्या से उबरने/आगे बढ़ने एवं जो वह बनना चाहता है वह बनने में, उसकी मदद करता है। श्रीवास्तव और मिश्रा (1997) के अनुसार बुद्धि में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। ये भिन्नता व्यक्ति को उसके जीवन के मसलों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता को प्रभावित करती है। जिनको आईक्यू परीक्षण में 70 से कम अंक प्राप्त होते हैं उन्हें मानसिक रूप से निर्बल/अक्षम माना जाता है। मानसिक निर्बलता के स्तर में भी भिन्नता पाई जाती है। यह व्यक्ति के रोज के कार्यों या साधारण कार्यों को करने की क्षमता को सीमित कर देता है। वे ऐसे लोग शैक्षिक क्षेत्र और जीवन की कुशलताओं में कमजोर होते हैं। इनके अन्दर सामाजिक एवं व्यावसायिक कौशल को सवारने की कोशिश की जाती है। बुद्धि में लिंग विभिन्नता भी पाई जाती है। औरतें और लड़कियाँ मौखिक कार्यों में बेहतर पाई गई है जबकि आदमी व लड़के प्रदर्शन कार्यों में बेहतर पाये गये हैं। बुद्धि के स्तर में अन्तर बौद्धिक रूप से उत्तेजित घरेलू वातावरण से भी प्रभावित होता है।

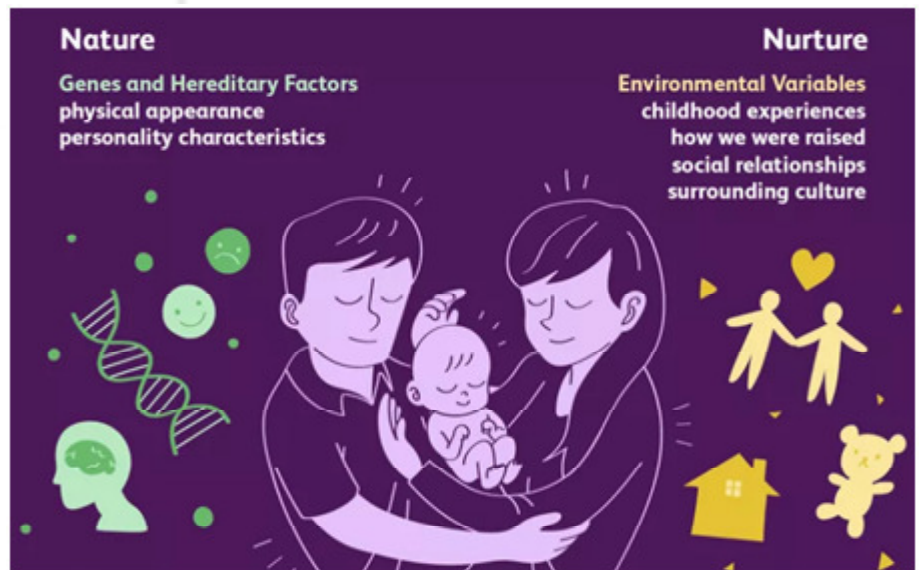
8-2-1 c() i j vkupf' kdrk cuke okrkoj .k fookn

क्यों कुछ लोग दूसरों से ज्यादा बुद्धिमान होते हैं? क्यों एक ही परिवार के भाई-बहन अभिषमता व बुद्धि के स्तर पर अलग-अलग होते हैं?

इन प्रश्नों व इनके जैसे और प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने आनुवंशिकता बनाम वातावरण विवाद का सहारा लिया। यह विवाद इस बात पर है कि मानव बुद्धि में अन्तर आनुवंशिकता का परिणाम है या वातावरण का। आगे बढ़ने के पहले चलिए समझते हैं कि आनुवंशिकता या वातावरण वास्तव में क्या हैं।

आनुवंशिकता— यह आनुवंशिक कारकों से संबंध रखता है जो कि हमें हमारे माता-पिता से विरासत के रूप में मिलता है जैसे कि लम्बाई या त्वचा का रंग।

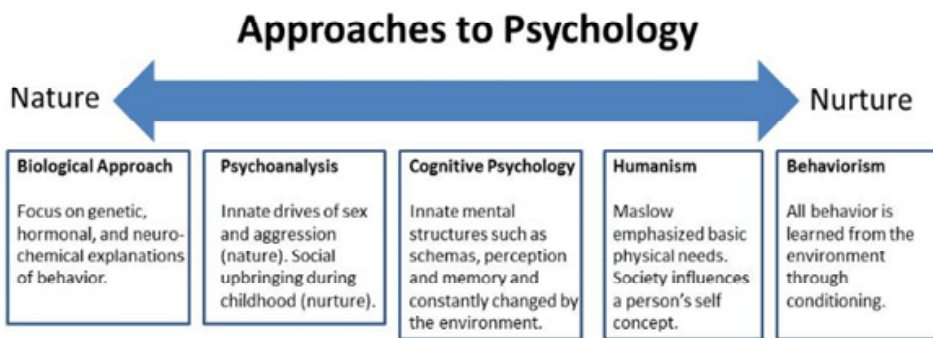
पालन पोषण/वातावरण— यह वातावरण के उन सभी कारकों से संबंध रखता है जो हमें प्रभावित कर सकता है जैसे कि पालन-पोषण का तरीका, परिवार, सामाजिक आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक समर्थन, सांस्कृतिक कारक और ऐसी सभी चीजें जो व्यक्ति के बाहर मौजूद होती है।



fp= 8-2 % vkupf' kdrk cuke lk; kbj .k fookn

स्रोत : <http://www.everywellmind.com/>

आनुवंशिकता या वातावरण में कौन ज्यादा महत्वपूर्ण है यह एक पुराना व अनसुलझा हुआ विवाद है। वो लोग जो यह मानते हैं कि हमारी बुद्धि पूरी तरह से आनुवंशिक कारणों से संचालित होते हैं उन्हें सहजजातवादी कहते हैं। जो लोग इनके विचारों का समर्थन करते हैं उनका मानना है कि मानव व्यवहार में अन्तर विभिन्न आनुवंशिक रचना का परिणाम होता है। इस विवाद के दूसरे विचार को समर्थन करने वाले अनुभववादी कहलाते हैं। इनका यह मानना है कि व्यक्ति का बुद्धि के स्तर पर एक दूसरे से अलग होना उनके अपने अनुभव या वातावरणीय कारकों पर निर्भर करता है। इस विचारधारा के जाने माने व प्रतिष्ठित समर्थकों में से एक जॉन लाक हैं जो मानव मस्तिष्क को एक कोरा कागज की तरह मानते हैं जो धीरे-धीरे हमारे जीवन के अनुभव से भरता है। चित्र 8.3 में मनोविज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों द्वारा उठाए गए नेटिविस्ट बनाम अनुभववादियों को दर्शाता है।



fp= 8-3% eukfoKku ea usVfoLV cuke vu#kooknh nf"Vdksk

स्रोत: <https://www.simplypsychology.org/>

हालाँकि इस विवाद में समकालीन विचारकों के अनुसार किसी भी एक विचार को पूरी तरह से समर्थन देने पर मानव व्यवहार व व्यक्तिगत भिन्नता को समझ पाना मुश्किल होगा। हाल ही में किए गए कई अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि आनुवंशिक और वातावरणीय दोनों ही कारक बुद्धि को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए शारीरिक विशेषता के रूप में एक व्यक्ति का कद आनुवंशिक और वातावरणीय दोनों ही कारकों से प्रभावित होता है। यदि बच्चे के माता-पिता लम्बे हैं और बच्चे में जन्मजात लम्बे कद से सम्बन्धित जीन्स आ जाते हैं तो बच्चा कितना लम्बा होगा यह उसके पालन पोषण पर निर्भर करता है। यदि बच्चे को उचित आहार/पालन पोषण नहीं मिल पाता है तो लम्बे कद का जीन्स ज्यादा प्रदर्शित नहीं होगा और वह अपने माता-पिता से कद में छोटा ही रह जाएगा। असामान्य मनोविज्ञान या मनोविकृति विज्ञान की पाठ्य पुस्तिका आनुवंशिकता व वातावरण अन्तःक्रिया से सम्बन्धित थी। ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जहाँ मानसिक विकार के प्रमुख कारणों को समझने में आनुवंशिक प्रवृत्ति और वातावरणीय कारक दोनों की ही सहायता ली जाती है।

बुद्धि के स्वरूप पर वैयक्तिक विभिन्नता की विवेचना करने में जीन्स (आनुवंशिक या स्वभाविक प्रवृत्ति) की भूमिका के पक्ष में प्रचुर मात्रा में प्रमाण उपलब्ध है जो कि ऐसे समरूप जुड़वा बच्चों पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला गया था जिनका अलग-अलग जगहों में रखकर पालन पोषण गया था। इन अध्ययनों के पीछे का तर्क यह है कि यदि समरूप जुड़वा बच्चों को अलग अलग वातावरण में रखने के बावजूद इनका बुद्धि का स्तर लगभग एक जैसा होगा तो यह जीन्स को उत्तरदायी ठहराता है। यदि समरूप जुड़वा जिन्हें अलग-अलग पाला गया वे आपस में बुद्धि के स्तर में ज्यादा समानता दिखलाते हैं बजाय असमरूप उन जुड़वा बच्चे जिन्हें भी अलग-अलग प्रबल रूप से समर्थन करता है। इस प्रकार जन्मजात वैयक्तिक भिन्नता का सबूत मिलता है। इसके आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि व्यक्ति

की बुद्धि को निर्धारित करने में वातावरण की भूमिका बहुत कम होती है (जेनसन, 1973)। द फ्लाइन् इफेक्ट आइक्यू पर वातावरण के प्रभाव के महत्व की बात करते हैं। संस्कृति वातावरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। फ्लाइन् इफेक्ट के अनुसार आइक्यू का एक बड़ा हिस्सा हर दस वर्ष में तीन बिन्दु ज्यादा बढ़ जाता है। यूएस में औसत आइक्यू 1932 से 2002 के बीच लगभग 22 अंकों तक बढ़ गया। भारत में फ्लाइन् इफेक्ट का अध्ययन नहीं किया गया। हालांकि कुछ सीमित आइक्यू अंक कम अंकों की ओर इशारा करते हैं। इस प्रकार वातावरणीय कारक जैसे कि कुपोषण, बीमारी एवं अशिक्षा सामान्य जनसंख्या में औसत से निम्न बौद्धिक अंक का कारण बनती है और यह परिस्थिति आनुवंशिक क्षमता को आइक्यू के रूप में प्रदर्शित होने से रोकती है।

ckk c' u 1

1) बुद्धि को परिभाषित कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

2) बुद्धि पर आनुवंशिक बनाम पर्यावरणीय विवाद की विवेचना कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

8-3 c(ds fl) kUr

बुद्धि को एक खास तरीके से परिभाषित किया गया है लेकिन बुद्धि के संप्रत्यय को लेकर लोगों के विचार एक दूसरे से अलग हैं। कई तरह के विचार हैं जो अलग-अलग दृष्टिकोणों के माध्यम से बुद्धि की विवेचना एवं वर्णन करते हैं। सिद्धान्तवादियों का एक समूह मानसिक गुणों के समूह को एक ऐसे कारक के रूप में देखता है जो बुद्धि को बनाते हैं। इसका समूह बुद्धि को बौद्धिक प्रक्रियाओं के रूप में देखता है।

8-3-1 Lih; jeŭ dk c(fl) kUr

चार्ल्स स्पीयरमैन (1904) के बुद्धि के सिद्धान्त को दो कारक सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। स्पीयरमैन ने पाया कि जो बच्चे एक विषय में अच्छे अंक लाते हैं वे अक्सर दूसरे विषय में भी अच्छे अंक प्राप्त करते हैं अपने इस अवलोकन से प्रेरित होकर उन्होंने यह विचार प्रस्तुत किया कि हमारे अन्दर कुछ सामान्य कारक होते हैं जो हमारे सभी व्यवहारों को प्रभावित करता है। कारक विश्लेषण जो कि एक सांख्यिकीय विधि है का प्रयोग करके उन्होंने बताया कि सभी संज्ञानात्मक क्रियाएँ या मानसिक क्रियाएँ दो कारकों से मिलकर बनती हैं। सामान्य या "g" कारक एवं विशिष्ट या "s" कारक "g" कारक व "s" कारक दोनों मिलकर बुद्धि

को बनाते हैं। g कारक सिद्धान्त या सामान्य कारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि सामान्य बुद्धि का अंगभूत है। g कारक मानसिक क्षमता के स्थूल क्रम से सम्बन्धित है जो अनेक प्रकार के संज्ञानात्मक गुणों के प्रदर्शन को प्रभावित करता है s कारक एकल या विशिष्ट कारक होता है जो कि यह बताता है कि सभी संज्ञानात्मक गुण एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसलिए सामान्य बुद्धि, ज्ञान हासिल करने, अमूर्त चिंतन करने तथा नए परिस्थिति में सामंजस्य करने के लिए जिम्मेदार होती है।।

8-3-2 FkLVU dk cf) fl) kUr

एल एल थर्स्टन ने बुद्धि की सात प्रधान क्षमताओं के समूह पर जोर दिया है। इनका सिद्धान्त स्पीयरमैन के सिद्धान्त से काफी अलग है इनके अनुसार बौद्धिक क्रिया के प्रदर्शन में दिखने वाला अन्तर विभिन्न स्वतन्त्र क्षमताओं की वजह से होता है। ये स्वतंत्र क्षमताएँ निम्नलिखित हैं:

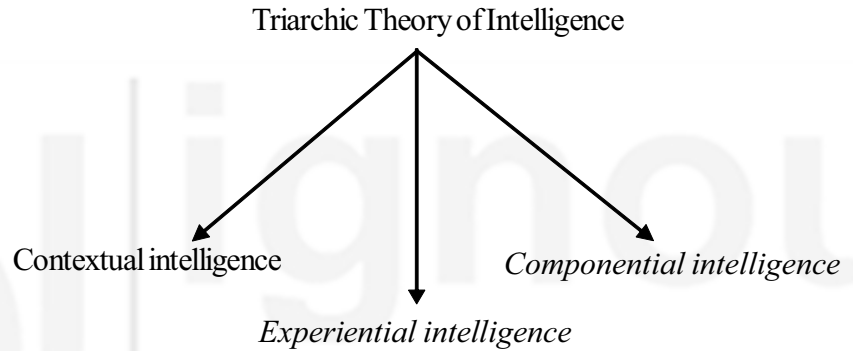
- i) *शब्द प्रवाह क्षमता*— सोचने या शब्दों को तेजी से प्रयोग करने की क्षमता जैसे कि विपर्यय शब्द अर्थात् किसी शब्द अथवा वाक्य के अक्षर को इस प्रकार बदलना कि नए शब्द या वाक्य बन जाएँ ।
- ii) *शाब्दिक अर्थ क्षमता*— शब्दों, संप्रत्यय या विचारों को सही ढंग से समझने की क्षमता। शब्दावली परीक्षण का प्रयोग शाब्दिक अर्थ क्षमता को मापने के लिए किया जा सकता है।
- iii) *स्थानिक क्षमता*— अवस्था के किसी दिए हुए स्थान में वस्तुओं के आकार एवं परिचालन की क्षमता।
- iv) *अवधारणात्मक गति*— हर उद्दीपक का सटीक रूप से जल्दी से विवरण देखने की प्रवृत्ति।
- v) *आंकिक क्षमता*— आंकिक समस्या की परिशुद्धता एवं तीव्रता के साथ हल निकालने की क्षमता।
- vi) *विवेचनात्मक तर्क क्षमता*— तथ्य को देखने व इससे कोई सामान्य नियम बनाने की क्षमता।
- vii) *स्मृति*— परिशुद्धता व तीव्रता के साथ (चीजों/तथ्यों/घटनाओं को) याद करने की क्षमता।

8-3-3 LVuŁxZ dk cf) fl) kUr

राबर्ट स्टर्नबर्ग (1988ए, 1997बी) ने बुद्धि का त्रिपदीय सिद्धान्त विकसित किया। जिसके अनुसार बुद्धि तीन तरह की होती है। पहली व्यावहारिक बुद्धि है। दूसरी सृजनात्मक बुद्धि और तीसरी आलोचनात्मक बुद्धि है। व्यावहारिक बुद्धि में रोजमर्रा के मामलों से निपटने की क्षमता है। प्रासंगिक बुद्धि या व्यावहारिक बुद्धि वातावरण या परिस्थिति की मांग के साथ सामंजस्य बैठाने की क्षमता को दर्शाता है। इसके अन्तर्गत ज्ञान व सूचनाओं का वास्तविक संसार में प्रयोग किया जाता है और इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों से सफलतापूर्वक सामंजस्य बैठाने की कोशिश की जाती है। यहाँ सामंजस्य से मतलब वर्तमान परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखना और अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए अपनी परिस्थिति को सुधारना तथा परिवर्तन करना दोनों ही है। जिन लोगों के अन्दर ऐसी बुद्धि ज्यादा होती है वे चालाक और अक्सर अपने जीवन में सफल होते हैं।

सृजनात्मक बुद्धि से तात्पर्य किसी परिस्थिति या समस्या का सामना करने या हल निकालने के लिए नए विचार विकसित करने की क्षमता से है। अनुभवजन्य बुद्धि (Experiential intelligence) या सृजनात्मक बुद्धि (creative intelligence) नए विचार या समस्या समाधान को विकसित करने की क्षमता है। इस बुद्धि में उच्च प्राप्तांक वाले व्यक्ति सृजनशील होते हैं। इनके अन्दर पुराने अनुभवों को नए आविष्कार करने में प्रयोग करने की क्षमता होती है।

विश्लेषणात्मक बुद्धि के अन्तर्गत संक्षिप्त रूप से सोचने और मूल्यांकन करने की क्षमता आती है। घटकीय बुद्धि (componential intelligence) जिसको विश्लेषणात्मक बुद्धि के रूप में जाना जाता है, को मापने के लिए क्रमागत बुद्धि (traditional intelligence) परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। जो लोग इस बुद्धि परीक्षण में उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं वे लोग क्रमागत/पारम्परिक बुद्धि अनुपात (traditional intelligence Quotient (IQ)) परीक्षण में भी अक्सर उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति के अन्दर उच्च मात्रा में विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताएँ पाई जाती हैं और ऐसे लोग ज्यादातर शैक्षिक कार्य एवं विद्यालयों में अच्छा प्रदर्शन दिखलाते हैं। ऐसे लोग गणित एवं शाब्दिक गुणों में भी अच्छे होते हैं।



fp= 8-4% LVucxl dk f=i nh; fl) klr

8-3-4 xkMLuj dk c(fl) klr

हॉवार्ड गर्डनर (1993बी, 1999ए) – बुद्धि के पारम्परिक विचार का खंडन करते हैं जिसमें बुद्धि को तार्किक विवाद की क्षमता के रूप में देखा जाता है। इनके अनुसार बुद्धि का स्वरूप एकाकी ना होकर बहु-कारकीय होता है। जिसमें कई तरह की बुद्धि एक साथ कार्य करती है। इनके अनुसार बुद्धि “समस्या या विशेष उत्पाद जो कि किसी विशेष संस्कृति या समुदाय के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है, का हल निकालने की क्षमता है। 1993 शुरु में इन्होंने सात तरह के अलग-अलग बुद्धि प्रकारों को प्रस्तुत किया जो कि निम्नलिखित है :

- 1) **भाषाई बुद्धि** : जो लोग इस तरह की बुद्धि पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं वे भाषाई क्षमताओं/गुणों में अच्छे होते हैं अर्थात् वे अपने विचारों को उचित शब्दों का इस्तेमाल/प्रयोग करके आसानी से स्पष्ट उच्चारण (साफ बोलना) के साथ प्रकट कर सकते हैं। वे शब्दों के साथ जोड़-तोड़ आसानी से कर सकते हैं। कवि और लेखक जैसे लोगों में उच्च मात्रा में भाषाई क्षमता पाई जाती है।
- 2) **संगीतिक बुद्धि** : इस बुद्धि पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त व्यक्ति, संगीत को लेकर संवेदनशील व ज्ञानवर्धक होते हैं। वे संगीत के ढांचे में जोड़-तोड़ करके नए संगीत का सृजन कर सकते हैं जिन लोगों में ऐसी बुद्धि पाई जाती है वे अच्छे गायक, संगीत वादक व अच्छे संगीतज्ञ (संगीत देने वाले) होते हैं।

- 3) **तार्किक-गणितीय बुद्धि** : इस तरह की बुद्धि में, मूर्त समस्याओं पर तार्किक चिंतन करने की क्षमता आती है। ऐसे व्यक्ति वैज्ञानिक अभिक्षमता रखते हैं और आंकिक व अमूर्त समस्याओं को हल करने में अच्छे होते हैं। वैज्ञानिकों में यह बुद्धि उच्च स्तर की होती है।
- 4) **स्थानिक बुद्धि** : यह बुद्धि व्यक्ति की दृश्य संबंधी कल्पना या मानसिक कल्पना को प्रयोग करने व जोड़ तोड़ करने की क्षमता से सम्बन्धित है। संचालक, विमान चालक शिल्पकार और चित्रकार में ऐसी बुद्धि पाई जाती है।
- 5) **शारीरिक गतिक बुद्धि** : यह समस्या समाधान एवं उत्पाद के निर्माण के लिए शरीर या वस्तुओं के भागों को नियंत्रित करने व साधने की क्षमता है। फौज में, गुप्त समाचार सूचना विभाग, खिलाड़ी, अभिनेता और नर्तकों में उच्च स्तर की शारीरिक गतिक बुद्धि पायी जाती है।
- 6) **अंतरावैयक्तिक बुद्धि** : अपने खुद के भावों, संवेगों, जरूरतों और अभिप्रेरकों के प्रति सजग होना अंतरावैयक्तिक बुद्धि को दर्शाता है। दार्शनिक और आध्यात्मिक गुरुओं के अन्दर ऐसी बुद्धि उच्च मात्रा में पाई जाती है।
- 7) **अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि** : यह दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों, प्रेरकों और भावों को समझने की क्षमता है। जिन व्यक्तियों में यह बुद्धि उच्च मात्रा में पाई जाती है वे दूसरों के प्रति अपनी समझ का प्रयोग उनके साथ सुखदाई संबंध विकसित करने के लिए करते हैं। परामर्शदाता, राजनेता, अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता में उच्च मात्रा में अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि पाई जाती है।

बाद में इन्होंने उपर्युक्त प्रकारों में दो और बुद्धि प्रकारों को भी जोड़ा (8) **प्राकृतिक बुद्धि** : यह प्रकृति के विभिन्न रूपों के प्रति संवेदनशील होती है। ऐसे लोग प्रकृति के प्रति संवेदनशील होते हैं और प्रकृति प्रेमी होते हैं। जंगली जीवन जीने वाले और वनस्पति शास्त्र में ऐसी बुद्धि का स्तर उच्च होता है।

प्रत्येक व्यक्ति में उपर्युक्त आठ प्रकार की बुद्धि का एक अनूठा मिश्रण होता है जो वैयक्तिक भिन्नता की व्याख्या करता है। गार्डनर और उनके साथियों के अनुसार बुद्धि का आदर्श पेपर पेंसिल परीक्षण बुद्धि के बहुत से पक्ष को नहीं मापता है जैसे कि अंतर्वैयक्तिक कौशल बुद्धि परीक्षण पर बहुत से विद्यार्थी काफी खराब प्रदर्शन करते हैं लेकिन परिशोधित अंतर्वैयक्तिक कौशलों की वजह से वे महान नेता बन जाते हैं; जो यह दिखलाता है कि गणितीय, शाब्दिक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं जिसका मापन बुद्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है, से कहीं ज्यादा अर्थ "बुद्धि" से निकलता है।

8-3-5 **cf) fl) klr**

रेमंड कैटेल (1963) ने बुद्धि के तरल तत्व एवं ठोस तत्व के विचार को प्रस्तुत किया तरल बुद्धि से तात्पर्य तर्क करने व नई समस्या का हल निकालने की क्षमता से है जिसमें बीते समय के अनुभव से मिले ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है बल्कि व्यक्ति समस्या के समाधान के लिए नए तार्किक तरीकों का आविष्कार करता है। ठोस बुद्धि के तात्पर्य कौशलों, ज्ञान व बीते अनुभवों का प्रयोग करने की क्षमता से होता है। इसके अन्तर्गत बौद्धिक रूप से सीखना आता है जो कि एक व्यक्ति अपने जीवन अवधि के दौरान सीखता है। यह बुद्धि व्यक्ति के भाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान के रूप में प्रदर्शित होता है।

l oskRed c(f)

1990, की शुरुआत में जोन मायर और पीटर सालोवी द्वारा सबसे महत्वपूर्ण असंज्ञानात्मक बुद्धि में से एक संवेगात्मक बुद्धि को प्रस्तुत व परिभाषित किया गया। बुद्धि की विवरण पुस्तिका, 2000 में इन्होंने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित किया कि “संवेग को देखने और प्रकट करने की क्षमता, संवेगों को विचारों में सम्मिलित करना, संवेगों को समझना और खुद के एवं दूसरों के जीवन में संवेगों को निष्क्रिय करना”। यद्यपि मायर और सालोवी द्वारा मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस शब्द को प्रस्तुत किया गया परन्तु यह गोलमैन (1995), की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब ‘संवेगात्मक बुद्धि’ है जिसमें आईक्यू से कहीं ज्यादा ईआई को महत्वपूर्ण बताया गया है।

l kelftd c(f)

दूसरे तरह की असंज्ञानात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि के रूप में जानी जाती है। थानडाइक (1920) ऐसे पहले मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने इस पद का प्रयोग दूसरे व्यक्ति को समझने और उन्हें समझदारी से संचालित करने के रूप में किया। गोलमैन ने सामाजिक बुद्धि की महत्ता को अंतर्व्यक्तिक संबंधों के लिए बताया। मायर और सालोवी के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि का एक भाग है इसी वजह से बैरन (बैरन, 2006) ने कहा कि ये दोनों शब्द एक दूसरे से जुड़े हुए हैं दोनों ही एक जैसी रचना के घटक हैं। आगे वे अपनी बुद्धि के सिद्धान्त में कहते हैं कि गार्डनर (1983) का व्यक्तिगत बुद्धि के प्रति विचार भी अंतराव्यक्तिक (संवेगात्मक) बुद्धि एवं अन्तर्व्यक्तिक (सामाजिक) बुद्धि का मिश्रण है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर वे कहते हैं कि इन दो पदों (एसआई एवं ईआई) को जोड़कर एक पद की रचना करना ज्यादा सही होगा। इस नई रचना को इन्होंने “संवेगात्मक सामाजिक बुद्धि” या ईएसआई का नाम दिया।

बार-ऑन मॉडल के अनुसार “संवेगात्मक सामाजिक बुद्धि, संवेगात्मक एवं सामाजिक गुणों के परस्पर संबद्ध का अनुप्रस्थ काट है। ऐसे कौशल और समन्वयक है जो यह निश्चित करता है कि कितने प्रभावकारी ढंग से हम खुद को समझते और प्रकट करते हैं एवं दूसरों को समझ पाते हैं तथा उनसे खुद को जोड़ पाते हैं और रोज की मांगों का सामना कर पाते हैं”।

8-3-6 ikl fl) kUr

दास, नागलेरी और कर्बी (1994) द्वारा योजना, ध्यान, समकालीन और क्रमिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया। जिसे पास सिद्धान्त कहा गया। यह सिद्धान्त मुख्यरूप से चार तरह की क्षमता की बात करता है :

- 1) योजना प्रक्रिया तब महत्वपूर्ण होता है जब व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि किसी समस्या का समाधान कैसे करें या किसी कार्य को कैसे करें। इसके अन्तर्गत उद्देश्य को तय करना व प्रतिपुष्टि की जाँच करना आता है।
- 2) ध्यान व्यक्ति को चयनात्मक उद्दीपन को साथ लेने व अन्य को अनदेखा करने के लिए प्रेरित करता है।
- 3) समकालीन प्रक्रिया उद्दीपन को पूर्णरूप में देखने में मदद करता है एवं उद्दीपनों को समूह के रूप में जोड़ता है।
- 4) क्रमिक प्रक्रिया उद्दीपनों को विशिष्ट क्रमानुसार व्यवस्थित करती है।

पास प्रतिमान हमें कई संज्ञानात्मक प्रक्रिया, जैसे कि तर्क-वितर्क, कल्पना, भाषा और स्मृति को समझने में मदद करता है।

8-3-7 rduhdh c(f) dk fl) kUr

हमारी बुद्धि को निर्धारित करने में संस्कृति का भी महत्वपूर्ण असर पड़ता है। वाईगॉटस्की

ने सामाजिक सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को जीने के लिए, बढ़ने के लिए एवं अपने आस पास की दुनिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना। इस प्रकार वाईगॉटस्की ने इस विचार को सामने रखा कि संस्कृति बौद्धिक विकास को प्रभावित करती/बढ़ाती है। उच्च स्तर के मानसिक कार्य संस्कृति द्वारा निर्धारित होते हैं। तकनीकी बुद्धि ऐसी बुद्धि है जो विकसित देशों के लोगों के बीच पाई जाती है। ऐसी बुद्धि ध्यान, प्रेक्षण, विवेचना, प्रदर्शन, गति और उपलब्धि अनुकूलन के कौशलों के रूप में प्रकट होती है।

8-3-8 vfoHkT; c(i) dk fl) kUr

जब हम भारतीय दृष्टिकोण से बुद्धि की बात करते हैं तो बुद्धि को एक अविभाज्य घटक के रूप में देखा जाता है। जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है कि यह बुद्धि का पूर्णतावादी दृष्टिकोण है जो संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक दोनों को मिश्रित व अविभाज्य करता है (श्रीवास्तव एवं मिश्रा, 2007)। इस प्रकार अविभाज्य बुद्धि का मुख्य घटक संज्ञानात्मक क्षमता, सामाजिक क्षमता, संवेगात्मक क्षमता और उद्यम संबंधी क्षमता को माना गया। बौद्धिक विकास में आनुवंशिक और वातावरणीय कारक दोनों ही अपनी भूमिका निभाते हैं। श्री अरविन्दों के अनुसार बुद्धि का अन्तिम उद्देश्य एक ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञान है जो बिना किसी इंद्रिय मध्यस्थता के उत्पन्न है और इसलिए यह ज्ञान अहंकार से उत्पन्न विकृति के बगैर होता है (बरल और दास, 2004)।

ckk ç'u 2

1) बुद्धि का द्विकारक सिद्धान्त क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बुद्धि के त्रिपदीय सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) ठोस और तरल बुद्धि से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) अविभाज्य बुद्धि एवं तकनीकी बुद्धि में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

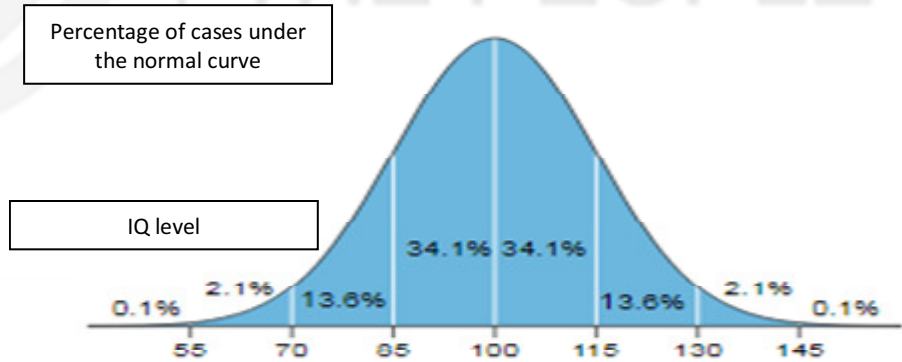
8-4 c(f) dh eki

अल्फ्रेड बिने और थिडोर सिमोन ने सबसे पहले बुद्धि को वैज्ञानिक तरीके से मापने का प्रयास किया। 1905 में इन्होंने बिने साइमन बुद्धि मापनी नामक पहला बुद्धि परीक्षण विकसित किया। बाद में 1908 में इन्होंने मानसिक आयु पद का प्रयोग व्यक्ति के अपने ही समान आयु के समूह एवं कालानुक्रमिक आयु, जो कि व्यक्ति के शारीरिक उम्र से संबंध रखती है, में तुलना करने के लिए किया। बिने के अनुसार यदि किसी बच्चे का एमए उसके सीए से अधिक है तो ऐसा बच्चा प्रतिभाशाली कहलाएगा। यदि बच्चे का एमए प्राप्तांक उसके सीए से कम आता तो ऐसा बच्चा बौद्धिक रूप से दुर्बल कहलाएगा।

1912 में विलियम स्टर्न ने बुद्धि लब्धि (आईक्यू) के संप्रत्यक्ष को प्रस्तुत किया। यह एमए को सीए से भाग देने पर व 100 से गुणा करने पर प्राप्त होता है।

$$IQ = (MA/CA) \times 100$$

यदि एमए, सीए के बराबर है तब व्यक्ति का आईक्यू 100 होगा, यदि व्यक्ति का एमए, सीए से कम है तब व्यक्ति का आईक्यू 100 से कम होगा।



fp= 8-5% vkbz D; w dk l kekl; forj.k doz ea forj.k

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

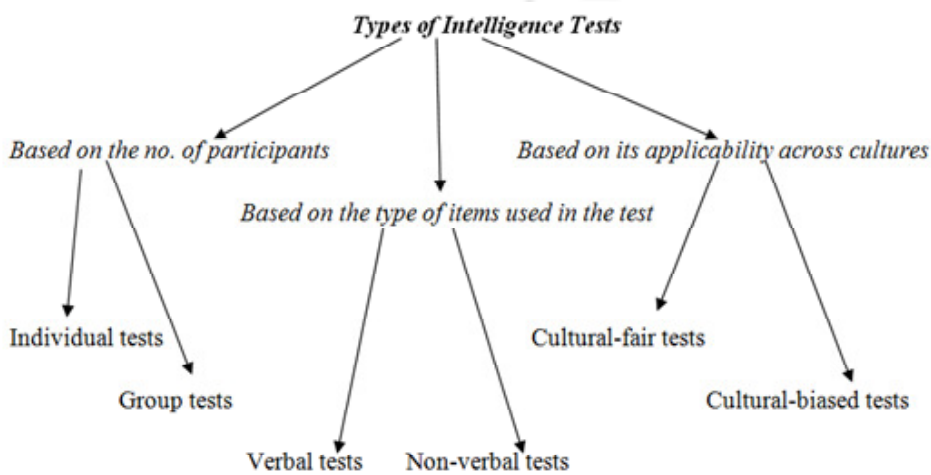
इस सामान्य वितरण कर्व (चित्र 8.5) में निम्नलिखित प्राप्तांक विभिन्न स्तर की बौद्धिक क्षमताओं को प्रकट करते हैं।

vkbD; w Js kh	o.kUkRed in
130 के ऊपर	बहुत श्रेष्ठ बुद्धि (प्रतिभाशाली)
120 से 129	श्रेष्ठ बुद्धि
110 से 119	सामान्य से उच्च बुद्धि

90 से 109	सामान्य बुद्धि
80 से 89	सामान्य बुद्धि से निम्न
71 से 79	बौद्धिक कार्य करने की सीमारेखा
55 से 70	मन्द बौद्धिक अशक्तता
40 से 54	मध्यम बौद्धिक अशक्तता
25 से 39	तीव्र बौद्धिक अशक्तता
25 के नीचे	गम्भीर बौद्धिक अशक्तता

8-4-1 cf) ijh{k.k ds iækj

बुद्धि परीक्षण का वर्गीकरण कई मानदंडों के आधार पर किया गया है, जैसे कि परीक्षण में शामिल होने वाले भागीदारों की संख्या के आधार पर, परीक्षण में प्रयोग होने वाले पद के आधार पर एवं सांस्कृतिक प्रभावित व अप्रभावित मानदंड के आधार पर। चित्र 8.6 बुद्धि परीक्षण के वर्गीकरण को प्रस्तुत करता है।



fp= 8-6% cf) ijh{k.k ds çdkj

8-4-1-1 o\$ fDrd vk\$ l eug cf) ijh{k.k

अ) o\$ fDrd ijh{k.k

वैयक्तिक परीक्षण वैसे परीक्षण होते हैं जो एक समय में एक ही व्यक्ति पर कार्यान्वित किए जाते हैं। कई प्रकार के आदर्श वैयक्तिक परीक्षण हैं जैसे कि कॉफमैन मापनी, स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी और वेसलर बुद्धि मापनी। यहाँ दो प्रसिद्ध बौद्धिक परीक्षण की चर्चा की जा रही है। (i) स्टैनफोर्ड बिनेट परीक्षण और वेचस्लेर बुद्धि परीक्षण।

cf) dk LV\$uQkMZfcu\$ eki uh

बिनेट साइमन बुद्धि परीक्षण पहला बुद्धि परीक्षण है जो कि बिनेट और साइमन (1905) द्वारा विकसित किया गया। मनोवैज्ञानिकों के बीच यह अत्यन्त लोकप्रिय परीक्षणों में से एक है। बाद में इस परीक्षण को कई बार संशोधित किया गया और अमेरिकन मनोवैज्ञानिक लेविस एम टेरमन, जो कि स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत थे, के द्वारा रूपान्तरिक किया गया। अमेरिकन जनसंख्या पर प्रमाणित करने के पश्चात इन्होंने मापन के मूलरूप का फिट से

नामकरण करते हुए 'स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी' कर दिया। 2003 में स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी का पाँचवा प्रकाशन (SB5) हुआ जिसमें, 10 उपपरीक्षण, पाँच कारकों का मापन करता है।

- तरल तर्कणा
- ज्ञान
- परिमाणात्मक तर्कणा
- चाक्षुष-स्थानिक संसाधन
- चलन स्मृति

इन 5 (पाँच) कारकों के प्राप्तांक की अपेक्षा एसबी5 दो अलग प्राप्तांक देता है जिसका नाम शाब्दिक आईक्यू एवं अशाब्दिक आईक्यू है। इस परीक्षण में 10 उपपरीक्षण हैं एसबी5 2, साल के बच्चे से लेकर 85 साल तक के आयु वर्ग के लोगों पर प्रयोग किया जा सकता है। 4800 अमेरिकन व्यक्तियों के प्रतिदर्श पर तीन आईक्यू प्राप्तांक की विश्वसनीयता .90 पर पाई गई और उपपरीक्षण की विश्वसनीयता .70 से .85 पर पाई गई (रोइड, 2002)।

ckDI 8-2% LV&QkMZ fcuV i jh{k.k dk bfrgkl

बिनेट परीक्षण एक ऐसा मानकीकृत बुद्धि परीक्षण है जो कि मनोवैज्ञानिकों के बीच में इसकी उपयोगिता की वजह से काफी लोकप्रिय रहा है। मनोवैज्ञानिक अलफ्रेड बिनेट के द्वारा साइमन जो कि उनके विद्यार्थी थे, की सहायता से बिनेट-साइमन परीक्षण विकसित किया गया। बिनेट को फ्रेंच सरकार के द्वारा एक ऐसे परीक्षण के निर्माण का भार सौंपा गया जो मानसिक रूप से दुर्बल बच्चों की पहचान कर सके। इस जिम्मेदारी के चलते 1905 में बिनेट-साइमन मापनी के नाम से जिस बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया गया उसका प्रयोग सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जाने लगा लेकिन जल्द ही 1908 में इसका प्रथम संशोधन किया गया। विभिन्न मानसिक अस्पतालों व उपचा ग्रहों में इसका प्रयोग किया जाने लगा था।

एल.एम.टरमैन द्वारा 1916 में इस परीक्षण का सबसे महत्वपूर्ण संशोधन किया गया। जिसे स्टैनफोर्ड बिनेट परीक्षण के नाम से जाना गया। यह संशोधन स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में किया गया था। इस संशोधन में सबसे पहले बुद्धि-लब्धि है।

oDI yj cf) eki uh

डा. डेविड वेचस्लेर द्वारा 8 मापनी का विनिर्माण किया गया। इन्होंने 3 मापनी विकसित कीं : एक वयस्कों के लिए, एक विद्यालय जाने वाले बच्चों के लिए, एक शिशु विद्यालय के लिए। इन तीन मापनी में कई तरह के उपपरीक्षण शामिल हैं जो शाब्दिक व अशाब्दिक/क्रियात्मक क्षेत्रों से लिए गए हैं एवं ये बुद्धि और संज्ञानात्मक क्षमताओं का मापन कर सकते हैं। इन्होंने अपना पहला परीक्षण (वेक्सलर वेलेम्यू बुद्धि मापनी, 1939 में विकसित किया जब वह वेलेम्यू अस्तपताल में कार्यरत थे। इन्होंने अपनी मापनी से आईक्यू ज्ञात करने के लिए नई विधि को इजाद किया। जैसा कि हम जानते हैं कि आईक्यू ज्ञात करने की प्रचलित/सामान्य विधि निम्न है :

$$\text{आईक्यू} = (\text{मानसिक आयु} / \text{शारीरिक आयु}) \times 100$$

वेक्सलर के अनुसार

$$\text{आईक्यू} = \text{प्राप्तांक} / \text{प्रत्याशित मध्यमान अंक}$$

वेक्सलर का बुद्धि मापन

वेक्सलर का जन्म 12, जनवरी 1896 को रोमानिया में हुआ था। ये एक मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की एवं फौजियों के स्मृति क्षय पर अपना अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन के दौरान कुछ चीजों को लेकर उनकी उत्सुकता ही उनके मरीजों की बुद्धि मापन के निर्माण की वजह बनी। बाद में बच्चों के बुद्धि मापन पर इन्होंने कार्य करना शुरू कर दिया। इन्होंने पाया कि आनुवंशिकता के साथ साथ वातावरणीय कारक भी व्यक्ति की बुद्धि को प्रभावित करता है। इन्होंने महसूस किया कि एक ही परीक्षण सभी उम्र के लोगों के लिए उपयुक्त नहीं होगा। यही वजह थी कि इन्होंने पूरी एक श्रृंखला का निर्माण किया जो अलग-अलग उम्र के लोगों की बुद्धि का मापन कर सके।



वेक्सलर का बुद्धि मापन

स्रोत: <https://wechsleriqtest.com/#>

वेक्सलर के बुद्धि मापनी का तीन संस्करण है जो कि निम्नलिखित है:

- i) **WPPSI - वेक्सलर बुद्धि मापनी (वेक्सलर बुद्धि मापनी) - यह मापनी 2 साल 6 महीने से 7 साल 7 महीने तक के बच्चों पर संचालित की जा सकती है। 1967 में यह मापनी विकसित की गई थी जो कि 4 से 6.5 साल तक के बच्चों के लिए बनाया गया था। इसके अन्तर्गत 14 उपपरीक्षण आते हैं जो कि तीन तरह की सूची तालिकाओं अर्थात् शाब्दिक, क्रियात्मक और पूर्ण मापनी आईरक्यू का मापन करता है। वर्तमान समय में इसका चौथा संशोधित रूप WPPSI – IV मौजूद है।**
- ii) **WISC - वेक्सलर बुद्धि मापनी (वेक्सलर बुद्धि मापनी) - यह मापनी 6 से 16 उम्र तक के बच्चों पर संचालित किया जा सकता है। यह परीक्षण वेक्सलर वेलेम्यू बुद्धि मापनी से विकसित किया गया था जो कि 1949 में सबसे पहले प्रस्तुत हुआ था। यह परीक्षण खास बच्चों व सीखने में मुश्किल महसूस करने वाले बच्चों को पहचानने के उद्देश्य से विद्यालयों व इसके शैक्षिक संस्थानों में अक्सर प्रयोग किया जाने लगा। इस परीक्षण का सबसे नया संशोधन i) **WISC -V** है जो कि 2014 में प्रकाशित हुआ।**
- iii) **WAIS - वेक्सलर बुद्धि मापनी (वेक्सलर बुद्धि मापनी) - यह मापनी 16 साल के किशोर से वयस्क बच्चों तक की सामान्य बुद्धि को मापने के लिए है। जिसमें कई उपपरीक्षणों को वितरित किया जाता है। प्रत्येक उप परीक्षण बुद्धि का सूचक और अनुमानक होता है। परीक्षण का सबसे नया संशोधन **WAIS - IV** है जो कि 2008 में प्रारंभ हुआ।**

वेक्सलर बुद्धि मापन का आधुनिक संस्करण जो कि भारत में प्रयोग किया जाता है वह वेक्सलर वयस्क बुद्धि मापनी चौथा संस्करण, भारत (WAIS-IV, INDIA), बुद्धि का वेक्सलर एब्रो विएटेड मापनी – दूसरा संस्करण, भारत (WASI-II INDIA), वेक्सलर स्मृति मापनी- तीसरा संस्करण, भारत (WASI-III INDIA) है।

WASI-IV INDIA : वयस्क एवं किशोरों की संज्ञानात्मक क्षमता को मापने का यह आधुनिक मापन है। इसमें कई उपपरीक्षण और मिश्रित प्राप्तांक होते हैं जो कि विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ ही साथ सामान्य मानसिक क्षमता की मिश्रित गणना में प्रयोग किये जाने वाले बौद्धिक कार्य को प्रस्तुत करता है (full scale IQ)। यह सीखने में समस्या होने व प्रतिभाशाली को मापने में भी प्रयोग होता है। यह अत्यंत विश्वसनीय व वैध उपकरण है।

ब) समूह परीक्षण

समूह परीक्षण वैसे परीक्षण होते हैं जो एक से ज्यादा व्यक्तियों पर एक ही समय में

कार्यान्वित किए जा सकते हैं। इस प्रकार इस परीक्षण के द्वारा कम से कम समय में ज्यादा लोगों का मापन किया जा सकता है। ऐसे कई प्रकार के परीक्षण हैं जिन्हें समूह परीक्षण के अन्तर्गत रखा जाता है जैसे कि बहुआयामी योग्यता बैटरी (MAB : Jackson, 1984), संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण (Lohman & Hagen, 2001), सांस्कृतिक निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण (1940) और रावेन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस (1938, 1992)। उदाहरण के रूप में यहाँ पर केवल रेवेन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस (RPM) प्रस्तुत किया जा रहा है।

jou dk i kxjfl o eSV1 d ¼RPM½

जॉन सी रावेन (John C. Raven) द्वारा 1983 में RPM को विकसित किया गया। यह विवेचनात्मक तर्क का एक अशाब्दिक परीक्षण है जो कि सामान्य बुद्धि पर स्पीयरमैन के जी कारक को मापने के लिए बनाया गया है। इसमें 60 बहुविकल्पी पद हैं जो 5 साल से प्रौढ़ अवस्था के बच्चों पर क्रियान्वित किए जा सकते हैं। इस परीक्षण में दृश्य ज्यामितिक प्रारूप कुछ गायब हिस्सों के साथ होते हैं और परीक्षण के भागीदार को 6 से 8 मौजूद विकल्पों में से इसी गायब हिस्से को चुनना होता है। रेवेन द्वारा परीक्षण के तीन अलग प्रकार की विधियों का निर्माण किया गया। आदर्श क्रमिक परीक्षण, रंगीन क्रमिक परीक्षण और विकसित क्रमिक परीक्षण। एसपीएम 6 से 80 साल तक के सामान्य व्यक्तियों के लिए अनुकूल है। सीपीएम बड़े बच्चों के लिए और वैसे खास समूह जिनका परीक्षण एसपीएम में नहीं हो सकता, के लिए उपयोगी है। एपीएम किशोरों व प्रौढ़ों के लिए लाभदायक है।

8-4-1-2 'kkfCnd vkj v'kkfCnd ijh{k.k

अ) 'kkfCnd ijh{k.k

शाब्दिक बुद्धि भाषा आवरित तर्कणा द्वारा समस्या समाधान करने व इसको प्रयोग करने की क्षमता है। शाब्दिक परीक्षण वह है जिनमें सफलतापूर्वक प्रदर्शन के लिए भाषा के प्रयोग की जरूरत होती है। शाब्दिक बुद्धि भाषा सम्बन्धी समस्या को समझने व इनका समाधान करने की क्षमता है शुरु में, लगभग सभी बुद्धि परीक्षण केवल भाषा पर ही आधारित थे लेकिन बाद में महसूस किया गया कि अनपढ़ लोगों के लिए, ऐसे बच्चे जिनकी भाषा का विकास पूरा नहीं हुआ है एवं वे लोग जो बोलने की समस्या से ग्रसित होते हैं, के लिए ऐसे परीक्षण की उपयोगिता नहीं है। इन शाब्दिक परीक्षणों की कमियों से उबरने के लिए कई मनोवैज्ञानिकों ने अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया। ज्यादातर कई शाब्दिक मानकीकृत परीक्षण जैसे कि वेचस्लेर मापनी एवं कॉफमैन परीक्षण अब कुछ अशाब्दिक घटक भी प्रयोग करते हैं।

v'kkfCnd ijh{k.k

बुद्धि का अशाब्दिक परीक्षण व्यक्ति की दृष्टि संबंधी सूचनाओं की विवेचना करने व समस्या का समाधान करने की क्षमता को बिना भाषा का प्रयोग किए मापता है। अशाब्दिक परीक्षण को क्रियात्मक परीक्षण भी कहते हैं क्योंकि इसमें अक्सर कुछ आकृति के निर्माण करने की जरूरत होती है। कुछ प्रसिद्ध अशाब्दिक परीक्षण अग्रलिखित हैं : कोह का ब्लाक ढाँचा परीक्षण, क्यूब निर्माण परीक्षण, एवं पास एलांग परीक्षण, रेवेन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस (1938, 1986, 1992, 1995)। एक महत्वपूर्ण अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण है जिसकी चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

8-4-1-3 I ½Ñfr fu"i {k ijh{k.k , oa I ½Ñfr vk/kkfjr ijh{k.k

अ) I ½Ñfr-fu"i {k ijh{k.k

प्रत्येक संस्कृति अपनी मान्यताओं, भाषा उम्मीदों, माँग और वातावरणीय अनुभव के आधार पर

अनोखे होते हैं। यूएस में पला बढ़ा बच्चा भारत के उपनगरीय क्षेत्र में पहले बड़े बच्चे से कई तरीकों से अलग होगा। इसी बजह से विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखने वाले व्यक्तियों का मापन करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे परीक्षणों का निर्माण किया जो किसी भी संस्कृति के प्रभाव से स्वतंत्र हो। कुछ प्रसिद्ध संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण निम्नलिखित हैं। कैटल का संस्कृति मुक्त परीक्षण (1940), रेवेन प्रोगरेसिव मैट्रिक्स (1938), लइटर अन्तराष्ट्रीय क्रियात्मक संशोधित मापनी (1997), ड्रॉ ए मैन टेस्ट (1926)। इन सभी व अन्य संस्कृति मुक्त परीक्षणों का स्वरूप अशाब्दिक है। यहाँ पर संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण के उदाहरणों में से झा-ए-मेन परीक्षण की चर्चा की जा रही है।

Mk-, eu ijh{k.k

प्रारंभ में यह परीक्षण गुडइनफ (1926) द्वारा विकसित किया गया जो कि बाद में गुडइनफ और हैरिस द्वारा 1963 में संशोधित किया गया जिसको कि गुडइनफ-हैरिस ड्राइंग परीक्षण के नाम से जाना जाता है। प्रक्षेपी परीक्षण के आधार पर, इस परीक्षण में भागीदार (केवल बच्चे) को तीन चित्र तीन अलग-अलग कागजों पर बनाना होता है। उनसे आदमी, औरत एवं खुद को बिना किसी आगे का निर्देश दिए बनाने को कहा जाता है। यहाँ बच्चों के कलात्मक कौशल के बजाय सही ढंग से देखने एवं धारणात्मक रूप से सोचने की क्षमता पर जोर दिया जाता है।

ब) I kĀŃfrd i {kikri wkĀ jh{k.k

कई मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि परीक्षण के स्वरूप को अशाब्दिक बनाकर इसे सांस्कृतिक निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण बनाने का प्रयास किया। लेकिन यह महसूस किया गया कि पूरी तरह से अशाब्दिक होने के बावजूद भी इन परीक्षणों से संस्कृति के प्रभाव को पूरी तरह से रोका नहीं जा सका। इसी वजह से इन परीक्षणों के लिए संस्कृति मुक्त के बजाय संस्कृति निष्पक्ष शब्द का प्रयोग किया गया।

8-5 I kjkd k

अब हम इस इकाई के अन्तिम भाग में पहुँच चुके हैं जहाँ सभी मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

- बुद्धि के अन्तर्गत नए उद्दीपनों को समझने की क्षमता, भाषा और दूसरों के साथ संवाद को समझना, वातावरण के प्रति जागरूक होना, तर्क करना, योजना बनाने एवं समस्या को सृजनात्मकता के साथ हल निकालने की क्षमता आती है।
- चार्ल्स स्पीयरमैन ने बुद्धि का “दो कारक सिद्धान्त” प्रस्तुत किया। इन्होंने कारक विश्लेषण और सहसंबंध का प्रयोग बुद्धि के दो महत्वपूर्ण कारक – सामान्य “जी” (g) कारक एवं विशिष्ट “एस” (s) कारक को प्रस्तुत किया।
- थर्स्टन के अनुसार बुद्धि सात अलग-अलग मुख्य मानसिक क्षमताओं का मिश्रण है। आधुनिक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके इन्होंने बुद्धि का एक नया कारक सिद्धान्त विकसित किया। इन कारकों को मुख्य मानसिक क्षमताएँ कहा जाता है।
- हावार्ड गर्डनर ने “बहु बुद्धि का सिद्धान्त” प्रस्तुत किया। इनके अनुसार बुद्धि केवल एक तत्व नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत आठ प्रकार की बुद्धि आती हैं।
- रॉबर्ट जे. स्टर्नबर्ग ने “बुद्धि का त्रिपदीय सिद्धान्त” प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया है कि बुद्धिपूर्ण व्यवहार 3 मुख्य घटकों या उप सिद्धान्तों को शामिल करता है। ये

उपसिद्धान्त हैं (1) घटकीय या विश्लेषणात्मक बुद्धि। (2) प्रासंगिक बुद्धि या व्यवहारिक बुद्धि (3) अनुभवात्मक या सृजनात्मक बुद्धि

- कैटल ने ठोस एवं तरल बुद्धि का सम्प्रत्यय प्रस्तुत किया। दास, नागलेरी, और किरवी, 1994 द्वारा योजना, ध्यान, समकालीन एवं क्रमिक (pass) सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए।
- भारतीय परिदृश्य में बुद्धि को 'सम्पूर्ण बुद्धि' के रूप में जाना जाता है। उच्च क्रम मानसिक क्रिया, सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होते हैं। तकनीकी बुद्धि एक ऐसी बुद्धि का प्रकार है जो कि विकसित देशों के लोगों में पाया जाता है।
- बुद्धि का मापन करने के लिए एक से अधिक तरीके मौजूद हैं। बुद्धि परीक्षण को विभिन्न मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है जैसे कि परीक्षण में भाग लेने वाले सहभागियों की संख्या के आधार पर एवं परीक्षण का विभिन्न संस्कृतियों में प्रयोग हो सकने या ना हो सकने की अवस्था के आधार पर।

8-6 eq; 'kCn

c(f)

% यह व्यक्ति की सम्पूर्ण या व्यापक क्षमता उद्देश्यपूर्ण तरीके से कार्य करने की, तर्क संगत सोचने की एवं वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से सामंजस्य बैढ़ाने की है।

th dkjd

% इसको सामान्य कारक भी कहते हैं यह एक जन्मजात संज्ञानात्मक क्रिया है जो कि अन्य सभी मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करती है। यह व्यक्ति के जीवन भर स्थिर रहता है।

,l dkjd

% इसको विशिष्ट कारक भी कहते हैं। यह कुछ विशिष्ट या खास मानसिक क्रिया के द्वारा प्रदर्शित होता है। इसको सीखा जा सकता है एवं एक व्यक्ति में एक से अधिक एस कारक हो सकते हैं। यदि हम सभी एस कारक को एक साथ मिलाते हैं तो यह हमारे जी कारक को बनाता है।

Ekkuf l d vk; q

% यह व्यक्ति का उसके समूह के संदर्भ में बौद्धिक विकास को मापता है।

Bkl c(f)

% यह ऐसी बुद्धि है जो व्यक्ति के उस ज्ञान से बनी होती है जो वह पहले ही सीख चुका होता है और जब कभी इस ज्ञान की जरूरत होती है तब वह इसको प्रयोग कर सकने की क्षमता रखता है।

rjy c(f)

% यह बुद्धि का ऐसा प्रकार है जिसका नई परिस्थिति या समस्या के साथ सामंजस्य करने में प्रयोग किया जाता है।

'kkfCnd l e>

% यह शब्द, सम्प्रत्यय, विचार, शाब्दिक तर्कणा, समझने एवं परिभाषित करने एवं धारणा को पढ़ने की क्षमता है।

LFkkuh; I cdk

% यह रिक्त स्थान में विभिन्न ज्यामितिय स्वरूप, एवं काल्पनिक उददीपनों को रूप देने एवं जोड़-तोड़ करने की क्षमता है।

cf)

I dskRed cf)

% यह अपने खुद के व दूसरों की भावनाओं एवं संवेगों को देखने की क्षमता, उनके बीच अन्तर करने एवं प्राप्त सूचना को किसी की सोच और कार्य को निदेशित करने में प्रयोग करने की क्षमता है।

8-7 iqjkoyksdu itu

- 1) निम्न में से कौन वेसलर द्वारा बुद्धि की दी गई परिभाषा का हिस्सा है
 - क) प्राकृतिक बुद्धि
 - ख) अनुसंकेतक स्मृति
 - ग) वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से सामंजस्य करने की क्षमता
 - घ) स्थानिक एवं गतिसंवेदी क्षमताएँ
- 2) निम्न में से कौन सा गार्डनर के बुद्धि प्रकार में से एक है।
 - क) प्रबंधक कौशल
 - ख) संगीत
 - ग) नीतिशास्त्र
 - घ) सृजनात्मकता
- 3) वह कौन व्यक्ति है जो पहले उपयोगी वैयक्तिक परीक्षण की रचना करने एवं विकास के लिए जिम्मेदार है।
 - क) फ्रायड
 - ख) टरमन
 - ग) बिने
 - घ) वेचस्लेर
- 4) आई-क्यू अंक का वितरण
 - क) लगभग सामान्य या घंटे के आकार का होता है।
 - ख) यह दिखाता है कि ज्यादातर लोग 80 से 100 के बीच में अंक प्राप्त करते हैं।
 - ग) सामान्य पुरुषों और महिलाओं के लिए औसत में अन्तर का पता चलता है।
 - घ) 100 से ऊपर अचानक गिर जाता है
- 5) बुद्धि को परिभाषित कीजिए।
- 6) बुद्धि पर आनुवंशिक बनाम वातावरण विवाद की विवेचना कीजिए।

- 7) स्पीयरमैन एवं थर्सटन के बुद्धि सिद्धान्त को प्रस्तुत कीजिए।
- 8) बुद्धि के त्रिपदीय सिद्धान्त को समझाइये।
- 9) मानसिक आयु, शारीरिक आयु और आइक्यू में अन्तर बताइये। ये सभी संप्रत्यय एक दूसरे से कैसे जुड़े हैं।
- 10) संस्कृति निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण एवं संस्कृति पक्षपातपूर्ण बुद्धि परीक्षणों में अन्तर बताइएँ?

8-8 I nHkZ , oa i <us ds I qko

Anastasi, A. & Urbria, S. (2017). *Psychological Testing*. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.

Ashton, M. (2013). *Individual Differences and Personality*. Academic Press, U.S.A.

Baron, R. A. & Misra, G (2016). *Psychology*. Indian Subcontinent Edition. Pearson Education. Delhi.

Ciccarelli, S. K and White, J. N. (2015). *Psychology*. New York: Pearson Education Limited.

Boyatzis R.E., Gaskin J., Wei H. (2015) Emotional and Social Intelligence and Behavior. In: Goldstein S., Princiotta D., Naglieri J. (eds) *Handbook of Intelligence*. Springer, New York.

Cattell, R.B. (1963). Theory of fluid and crystalized intelligence: A critical experiment. *Journal of Educational Psychology*, 54, 1-22.

Chamorro-Premuzic, T. (2016). *Personality and Individual Differences*. John Wiley & Sons.

Coon, D., & Mitterer, J. O. (2007). *Introduction to Psychology*. Thompson Wadsworth.

Das, J. P., Naglieri, J. A., & Kirby, J. R. (1994). *Assessment of Cognitive Processes: The PASS Theory of Intelligence*. Massachusetts, Allyn & Bacon, Inc.

Ellis, A., Abrams, M., & Abrams, L. (2009). *Personality Theories: Critical Perspectives*. Sage Publications.

Fogarty, G. J. (1999). Intelligence: theories and issues. In J. Athanasou (Ed.) *Adult Educational Psychology* (pp.183-210) Sydney: Social Science Press.

Gardner, H. (1983). *Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligences*. New York; Basic books.

Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence*. New York, Bantam.

Jensen, A. R. (1969). How much can we boost I.Q. and scholastic achievement? *Harvard Educational Review*, 33, 1-123.

Legg, S., & Hutter, M. (2007). A collection of definitions of intelligence. *Frontiers in Artificial Intelligence and applications*, 157, 17.

Lerner, M. J., Millon, T., & Weiner, I. B. (2003). *Handbook of psychology*, Volume 5: personality and social psychology.

Mayer, J. D., Salovey, P., & Caruso, D. R. (2004). Emotional intelligence: Theory,

findings, and implications. *Psychological Inquiry*, 15, 197-215.

Mayer, J. D., Salovey, P., Caruso, D. R., & Sitarenios, G. (2003). Measuring emotional intelligence with the MSCEIT V2.0. *Emotion*, 3, 97-105.

McGue, M., Bacon, S., & Lykken, D. T. (1993). Personality Stability and Change in Early Adulthood: A Behavioral Genetic Analysis. *Developmental Psychology*; 29, 1; 96-109.

Neisser, U. (1998). *The rising curve: Long-term gains in IQ and related measures*. American Psychological Association. Washington, D.C.

Plomin, R., & DeFries, J. C. (1998). Genetics of cognitive abilities and disabilities. *Scientific American*, 62-69.

Plomin, R., Fulker, D. W., Corley, R., & DeFries, J. C. (1997). Nature, Nurture, and Cognitive Development from 1 to 16 Years: A Parent-Offspring Adoption Study. *Psychological Science*, 8, No. 6; 442-447.

Revelle, W., Wilt, J., & Condon, D. M. (2011). Individual differences and differential psychology. *The Wiley-Blackwell Handbook of Individual Differences*, 1-38.

Scarr, S., & Weinberg, R. A. (1976). IQ test performance of black children adopted by White families. *American Psychologist*. 31; 726-739.

Salovey, P., & Mayer, J. D. (1994). *Final Thoughts About Intelligence*. Cambridge University Press.

Spearman, C. E. (1927). *The Abilities of Man*. London; Macmillan.

Srivastava, A. K., & Misra, G. (2007). *Rethinking intelligence: Culture and Conceptualization of Competence*. New Delhi. Concept.

Sternberg, R. J. (1985). *Beyond IQ*. Cambridge: Cambridge University Press.

Thurstone, E. L. (1938). *Primary Mental Abilities*. Chicago; University of Chicago Press.

Zimbardo, P. G., & Weber, A. L. (1994). *Psychology*. Harper Collins College Publishers.

8-9 fp=ka dk l nHkZ

Indian Wonderkids: Priyanshi Somani. Retrieved January 13, 2019, from <https://www.indiatimes.com/culture/who-we-are/indian-wonderkids-with-exceptional-brilliance-priyanshi-somani>

Nature vs. Nurture Debate. Retrieved October 27, 2018, from <https://www.verywellmind.com/what-is-nature-versus-nurture-2795392>

Nativists vs. empiricists take by different approaches of psychology. Retrieved October 27, 2018, from <https://www.simplypsychology.org/naturevsnurture.html>

Normalised distribution of IQ with the mean of 100 and standard deviation 15. Retrieved October 27, 2018, from https://commons.wikimedia.org/wiki/File:IQ_distribution.svg

David Wechsler. Retrieved October 27, 2018, from <https://wechsleriqtest.com/#>

8-10 vkkWykbu l kr

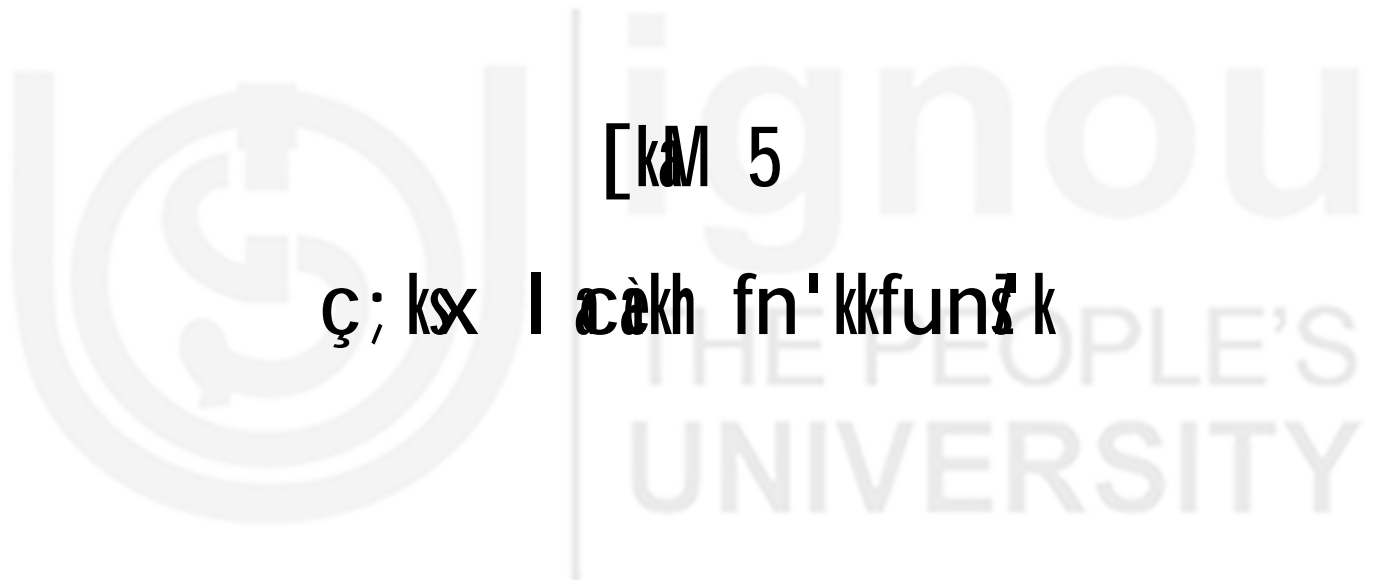
- For more information on Theories of Intelligence, visit
 - <http://www.gcbtcollege.in/studymaterial/Intelligence%20Theories.pdf>
 - <https://scottbarrykaufman.com/wp-content/uploads/2012/09/Kaufman-Kaufman-Plucker-in-press.pdf>
 - <http://www.psych.purdue.edu/~willia55/120/10.IntelligenceMM.pdf>
- For more on Measurement of Intelligence, visit
 - https://psychaanalyse.com/pdf/THE_MEASUREMENT_OF_INTELLIGENCE.pdf
 - <https://journal-archieives26.webs.com/107-124.pdf>
 - http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/46917/6/06_chapter%202.pdf
- For interesting articles on Nature Vs. Nurture debate on Intelligence, visit
 - http://pzacad.pitzer.edu/~dmoore/publications/2013_moore_nature-nurture.pdf
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/184d/cab8a5d45c7b2728e570985127c64c7fae81.pdf>
 - <https://www.canford.com/MainFolder/Documents/Prospective-parents/Academic/Blog-posts/Nature-vs-Nurture.pdf>
 - <http://lib.oup.com.au/secondary/science/Psychology/1and2/Oxford-Psych-1and2-Ch8-nature-vs-nurture.pdf>

oLrfu"B ç'uka ds mÙkj

1) (c), 2) (d), 3) (c), 4) (a)

[kM 5

ç; kx l ækh fn' kkfunž k



1-0 ifjp;

विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत बी.ए. कार्यक्रम के लिए मनोविज्ञान विषय के निर्धारित पाठ्यक्रमों में आपका परिचय प्रयोगात्मक घटक से कराया जाएगा। बी.पी.सी.सी.-131 मनोविज्ञान का आधार पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए, आपको एक सत्रीय कार्य जमा करना होगा, परीक्षण सत्रों (सत्र अनिवार्य हैं) में भाग लेना होगा, तथा सिद्धांत और प्रयोग घटकों के लिए सत्र समाप्त होने पर अलग से परीक्षा भी देनी होगी।

प्रयोगात्मक घटक दो क्रेडिट का है। इसमें, आप सीखेंगे कि परीक्षण कैसे संचालित करें और नियंत्रित स्थिति में प्रयोगों का संचालन कैसे करें, और यह आपके अध्ययन केंद्र में प्रयोगशाला व्यवस्था में होगा। परीक्षण और प्रयोगों को एक मानव प्रतिभागी पर किया जाएगा और आप प्रयोगकर्ता या परीक्षणकर्ता होंगे। कभी-कभी यह स्थिति भी हो सकती है कि यह प्रयोग/परीक्षण आप अपने सहपाठियों पर करेंगे। ये परीक्षण और प्रयोग, उन विभिन्न विषयों से संबंधित हैं जिन्हें बी.पी.सी.सी.-131 के सिद्धांत घटक में आपने पढ़ा है या आप पढ़ने वाले हैं। प्रयोगशाला में कार्य आप शैक्षणिक परामर्शदाता के देख-रेख में करेंगे। प्रचालन (संचालन), स्कोरिंग और संप्रत्ययन (अवधारणा), परिणाम की व्याख्या और निष्कर्ष के लिए आप एक मानक प्रक्रिया का पालन करेंगे। आप प्रयोग/परीक्षण से संबंधित नैतिक मुद्दों के बारे में भी जानेंगे जो प्रयोगशाला-कार्य में काम आते हैं।

जैसा कि आपने पढ़ा होगा कि मनोविज्ञान मानव-व्यवहार का विज्ञान है। इसका उद्देश्य मानव मन और व्यवहार की विभिन्न घटनाओं को समझना है। मनुष्य के व्यवहार के विवरण, व्याख्या, परिकल्पना तथा नियंत्रण को समझना और जीवन को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न तकनीकों का अनुप्रयोग करना है। परंतु इन उद्देश्यों को कैसे पूरा किया जा सकता है, इसके लिए पहले कदम के रूप में, वैज्ञानिक शोध के माध्यम से ये लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। इसके बाद शोध परिणामों को वास्तविक जीवन एवं व्यवहार में लागू किया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य के व्यवहार को समझने के लिए अनेक वर्षों में कुछ तरीके और प्रक्रियाएं विकसित की हैं। इन तरीकों का उपयोग मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन, विशेष रूप से प्रयोगों, विधियों और अनुसंधानों के लिए होता है। मनोविज्ञान में अनुसंधान की पहली ऐसी शाखा 'वैज्ञानिक मनोविज्ञान' है जो वस्तुतः मनोवैज्ञानिक चरों का मापन है। इसमें मनोवैज्ञानिक निर्माणों की माप संबंधित सब कुछ शामिल है। अधिक विशिष्ट शाखाएँ, जैसे प्रायोगिक मनोविज्ञान और मनोवैज्ञानिक परीक्षण हैं। प्रायोगिक मनोविज्ञान, जैसा कि नाम से पता चलता है, मनोवैज्ञानिक प्रयोग पर अधिक केंद्रित है। विभिन्न मानसिक क्षमताओं, व्यक्तित्व लक्षणों और व्यवहार के अन्य संबंधित पहलुओं का अध्ययन करने के लिए विकसित मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर मनोविज्ञान में अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है। मनोवैज्ञानिक मापन के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण वैज्ञानिक रूप से तैयार किए जाते हैं।

मनोविज्ञान में प्रयोग करने के लिए अलग-अलग उपकरणों, उपकरणों का उपयोग, विभिन्न संज्ञानात्मक, भावात्मक या व्यवहार संबंधी पहलुओं, जैसे कि संवेदना, धारणा, ध्यान, स्मृति, अधिगम और अन्य ऐसी प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए करते हैं। वे मुख्य रूप से 'स्वतंत्र' और 'आश्रित' चर के बीच कारण और प्रभाव संबंध का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। स्वतंत्र और आश्रितों के बीच संबंध और प्रभाव संबंधों के अध्ययन में मुख्य रूप से परीक्षण (प्रयोग) पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रतिभागी को प्रयोग के दौरान सक्रिय रहना होता है क्योंकि वह न केवल किसी कार्य में भाग लेता है, बल्कि कार्य के दौरान, स्वयं की मानसिक गतिविधियों को समझता और प्रयोग करने वाले (प्रयोगकर्ता) को इसकी सूचना देने में भी सतर्क रहता है। इसको आत्मविश्लेषी (इंट्रोस्पेक्टिव) रिपोर्ट के रूप

में भी जाना जाता है। दूसरी ओर, मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रचालन, समय सीमा, आइटम (मद) प्रकृति के आधार पर, विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इनका बाद के भागों में विस्तार से वर्णित किया जाएगा।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग विभिन्न स्तरों, जैसे कि स्कूलों, अस्पतालों, संगठनों और कल्याण-संगठनों में किया जा सकता है। इनका उपयोग अनुसंधान उद्देश्य के लिए भी किया जा सकता है। इनका उपयोग न केवल मानसिक विकारों के निदान के लिए किया जाता है, बल्कि विभिन्न नौकरियों के लिए व्यक्ति का चयन करने, कैरियर की पसंद और ग्रेड आदि का निर्धारण करने के लिए, भी किया जाता है। व्यक्तित्व और समायोजन पैटर्न का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। परीक्षणों को एक मानकीकृत तरीके से किया जाता है और इसमें कुछ मानसिक प्रक्रिया, विशेषता या विलक्षणों का मूल्यांकन शामिल होता है। एक अच्छे परीक्षण की मुख्य विशेषताएं यह हैं कि उसे विश्वसनीय, मान्य, अच्छे मानदंडों पर होना चाहिए और व्यक्तियों की आयु, सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक पृष्ठभूमि के लिए उपयुक्त होना चाहिए। एक अच्छा मनोवैज्ञानिक परीक्षण हमेशा मानकीकृत होता है, जिसका अर्थ यह है कि परीक्षण एक समान और व्यवस्थित प्रक्रिया से संचालित और स्कोर किया जा सके। इसमें एक मैनुअल भी होता है जिसमें विश्वसनीयता, वैधता और मानदंड की जानकारी होती है।

पाठ्यक्रम के इस हिस्से में, आप व्यक्तित्व से संबंधित परीक्षणों एवं अनुभूति और अधिगम जैसी प्रक्रियाओं के आधार पर प्रयोग करेंगे। एक प्रयोगकर्ता/परीक्षण संचालक के रूप में, आप मनुष्य व्यवहार के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए अलग-अलग उपकरण और परीक्षण सामग्री (टेस्ट बुकलेट, मैनुअल और स्कोरिंग कीज) का उपयोग करेंगे।

2-0 च-ि-ह-ल-ह-ल-ह- 131 ea ç; kx ½ ØfMV½

निम्नलिखित प्रयोग आयोजित किए जाने हैं:

परीक्षण:

1) आइजेंक व्यक्तित्व इन्वेंटरी

या

2) 16 पीएफ

प्रयोग:

1) म्युलर-लायर भ्रम प्रयोग

या

2) द्विपक्षीय हस्तांतरण पर प्रयोग

मनोविज्ञान की प्रयोगशाला में दो प्रयोग (प्रेक्टिकल) पूर्ण किए जाने हैं। उपर्युक्त चार में से, एक परीक्षण संचालित किया जाएगा तथा एक प्रयोग आयोजित किया जाएगा और प्रयोग पुस्तिका (प्रेक्टिकल नोटबुक) में निर्धारित प्रारूप (जैसा कि दिशा-निर्देशों में उल्लिखित है) में लिखा जाएगा। प्रयोग पुस्तिका में एक शीर्षक पृष्ठ (परिशिष्ट I में दिया गया प्रारूप) और एक प्रमाण पत्र (परिशिष्ट II) शामिल होना चाहिए। इस नोटबुक का मूल्यांकन, संबंधित शैक्षणिक परामर्शदाता द्वारा किया जाएगा। प्रयोग का वास्तविक संचालन और इसे प्रयोग-पुस्तिका में लिखे जाने को 70% अधिभारिता दिया जाएगा और प्रयोग की सत्रीय परीक्षा

(टर्म एंड एग्जामिनेशन) जिसमें लिखित एवं मौखिक परीक्षा (वाइवा-वॉयस) (बाह्य मूल्यांकन) को 30% अधिभारिता दिया जाएगा।

iz ksc l a:kh
fn'kkfunz k

3-0 'k'kf.kd ijke'k'kkrk }kjk vi ukbz tkus okyh cfØ; k

मनोविज्ञान में प्रयोग के लिए,

- 1) आप निम्नलिखित कुछ पुस्तकों का संदर्भ ले सकते हैं:
 - Experimental Psychology by L. Postman & J. P. Egan
 - Experiments in Psychology by S. M. Mohsin
 - Experimental Psychology with Advanced Experiments (2Vols.) by M. Rajamanickam
- 2) शिक्षार्थियों को प्रयोग के बारे में विस्तार से बताएं।
- 3) प्रयोग के संदर्भ में परिचय दें।
 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
 - परिकल्पना/परिकल्पनाएँ
 - स्वतंत्र और आश्रित चर
 - नियंत्रण और प्रायोगिक स्थितियाँ
 - संचालन
 - स्कोरिंग
- 4) प्रयोग के परिचय के बाद, शिक्षार्थियों को प्रयोग का प्रदर्शन (डिमोंस्ट्रेशन) करके बताया जाए।
- 5) प्रदर्शन में निम्नलिखित शामिल होंगे:
 - प्रयोग के लिए तैयारी, उदाहरण के लिए, सामग्री (उपकरण, शब्द सूची, स्टॉपवॉच को ध्यान में रखते हुए) तैयार हो।
 - प्रतिभागी के साथ तालमेल स्थापित करना तथा उसे सहज महसूस करवाना आवश्यक है।
 - प्रयोग की व्याख्या करके (प्रक्रिया, समय सीमा, सावधानियाँ) बताया जाना।
 - प्रयोग करने के लिए, सूचना सहमति लेना और प्रतिभागी को सूचित करना ताकि प्रयोग निष्कर्ष गोपनीय रहें।
 - जहां भी लागू हो, सत्र को रिकॉर्ड करने की अनुमति लेना।
 - निर्देशों की व्याख्या करके शिक्षार्थियों को समझाना।
 - प्रयोग के बारे में प्रतिभागी के मन में मौजूद सभी शंकाओं का समाधान करना।
 - प्रतिभागी पर प्रयोग किया जाएगा।
- 6) शिक्षार्थी को स्कोरिंग प्रक्रिया समझाई जाए।

- 7) डेटा पर चर्चा करने का विधि बताया जाए।
- 8) शिक्षार्थी को जोड़े में, एक दूसरे पर प्रयोग करना है और अपनी देख-रेख में किया जाए।
- 9) शिक्षार्थी उसके बाद, प्रयोग का संचालन करेंगे और स्कोरिंग करेंगे।
- 10) शिक्षार्थी रिपोर्ट, प्रयोग नोटबुक में प्रयोग लिखेंगे, जिसका मूल्यांकन, शैक्षणिक परामर्शदाताओं द्वारा किया जाएगा।

eukoKkfud i jh{k.kka ds fy, %

- 1) परीक्षण के मैनुअल को अच्छी तरह से पढ़ें।
- 2) कक्षा में शिक्षार्थियों को परीक्षण के बारे में विस्तार से बताएं।
- 3) निम्नलिखित के संदर्भ में परीक्षण का परिचय दें:
 - परीक्षण का इतिहास
 - लेखक
 - परीक्षण का विकास
 - परीक्षण की विशेषताएं उदाहरण के लिए मद (आइटम) की संख्या, आयाम, विश्वसनीयता, वैधता, आदि।
 - प्रशासन-प्रबंध
 - स्कोरिंग
 - व्याख्या
- 4) परीक्षण के परिचय के बाद, शिक्षार्थियों को यह दिखाना है कि परीक्षण व्यवस्थापन कैसे करना है।
- 5) व्यवस्थापन के प्रदर्शन में निम्नलिखित शामिल होंगे:
 - क) परीक्षण के लिए तैयारी, उदाहरण के लिए, परीक्षण सामग्री (परीक्षण पुस्तिका, उत्तर पत्रक, स्टॉपवॉच) तैयार होना।
 - ख) प्रतिभागी के साथ तालमेल स्थापित करना, उसे सहज महसूस कराना।
 - ग) परीक्षण की व्याख्या करना (प्रक्रिया, समय सीमा, सावधानियां)
 - घ) प्रयोग से करने के लिए सूचना सहमति लेना और प्रतिभागी को सूचित करना ताकि प्रयोग निष्कर्ष गोपनीय रहें।
 - ई) सत्र को रिकॉर्ड करने की अनुमति लेना, जहां कहीं भी लागू हो।
 - च) परीक्षण संचालन के लिए मैनुअल के निर्देशों को पढ़ना और इन्हें उन शिक्षार्थियों को दिखाना जहाँ से उन्हें निर्देश पढ़ने हैं।
 - छ) परीक्षण संचालन के बारे में प्रतिभागी के मन में सभी शंकाओं को दूर करना।
 - ज) प्रतिभागी परीक्षण करता है।
 - झ) परीक्षण पूरा होने के बाद प्रतिभागी से उत्तर पुस्तिका लेना।

- 6) शिक्षार्थी स्कोरिंग प्रक्रिया (जैसा कि मैनुअल में दी गई है) समझाएं।
- 7) यह समझाएँ कि डेटा की व्याख्या कैसे करें।
- 8) शैक्षणिक परामर्शदाता की देख-रेख में, शिक्षार्थी जोड़े में एक-दूसरे पर परीक्षण करें।
- 9) शिक्षार्थी इसके बाद परीक्षण स्कोर और परिणाम देंगे।
- 10) शिक्षार्थी प्रयोग लेखन पुस्तिका में परीक्षण की एक रिपोर्ट लिखेंगे, जिसका मूल्यांकन शैक्षणिक परामर्शदाताओं द्वारा किया जाएगा।

4-0 f'k{kKfkhZ ds fy, egROIwKZ tkudkjH*

- 1) ijh{k.k ijke'kZ %SDVdy dkmf fyax½ l =% आपको सलाह दी जाती है कि परीक्षण के लिए परामर्श सत्र की अनुसूची के संबंध में अपने अध्ययन केंद्र से संपर्क करें। आपके क्षेत्रीय केंद्र की वेबसाइट पर, सत्रों की अनुसूची प्रदर्शित होती है। आप अपने क्षेत्रीय केंद्र की वेबसाइट पर लॉग ऑन करके इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम में अन्य पाठ्यक्रमों के परामर्श सत्रों के अलावा, प्रयोगशाला के सत्रों में उपस्थित होना अनिवार्य है। इसलिए आपको इन सभी सत्रों में भाग लेना चाहिए। इन सत्रों में, आपके शैक्षणिक परामर्शदाता आपको सिखाएंगे कि कैसे प्रयोगों और परीक्षाओं का संचालन करना है। आप सभी संदेहों को, अपने शैक्षणिक परामर्शदाता से चर्चा करके स्पष्ट कर सकते हैं। मूल्यांकन में उपस्थिति के लिए भी अधिभारिता दिया गया है (मूल्यांकन योजना के तहत, मूल्यांकन योजना का संदर्भ लें)। प्रयोग पाठ्यक्रम के लिए काउंसलिंग सत्रों की संख्या 02 आवंटित की गई हैं (01 सत्र की अवधि 03 घंटे की है)।
- 2) ijh{k.k dk y\$ku% जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि आप उसी तरह से प्रयोग तथा परीक्षण करेंगे। इस लिए आप प्रयोग/परीक्षण की प्रक्रिया को प्रयोग पुस्तिका में लिखेंगे। नोटबुक (फाइल) को बिंदु संख्या 3 पर उल्लिखित प्रारूप में, हाथ से लिखा जाना चाहिए और नोटबुक को उसी शैक्षणिक परामर्शदाता द्वारा जांचा जाना चाहिए जिनके मार्गदर्शन में आपने प्रयोगशाला में कार्य किया है।
- 3) ç; kx y\$ku i¶Lrdk fy[kus ds fy, çk: i

प्रयोग लेखन पुस्तिका तैयार करते समय शैक्षणिक परामर्शदाता निम्नलिखित प्रारूप का वर्णन करेगी/करेगा, जिसका आपको अनुसरण करना होगा।

- 'kh"kd% इस शीर्षक में प्रयोग का 'शीर्षक' या 'नाम' जैसे : 16पी एफ/म्यूलर लायर इलूजन, का उल्लेख किया जाएगा।
- mÍ\$; % इस भाग में प्रयोग/परीक्षण का मुख्य उद्देश्य वर्णित होगा। उदाहरण के लिए, यदि आप '16 पीएफ परीक्षण' कर रहे हैं, तो परीक्षण का मुख्य उद्देश्य होगा: 16 पीएफ का उपयोग करते हुए प्रतिभागी के व्यक्तित्व का आकलन करना।
- ifjdYi uk@ifjdYi uk, ; इसके अंतर्गत (केवल प्रयोग में लिखा जाएगा): एक अस्थायी विवरण स्वतंत्र और आश्रित चर के बीच कारण और प्रभाव संबंध के बारे में उल्लेख किया जाना है।
- ifjp; % इसमें परीक्षण प्रयोग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दर्शाई जाती है अवधारणा को परिभाषित और उस पर चर्चा करना है। उदाहरण के लिए, 16 पीएफ के मामले

में, 16 पीएफ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करना। कैटेल के व्यक्तित्व सिद्धांत (Cattell's personality theory) पर विशेष ध्यान देने के साथ, व्यक्तित्व की अवधारणा को परिभाषित किया जाना और इससे संबंधित सिद्धांतों पर चर्चा करना।

- **ijh{k.k ; k ç; ks dk foj.k%** इसके तहत, परीक्षण के संबंध में विवरण का उल्लेख किया जाता है, जैसे परीक्षण का लेखक, परीक्षण का मूल उद्देश्य, मदों (items) की संख्या, आयाम कारक परीक्षण में शामिल, समय सीमा, विश्वसनीयता, वैधता, एवं स्कोरिंग। प्रयोग के लिए, प्रयोग के संबंध में एक संक्षिप्त जानकारी का उल्लेख करना होगा।
- **vko' ; d l kext%** परीक्षण(या प्रयोग) करने के लिए आवश्यक सामग्री का उल्लेख करना है। उदाहरण के लिए, 16 पीएफ के मामले में, परीक्षण पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका, स्कोरिंग कुंजी, पेंसिल, रबड़ की आवश्यकता होती है।
- **çfrHkxh dh çkQkby%** इसमें प्रतिभागी के बारे में सभी विस्तृत जानकारी शामिल होगी, जैसे, प्रतिभागी का नाम (स्वेच्छिक), आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता, व्यवसाय।
- **çfØ; k vkš l pkyu%** निम्नलिखित उप-शीर्ष इस में शामिल हैं।
- **rš kjh%** परीक्षण या प्रयोग के संचालन के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे, परीक्षण पुस्तिका, उपकरण या उपस्कर, उत्तर पुस्तिका, स्टॉपवॉच, उपकरण तैयार रखे जाते हैं।
- **?kfu"Brk cukuk %** आपको यह उल्लेख करना होगा कि प्रतिभागी के साथ तालमेल बनाया गया था और प्रतिभागी को परीक्षण/प्रयोग के विवरण के बारे में अच्छी तरह से बताया गया था।
- **funž k:** परीक्षण मैनुअल तथा प्रयोग में दिए जाने वाले निर्देशों का यहाँ विवरण किया जाएगा।
- **l ko/kkfu; k%** परीक्षण या प्रयोग के संचालन के दौरान यदि किसी सावधानी पर ध्यान दिया जाना है तो, उनका इस उप-शीर्षक के तहत उल्लेख करना होता है।
- **vkRefujh{k.k fj i kV:** प्रतिभागी द्वारा परीक्षण/प्रयोग पूरा होने के बाद, आत्मनिरीक्षण रिपोर्ट बनानी होती है, जिन भावनाओं और बाधाओं का प्रतिभागी द्वारा परीक्षण या प्रयोग में सामना किया गया है, उसे उप-शीर्षक के तहत उल्लेख किया जाता है।
- **Ldkfjx vkš 0; k[; k%** प्रतिभागी द्वारा परीक्षण पूरा करने के बाद, स्कोरिंग कुंजी की सहायता से बनाए जाने वाले उत्तर पत्रक और डेटा को मैनुअल में दिए गए मानदंडों की सहायता से डेटा को व्याख्यायित करना होता है। इस शीर्षक के अंतर्गत स्कोर का उल्लेख और इसकी व्याख्या की जा सकती है। प्रयोगों के लिए, निष्कर्षों का विश्लेषण और उल्लेख यहां किया जाना है।
- **ppk%** आपको व्याख्या के आधार पर प्राप्त परिणामों पर चर्चा करनी होगी। आगे का विश्लेषण, आत्म-निरीक्षण रिपोर्ट को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

प्रयोगों के मामले में परिणाम, क्षेत्र में किए गए मौजूदा अध्ययनों द्वारा समर्थित किया जाता है।

- **निष्कर्ष:** इस शीर्षक के तहत, आपको परीक्षण या प्रयोग के निष्कर्षों का सारांश निकालना होगा।

संदर्भ

शिक्षार्थी द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों, वेबसाइटों और मैनुअल का अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) प्रारूप में उल्लेख किया जाएगा।

संदर्भ (एपीए स्टाइल)

संदर्भ, एपीए प्रारूप में लिखे जाएँ। इन्हें वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। जैसे:

पुस्तकें

अनास्तासी, ए.(1968). साइकोलॉजिकल टेस्टिंग। लंदन: मैकमिलन कंपनी।

पत्रिका लेख

डेनिशन, बी (1984). कारपोरेट कल्चर टु द बॉटमलाइन। ओरगनाइजसनल डेवेलपमेंट, 13, 22-24।

पुस्तक अध्याय

खान, ए.डब्ल्यू. (2005). डिस्टन्स एजुकेशन फॉर डेवलपमेंट : गर्ग, एस. Et.al.(Eds)। ओपन एंड डिस्टन्स एजुकेशन इन ग्लोबल एनवायरनमेंट। नई दिल्ली: विवा बुक्स।

वेबसाइट

<http://www/mcb.cb.uk/apmfirum> (2.3.2011 को प्राप्त किया गया)

- 4) अध्ययन केंद्र पर परीक्षण/प्रयोग पुस्तिका को जमा करने से पहले इसकी फोटो प्रति अवश्य रखें। पुस्तिका जमा करते समय अभिस्वीकृति (परिशिष्ट 3) भी ली जाए।

5.0 मूल्यांकन

- 1) **सत्रांत (सत्र समापन) परीक्षा (टीईई) फॉर्म और परीक्षा शुल्क:** आपको प्रयोग का सत्रांत परीक्षा शुल्क जमा करना होगा। परीक्षा शुल्क 150/- रुपये है। कृपया लागू नवीनतम शुल्क राशि की सूचना www.ignou.ac.in से देख लें।
- 2) **परीक्षा :** आंतरिक मूल्यांकन में वास्तव में किए गए परीक्षण तथा इसके लिए निर्धारित प्रारूप में, परीक्षण पुस्तिका में उनका उल्लेख किया जाना होता है। बाह्य मूल्यांकन से तात्पर्य है कि परीक्षा के दिन, प्रयोग का संचालन एवं मौखिक परीक्षा में भाग लेना समिमलित है। सत्रांत परीक्षा के लिए अध्ययन केंद्र पर प्रायोगिक परीक्षा आयोजित होगी।
- 3) **सत्रांत परीक्षा का संचालन:** आप प्रायोगिक परीक्षा में प्रयोग/परीक्षण करेंगे और शैक्षणिक परामर्शदाता को प्रायोगिक पुस्तिका जमा करेंगे। सत्रांत प्रयोग परीक्षा से पहले पुस्तिका की जांच अवश्य करवा लें। आप परीक्षा के समय नोटबुक/फाइल अपने साथ लाएं। संबंधित अध्ययन केंद्रों पर परीक्षा आयोजित की जाएगी। परीक्षा की अवधि तीन घंटे की होगी। परीक्षा के दौरान, आप परीक्षण या प्रयोग करेंगे और उत्तर

पुस्तिका को निर्धारित समय में जमा करेंगे। लॉटरी के माध्यम से आपको प्रैक्टिकल आवंटित कर दिया जाएगा। फिर आप परीक्षण सामग्री लेकर अपना प्रयोग करना शुरू करेंगे। आपको परीक्षा के दिन एक प्रतिभागी को लाने की आवश्यकता है, जिस पर परीक्षण या प्रयोग किया जाएगा। एक बार जब आप परीक्षण पूरा कर लें, तो उत्तर पुस्तिका में निष्कर्ष लिखें। इसके बाद मौखिक परीक्षा होगी।

प्रायोगिक उत्तर पुस्तिका बाहरी परीक्षक द्वारा जांची जाएगी और बाहरी परीक्षक द्वारा मौखिक परीक्षा का भी संचालन किया जाएगा।

ijh{k.k dh l =kar ijh{k.k frffk l hek

çošk pØ	chi hl hl h-131 dh l =kar ijh{k.k %TTEE%dh frffk; k
जुलाई	1 जुलाई से 14 अगस्त तक
जनवरी	1 जनवरी से 15 फरवरी तक

chi hl hl h-131 dh l =kar ijh{k.k %TTEE%dh frffk] fo' ofo | ky; }kjk çnku dh xbz fnukd rkfydk ea ugha fn [kkbz naxhA bl ds fy,] – i ; k vi us l æfkr v/ ; ; u dæka l s l ä dZ djA

- 4) ç; ksx ijh{k.k ds fy, mÜkh.kZ vad% पाठ्यक्रम में न्यूनतम उत्तीर्ण अंक 35 हैं। सत्रांत प्रयोग परीक्षा में पुनर्मूल्यांकन का कोई प्रावधान नहीं है।
- 5) eW; kadu dh ; kustuk% सत्रांत परीक्षा में निम्नलिखित मूल्यांकन पद्धति अपनाई जाएगी:

vkrfjd vad	vad	ckgjh	vad
उपस्थिति	05	परीक्षण	05
प्रीक्षिन 20 परीक्षण	30	उत्तर पुस्तिका की जांच	10
प्रेक्टिकम पुस्तिका	15	मौखिक परीक्षा	20
कुल	50	कुल	50

बाहरी मूल्यांकन के लिए 30% अंक और आंतरिक मूल्यांकन के लिए 70% अधिभारिता दिया जाएगा।

6-0 ijh{k.k ds fy, l f{klr funz k

eukøKkfud ijh{k.k ds fl) kar

हम सभी परीक्षण शब्द से परिचित हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अपने स्कूल में विभिन्न परीक्षण, शारीरिक फिटनेस के लिए परीक्षण, या खेल टीमों में चयन के लिए परीक्षण देते हैं। आपने किसी पत्रिका में परीक्षण का प्रयास भी किया होगा, या किसी समाचार पत्र जो आपको दोस्ती के पैमाने पर बताता है जैसे- आप दूसरों के लिए कितने अनुकूल हैं, या आप खाली समय में क्या करना चाहते हैं या आप जीवन में क्या बनना चाहते हैं, या आप पहल करने में कितने सक्रिय हैं, आदि की लंबी सूची हो सकती है। एक बहुत ही आम उदाहरण के रूप में स्कूल में परीक्षा को ले सकते हैं। इस प्रकार के परीक्षण को **mi yfçek-ijh{k.k** कहा जाता है। उपलब्धि परीक्षण में पिछले शिक्षण या जो सीखा गया है, वह सम्मिलित होता है।

यह विभिन्न परीक्षणों के अंतर्गत एक प्रकार का भिन्न परीक्षण है। लेकिन अगर आप मनोवैज्ञानिक परीक्षण के बारे में सोचते हैं, तो आपका ध्यान बुद्धि, व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, रचनात्मकता, सीखने और स्मृति आदि जैसे विषयों पर जाएगा।

यहां, हम संक्षेप में बताएंगे कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण क्या है और ये कितने प्रकार के होते हैं। फिर हम संचालन (administration), स्कोरिंग, व्याख्या और रिपोर्ट लेखन से संबंधित सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे।

eukokkfud ijh{k.k

सामान्य आवधिक परीक्षण किसी भी कारक को मापने के लिए या क्षमता का आंकलन करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया है। इसमें बुद्धि परीक्षण अथवा आई.क्यू. (IQ, इंटेलिजेंस क्वेश्चन) मापन, योग्यता परीक्षण (जो कुछ क्षेत्रों में क्षमता को मापता है), विभिन्न व्यक्तित्व परीक्षण, व्यक्तित्व शैली, विश्वास प्रणाली और दृष्टिकोण के पहलुओं का आंकलन करना शामिल है। अत्यधिक विशिष्ट रूप से, एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण को परिभाषित किया जा सकता है, 'मानकीकृत परीक्षण, जिसमें मौखिक रूप से अशाब्दिक प्रतिक्रियाओं के नमूनों या अन्य व्यवहारों के माध्यम से, कुल व्यक्तित्व के एक या अधिक पहलुओं के लिए डिजाइन किया गया है' (फ्रीमैन 1965: 46)।

इस प्रकार से, एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण:

- एक मानकीकृत साधन है।
- निष्पक्षता एक मानकीकृत साधन की विशेषताओं में से एक है।
- एक या कई मनोवैज्ञानिक विशेषताओं जैसे – मानसिक क्षमता, व्यक्तित्व, रुचि, दृष्टिकोण, योग्यता आदि को मापता है।
- मापन मौखिक या गैर-मौखिक (अशाब्दिक) प्रतिक्रियाओं के माध्यम से किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से व्यवहार का नमूना देखा या अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा परिणाम स्कोर या श्रेणियों के रूप में दिए जाते हैं।

ijh{k.k ds 'k#vkrh ?kVukØe dk l f{kIr fooj.k%

विद्वान परीक्षण का इतिहास 2200 ईसा पूर्व बताते हैं जब चीनी कर्मचरियों की फिटनेस को निर्धारण करने के लिए परीक्षण किया गया। हान राजवंश 202 ई.पू. – 200 CE के दौरान, अल्पविकसित प्रकार के परीक्षण को परिष्कृत किया गया। पांच विषयों का परीक्षण किया गया, जिन में नागरिक कानून, सैन्य मामले, कृषि, राजस्व और भूगोल शामिल किए गए। चीनी प्रणाली ने 1370 में अपने अंतिम आकार का परीक्षण किया जब कन्फ्यूशियस क्लासिक्स में दक्षता पर जोर दिया गया था। लेकिन स्थापित प्रणाली को 1906 में समाप्त कर दिया गया। माना जाता है कि व्यक्तिगत मतभेदों पर Ykfl l xkYVu के काम से मनोवैज्ञानिक परीक्षण शुरु हुआ। इसकी अवधारणा वैयक्तिक भिन्नता, एक बुनियादी अवधारणा है जिसका मनोवैज्ञानिक परीक्षण अंतर्निहित है। फ्रांसिस गैल्टन(1822-1911) पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने व्यवस्थित और सांख्यिकीय जांच अलग-अलग की। उन्होंने प्रदर्शित किया कि मनुष्यों और मशीनी (motor) कामकाज में व्यक्तिगत अंतर मौजूद हैं, जैसे प्रतिक्रिया समय, दृश्य तीक्ष्णता और शारीरिक शक्ति। tfl ebfdu dly ने गैल्टन के काम को बढ़ाया। 1890 में कैटेल ने भी मानसिक (Mental) शब्द गढ़ा। गैल्टन से पहले, मनोविज्ञान के इतिहास में अन्य महत्वपूर्ण कार्य किए गए थे। लेकिन जब तक कि गैल्टन का काम सामने नहीं आया,

तब तक मानव क्षमताओं में अंतर पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया था। **osj** (1795-1878) ने वजन भेदभाव, दृष्टि, श्रवण और दो-बिंदु दहलीज़ पर प्रयोग किया। **Oduj** (Fechner) (1801-07) ने शारीरिक घटनाओं और मानसिक प्रक्रियाओं के संबंध की समझ के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया (उदाहरण के लिए, ध्वनि की तीव्रता में परिवर्तन, श्रवण धारणा को कैसे प्रभावित करेगा)। **foYge omV** (1832-1920) जिन्होंने वर्ष 1879 में पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला जर्मनी में स्थापित की, वर्षों पहले मानसिक प्रक्रियाओं के मापन पर काम कर रहे थे। 1862 में उन्होंने विचारों की गति को मापने के लिए विचार मीटर के साथ प्रयोग किया।

इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, जांच की दो आधारों से विकसित हुआ:

- डार्विन, गैल्टन और कैटेल द्वारा व्यक्तिगत मतभेदों की माप के आधार पर।
- अन्य, जर्मन मनोचिकित्सकों के काम पर आधारित है – जैसे वेबर (Weber), फेचनर (Fechner) और वुंड्ट (Wundt)।

मानसिक और भावनात्मक रूप से विकलांगों के वर्गीकरण की आवश्यकताओं के उत्तर में आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अवतरण किया गया। सेगिन फॉर्म बोर्ड परीक्षण (Seguin Form Board Test) 1866 को ओ.एडवर्ड सेगिन (1812-1880) द्वारा विकसित किया गया था, जिसमें विकलांग बच्चों को शिक्षित करना था। आधुनिक परीक्षणों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण सफलता बीसवीं सदी के **vYYM fcuV** और **Vh-l kbeu** द्वारा बुद्धि परीक्षण के प्रकाशन के साथ 1905 में हुई। समय के साथ व्यक्तित्व परीक्षण, प्रदर्शन परीक्षण, योग्यता परीक्षण, रुचि सूची, शैक्षिक उपलब्धि और बहुक्रिया परीक्षण आदि जैसे परीक्षण उपकरणों की एक श्रृंखला के साथ और अधिक विकास देखा गया।

मनोविज्ञान के शिक्षार्थी के रूप में, आपको मनोवैज्ञानिक परीक्षण के विकास पर अधिक पढ़ने के लिए सुझाव दिया जा रहा है। परीक्षण कैसे शुरू किया गया था, अथवा मनोवैज्ञानिक परीक्षण में ऐतिहासिक विकास के, हम शुरुआती घटनाक्रम का संक्षिप्त विवरण दे रहे हैं:

rkfydk 1% i jh{k.k ds bfrgkl ea çkjñkld fodkl dk l kjkãk	
2200 ई.पू.	चीनी सिविल सेवा परीक्षा की शुरुआत।
1862 CE	विल्हेम वुंड्ट ने विचार की गति (स्पीड आफ थॉट) को मापने के लिए एक कैलिब्रेटेड पेंडुलम का उपयोग किया है।
1884	फ्रांसिस गाल्टन ने अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी में हजारों नागरिकों (सिटिजन्स) के लिए पहली परीक्षण बैटरी का प्रबंध किया।
1890	जेम्स मैकिन केटल ने अपनी गैलटोनियन टेस्ट बैटरी के लिए कार्य-सूची की घोषणा में मानसिक परीक्षण शब्द का उपयोग किया।
1905	बिनेट और साइमन ने पहले बुद्धि परीक्षण का अवतरण किया।
1914	स्टर्न ने आईक्यू (IQ) या बुद्धि भागफल की अवधारणा का परिचय – मानसिक आयु को कालानुक्रमिक आयु से विभाजन के रूप में दिया।
1916	लुईस टरमन ने बिनेट-साइमन स्केल्स को संशोधित किया, स्टैनफोर्ड-बिनेट को प्रकाशित किया। ये संशोधन 1937, 1960 और 1986 में सामने आए।
1917	रॉबर्ट येरक्स ने प्रथम विश्व युद्ध में सेना के रंगरूटों के परीक्षण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अल्फा और बीटा परीक्षाओं के विकास को गति दी।

1917	रॉबर्ट वुडवर्थ ने पर्सनल डेटा शीट, प्रथम व्यक्तित्व परीक्षण (फर्स्ट पर्सनलिटी टेस्ट) विकसित किया।
1920	रॉर्शाक (Rorschach) इंकब्लॉट परीक्षण प्रकाशित।
1921	कैटेल, थार्नडाइक और वुडवर्थ द्वारा मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन – पहला प्रमुख परीक्षण प्रकाशक-स्थापित।
1927	स्ट्रॉन्ग वोकेशनल इंटररेस्ट ब्लैंक का पहला संस्करण प्रकाशित।
1939	वेचस्लेर-बेलेव्यू (Wechsler-Bellevue) इंटेलिजेंस स्केल प्रकाशित। 1955, 1981 और 1997 में पुनरीक्षण तथा प्रकाशन।
1942	मिनेसोटा बहुभाषी व्यक्तित्व सूची प्रकाशित।
1949	वेचस्लेर इंटेलिजेंस स्केल फॉर चिल्ड्रन प्रकाशित। 1974, 1991 में पुनरीक्षण और प्रकाशित।

l ks-% मनोवैज्ञानिक परीक्षण, के आर. जे. ग्रेगोरी, 2004: पृष्ठ 51, से लिया गया।

i jh{k.kka ds çdkj

परीक्षण को प्रशासन या प्रचालन के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। वे प्रतिक्रिया का तरीका और परीक्षण की संरचना के आधार पर, व्यवहार को मापते हैं,। परीक्षण प्रचालन के आधार पर, दो प्रकार के परीक्षण होते हैं: 0; fäxr i jh{k.k और l ew i jh{k.k। जब एक व्यक्ति को एक समय में एक परीक्षण दिए जाता है, तब उसे व्यक्तिगत परीक्षण के रूप में जाना जाता है। एक समूह परीक्षण में परीक्षक द्वारा एक बार में एक से अधिक लोगों को परीक्षण दे सकता है। वे जिस प्रकार को मापते हैं, उसी के अनुसार परीक्षणों का परीक्षण करते हैं, तो इन परीक्षणों को एक व्यापक श्रेणी: क्षमता परीक्षणों के अंतर्गत रखा जाता है। {kerk i jh{k.k, गति, सटीकता या दोनों के संदर्भ में कौशल को मापता है। उदाहरण के लिए, गणितीय क्षमता के परीक्षण में, जितनी अधिक समस्याएं आप समय सीमा के अंदर सही ढंग से हल करते हैं, उतना ही आपका स्कोर होगा। योग्यता एक व्यापक शब्द है जिसमें योग्यता परीक्षण, खुफिया परीक्षण और उपलब्धि परीक्षण शामिल हैं। mi yfcèk i jh{k.k पिछले शिक्षण को मापते हैं, जैसे कि एक वर्ष में अंग्रेजी में कितना सीखा गया है छह ग्रेड शिक्षार्थियों को सत्रांत परीक्षा द्वारा मापा जा सकता है। ; kx; rk i jh{k.k में एक विशिष्ट कौशल प्राप्त करने के लिए क्षमता का परीक्षण करता है, उदाहरण के लिए यदि व्यक्ति को व्यक्तिगत संगीत योग्यता का विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जाता है तो, व्यक्ति संगीत से कितना सीख सकता है। cks) d i jh{k.k, समस्याओं को हल करने के लिए, बदलती परिस्थितियों में अनुकूलन करने और अनुभव से लाभ उठाने के लिए किसी व्यक्ति की सामान्य क्षमता को मापता है। उपरोक्त सभी तीन प्रकार के परीक्षण परस्पर संबंधित हैं। कभी-कभी इन परीक्षणों को मानव क्षमता के परीक्षणों के तहत शामिल किया जाता है। व्यक्तित्व परीक्षण मापन लक्षण, स्वभाव और मनोवृत्ति को मापते हैं। 0; fäRo i jh{k.k को परीक्षण की संरचना के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। क्या परीक्षण स्पष्ट रूप से एक प्रश्नावली की तरह है या यह अर्ध-संरचित है या असंरचित उत्तेजना का उपयोग करता है। असंरचित या अर्ध-संरचित परीक्षणों को आमतौर पर ç{ki h; i jh{k.kka के रूप में जाना जाता है। प्रक्षेपीय परीक्षणों में सबसे छोटी उत्तेजना अस्पष्ट होती है, जैसे jks'kkzd (Rorschach) इंकब्लॉट परीक्षण में स्याही-धब्बा।

परीक्षण में समय की कमी के आधार पर, यदि परीक्षण में सरल मद हैं और समय सीमा है, तो यह xfr i jh{k.k कहलाता है। दूसरी ओर, 'kfä i jh{k.k में एक उदार समय सीमा

हो सकती है लेकिन, कठिन मद होते हैं। परीक्षण का वर्गीकरण, मदों की प्रकृति के आधार पर या उपभोग की गई मदों के आधार पर भी किया जा सकता है। इस श्रेणी में, एक परीक्षण मौखिक परीक्षण, अशाब्दिक परीक्षण, प्रदर्शन परीक्षण या गैर-भाषा परीक्षण हो सकता है। एक मौखिक परीक्षण कागज-पेंसिल परीक्षण होता है। अशाब्दिक परीक्षण में भाषा केवल निर्देशों, आंकड़ों और प्रतीकों में उपयोग की जाती है।

çn'ku ijh{k.k में, मानव प्रतिभागी प्रश्नों के उत्तर देने के बजाय एक कार्य को करता है। इस तरह के परीक्षण में भाषा का उपयोग नहीं करते हैं, लेकिन निर्देश भाषा, इशारों या पेंटोमाइम का उपयोग करके दिए जा सकते हैं। गैर-भाषा परीक्षण में, परीक्षण लिखित, बोली जाने वाली या पढ़ने के संचार के किसी रूप का उपयोग नहीं करता है। निर्देश आमतौर पर इशारों और पेंटोमाइम्स के माध्यम से दिए जाते हैं। ऐसे परीक्षण ऐसे लोगों या बच्चों को दिए जाते हैं जो किसी भी भाषा में संवाद नहीं कर सकते। परीक्षण vkltfDVo अथवा lctfDVo भी हो सकता है। एक विशिष्ट प्रतिक्रिया दी जानी है (सत्य/असत्य) और स्कोरिंग प्रक्रिया व्यक्तिगत निर्णय या पूर्वाग्रह से मुक्त होती है, तो उसे ऑब्जेक्टिव परीक्षण कहते हैं। सब्जेक्टिव परीक्षण में मद होते हैं जैसे कि निबंध प्रश्न या इंकब्लाट्स पर प्रतिक्रिया, जहां कम विशिष्ट प्रतिक्रिया होती है। स्कोरिंग, व्यक्तिगत रवैये से प्रभावित हो सकती है। प्रशिक्षण को उपलब्धि परीक्षण, दृष्टिकोण परीक्षण, रुचि परीक्षण और व्यक्तित्व परीक्षण में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

हम बाद के खंडों में, दो परीक्षणों पर चर्चा करेंगे। अब तक आपको स्पष्ट हो जाना चाहिए कि विभिन्न मानवीय क्षमताओं और व्यक्तित्वों में व्यक्तिगत भिन्नताओं का आकलन करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग मुख्य रूप से किया जाता है। परीक्षणों का सबसे आम उपयोग वर्गीकरण, निदान, और उपचार योजना, आत्म-ज्ञान, कार्यक्रम मूल्यांकन और अनुसंधान में होता है।

eukoklfud ijh{k.k ds eny fl) kr

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के सिद्धांतों से हमारा तात्पर्य उन बुनियादी अवधारणाओं और मूलभूत विचारों से है, जो सभी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से गुजरते हैं। विश्वसनीयता, वैधता, परीक्षण प्रचालन या संचालन और मानकीकरण कुछ मूलभूत अवधारणाएं हैं, जिनके बारे में हम यहां चर्चा करेंगे।

क) fo'ol uh; rk

विश्वसनीयता स्थिरता है। एक परीक्षण की विश्वसनीयता तब होती है जब वह लगातार एक ही परिणाम देने की क्षमता रखता है। एक अच्छा परीक्षण विश्वसनीय होना चाहिए – अर्थात्, जब भी कोई व्यक्ति इसे लेता है तो उसे समान परिणाम देना चाहिए, भले ही अलग-अलग व्यक्ति इसे प्रशासित करें और स्कोर करें। विश्वसनीयता सभी कुछ या कुछ भी नहीं है, यह डिग्री का मामला है। अधिक तकनीकी शब्दों में, विश्वसनीयता से तात्पर्य उस सीमा से है जिस पर परीक्षण स्कोर माप त्रुटि रहित हैं (कापलान और सैकुजो 2009: 22)।

परीक्षण मानकों के संदर्भ में, ब्रिटिश साइकोलॉजिकल सोसायटी संचालन समिति के अनुसार परीक्षा स्कोर कितनी सटीक या ठीक है, विश्वसनीयता इसी का प्रतिबिंब है (1999: 4)। विश्वसनीयता के मापन आमतौर पर सहसंबंध गुणांक पर आधारित होते हैं। सहसंबंध गुणांक 1.0 से -1.0 तक होता है। यह एक ही व्यक्ति या समूह द्वारा प्राप्त अंकों के दो सेटों के बीच अलगाव या समानता की ताकत का मापन है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में, पूर्ण विश्वसनीयता आमतौर पर मौजूद नहीं होती है।

विश्वसनीयता का आकलन करने के कई अलग-अलग तरीके होते हैं, जैसे कि आइटम-कुल सहसंबंध, परीक्षण पुनःपरीक्षण विश्वसनीयता, स्प्लिट-हाफ विश्वसनीयता, कारक और प्रमुख घटक विश्लेषण और इंटर-रेटर विश्वसनीयता। विधि की पसंद अन्वेषक की जरूरतों पर निर्भर करती है। परीक्षण पुनःपरीक्षण विश्वसनीयता (Test retest reliability) विधि में, एक ही परीक्षण को एक ही समूह के लिए दो बार संचालित किया जाता है और दोनों परीक्षणों पर स्कोर के लिए उपयुक्त सह-संबंध की गणना की जाती है। एक ही परीक्षण के वैकल्पिक रूप की मदद से वैकल्पिक रूप में विश्वसनीयता का अनुमान लगाया जाता है। जांचकर्ताओं के परीक्षण का वैकल्पिक रूप विकसित होता है जिसमें समान सामग्री होती है और यह कठिनाई के समान श्रेणी और स्तर को कवर समाहित करता है। परीक्षण के दोनों रूप एक ही समूह पर संचालित किए जाते हैं और परीक्षण की विश्वसनीयता का पता लगाने के लिए स्कोर परीक्षण सह-संबद्ध की गणना की जाती हैं। इसे समतुल्य या समानांतर रूपों की विश्वसनीयता भी कहा जाता है। स्प्लिट-हॉफ विश्वसनीयता का अनुमान प्रतिनिधि समूह पर एक बार किए गए परीक्षण के समतुल्य आधे से प्राप्त अंकों (स्कोर) के आधार पर लगाया जाता है। आइटम-कुल सह-संबंधों में, अन्वेषक परीक्षण के प्रत्येक आइटम पर स्कोर और परीक्षण पर कुल स्कोर के बीच सह-संबंध पर गणना करता है। अंतर-रेटर विश्वसनीयता की गणना तब की जाती है जब प्रेक्षकों द्वारा मापित व्यवहार का मूल्यांकन किया जाता है। सह-संबंध गुणांक को मापने के लिए विभिन्न पर्यवेक्षकों की रेटिंग सह-संबद्ध होती हैं। तालिका 1.2 में विश्वसनीयता की विधियों का एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

fof/k	Qke# dh l d; k	l =ks dh l d; k	=fV fopj .k ds l kr
परीक्षण पुनःपरीक्षण	1	2	समय में बदलाव
वैकल्पिक रूप (तत्काल)	2	1	आइटम का नमूना
वैकल्पिक रूप (देरी से समय में परिवर्तन)	2	2	आइटम नमूना
विभाजन (स्प्लिट) हाफ विभाजन की प्रकृति	1	1	आइटम नमूना
आइटम कुल परीक्षण की विषमता	1	1	आइटम नमूना
इंटर स्कोरर	1	1	स्कोरर अंतर

l ks% रॉबर्ट. जे. ग्रेगरी (2004: 111)

विश्वसनीयता का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न सांख्यिकीय तरीके हैं, जैसे क्रोनबाक अल्फा, कुडेर-रिचर्डसन (केआर-20), पियर्सन सह-संबंध और गटमैन के गुणांक और कारक विश्लेषण <http://psychology.wadsworth.com/book/gravetterwallnau5e/index.html> पर विश्वसनीयता और वैधता के बारे में अधिक पढ़ सकते हैं।

परीक्षण विश्वसनीयता का स्वीकृत स्तर क्या होना चाहिए या जब हम कहते हैं कि विशेष परीक्षण का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि इसमें अच्छा विश्वसनीयता सूचकांक है? इस तरह का कोई निश्चित मानदंड एक अच्छा मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लिए नहीं है। कुछ लेखकों का सुझाव है कि विश्वसनीयता कम से कम .95 होनी चाहिए। लेकिन गिलफोर्ड और फ्रक्टर (1978) के शब्दों में, कुछ विशेषताओं में व्यक्तिगत अंतरों का एक बहुत सटीक मापन किया गया है, विश्वसनीयता .90 से अधिक होनी चाहिए। हालांकि, सच्चाई यह है कि कई मानक परीक्षण के साथ काफी कम .70 के रूप में विश्वसनीयता बहुत उपयोगी

साबित होती है और इससे भी कम विश्वसनीयता के साथ परीक्षण अनुसंधान में उपयोगी हो सकते हैं।

ख) **oYkrk**

एक वैध परीक्षण वह है जो कि 'उसे क्या मापना है', उसे को ही मापता है। एक परीक्षण वहाँ तक मान्य होता है जहाँ उससे निकाले गए निष्कर्ष उचित, सार्थक और उपयोगी हैं '(शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लिए मानक, 1999)। एक वैध परीक्षण का पहला आवश्यक गुण यह है कि यह अत्यधिक विश्वसनीय होना चाहिए। यदि कोई परीक्षण असंगत परिणाम देता है, (अर्थात वह विश्वसनीय नहीं है) इसे किसी भी मानदंड (कुछ व्यवहार या व्यक्तिगत पूर्णता) के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है। लेकिन उच्च विश्वसनीयता, परीक्षण की उच्च वैधता की गारंटी नहीं होती है। विश्वसनीयता और वैधता के बीच के संबंधों को इस उदाहरण से समझा जा सकता है: 'सर फ्रांसिस गेल्टन के संवेदी और मोटर मापन कभी भी मान्य नहीं हो सकते थे यदि वे विश्वसनीय नहीं होते ... हाँ, भले ही गैल्टन के कुछ मापन विश्वसनीय साबित हुए हों, लेकिन बाद में सबूतों से पता चला कि वे बुद्धि के वैध मापन नहीं थे। मापन के समय के बाद समान स्कोर प्राप्त हुए, लेकिन उन अंकों को वैधता मानदंड के साथ कमजोर सह-संबंधित किया गया जैसे कि स्कूल ग्रेड और बुद्धि की अध्यापक रेटिंग '(मॉर्गन, किंग, वीज और शॉपलर, 1997: 520)।

वैधता के कई अलग-अलग प्रकार हैं। मापन की जरूरतों के आधार पर एक या अधिक विधियों का चयन किया जा सकता है। वैधता मापने के लिए विभिन्न विधियाँ हैं जिन्हें तीन श्रेणियों में बांटा गया, जैसे कि विषयवस्तु परक वैधता, संरचनात्मक वैधता एवं समवर्ती वैधता। विषयवस्तु परक वैधता परीक्षण वस्तुओं की विस्तृत परीक्षा के आधार पर परीक्षण उपकरण की वैधता का अनुमान है; यहां **l kexh** का मतलब वास्तविक टेस्ट मर्दों की घटक-सामग्री से है '(रिबर और रीबर 2001: 781)। विषयवस्तु परक का उपयोग परीक्षा में प्रयुक्त मर्दों की प्रासंगिकता, विशेषज्ञों के निर्णय पर होता है। संरचनात्मक वैधता का आंकलन परीक्षण स्कोर और कुछ स्वतंत्र मानदंड के बीच संबंध का निर्धारण करके किया जाता है। **x&jh** ने दो अलग-अलग तरीकों को शामिल किया है। संरचनात्मक वैधता के तहत-समवर्ती वैधता और अपेक्षित वैधता (2004: 124): को बताया है।

- समवर्ती वैधता में, मानदंड उपायों को परीक्षण के स्कोर के रूप में लगभग एक ही समय प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, रोगी का वर्तमान मनोचिकित्सा निदान, कागज और पेंसिल मनोविज्ञानी परीक्षण के लिए वैधता प्रमाण प्रदान करने के लिए एक उपयुक्त उपाय करना होगा।
- अपेक्षित वैधता में, आमतौर पर परीक्षण स्कोर प्राप्त करने के महीनों या सालों के बाद कसौटी के परिणाम भविष्य में प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक कॉलेज प्रवेश परीक्षा संरचनात्मक वैधता के आधार पर परीक्षार्थियों के ग्रेड बिंदु औसत की भविष्यवाणी करने में सटीक होंगे।

समवर्ती वैधता, एक परीक्षण उपकरण की वैधता के मूल्यांकन के लिए प्रक्रियाओं का एक समूह है जो कि उस डिग्री के निर्धारण के आधार पर है जिस पर परीक्षण आइटम काल्पनिकता या विशेषता को पकड़ते हैं (यानी निर्माण), इसे मापने के लिए डिजाइन किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि एक परीक्षण बुद्धि का मापन प्रदान करता है तो पूछना चाहिए: गुण या विशेषता (या निर्माण) वास्तव में बुद्धि की विशिष्टता है? क्या परीक्षण मद वास्तव में **,l sfuekZk dks V\$ djrs g\$** '(रिबर एंड रिबर 2001: 781)। आभासी वैधता

इस बात पर निर्भर करती है कि क्या परीक्षण करने वाले उपयोगकर्ताओं, परीक्षकों और परीक्षार्थियों के लिए यह मान्य है। ग्रेगरी ने टिप्पणी की कि आभासी वैधता, परीक्षण की सामाजिक स्वीकार्यता के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन मनोमिति के उद्देश्य के लिए अप्रासंगिक है।

ब) ekunM

मान लीजिए किसी को बुद्धि की परीक्षा में 50 अंक मिले हैं। इस स्कोर का अपने आप में कोई मतलब नहीं है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण से पहले प्राप्त किए गए स्कोर को **dPpk Ldkj** कहा जाता है। ये स्कोर परीक्षण पर प्रदर्शन का कुल मिलाकर स्कोर होता है, जैसे किसी बुद्धि परीक्षण में हल की गई समस्याओं की संख्या। इन प्रारंभिक स्कोरों को किसी न किसी रूप में मानक समूह के आधार पर मानक स्कोर में परिवर्तित किया जाता है। एक आदर्श समूह में उन परीक्षार्थियों में से चयनित होता है जो उस जनसंख्या के प्रतिनिधि होते हैं जिनके लिए परीक्षण उद्देशित होता है (ग्रेगरी 2004: 81)। उदाहरण के लिए, यदि एक परीक्षण बारहवें कक्षा के मूल्य प्रणाली का अध्ययन करने के लिए डिजाइन किया गया है, परीक्षण कच्चे स्कोर के वितरण को निर्धारित करने के लिए, बड़ी संख्या में ऐसे आयु वर्ग (ग्रामीण- शहरी, अमीर – मध्यम वर्ग – गरीब आदि) को दिया जाएगा। **Ldkj** के संग्रह के आधार पर, परीक्षण विकासकर्ता व्युत्पन्न स्कोर प्रदान करेगा। इन अंकों को मानदंड के रूप में जाना जाता है। मानदंड, प्रतिशत रैंकों, स्टानाइंस, स्टांस, आयु मानदंड, ग्रेड मानदंडों या मानक स्कोर के रूप में हो सकते हैं।

पर्सेंटाइल नमूने में, स्कोर के प्रतिशत को, व्यक्त करता है जो इससे कम ही होता है। एक स्कोर 50 प्रतिशत पर इंगित करता है कि स्कोर का 50% इसके नीचे आता है। पर्सेंटाइल, प्रतिशत के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। पर्सेंटाइल तुलनात्मक स्कोर होता है और यह बताता है कि आपका प्रतिशत आपको विशेष नमूने (आदर्श समूह) में कहाँ रखता है जबकि प्रतिशत, सही जवाब दिए गए, सवालों की संख्या को बताता है। एक बुद्धि परीक्षण में 50 प्रतिशत व्यक्त करता है कि सही ढंग से कितना प्रयास किया गया था और यह 50 प्रतिशत, नमूने के प्रदर्शन के आधार पर 50, 90, या 80 के प्रतिशत पर रखा जा सकता है। पर्सेंटाइल 1 सबसे कम रैंक है और 100 पर्सेंटाइल उच्चतम रैंक है।

मानक स्कोर, मानक विचलन के आधार पर व्युत्पन्न स्कोर है। इसे आमतौर पर z स्कोर के रूप में जाना जाता है। यह मानक विचलन इकाइयों में माध्य से दूरी को व्यक्त करता है। टी-स्कोर (T) मानक स्कोर का एक प्रकार है। यह मैकल (1922) द्वारा सुझाया गया था। मानक स्कोर के मामले में, माध्य का मान शून्य लिया जाता है जबकि टी स्कोर में माध्य का मान 50 और मानक विचलन में 10 होता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, स्टैनाइन (या मानक नौ) पैमाने को संयुक्त राज्य वायु सेना द्वारा विकसित किया गया था। स्टैबाइन स्केल में सभी कच्चे स्कोर 1 से 9 तक एकल अंक प्रणाली में बदले जाते हैं। कैनफील्ड (1951) द्वारा स्टेन स्केल (मानक दस) प्रस्तावित किया गया था। यह दस यूनिट स्केल है जिसमें माध्य से 5 यूनिट ऊपर और 5 यूनिट नीचे होती है। आयु मानदंड उम्र के संदर्भ में प्रदर्शन के स्तर को व्यक्त करते हैं। ग्रेड मानदंड, ग्रेड स्तर के संदर्भ में प्रदर्शन के स्तर को व्यक्त करते हैं।

विभिन्न परीक्षणों के लिए कई ऐसे मानदंड विकसित किए गए हैं, जैसे कि मानसिक आयु और आईक्यू। शिक्षार्थी विभिन्न मानदंडों के साथ विभिन्न परीक्षणों का जब उपयोग करेंगे तो उनके बारे में अधिक जानेगे।

परीक्षण प्रबंधन व्यक्तिगत या सामूहिक हो सकता है। एक परीक्षण का परिचालन एक समान और निर्दिष्ट निर्देशों के अनुसार होना चाहिए। यह परीक्षण प्रशासन का पहला सिद्धांत है। एक परीक्षण मानकीकृत माना जाता है। यह एक परीक्षक से दूसरे में समान है और दूसरे में स्थापित है (ग्रेगरी 2004: 54)। यदि निर्देशों के निर्दिष्ट सेट के अनुसार परीक्षण नहीं किया जाएगा, तो परीक्षण के प्रचालन में एकरूपता नहीं होगी। इस तरह के परीक्षण का परिणाम विश्वसनीय नहीं होगा। मैनुअल में दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए। परीक्षण से पहले कुछ महत्वपूर्ण बिंदु जो अन्वेषक को पता होना चाहिए, वह नीचे दिए गए हैं:

- जैसा कि पहले कहा गया है कि प्रत्येक मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रक्रिया का एक उद्देश्य और औचित्य होता है।

परीक्षण का उपयोग करने से पहले, परीक्षक को यह देखना चाहिए कि परीक्षण, उद्देश्य को पूरा करता है या नहीं। यह पूछने की आवश्यकता है कि मैं इस परीक्षण का उपयोग क्यों कर रहा हूँ, अथवा इस परीक्षण को उपयोग करने का उद्देश्य क्या है।

यदि सभी प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर दिए गए हैं, तो किसी को विशेष परीक्षण का उपयोग करना चाहिए। लेकिन अगर परीक्षण का उपयोग किसी भी आधार जैसे उद्देश्य, जनसंख्या, या परीक्षण का उपयोग करने के संदर्भ तर्कसंगत नहीं है, तो परीक्षण का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

- परीक्षण का उपयोग करने से पहले, परीक्षक को परीक्षण में उपयोग की जाने वाली सामग्री, निर्देशों और प्रक्रिया से पूरी तरह परिचित होना चाहिए।
- परीक्षक को परीक्षार्थियों में अक्षमता के बारे में संवेदनशील होना चाहिए। सुनना, दृष्टि, भाषण या मोटर नियंत्रण से संबंधित विकलांगता परीक्षण के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। गैर-पहचानी विकलांगता के मामले में, व्याख्या की गंभीर त्रुटियां हो सकती हैं।
- परीक्षकों को पूरी परीक्षण प्रक्रिया, सेटअप, पढ़ने के निर्देश और परीक्षार्थियों द्वारा वास्तविक परीक्षण के लिए उचित समय आवंटित करना चाहिए। किसी परीक्षण के लिए बहुत अधिक समय देना भी उतना ही गलत है जितना कि कम समय देना।
- निर्देशों को स्पष्ट और तेज आवाज में पढ़ा जाना चाहिए। अगर परीक्षार्थियों को निर्देश स्पष्ट नहीं होने पर परीक्षक को सवालियों का जवाब देना बंद कर देना चाहिए।
- परीक्षण के लिए भौतिक परिस्थितियाँ (परीक्षण कक्ष में) उपयुक्त होनी चाहिए। परीक्षण से पहले रोशनी, तापमान और आर्द्रता के बारे में विचार किया जाना चाहिए। परीक्षण वातावरण सुखद, शांत और अच्छी तरह से उचित लेखन डेस्क के साथ सुविधाजनक होना चाहिए (परीक्षण के मामले में जहां उत्तर पुस्तिका को भरना आवश्यक है)।
- तालमेल स्थापित करना पहली बात है जिसमें परीक्षक को सलाह दी जाती है कि वे व्यक्ति या समूह को परीक्षण देते समय सुनिश्चित करें कि 'रोपोर्ट एक आरामदायक, तनावमुक्त, बिना रुकावट, पारस्परिक रूप से व्यक्तियों के बीच बातचीत को स्वीकार करना है (रेबर और रेबर 2001: 597)। विशेष रूप से एक परीक्षार्थी और परीक्षक के बीच तालमेल होना चाहिए। परीक्षार्थियों को परीक्षण के दौरान सहयोग करने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। यह व्यक्तिगत परीक्षण में, खासकर जब परीक्षार्थी बच्चे हो, तब और भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। तालमेल स्थापित करने में विफलता से परीक्षार्थियों में चिंता, शत्रुता और असहयोगी व्यवहार की स्थिति पैदा हो सकती है।

- परीक्षण के स्कोरिंग को, परीक्षण मैनुअल में निर्दिष्ट पैटर्न का पालन करना चाहिए। अगर स्कोरिंग संख्यात्मक नहीं है तो परीक्षण पुस्तिका में दिए गए दिशा-निर्देश और व्याख्या की विधि का भी पालन करना चाहिए।
- इस प्रकार, एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण इस अर्थ में एक मानकीकृत साधन है कि यह अच्छी तरह से परिभाषित प्रक्रिया और निर्देश प्रदान करता है। परीक्षण में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ विश्वसनीय और मान्य होती हैं और परीक्षण मानकीकृत स्कोर के संदर्भ में स्कोर को दर्शाता है। वर्तमान में, जब हम कंप्यूटर असिस्टेड टेस्ट एडमिनिस्ट्रेशन और स्कोरिंग तक पहुँच रखते हैं, तो परिचालन में तकनीकी और मानवीय दोनों आधारों पर परीक्षक को परिशुद्धता और यथार्थता के लिए उचित प्रशिक्षण और अभ्यास की आवश्यकता होगी।

fj i k/ y[ku

एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण के प्रचालन के बाद, निष्कर्षों को एक रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया जाना है। रिपोर्ट को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए। रिपोर्ट को वर्गों और उपखंडों में ठीक से विभाजित किया जाना चाहिए जहाँ भी आवश्यक हो, निष्कर्ष सारणीबद्ध किया जाए।

रिपोर्ट को कर्म वाच्य में लिखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'यह लिखने के बदले कि मैंने परीक्षार्थी को परीक्षा पुस्तिका दी थी' यह लिखना चाहिए कि "परीक्षार्थी को 'टेस्ट बुकलेट' दी गई थी। रिपोर्ट को एक मानक प्रारूप में लिखा जाना चाहिए।

eukoKkfud ijh{k.k ea ; k/; vkj cf'kf{kr gkuk

मनोवैज्ञानिक परीक्षण में प्रशिक्षित होने के दो पहलू हैं:

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण और इसके विश्लेषण का तकनीकी और सैद्धांतिक ज्ञान होना।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण के विश्लेषण के लिए आवश्यक कौशल होना, संचार कौशल को बेहतर बनाना, एक अच्छा पर्यवेक्षक और सहानुभूति पूर्वक सुनने वाला।

उपरोक्त पहलुओं पर संक्षेप में निम्नानुसार चर्चा की गई है:

1) rduhdh vkj l j kfrd Kku

इस ज्ञान के कुछ बुनियादी घटक इस प्रकार हैं:

- क) परीक्षण निर्माण का ज्ञान
- ख) विश्लेषण में दक्षता
- ग) स्कोरिंग और व्याख्या में ज्ञान और दक्षता

क) ijh{k.k fuekZk dk Kku

आज हर क्षेत्र जैसे स्कूल, उद्योग, चयन एजेंसियां, अस्पताल, विशेष शिक्षा केंद्र, पुनर्वास केंद्र और विभिन्न अन्य संगठनों में परीक्षण की आवश्यकता है। मनोवैज्ञानिक, उपलब्ध परीक्षणों या विकासशील परीक्षण, स्थिति की मांग हो, से परीक्षण चुनने के चुनौती भरे कार्य का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि दोनों ही स्थितियों में परीक्षण निर्माण का ज्ञान अनिवार्य है। यदि किसी को एक परीक्षण का चयन करने की आवश्यकता है, तो व्यक्ति को परीक्षण निर्माण की मूल बातों का ज्ञान होना चाहिए। परीक्षण कैसे विकसित किया जाता

है? चाहे उसके उचित मानदंड हों या वह मानकीकृत, स्कोरिंग की विधि हो। इस सभी जानकारी के लिए परीक्षण निर्माण प्रक्रिया के बारे में तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। अन्यथा, चुनने का निर्णय, पक्षपाती मान्यताओं से भरा हुआ होगा। सैद्धांतिक ज्ञान न केवल परीक्षण के चयन से संबंधित है, बल्कि परीक्षण के निर्माण से भी संबंधित है, ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। जब कोई परीक्षण उपलब्ध नहीं है, या उपलब्ध परीक्षण पुराना है, या सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त नहीं है। मान लें कि आपको अपने देश या अपने राज्य या शहर के लोगों की खुशी का सूचकांक बनाना है। ऐसे सूचकांक को कैसे तैयार किया जाए? आपको पता है कि इस तरह की एक प्रक्रिया किसी अन्य देश में उपलब्ध है। लेकिन खुशी की परिभाषा एक देश से दूसरे देश में भिन्न हो सकती है। एक स्थान पर, यह परिवार हो सकता है, जो कि व्यक्तियों के लिए खुशी का प्राथमिक स्रोत है, लेकिन दूसरी ओर यह सुरक्षित भविष्य और भौतिक समृद्धि हो सकती है। इस प्रकार, कोई प्रसन्नता के स्तर का अध्ययन करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार करने का निर्णय लिया जा सकता है।

ख) fo'yšk.k ea n{krk

एक बच्चे को सीखने में अक्षमता है या नहीं, यह पता लगाने के लिए कौन-सा उपाय चुनना चाहिए। किसी को कई प्रक्रियाओं जैसे कागज पेंसिल परीक्षण (सीखने और बौद्धिक क्षमता का परीक्षण), की आवश्यकता अर्थात् बच्चे, माता-पिता और शिक्षकों के साथ अवलोकन, साक्षात्कार हो सकते हैं, कौन से परीक्षण का चयन करना चाहिए-मौखिक (शाब्दिक) या गैर-मौखिक(अशाब्दिक)। कुछ गुणात्मक दृष्टिकोण या मात्रात्मक या दोनों, चाहे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लिए परीक्षण फिट हो। इन निर्णयों के लिए न केवल सैद्धांतिक ज्ञान बल्कि अन्वेषक की ओर से अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है जो ज्ञान, अभ्यास और अनुभव के साथ आती है।

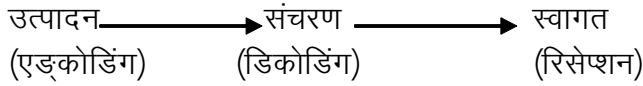
ग) Ldkfjx vks 0; k[; k ea Kku vks n{krk

परीक्षण में कठोर प्रक्रियाओं को, सांख्यिकीय प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित किया जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग करते समय, मनोवैज्ञानिक परीक्षण में लागू सांख्यिकीय सिद्धांतों का सही ज्ञान होना आवश्यक है। विश्वसनीयता और परीक्षण की वैधता की गणना कैसे की गई है? परीक्षण के मानदंड कैसे विकसित किए गए हैं? ये तकनीकी पहलू परीक्षण के निर्माण, चयन, संशोधन और अनुकूलन दोनों में मदद करते हैं। स्कोरिंग के बाद व्याख्या एक आवश्यक पहलू है जिसमें स्कोर के महत्व को स्पष्ट करना भी शामिल है। उस व्यक्ति के लिए इसका क्या मतलब है जो IQ स्कोर 94 प्राप्त करता है। इन सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, अन्वेषक की ओर से एक उपयुक्त स्पष्टीकरण एक अनिवार्य आवश्यकता है।

2) dk\$ky dk fodkl djuk

एक मनोवैज्ञानिक का काम एक कलाकार की तरह है। उसे निरीक्षण करने, सुनने, महसूस करने और फिर जितना संभव हो, कम कहने की जरूरत है। यहाँ अवलोकन केवल एक विधि नहीं है जो किसी विशिष्ट समस्या का अध्ययन करता है। इसे एक आदत के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। चीजों को कैसे देखें: लोग बसों, ट्रेनों या कार्यालयों में एक दूसरे से बात कर रहे हैं; एक मॉल के बाहर बातें करते युवा, अखबारों और पत्रिकाओं में अपने विचार लिखते हुए लोग, एक-दूसरे के साथ, परिवारों में, कार्यालयों में, ट्रैफिक में, कुछ भी अनजाना नहीं रहना चाहिए। एक बार एक आदत के रूप में विकसित होने के बाद, जानबूझकर प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होगी। एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा कि 'एक मनोवैज्ञानिक को एक अच्छा लेखक होना चाहिए', हां, जो कुछ भी आप देखें, इसे कलम से लिख लें। मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो इसके उपयोग के तरीकों में है, लेकिन यह अनिवार्य रूप से

विश्लेषण की एक कला है। यह कला धीरे-धीरे विकसित होती है। आप अवलोकन और चिंतन करेंगे और विषयों को व्यवस्थित रूप से लिखने की आदत विकसित करेंगे। अवलोकन के बाद, एक और महत्वपूर्ण कौशल संचार कौशल है। चिकित्सक, परामर्शदाता या प्रशिक्षक के रूप में काम करने वाले मनोवैज्ञानिकों को दूसरों के साथ संचार की आवश्यकता होती है। संचार वक्ता से घटनाओं की एक शृंखला श्रोता है, जो घटनाओं की शृंखला में शामिल है-



इस प्रकार, संचार में एक संदेश (सूचना) एक कोड (भाषा) और एक चैनल (लिखित-दृश्य, श्रवण) शामिल होता है जिसके माध्यम से सूचना प्रसारित की जाती है। एक अच्छा वक्ता बनने के लिए सीखने से पहले एक मनोवैज्ञानिक को एक अच्छा श्रोता बनना सीखना चाहिए। उसे चाहिए कि कहाँ और कब बोलना है और कहाँ नहीं। सिर्फ श्रोता होना पर्याप्त नहीं है; एक मनोवैज्ञानिक को एक अनुभवजन्य श्रोता होना चाहिए। उसे महसूस करना चाहिए कि दूसरे क्या महसूस कर रहे हैं।

मनोवैज्ञानिक को सांस्कृतिक अंतर के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। किसी व्यक्ति के सांस्कृतिक परिवेश में विभिन्न व्यवहारों की जड़ें होती हैं। जिस तरह से लोग बात करते हैं, अभिवादन करते हैं, उनके खाने की आदतों और कभी-कभी उनके परिवेश के प्रति उनकी संवेदनशीलता उस वातावरण से प्रभावित होती है जिसमें वे रहते हैं। यदि मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो टिप्पणियों और परीक्षण से तैयार किए गए निष्कर्षों का कोई अर्थ नहीं होगा, और अंततः बड़े पैमाने पर व्यक्तियों और समाज के लिए हानिकारक हो सकती है।

परीक्षण के दौरान नैतिक सिद्धांतों का ज्ञान एक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक से भी अपेक्षित है। समय-समय पर जारी किए गए परीक्षण के लिए नैतिक दिशानिर्देशों को नैतिक सिद्धांत और आचार संहिता कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक को किसी भी गलत अनुसंधान और परीक्षण से बचने के लिए कुछ सिद्धांतों का अनुपालन करना चाहिए। सामान्य तौर पर, हम नैतिक उपचार के सिद्धांतों को वाक्यांश रूप दे सकते हैं-

- सुरक्षा का अधिकार।
- सम्मानजनक उपचार का अधिकार।
- गोपनीयता का अधिकार।
- सूचित किए जाने का अधिकार।

तकनीकी रूप से सूचित सहमति – एक परीक्षार्थी को परीक्षण की प्रकृति, जोखिम और उद्देश्य की जानकारी, और परीक्षण के उपयोग के बारे में पहले से सूचित किया जाना चाहिए। केवल जब वह सहमत हो जाए तो परीक्षार्थी पर परीक्षण करना चाहिए। परीक्षार्थी को अध्ययन के परिणामों के बारे में और परीक्षण के निष्कर्षों और उपयोग के बारे में भी जानकारी देनी चाहिए।

परीक्षण और अनुसंधान के दौरान परीक्षार्थियों के उपरोक्त सभी अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए। संक्षेप में, मनोवैज्ञानिक को मनुष्यों या जानवरों के साथ काम करने की बहुत ईमानदारी से जिम्मेदारी लेनी चाहिए। जिससे परीक्षक और परीक्षार्थी दोनों के लिए उद्देश्य की अच्छी पूर्ति होगी। हम नीचे अलग-अलग खंडों में विशिष्ट परीक्षणों पर विस्तार से चर्चा

करेंगे। जैसा कि पहले ही कहा गया है, यदि आप इन परीक्षणों को जैसे-जैसे लागू करेंगे, वैसे अधिक सीख पाएंगे। आप नीचे वर्णित परीक्षणों में से केवल एक का ही चयन करेंगे। पाठ्यक्रम में शामिल किए गए दो परीक्षण आइजेंक व्यक्तित्व आइजेंक और 16 पीएफ हैं।

1) vkbtad 0; fäRo blloš/jh %y{k.kka dh l ph½

आपने इकाई 7 में व्यक्तित्व की अवधारणा, व्यक्तित्व के निर्माण को मापने के लिए व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धांतों के साथ-साथ, विभिन्न विधियों को भी सीखा है।

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के व्यवहार के संगठित, सुसंगत और सामान्य प्रारूप को संदर्भित करता है जो व्यक्तिगत रूप में उसके व्यवहार को समझने में सहायता करता है। ऐसे अनेक सिद्धांत हैं जो व्यक्तित्व की अवधारणा की व्याख्या और वर्णन करते हैं। व्यक्तित्व मूल्यांकन के क्षेत्र में दो प्रकार के रुझान हैं: असंरचित प्रक्षेप्य तकनीकों का उपयोग (उदाहरण के लिए, रोशार्क परीक्षण) और संरचित दृष्टिकोण जैसे कि आत्म-रिपोर्ट सूची और व्यवहार सम्बद्ध रेटिंग। व्यक्तित्व इनवेंटरी प्रश्नावली हैं जो व्यक्तित्व का आंकलन करती हैं। 'व्यक्तित्व आविष्कार प्रश्नावली हैं, जिन पर व्यक्ति कुछ स्थितियों में अपनी प्रतिक्रियाओं या भावनाओं की रिपोर्ट करते हैं। मदों (आइटम) के विषयों के जवाबों को सूची के भीतर अलग-अलग पैमानों या कारकों पर अंक देने के लिए सम्मिलित किया गया है (हिलगार्ड और एटकिंसन, 2003: 459)। कई व्यक्तित्व आविष्कार पूर्ववर्ती सिद्धांतों पर आधारित हैं। सिद्धांत निर्देशित आविष्कारों के कुछ उदाहरण एडवर्ड व्यक्तिगत प्राथमिक अनुसूची, पर्सनैलिटी रिसर्च फॉर्म (दोनों मुर्रे के व्यक्तित्व सिद्धांत पर आधारित हैं) और मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (कार्ल युंग के व्यक्तित्व प्रकार के सिद्धांत पर आधारित)। इसके अतिरिक्त सिद्धांत आधारित सूचियों और या आविष्कारों के अलावा, कारक-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रारंभिक परीक्षण निष्कर्षों के आधार पर सिद्धांतों को विकसित करने में योगदान, कारक विश्लेषण के साथ, मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व आयामों की पहचान करते हैं जो व्यक्तित्व को परिभाषित कर सकते हैं। कैटेल ने कारक विश्लेषण का उपयोग करते हुए 16 व्यक्तित्व कारकों की पहचान की है।

ijh{k.k ds ckjs e% हैंस आइजेंक (1953) दो व्यक्तित्व कारकों पर पहुंचे: जिनमें एक अंतर्मुखता -प्रतिरोध और दूसरा भावनात्मक अस्थिरता-स्थिरता (मनोविक्षुब्धता)। तीसरा आयाम बाद में जोड़ा गया है – एक मनोविकृत। इन तीनों आयामों को नीचे परिभाषित किया गया है (हिलगार्ड और एटकिंसन 2003: 454)।

- अंतर्मुखता-बहिर्मुखता उस हद तक संदर्भित होती है, जिसमें किसी व्यक्ति की मूल अभिमुखता स्वयं की ओर या बाहरी दुनिया की ओर मुड़ जाती है।
- न्यूरोटिसिज्म (स्थिरता-अस्थिरता) यानी, भावुकता का एक आयाम है, जिसके साथ एक ओर मनोविक्षुब्धता या अस्थिर, चिंतित, मनमौजी और दुर्भावनापूर्ण व्यक्ति हैं, और दूसरी ओर शांत, अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति हैं।
- मनोविकृति की विशेषता, एकान्त, परेशान करने वाली, क्रूर, सहानुभूति की भावना को महसूस करने में कमी, एवं दूसरों से शत्रुतापूर्ण होना है। व्यक्ति संवेदनशील साधक होता है और वह असामान्य तथा अजीब वस्तुएँ पसंद करता है।

आइजेंक पर्सनैलिटी क्वाश्चनायर यानी आइजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली (ईपीक्यू-आर) द्वारा, तीन आयामों का अध्ययन-मनोविकृति पी), बहिर्मुखी(ई) और मनोविक्षुब्धत(एन) के रूप में किया जाता है जो 1975 में आइजेंक की व्यक्तित्व सूची का अंतिम संशोधन है। ईपीआई को 1957 में आइजेंक द्वारा अंतर्मुखी-दृबहिर्मुखी के उपाय के रूप में बनाया गया था और कई बार

संशोधित किया गया। 1975 का संशोधित संस्करण एच. जे. आइजेंक और एस. बी. जी. आइजेंक द्वारा डिजाइन किया गया था। प्रश्नावली में नब्बे प्रश्न होते हैं। कारक विश्लेषण के बाद इन सवालों को कई मर्दों में से सावधानीपूर्वक चुना जाता है। ईपीक्यू में चार पैमाने होते हैं—व्यक्तित्व के आयामों के लिए तीन पैमाने और चौथा झूठ स्केल (L) होता है। झूठ स्केल, एक परीक्षार्थी की प्रतिक्रियाओं की वैधता का आंकलन करता है। ईपीक्यू (EPQ) पर दिए गए कथनों का उत्तर 'हां' या 'नहीं' के रूप में दिया जा सकता है। यह 16 वर्ष तथा इससे अधिक आयु वाले व्यक्तियों के लिए बनाया गया है। 81 प्रश्नों से युक्त ईपीक्यू भी उपलब्ध है जोकि 7 से 15 वर्ष तक आयु वाले बच्चों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। ईपीक्यू के कुछ कथन इस प्रकार हैं:- 'क्या आप अक्सर नियम तोड़ते हैं?', 'क्या आप चिंता करेंगे कि आप कर्ज में हैं?', 'क्या आप लोगों से मिलना पसंद करते हैं?', 'क्या आपकी भावनाएँ आसानी से आहत होती हैं?' आदि।

ईपीक्यू एक अत्यधिक विश्वसनीय (परीक्षण पुनः परीक्षण सह-संबंध है .78 (P), .89(E), .86(N), और .84(L) और वैध प्रश्नावली (आंतरिक स्थिरता पी के लिए .70(S) में, तथा व्यक्तित्व मूल्यांकन हेतु .80 (S) अन्य तीन पैमानों के लिए) है। ईपीक्यू के साथ अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र अंतर्मुखता और बहिर्मुखता है।

प्रतिभागी द्वारा परीक्षण पूरा करने के बाद, प्रत्येक पैमाने पर प्राप्तांक को सारणीबद्ध किया जाएगा और प्रत्येक पैमाने के लिए व्याख्या का वर्णन आइजेंक द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के संदर्भ और मैनुअल के अनुसार होगा।

2) 16 0; fäRo dkjd

हम व्यक्तित्व की अवधारणा को समझने और समझाने के लिए विकसित किए गए दृष्टिकोणों और सिद्धांतों की संख्या के बारे में जानते हैं। ये सिद्धांत मानव व्यवहार के विभिन्न मॉडलों पर आधारित हैं। इनमें से प्रत्येक मॉडल, व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालता है लेकिन व्यक्तित्व के सभी पहलुओं पर नहीं। मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के लिए, प्रकार और विशेषता दृष्टिकोण के बीच अंतर करते हैं। टाइप एप्रोच, व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व की विशिष्ट व्यावहारिक विशेषताओं में कुछ व्यापक पैटर्न की जांच करके मानव व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है। प्रत्येक व्यवहार पैटर्न के एक प्रकार को संदर्भित करता है जिसमें व्यक्तियों को उस पैटर्न के साथ उनके व्यवहार की विशेषताओं की समानता के संदर्भ में रखा जाता है। जबकि, विशेषता दृष्टिकोण उन विशिष्ट मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके साथ व्यक्ति सुसंगत और स्थिर तरीके से भिन्न होते हैं।

प्राचीन काल से लोगों को व्यक्तित्व के प्रकारों में वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने द्रव या हास्य के आधार पर व्यक्तित्व के एक प्रकार का प्रस्ताव रखा। उन्होंने लोगों के व्यक्तित्व को चार प्रकारों (आशावादी, उदास, आलसी, चिड़चिड़ा) में वर्गीकृत किया है। प्रत्येक विशिष्ट व्यवहार की विशेषताओं को विशिष्टीकृत किया गया है। आयुर्वेद के अनुसार व्यक्ति को तीन हुमोरल तत्वों के आधार पर तीन वर्गों—वात, पित्त और कफ, में वर्गीकृत किया गया है, जिन्हें त्रिदोष माना जाता है। त्रिगुणों, अर्थात् सत्व, रजस और तमस के आधार पर व्यक्तित्व का एक और प्रकार है। ये सभी तीन गुण अलग-अलग डिग्री में प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद हैं। किसी एक गुण के वर्चस्व के कारण विशेष प्रकार का व्यवहार हो सकता है।

मुख्य आधार के रूप में, शारीरिक गठन और स्वभाव का उपयोग करते हुए 'k/Mu] ने प्रस्तावित वर्गीकरण दिया एंडोमोर्फिक (वसा, गोल, नरम, आराम और मिलनसार), मेसोमोर्फिक (मजबूत शारीरिक गठन), एक्टोमोर्फिक (पतला, लंबा, नाजुक शारीरिक गठन)। युंग ने लोगों

को अंतर्मुखी और बहिर्मुखी वर्गों में विभाजित करके एक और महत्वपूर्ण टाइपोलॉजी (Typology) का प्रस्ताव रखा। हाल ही में, फ्रीडमैन और रोसेनमैन ने व्यक्ति को टाइप 'ए' और टाइप 'बी' व्यक्तित्व में वर्गीकृत किया है। टाइप 'ए' व्यक्तित्व उच्च प्रेरणा, धैर्य की कमी, समय की कमी महसूस करता/करती है, और वह बहुत जल्दी में होता/होती है। ऐसे लोगों को हृदयधमनी रोग (Coronary heart disease) और उच्च रक्तचाप होने का खतरा होता है। टाइप 'बी' व्यक्तित्व में ये लक्षण नहीं होते हैं। मॉरिस ने एक टाइप 'सी' व्यक्तित्व का सुझाव दिया, जिनमें कैंसर होने की संभावना होती है। टाइप 'डी' व्यक्तित्व की विशेषता उदासी और अवसाद है। विशेषता -सिद्धांतकार मुख्य रूप से व्यक्तित्व के बुनियादी घटकों के लक्षणों के वर्णन से संबंधित हैं। वे मुख्य रूप से व्यक्तित्व के 'बिल्डिंग ब्लॉक्स' में रुचि रखते हैं। मानव मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ प्रदर्शित करता है, फिर भी उन्हें व्यक्तित्व की छोटी संख्याओं में विभाजित करना संभव है। एक विशिष्टता को एक अपेक्षाकृत स्थायी विशेषता या गुणवत्ता माना जाता है, जिस के आधार पर एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। उनमें संभावित व्यवहार की एक सीमा शामिल है जो स्थिति की मांग के अनुसार सक्रिय होती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के सिद्धांत को निर्धारित करने हेतु लक्षणों का उपयोग किया है। इन मनोवैज्ञानिकों में ऑलपोर्ट, आइजेंक, कैटेल हैं।

ijh{k.k dsckjse%16 व्यक्तित्व कारक परीक्षण का निर्माण ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक रेमंड बी. कैटेल द्वारा किया गया है। कैटेल के अनुसार, एक आम संरचना है जिसके कारण लोग एक दूसरे से अलग हैं। यह संरचना अनुभवजन्य रूप से निर्धारित की जा सकती है। कारक विश्लेषण नामक सांख्यिकीय तकनीक की सहायता से, उन्होंने सामान्य संरचनाओं की खोज की। उन्होंने 16 प्राथमिक या स्रोत लक्षण पाए। स्रोत लक्षण स्थिर हैं, और इन्हें व्यक्तित्व के निर्माण खंड के रूप में माना जाता है। इनके अलावा, कई सतह भी हैं, लक्षण जो स्रोत लक्षणों की बातचीत से निकलते हैं। कैटेल ने विरोध की प्रवृत्ति के संदर्भ में स्रोत लक्षणों का वर्णन किया। कैटेल ने व्यक्तित्व के सोलह कारक विकसित किए। व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए प्रश्नावली (16 पीएफ) है। यह परीक्षण आज मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

परीक्षण पहली बार 1949 में प्रकाशित किया गया था, उसके बाद 1956 और 1962 में संशोधित किया गया। 1967 और 1969 के बीच चौथे संस्करण के पाँच वैकल्पिक रूप जारी किए गए। 1993 में 16 पीएफ का पांचवा संस्करण जारी किया गया था। पीएफ का मतलब 'पर्सनैलिटी फैक्टर' है और व्यक्तित्व कारक सोलह हैं, इसलिए, इसे 16 पीएफ के रूप में जाना जाता है। ये 16 कारक ही प्रमुख स्रोत लक्षण हैं। कैटेल के सिद्धांत में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति में निम्नलिखित सोलह लक्षणों में से प्रत्येक की एक डिग्री होती है (कैटेल कारकों शब्द का उपयोग भी करते हैं)।

प्रत्येक विशेषता के लिए, कारक लेबल या कोड अक्षरों का उपयोग किया जाता है। 16 व्यक्तित्व कारक सूची (पर्सनैलिटी फैक्टर इन्वेंटरी) में दर्शाए गए प्रमुख स्रोत लक्षण निम्नानुसार हैं:

dkjd	fooj.k
A	अंतर्मुखी – बहिर्मुखी
B	कम प्रतिभाशाली – अधिक प्रतिभाशाली
C	स्थिरता – भावुकता
E	विनम्र – उग्र

F	सादा – उत्साही
G	तिकड़मी – ईमानदार
H	दब्बू – साहसी
I	कठोर – कोमल
L	विश्वसनीय – अविश्वसनीय
M	व्यवहारिक – अव्यवहारिक
N	सीधासाधा – शरारती
O	सौम्य – आशंकित
Q1	प्रयोगवादी – रूढ़िवादी
Q2	पराक्षित – स्वावलम्बी
Q3	अनुशासनहीन – अनुशासित
Q4	तनावरहित – तनावयुक्त

16 पीएफ इन्वेंटरी एक कागज पेंसिल परीक्षण है जिसमें 185 बहु-विकल्पीय आइटम (मद) शामिल हैं। प्रतिभागी को एक विकल्प चुनना होता है। स्टेटमेंट्स का कोई सही या गलत उत्तर नहीं है। परीक्षण को पूरा करने में औसतन 35-50 मिनट का समय लगता है। परीक्षण पूरा होने के बाद, अंकों को मैनुअल की सहायता से सारणीबद्ध और व्याख्यायित किया जाता है।

çk; kfxd eukfoKku dh i"Blkñe

पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला 1879 में विल्हेम वुंड्ट द्वारा लिपज़िग, जर्मनी में स्थापित की गई थी। एक तरह से, औपचारिक अनुशासन के रूप में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को एक सौ तीस साल से अधिक पुराना कहा जा सकता है। अनेक वर्षों से, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का काफी हद तक विस्तार हुआ है। मनोवैज्ञानिक सटीक तरीकों, तकनीकों और अवलोकन तथा विश्लेषण की प्रक्रियाओं को विकसित करने में सक्षम रहे हैं। प्रयोगों की मदद से, मनोवैज्ञानिकों ने मानव और जानवरों दोनों के जटिल व्यवहार की सफलतापूर्वक जांच की है, सटीकता के एक अच्छे कार्य के साथ व्यवहार की भविष्यवाणी करते हैं, और वास्तविक जीवन स्थितियों के अंतर्गत व्यवहार में सुधार करने में सक्षम हैं।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की जड़ें दर्शनशास्त्र में थीं और बाद में एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में उभरीं। प्रायोगिक मनोविज्ञान का विकास इस लिए संभव नहीं हुआ क्योंकि मनोवैज्ञानिकों ने स्वयं सभी योगदान दिए, बल्कि इसलिए भी कि वे अन्य विज्ञानों जैसे कि शरीर विज्ञान, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, समाजशास्त्र, आदि को आत्मसात करने और उन्हें अनुकूलित करने की क्षमता रखते हैं। दार्शनिक लेखन के बीच मनोवैज्ञानिक रुचि के मामलों के लिए जिसने एक प्रमुख स्थान दिया वे **Mł dkVł] ykbcfuV-t vłj fcfV'k , l kłl , 'kfuLV** थे। इन लेखकों ने अधिग्रहण और ज्ञान, स्मृति, आदि की वृद्धि आदि जैसे मुद्दों को महत्व दिया जो सीधे तौर पर मानवीय व्यवहार की समझ से संबंधित थे। **ykd] cdył áeł ckmuj** ने मनोविज्ञान के वैज्ञानिक शुरुआती सिद्धांतों दिए जिन्हें एसोसिएशन ऑफ लॉ के रूप में जाना जाता है। यह जो बौद्धिक विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त किए गए थे न कि प्रयोगात्मक माध्यम से।

19 वीं शताब्दी के मध्य में जीव विज्ञान और भौतिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुए। सबसे महत्वपूर्ण जैविक विकास का सिद्धांत **pkyl MkfoL** द्वारा प्रस्तावित किया था, क्योंकि प्रारंभिक मनोवैज्ञानिकों का धर्म के साथ घनिष्ठ संबंध था। चूंकि प्रारंभिक मनोवैज्ञानिकों ने धर्मशास्त्र, और दर्शनशास्त्र के साथ नज़दीकी संबंध बनाकर रखा, डार्विन के सिद्धांत ने एक स्वतंत्र प्रायोगिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की स्थापना का एक नया दृष्टिकोण दिया। इसने अन्य क्षेत्रों जैसे फिजियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, मेडिसिन, आदि में हुए विकास से व्यवहार को समझाने और उसकी व्याख्या करने हेतु मदद लेने का मार्ग प्रशस्त किया। मानव व्यवहार पर प्रयोगों को डिजाइन करने और प्रयोग करने के अनेक प्रयास किए गए थे।

इस बीच, भौतिक विज्ञानी-फिजियोलॉजिस्ट **gVegkYRt** ने मेंढकों में प्रतिक्रिया की गति का अध्ययन करने का प्रयास किया। हेल्महोल्त्ज ने प्रदर्शित किया कि तंत्रिका चालन की गति को एक मेंढक में मापा जा सकता है। इससे मानव में प्रतिक्रियाओं की गति का अध्ययन करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। डच फिजियोलॉजिस्ट **M,MI L** द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया था कि इस समय प्रसिद्ध "प्रतिक्रिया-समय प्रयोगों" का यह प्रारंभिक बिंदु था।

एक जर्मन भौतिक विज्ञानी, **bl, p- ocj** के काम से अगला महत्वपूर्ण विकास सामने आया, जिन्होंने उत्तेजना पर प्रयोग किया। वेबर ने शारीरिक स्थितियों में परिवर्तन और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के बीच मात्रात्मक संबंधों का अध्ययन किया। वेबर ने प्रयोग के इस क्षेत्र को मनोदृष्टिकी (साइकोफिजिक्स) कहा। वेबर के काम को जर्मन भौतिक विज्ञानी **th, I -Vh- Qduj**, ने आगे बढ़ाया। वेबर और फेचनर के काम के परिणामस्वरूप वेबर-फेचनर नियम तैयार किया, जोकि मनोविज्ञान का पहला मात्रात्मक नियम था।

गैल्टन द्वारा व्यक्तिगत मतभेदों की समस्या को सामने लाया गया, जो मुख्य रूप से मानव व्यवहार में अंतरों का अध्ययन और विश्लेषण करने में रुचि रखते थे। इसमें सबसे महत्वपूर्ण पहलू कल्पना का अध्ययन किया गया था। गैल्टन ने लोगों के बीच कल्पना करने में जो अंतर रहता है उसका अध्ययन करने के लिए एक परीक्षण तैयार किया।

ये सारे घटनाक्रम यूरोप में हो रहे थे और इससे लिपज़िग में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला (1879 में विल्हेम वुंड्ट द्वारा) की स्थापना में सहायता मिली। इसके बाद, वियना, बर्लिन, वुर्ज़बर्ग, आदि में विभिन्न अन्य प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई। इन प्रयोगशालाओं में लॉ आफ एशोसिएशन, प्रतिक्रिया-समय, कल्पना और उत्तेजना पर प्रयोग किए गए।

प्रयोग में, स्मृति की प्रक्रियाओं (ज्ञान की अवधारण) और भूलने (ज्ञान में हानि) के बारे में, एक और महत्वपूर्ण विकास **geL , fcxg, l** द्वारा किया गया था। यह प्रायोगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में 'उच्च मानसिक प्रक्रियाओं' को लाया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को विकसित करने का प्रयास **bl , y- FkkuMkbc** द्वारा किया गया था। थार्नडाइक ने सीखने की प्रक्रिया पर अपने प्रयोग किए थे और उनके प्रयोगों में अद्वितीय विशेषता पशु विषयों का उपयोग था। उनका विचार था कि पशु व्यवहार, मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए बहुत उपयोगी सुराग प्रदान करेगा। पहली के रूप में बिल्लियों के साथ परीक्षण और त्रुटि सीखने पर थार्नडाइक के प्रयोगबॉक्स के रूप में उपकरण महत्वपूर्ण थे और आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के लिए नींव प्रदान की। थार्नडाइक के काम के परिणामस्वरूप अनुभवजन्य रूप से पहला सेट प्राप्त हुआ। सीखने के क्षेत्र में मात्रात्मक कानून, प्रयोगशाला में जानवरों का परिचय, प्रायोगिक मनोविज्ञान के विकास में मदद मिली, क्योंकि, पशु प्रयोगों ने अधिक सटीक अवलोकन प्रदान किया, साथ ही बेहतर नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए प्रायोगिक स्थितियों का अधिक से अधिक हेरफेर किया।

फिर भी रूसी फिजियोलॉजिस्ट, **cs[krjɔ** और **ikoyko** द्वारा एक और प्रमुख विकास किया गया था। बेखतरेव के 'ऑब्जेक्टिव प्रतिक्रिया' और पावलोव के 'सशर्त प्रतिक्रिया' ने व्यवहार की उत्पत्ति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला।

प्रायोगिक मनोवैज्ञानिकों ने जल्द ही सामाजिक कारकों के महत्व को महसूस किया, और इसके परिणाम स्वरूप प्रयोगात्मक सामाजिक मनोविज्ञान का विकास हुआ था। शुरुआत में **v,yikW] U; id,[c] fyflVV] ,s[k] 'kfjQ] eQh] yfou,** और अन्य लोगों द्वारा योगदान किया गया था। आज, प्रायोगिक सामाजिक मनोविज्ञान अध्ययन की एक स्वतंत्र शाखा बन गई है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार की सामाजिक स्थितियों में मनुष्यों के व्यवहार को समझने में मदद करने वाले प्रयोगों की योजना बनाई और उन्हें अंजाम दिया है। इस तरह की समझ उद्योगों, अस्पतालों, स्कूलों और अन्य स्थितियों में पाई जाती है जहां लोग बातचीत करते पाए जाते हैं।

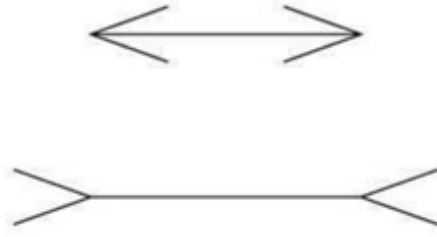
इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रयोगात्मक मनोविज्ञान धीरे-धीरे सीखने और सामाजिक व्यवहार के क्षेत्रों में विस्तारित हुआ। इन वर्षों में, प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को भी असामान्य व्यवहार का अध्ययन, और इसके परिणामस्वरूप प्रयोग और जांच का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होने से प्रयोगात्मक विज्ञान का उद्भव हुआ। प्रायोगिक मनोविज्ञान ने व्यवहार चिकित्सा और व्यवहार संशोधन की तकनीक विकसित की है जो अस्पतालों, क्लीनिकों, सुधारक गृहों, जेलों आदि में लागू हो सकती है। प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों के निष्कर्षों को कारखानों, कार्यालयों, अस्पतालों, स्कूलों आदि में लागू किया जाता है। संभवतः ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का योगदान नहीं हो सकता है। अधिकांश अन्य विज्ञानों की तुलना में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का क्षेत्र और अनुप्रयोग बहुत व्यापक है।

अब, हम दो प्रयोगों पर चर्चा करेंगे। आप नीचे दिए गए प्रयोगों में से केवल एक का चयन करेंगे।

1½ E; yj-yk; j Hkæ ij ç; kx

म्युलर-लायड भ्रम में दो क्षैतिज रेखाएँ हैं, एक एसएस (SS) है, जिसमें एरो हेड्स हैं और दूसरा पंख वाले सिर के साथ एसवी (SV) है। दोनों लाइनें लंबाई में बराबर हैं। लेकिन पंख वाले सिर के साथ की रेखा को प्रतिभागी द्वारा तीर के शीर्ष रेखा से अधिक लंबी मानी जाएगा। प्रतिभागी एसवी को तब तक समायोजित करगा/करेगी, जब तक वह दो पंक्तियों को समान नहीं मानता/मानती। प्रयोग करने वाले को पता चल सकता है कि प्रतिभागी दोनों लाइनों से मेल खाने के लिए भ्रम बोर्ड के पीछे तय किए गए पैमाने से कितना करीब आता है। समायोजन के लिए प्रतिभागी को दिशानिर्देश विविध होने चाहिए। परीक्षणों के आधे में एसवी को मानक से अधिक और परीक्षणों के आधे भाग में इसे एस एस की तुलना में काफी कम सेट किया जाना चाहिए। सभी परीक्षणों में दो शर्तों का पालन किया जाता है। वे हैं: (1) स्थान की स्थिति दाएं (left=L) और बाएं (right=R) और (2) विस्थापन की स्थिति, बाहर (outward) और अंदर (inward=I)।

इस प्रकार से, आरओ (RO), आरआई (RI), एलओ (LO), और एलआई (LI) के रूप में चार संयोजन बनते हैं। जब इन चार स्थितियों का प्रतिकार किया जाता है, तो हमारे पास आरओ, एल आई, एल ओ, आर आई, एल आई, आर ओ, आरआई और एल ओ के रूप में अनुक्रम होते हैं। प्रत्येक अनुक्रम के लिए 10 परीक्षण और कुल 80 परीक्षण हैं। चार आरोही और चार अवरोही श्रृंखलाएँ हैं।



fp= 9-1% ,jks gM vkj Qnj gM ykbu

ç; ksx% औसत त्रुटि की विधि द्वारा समान उत्तेजनाओं का निर्धारण

l eL; k% इस प्रयोग का उद्देश्य औसत त्रुटि की विधि का उपयोग करके म्युलर-लायर भ्रम तंत्र में दृश्य भ्रम की सीमा निर्धारित करना है।

vko'; d l kexh: म्युलर-लायर भ्रम तंत्र, कागज और पेंसिल।

çfØ; k% अग्रिम रूप से प्रयोग करने वाले को रिकॉर्ड पुस्तिका में निर्णय लिखने के लिए अवलोकन तालिका तैयार करनी चाहिए। तालिका में दो स्थान तथा आरओ, एलआई, एलओ, आरआई, एलआई, आरओ, आरआई और एलओ के अनुक्रम के साथ दो गति स्थितियाँ होनी चाहिए। प्रयोग करने वाले को निम्नलिखित निर्देश देने चाहिए: "इस बोर्ड को देखो, दो लाइनें हैं। जैसा कि आप देख रहे हैं कि ये दो लाइनें आकार में असमान हैं। मैं इस रेखा की लंबाई को स्थिर रखूंगा/गी और छोटी इकाइयों में परिवर्तनशील रेखा की लंबाई को बढ़ाता जाऊंगा/गी, या तो बढ़ाता जाऊंगा/गी या कम करूंगा/गी। हर कदम पर आपको बताना है कि एसवी एसएस के बराबर है या नहीं। जब आप महसूस करेंगे कि वे समान हैं, तो मैं रुक जाऊंगा/गी"।

ifj.kke% सभी में, 4 आरोही शृंखला (आरओ, एलओ, आरओ, एलओ) और 4 अवरोही (आरआई, एलआई, आरआई, एलआई) हैं। इस प्रकार, हमारी आठ शर्तें हैं। R और L रिक्त स्थान के लिए साधन और O तथा I गति की गणना करनी होगी। इस प्रयोग का मुख्य उद्देश्य SS (तीर का सिरा) रेखा और प्रतिभागी के निर्णयों (डर) के औसत के बीच विसंगति का निर्धारण करना है। यह भ्रम की सीमा है। यह प्रयोग की लगातार होने वाली मुख्य त्रुटि (Ec) है।

स्थान की त्रुटि का पता लगाने का सूत्र है: MR-ML/2;

MR = दाएं शृंखला का औसत

ML = बाईं शृंखला का औसत

गति की त्रुटि का पता लगाने का सूत्र: MO-ML/2;

MO = बाहरी शृंखला का औसत

MI = अंदर शृंखला का औसत

निरंतर त्रुटि का पता लगाने का सूत्र है: Mj-SS = Ec

Mj = सभी निर्णयों का औसत

SS = मानक उत्तेजना

Ec = लगातार त्रुटि

ppk% मुलर-लायर भ्रम प्रयोग में प्राप्त परिणामों पर चर्चा करें।

बताएं कि भ्रम की हद का क्या यह अधि-अनुमान है या न्यून-अनुमान है। बताएं कि क्या परिणाम प्रयोग की धारणा के अनुसार है। एसवी के साथ तुलना में एसएस लाइन को कम करके आंका जाना चाहिए। स्थान और विस्थापन की त्रुटि की तुलना करें जो अधिक से अधिक है और ऐसा क्यों है। क्या स्थान और विस्थापन की तुलना में स्थिरांक निरंतर अधिक है, यदि हां, तो क्यों? अवरोही शृंखला के आरोही शृंखला में विषय के निर्णय में किसी भी भिन्नता को भी समझाया जाना चाहिए।

2½ | h[kus ds LFkkurj .k ij ç; ksx

विपरीत दिशा में प्रशिक्षण के बाद शरीर के एक तरफ प्रदर्शन का स्थानांतरण, जैसे दाएं हाथ के प्रशिक्षण के बाद बाएं हाथ के प्रदर्शन को द्विपक्षीय हस्तांतरण के रूप में जाना जाता है।

l eL; k% द्विपक्षीय स्थानांतरण की घटना का प्रदर्शन करना।

vko' ; d | kext% मिरर-ड्राइंग उपकरण, स्टाइलस, स्टॉप वॉच, कागज और पेंसिल।

çfØ; k% निम्नलिखित निर्देश दिए जाने हैं, "इसे दर्पण को देखें, आप एक स्टार छवि देखेंगे। स्टार छवि लकड़ी के बोर्ड पर उभरे हुए पैटर्न का प्रतिबिंब है और स्क्रीन द्वारा छिपी हुई है। अपने बाएं हाथ में स्टाइलस लें (प्रयोगकर्ता स्टाइलस को परीक्षक को दे देगा और अंत में उसे निकटतम स्थिति में लाने में मदद करेगा/गी)। अब आपको मिरर इमेज को देखना होगा और स्टाइलस के साथ स्टार पैटर्न को ट्रेस करना होगा। स्टाइलस के खांचे के किनारों के संपर्क के बारे में सावधान रहें। यदि आप स्पर्श करते हैं, तो इसे एक त्रुटि के रूप में गिना जाएगा। जितनी जल्दी हो सके, इसे करने की कोशिश करिए।" प्रतिभागी बाएं हाथ से एक बार पथ का पता लगाने के बाद, उसे फिर से मार्ग का पता लगाने के लिए कहा जाएगा। समय और की गई त्रुटियों की संख्या लिखी गई जाएगी।

उसी तरह, अब प्रतिभागी को अपने दाहिने हाथ के 10 परीक्षणों के साथ स्टार पैटर्न का पता लगाने के लिए कहा जाता है। इन परीक्षणों में से प्रत्येक में, त्रुटियों की संख्या और पैटर्न को पूरा करने के लिए सेकंड में लगने वाले समय की संख्या लिखी जाएगी। फिर से उसी कार्य को उसी तरह से करने के लिए बाएं हाथ से कहा जाएगा और सेकंड में की गई त्रुटियां और समय लिखे जाएंगे।

i fj .kke

- आंकड़ों का सारणीकरण: पहले परीक्षण के लिए प्रदर्शन सूचकांक (त्रुटियों की संख्या और लिया गया समय)। बाएं हाथ से, उसके बाद दाहिने हाथ से परीक्षण (10 परीक्षण), और अंत में, बाएं हाथ से परीक्षण किया जाएगा।
- बाएं हाथ से दूसरे परीक्षण के लिए समय में प्रतिशत लाभ (यदि कोई हो) की गणना करें।
- दूसरे परीक्षण के लिए त्रुटियों की संख्या (यदि कोई हो) में प्रतिशत में कमी की बाएं हाथ से गणना करें।

ppk% सेकंड ट्रायल में लिए गए समय और की गई त्रुटियों की तुलना बाएं हाथ से किए गए दूसरे परीक्षण के साथ करें (दस परीक्षणों दाहिने हाथ से प्रशिक्षण के बाद)। यह पता करें कि परीक्षण में बाएं हाथ से प्रशिक्षण का कोई हस्तांतरण है या नहीं और यह सकारात्मक, नकारात्मक या शून्य हस्तांतरण है कि नहीं।

ç; kx ukVcp ½Qkby½ dk 'kh"kd i"B

Lukrd mi kfek dk; Øe

dk; Øe dkM% बी ए जी

dkd Z dkM%बीपइसीसी-131

dkd Z 'kh"kd%मनोविज्ञान का आधार

f'k{kFkhZ dk uke , oa vuØekd%

irk%

njHkk"k%

bZesy%

vè; ; u dæ dk uke@dkM@irk%

{ks-h; dæ%

frfFk%

f'k{kFkhZ ds gLrk{kj

çek.ki =

यह प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/श्री

ने, बी ए जी कार्यक्रम, प्रथम सेमेस्टर के बीपीसीसी-131 में प्रयोग घटक को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

f'k{kKfkhZ ds gLrk{kj

'k{kf.kd ijke'kzhkrk dk gLrk{kj

नाम :

नाम :

अनुक्रमांक :

पद :

अध्ययन केन्द्र का नाम :

स्थान :

क्षेत्रीय केन्द्र :

दिनांक :

स्थान :

दिनांक :

vfhLohÑfr

यह स्वीकार किया जाता है कि सुश्री/श्री
अनुक्रमांक, बी ए जी (प्रथम सेमेस्टर), ने प्रयोग नोटबुक (फाइल) अपने
अध्ययन केन्द्र
(क्षेत्रीय केन्द्र)
पर जमा की है।

f nukd

g Lrk{kj ¼LVKEi ds I kFK½
(समन्वयक, अध्ययन केन्द्र)



NOTE



NOTE



MPDD/IGNOU/P.O.7K/September, 2019

ISBN: 978-93-89668-00-1